(सरकारी गजट उत्तर प्रदेश भाग-4 में प्रकाशित)

*सचिव, माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ०प्र०, प्रयागराज की विज्ञप्ति संख्या परिषद्–**9/947**,*
*के सातत्य में शैक्षिक सत्र **2020-21** के लिए स्वीकृत नवीनतम पाठ्यक्रम पर*
आधारित एकमात्र पाठ्य-पुस्तक

हिन्दी

कक्षा-10

सम्पादकद्वय

डॉ० रमेश कुमार उपाध्याय
एम०ए० (हिन्दी, संस्कृत), पी-एच०डी०
भूतपूर्व साहित्य विभागाध्यक्ष,
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयागराज

डॉ०योगेन्द्र नारायण पाण्डेय
एम०ए० (हिन्दी, संस्कृत),
बी० एड०, पी-एच०डी०
स्नातकोत्तर (शिक्षा प्रशासन) वरिष्ठ प्रवक्ता
महगाँव इण्टर कॉलेज, महगाँव,
कौशाम्बी

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ० प्र०, प्रयागराज द्वारा
स्वीकृत पाठ्यक्रम पर आधारित

संस्करण 2020-21

प्राक्कथन

साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब होता है। किसी काल-विशेष के साहित्य के अनुशीलन से हम उस काल की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक दशा से परिचित होते हैं। साहित्य का अध्ययन किसी समाज के इतिहास को जानने का एक उत्तम साधन है। देश के महापुरुषों, महान् कलाकारों, लेखकों, कवियों, वीर-वीरांगनाओं के कार्यकलापों का परिचय हमें साहित्यिक रचनाओं में प्राप्त होता है। अपनी सांस्कृतिक गतिविधियों, रीति-रिवाजों और परम्पराओं का ज्ञान भी हमें साहित्यिक कृतियों से प्राप्त होता है।

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ० प्र०, प्रयागराज द्वारा **कक्षा 10** के लिए निर्धारित नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार हिन्दी विषय की पाठ्य-पुस्तकों में '**हिन्दी गद्य**', '**हिन्दी काव्य**', '**संस्कृत**', '**व्याकरण**', **निबन्ध** एवं **खण्डकाव्य** का समावेश किया गया है। इस संकलन में हिन्दी साहित्य के कतिपय जाने-माने लेखकों एवं कवियों की रचनाओं से पाठ संकलित किये गये हैं। सभी पाठ मौलिक हैं। इनको पढ़ने से छात्र-छात्राओं को अपने देश के बारे में अनेक नयी जानकारियाँ मिलेंगी। विशेष बात यह है कि इसके अनुशीलन से छात्र-छात्राएँ अपनी भाषा के कुछ यशस्वी साहित्यकारों एवं कवियों का परिचय प्राप्त कर पायेंगे। उनकी रचनाओं को पढ़कर हिन्दी साहित्य के प्रति अनुराग उत्पन्न होगा। विश्वास है कि इन पाठों को पढ़कर कुछ छात्र-छात्राओं में साहित्यिक रचना के लिए प्रेरणा का भी उद्रेक होगा।

प्रत्येक लेखक एवं कवि के परिचय के अन्तर्गत उसका जीवन-परिचय, साहित्यिक अवदान, कृतियाँ एवं भाषा-शैली अनुच्छेदवार दिया गया है। पाठ्यक्रम के अनुरूप इस पाठ्य-पुस्तक में 'गागर में सागर' भरने का प्रयास किया गया है।

'संस्कृत' के अन्तर्गत चुनी हुई रचनाओं को स्थान दिया गया है, जो ज्ञानवर्द्धक एवं सुरुचिपूर्ण हैं। इसके अतिरिक्त हिन्दी एवं संस्कृत व्याकरण के सरलतम स्वरूप को प्रस्तुत किया गया है।

जिन साहित्यकारों की रचनाएँ इस पाठ्य-पुस्तक में संकलित की गयी हैं; उनके प्रति हम आभार प्रकट करते हैं तथा बहुमूल्य रचनात्मक सुझाव भेजनेवालों के भी हम हृदय से आभारी होंगे।

–सम्पादक एवं प्रकाशक

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ०प्र०, प्रयागराज द्वारा निर्धारित नवीन पाठ्यक्रम

हिन्दी

कक्षा-10

● **इसमें 70 अंकों की लिखित परीक्षा तथा 30 अंकों का विद्यालय स्तर पर प्रोजेक्ट कार्य होगा** **पूर्णांक 100**

1. (क) हिन्दी गद्य के विकास का संक्षिप्त परिचय (शुक्ल तथा शुक्लोत्तर युग) 5
(ख) हिन्दी पद्य का विकास का संक्षिप्त परिचय (रीतिकाल तथा आधुनिक काल) 5

2. गद्य हेतु निर्धारित पाठ्य वस्तु से 2 + 2 + 2 = 6
- सन्दर्भ
- रेखांकित अंश की व्याख्या
- तथ्यपरक प्रश्न

3. काव्य हेतु निर्धारित पाठ्य वस्तु से 1 + 4 + 1 = 6
- सन्दर्भ
- व्याख्या
- काव्य सौन्दर्य

4. संस्कृत गद्यांश अथवा पद्यांश का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद 1 + 3 = 4

5. निर्धारित पाठों के लेखकों एवं कवियों के जीवन परिचय एवं रचनायें 3 + 3 = 6

6. **(1)** संस्कृत के निर्धारित पाठों से कण्ठस्थ एक श्लोक 2
(जो प्रश्न-पत्र में न आया हो)
(2) संस्कृत के निर्धारित पाठों पर आधारित दो अति लघुत्तरीय प्रश्नों का संस्कृत में उत्तर 2

7. काव्य सौन्दर्य के तत्व 2 + 2 + 2 = 6
(क) रस (हास्य एवं करूण रस की परिभाषा, उदाहरण, पहचान)
(ख) अलंकार (अर्थालंकार) उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा
(ग) छन्द-सोरठा, रोला (लक्षण, उदाहरण, पहचान)

8. हिन्दी व्याकरण–शब्द रचना के तत्व 3 + 2 + 2 + 2 + 2 = 11
(क) **उपसर्ग**–अ, अन, अधि, अप, अनु, उप, सह, निर, अभि, परि, सु।
(ख) **प्रत्यय**–आई, त्व, ता, पन, वा, हट, वट।
(ग) **समास**–द्वन्द्व, द्विगु, कर्मधारय, बहुब्रीहि।
(घ) तत्सम शब्द।
(ङ) पर्यायवाची।

9. संस्कृत व्याकरण एवं अनुवाद– $2 + 2 + 2 + 2 = 8$

(क) सन्धि-यण, वृद्धि (परिभाषा, उदाहरण, पहचान)

(ख) शब्द रूप (सभी विभक्तियों एवं वचनों में)

संज्ञा–फल, मति, मधु, नदी।

सर्वनाम–तद्, युष्मद्।

(ग) धातु रूप (लट्, लोट्, लृट्, विधिलिंग, लङ् लकारों में)

पठ्, हस्, दृश्, पच्।

(घ) हिन्दी के सरल वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद।

10. निबन्ध रचना–वैज्ञानिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक समस्याओं पर आधारित एवं जनसंख्या, स्वास्थ्य शिक्षा, पर्यावरण एवं ट्राफिक रूल्स पर आधारित विषय। 6

11. खण्ड काव्य–संक्षिप्त कथावस्तु, घटनायें, चरित्र-चित्रण 3

आन्तरिक मूल्यांकन

अंक योग 30 अंक

(प्रत्येक दो माह के अन्तिम सप्ताह में)

प्रथम–अगस्त माह में 10 अंक-वाचन (भाषण, वाद-विवाद, विचारों की अभिव्यक्ति आदि)।

द्वितीय–अक्टूबर, माह में 10 अंक-व्याकरण सम्बन्धी।

तृतीय–दिसम्बर माह में 10 अंक–सृजनात्मक निबन्ध, नाटक, कहानी, कविता, अपठित आदि।

☞ निर्धारित पाठ्य वस्तु–

गद्य हेतु –

◆ मित्रता	राम चन्द्र शुक्ल
◆ ममता	जयशंकर प्रसाद
◆ क्या लिखूँ	पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी
◆ भारतीय संस्कृति	राजेन्द्र प्रसाद
◆ ईर्ष्या तु न गयी मेरे मन से	रामधारी सिंह दिनकर
◆ अजन्ता	भगवत शरण उपाध्याय
◆ पानी में चन्दा और चाँद पर आदमी	जय प्रकाश भारती

काव्य हेतु–

◆ सूरदास	पद
◆ तुलसीदास	धनुष भंग, वन पथ पर
◆ रसखान	सवैये, कवित्त
◆ बिहारी लाल	भक्ति नीति
◆ सुमित्रानन्दन पंत	चींटी, चन्द्रलोक में प्रथम बार
◆ महादेवी वर्मा	हिमालय से, वर्षा सुन्दरी के प्रति
◆ रामनरेश त्रिपाठी	स्वदेश प्रेम
◆ माखन लाल चतुर्वेदी	पुष्प की अभिलाषा, जवानी
◆ सुभद्रा कुमारी चौहान	झांसी की रानी की समाधि पर

- मैथिलीशरण गुप्त — भारतमाता का मंदिर यह
- केदार नाथ सिंह — नदी
- अशोक बाजपेयी — युवा जंगल, भाषा एकमात्र अनन्त है
- श्याम नारायण पाण्डेय — हल्दीघाटी

संस्कृत हेतु–

- वाराणसी,
- अन्योक्तिविलासः
- वीरः वीरेण पूज्यते
- प्रबुद्धो ग्रामीणः
- देशभक्तः चन्द्रशेखरः
- केन किं वर्धतेः
- छांदोग्योपनिषद् षष्ठोध्यायः से आरूणि श्वेतकेतु संवादः
- भारतीयाः संस्कृतिः
- जीवन-सूत्राणि।

खण्ड काव्य–(जिलेवार)

खण्ड काव्य के लिये–

☞ निर्धारित पाठ्य वस्तु

क्रमांक	पुस्तक का नाम	प्रकाशक का नाम	अनुदानित जिले
1.	मुक्तिदूत	अशोक कुमार अग्रवाल, 43, चाहचन्द रोड, इलाहाबाद।	आगरा, बस्ती, गाजीपुर, फतेहपुर, बाराबंकी उन्नाव।
2.	ज्योति जवाहर	मोहन प्रकाशन, जवाहर नगर, कानपुर	कानपुर, प्रतापगढ़, मिर्जापुर, ललितपुर, रामपुर, गोण्डा।
3.	अग्रपूजा	हिन्दी भवन, 63 टैगोर नगर, इलाहाबाद	इलाहाबाद, आजमगढ़, मथुरा।
4.	मेवाड़ मुकुट	शंकर प्रकाशन, 8/98 आर्यनगर, कानपुर	बुलन्दशहर, देवरिया, बरेली, सुल्तानपुर, सीतापुर बहराइच।
5.	जय सुभाष	रोहिताश्व प्रकाशन, 368 मालती सदन, ऐशबाग, लखनऊ	लखनऊ, सहारनपुर, फैजाबाद, बांदा, झांसी हरदोई।
6.	मातृभूमि के लिये	आधुनिक प्रकाशन गृह, दारागंज, इलाहाबाद	गोरखपुर, मुरादाबाद, शाहजहाँपुर, लखीमपुर खीरी, मैनपुरी, मुजफ्फरनगर।
7.	कर्ण	बुनियादी साहित्य मन्दिर, पटना-4	अलीगढ़, जौनपुर, बलिया, हमीरपुर, एटा।
8.	कर्मवीर भरत	हिन्दुस्तान बुक हाउस, अस्पताल रोड, परेड, कानपुर,	मेरठ, फर्रूखाबाद, पीलीभीत, रायबरेली।
9.	तुमुल	इण्डियन प्रेस पब्लिकेशन प्रा. लि., 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद	वाराणसी, इटावा, बिजनौर, जालौन, बदायूँ

नोट–उपर्युक्त के अतिरिक्त अन्य जिलों/नये सृजित जिलों में खण्ड काव्य पूर्व वर्षों की भाँति यथावत पढ़ाये जायेंगे।

●●

विषय-सूची

हिन्दी गद्य

क्रमाङ्क	पाठ का नाम		पृष्ठ-संख्या
●	भूमिका	.....	9
●	हिन्दी गद्य का विकास	.....	10
●	शुक्ल युग	.....	13
●	शुक्लोत्तर युग	.....	13
●	हिन्दी गद्य की विधाएँ	.....	15
●	हिन्दी गद्य के विकास से सम्बन्धित प्रश्न	.....	20
●	अध्ययन-अध्यापन	.....	25
1.	**आचार्य रामचन्द्र शुक्ल**	.....	27
	● मित्रता	.....	29
2.	**जयशंकर प्रसाद**	.....	35
	● ममता	.....	37
3.	**पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी**	.....	42
	● क्या लिखूँ	.....	44
4.	**डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद**	.....	49
	● भारतीय संस्कृति	.....	50
5.	**रामधारीसिंह 'दिनकर'**	.....	57
	● ईर्ष्या, तू न गयी मेरे मन से	.....	59
6.	**डॉ0 भगवतशरण उपाध्याय**	.....	65
	● अजन्ता	.....	67
7.	**जयप्रकाश भारती**	.....	71
	● पानी में चन्दा और चाँद पर आदमी	.....	73
●	**परिशिष्ट :** हिन्दी व्याकरण : शब्द रचना के तत्त्व	.....	78

हिन्दी काव्य

●	भूमिका	.....	90
●	हिन्दी पद्य साहित्य का इतिहास	.....	94
●	हिन्दी पद्य-साहित्य के इतिहास से सम्बन्धित प्रश्न	.....	100
●	अध्ययन-अध्यापन	.....	104
1.	**सूरदास** पद	.....	106
2.	**तुलसीदास** धनुषभंग, वन-पथ पर	.....	112
3.	**रसखान** सवैये, कवित्त	.....	119
4.	**बिहारीलाल** दोहे–भक्ति, नीति	.....	122
5.	**सुमित्रानन्दन पन्त** चींटी, चन्द्रलोक में प्रथम बार	.....	126
6.	**महादेवी वर्मा** हिमालय से, वर्षा सुन्दरी के प्रति	.....	132

7. **रामनरेश त्रिपाठी** 137
स्वदेश-प्रेम
8. **माखनलाल चतुर्वेदी** 141
पुष्प की अभिलाषा, जवानी
9. **सुभद्राकुमारी चौहान** 146
झाँसी की रानी की समाधि पर
10. **मैथिलीशरण गुप्त** 150
भारत माता का मन्दिर यह
11. **केदारनाथ सिंह** 154
नदी
12. **अशोक वाजपेयी** 158
युवा जंगल, भाषा एकमात्र अनन्त है
13. **श्याम नारायण पाण्डेय** 162
हल्दी घाटी
- **परिशिष्ट**
काव्य-सौन्दर्य के तत्त्व 165

संस्कृत

प्रथमः पाठः – वाराणसी 173
द्वितीयः पाठः – अन्योक्तिविलासः 176
तृतीयः पाठः – वीरः वीरेण पूज्यते 179
चतुर्थः पाठः – प्रबुद्धो ग्रामीणः 182
पञ्चमः पाठः – देशभक्तः चन्द्रशेखरः 185
षष्ठः पाठः – केन किं वर्धते? 188
सप्तमः पाठः – आरुणि श्वेतकेतु संवाद 191
अष्टमः पाठः – भारतीया संस्कृतिः 193
नवमः पाठः – जीवन-सूत्राणि 196
- **परिशिष्ट** : संस्कृत व्याकरण 199
- सन्धि 199
- शब्द-रूप : संज्ञा-शब्द 203
- शब्द-रूप : सर्वनाम-शब्द 204
- धातु-रूप 206
- हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद 210
- निबन्ध 223

खण्ड काव्य

1. मुक्तिदूत 253
2. ज्योति जवाहर 255
3. अग्रपूजा 257
4. मेवाड़ मुकुट 259
5. जय सुभाष 261
6. मातृभूमि के लिए 263
7. कर्ण 265
8. कर्मवीर भरत 268
9. तुमुल 270

●●

|| हिन्दी गद्य ||

भूमिका

➤ गद्य क्या है?

छन्द, ताल, लय एवं तुकबन्दी से मुक्त तथा विचारपूर्ण एवं वाक्यबद्ध रचना को 'गद्य' कहते हैं। गद्य शब्द 'गद्' धातु के साथ 'यत्' प्रत्यय जोड़ने से बनता है। 'गद्' का अर्थ होता है—बोलना, बतलाना या कहना। सामान्यतः दैनिक जीवन में प्रयुक्त होनेवाली बोलचाल की भाषा में गद्य का ही प्रयोग किया जाता है। गद्य का लक्ष्य विचारों या भावों को सहज, सरल एवं सामान्य भाषा में विशेष प्रयोजन सहित सम्प्रेषित करना है। ज्ञान-विज्ञान से लेकर कथा-साहित्य आदि की अभिव्यक्ति का माध्यम साधारण व्यवहार की भाषा गद्य ही है; जिसका प्रयोग सोचने, समझने, वर्णन, विवेचन आदि के लिए होता है। वक्ता जो कुछ सोचता है, उसे तत्काल गद्य के रूप में व्यक्त भी कर सकता है। ज्ञान-विज्ञान की समृद्धि के साथ ही गद्य की उपादेयता और महत्ता में वृद्धि होती जा रही है। किसी कवि या लेखक के हृदयगत भावों को समझने के लिए ज्ञान की आवश्यकता है और गद्य ज्ञान-वृद्धि का एक सफल साधन है। इसीलिए इतिहास, भूगोल, राजनीतिशास्त्र, धर्म, दर्शन, विज्ञान आदि के क्षेत्र में ही नहीं, अपितु नाटक, कथा-साहित्य आदि में भी इसका एकच्छत्र प्रभाव स्थापित हो गया है। यदि विचारपूर्वक देखा जाय तो आधुनिक हिन्दी-साहित्य की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटना गद्य का आविष्कार ही है और गद्य का विकास होने पर ही हमारे साहित्य की बहुमुखी उन्नति भी सम्भव हो सकी है।

हिन्दी गद्य के सम्बन्ध में यह धारणा है कि मेरठ और दिल्ली के आस-पास बोली जानेवाली खड़ीबोली के साहित्यिक रूप को ही हिन्दी गद्य कहा जाता है। भाषा-विज्ञान की दृष्टि से ब्रजभाषा, खड़ीबोली, कन्नौजी, हरियाणवी, बुन्देलखण्डी, अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी इन आठ बोलियों को हिन्दी गद्य के अन्तर्गत सम्मिलित किया गया है। हिन्दी गद्य के प्राचीनतम् प्रयोग हमें 'राजस्थानी' एवं 'ब्रजभाषा' में मिलते हैं।

➤ गद्य और पद्य में अन्तर

हिन्दी साहित्य को दो भागों में बाँटा गया है—(1) गद्य साहित्य तथा (2) पद्य (काव्य) साहित्य। विषय की दृष्टि से गद्य और पद्य में यह अन्तर है कि गद्य के विषय विचार-प्रधान और पद्य के विषय भाव-प्रधान होते हैं। दूसरी भाषाओं के समान इस भाषा के साहित्य में भी पद्य का अवतरण गद्य के बहुत पहले हुआ है। पद्य में कार्य की अनुभूति, उक्ति-वैचित्र्य, सम्प्रेषणीयता और अलंकार की प्रवृत्ति देखी जाती है, जबकि गद्य में लेखक अपने विचारों को अभिव्यक्त करता है। गद्य में तर्क, बुद्धि, विवेक, चिन्तन का अंकुश होता है तो पद्य में स्वतन्त्र कल्पना की उड़ान होती है। गद्य में शब्द, वाक्य, अर्थ आदि सभी प्रायः सामान्य होते हैं, जबकि पद्य में विशिष्ट। कविता शब्दों की नयी सृष्टि है, इसलिए इसका कोई भी शब्द कोशीय अर्थ से प्रतिबन्धित नहीं होता, जीवन की अनुभूतियों से उसका भावात्मक सम्बन्ध होता है, जबकि गद्य भावात्मक सन्दर्भों के स्थान पर उनके वस्तुनिष्ठ प्रतीकात्मक अर्थ ग्रहण करता है। गद्य को 'निर्माणात्मक अभिव्यक्ति' कहा गया है अर्थात् ऐसी अभिव्यक्ति जिसमें शब्द निर्माता के चारों ओर प्रयोग के लिए तैयार रहते हैं। गद्य की भाषा काव्य की अपेक्षा अधिक स्पष्ट, व्याकरणसम्मत और व्यवस्थित होती है। उक्ति-वैचित्र्य और अलंकरण की प्रवृत्ति भी गद्य की अपेक्षा काव्य में अधिक होती है। गद्य में विस्तार अधिक होने के कारण किसी बात को खोलकर कहने की प्रवृत्ति रहती है, जबकि काव्य में किसी बात को संकेत रूप में ही कहने की प्रवृत्ति होती है। गद्य में यथार्थ, वस्तुपरक और

तथ्यात्मक वर्णन पाया जाता है, जबकि काव्य में वर्णन सूक्ष्म, संकेतात्मक होता है। गद्य में विरला ही वाक्य अपूर्ण होता है, काव्य में विरला ही वाक्य पूर्ण होता है। इस प्रकार गद्य और पद्य विषय, भाषा, प्रस्तुति, शिल्प आदि की दृष्टि से अभिव्यक्ति के सर्वथा भिन्न दो रूप हैं और दोनों के दृष्टिकोण एवं प्रयोजन भी भिन्न होते हैं। गद्य में व्याकरण के नियमों की अवहेलना नहीं की जा सकती, जबकि पद्य में व्याकरण के नियमों पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता। यद्यपि ऐसा नहीं है कि गद्य में भावपूर्ण चिन्तनशील मनःस्थितियों की अभिव्यक्ति नहीं हो सकती और पद्य में विचारों की अभिव्यक्ति नहीं हो सकती, किन्तु सामान्यतः गद्य एवं पद्य की प्रकृति उपर्युक्त प्रकार की ही होती है।

➤ हिन्दी गद्य का स्वरूप

विषय और परिस्थिति के अनुरूप शब्दों का सही स्थान-निर्धारण तथा वाक्यों की उचित योजना ही उत्तम गद्य की कसौटी है। यद्यपि वर्तमान में प्रचलित हिन्दी भाषा खड़ीबोली का परिनिष्ठित एवं साहित्यिक रूप है, परन्तु खड़ीबोली स्वयं अपने-आपमें कोई बोली नहीं है। इसका विकास कई क्षेत्रीय बोलियों के समन्वय के फलस्वरूप हुआ है। विद्वानों ने इसके प्राचीन रूप पर आधारित तत्त्वों की खोज करने के बाद यह माना है कि खड़ीबोली का विकास मुख्यतः ब्रजभाषा एवं राजस्थानी गद्य से हुआ है। कुछ विद्वान् इसको दक्खिनी एवं अवधी गद्य का सम्मिलित रूप भी मानते हैं। आज हिन्दी गद्य का जो साहित्यिक रूप है, उसमें कई क्षेत्रीय बोलियों का विकास दृष्टिगोचर होता है।

भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भली-भाँति प्रकट करता है और दूसरों के विचार स्वयं समझता है। भाषा के माध्यम से वह अपने विचारों, भावों, अनुभूतियों आदि को दो प्रकार से व्यक्त करता है—पद्य में या गद्य में। उसकी अभिव्यक्ति के इन दो रूपों के सृजन के कारक तत्त्व हैं—भावना-प्रवण हृदय और विचारकेन्द्र मस्तिष्क। हृदय और मस्तिष्क की न्यूनाधिक सक्रियता के फलस्वरूप ही अभिव्यक्ति के इन रूपों को हम क्रमशः गद्य-साहित्य और पद्य (काव्य) साहित्य कहते हैं। गद्य हमारे दैनिक जीवन में प्रयुक्त होनेवाली भाषा का नाम है और उसका छन्दोबद्ध रूप, जिसमें क्रमबद्ध ताल और लय की योजना के साथ रागात्मक मनोभावों की कलापूर्ण अभिव्यंजना उपस्थित की जाती है, पद्य या काव्य कहलाता है।

गद्य वाक्यबद्ध विचारात्मक रचना होती है। इसका लक्ष्य विचारों या भावों को सहज, सरल, सामान्य भाषा में विशेष प्रयोजन सहित सम्प्रेषित करना है। वक्तव्य का पूर्ण यथातथ्य और प्रभावोत्पादक सम्प्रेषण गद्यकार का प्रमुख दायित्व है। गद्य की भाषा-प्रकृति व्यावहारिक होती है। वक्ता जो कुछ सोचता है, उसे तत्काल अनायास व्यक्त भी कर सकता है। काव्य-भाषा की भाँति इसमें भंगिमा, वक्रता, अलंकृति, लय, तुक, यति, प्रवाह आदि लाने के लिए प्रयत्न नहीं करना पड़ता। गद्य में संवेदनशीलता की अपेक्षा बोधवृत्ति की प्रधानता रहती है। अतएव वर्णन, कथा, विचार, व्याख्या, अनुसन्धान के लिए यह सर्वाधिक समर्थ एवं उपयुक्त माध्यम है। ज्ञान-विज्ञान की समृद्धि के साथ ही गद्य की उपादेयता और महत्ता में वृद्धि होती जा रही है। इतिहास, भूगोल, राजनीतिशास्त्र, धर्म, दर्शन एवं विज्ञान के क्षेत्र में ही नहीं, नाटक, कथा-साहित्य आदि में भी इसका एकच्छत्र राज्य स्थापित हो चुका है। आज महाकाव्यों का युग नहीं रहा, उपन्यासों का युग है। भारतेन्दु युग से ही प्रभूत मात्रा में गद्य-साहित्य पढ़ा-लिखा जाने लगा। सम्प्रति हमारा साहित्य अधिकांशतः गद्य में ही लिखा जा रहा है।

➤ हिन्दी गद्य का विकास

गद्य का प्रथम विकास सामान्य बोलचाल की भाषा के रूप में होता है। इतिहास, दर्शन तथा विभिन्न ज्ञान-विज्ञान की अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में जिस भाषा का प्रयोग होता है, उसे गद्य की मध्यम स्थिति माना जा सकता है। साहित्य में जिस गद्य-रूप का उपयोग होता है, उसे अभिव्यंजना, सौष्ठव आदि की दृष्टि से श्रेष्ठ मानना चाहिए। विभिन्न लेखकों और कवियों का न केवल वैचारिक जगत् अपना होता है, बल्कि अपने विचारों, भावों, अनुभूतियों आदि को अभिव्यक्त करने के लिए उन्हें अपनी भाषा की भी सृष्टि करनी पड़ती है। क्या प्रेमचन्द, क्या प्रसाद और क्या शुक्ल जी, प्रायः सभी को अपने-अपने मनोजगत् की सृष्टि के साथ ही अपनी-अपनी भाषा-शैली भी विकसित करनी पड़ी है।

भाषा-रूपों के विकास की दृष्टि से इसकी तीन कोटियाँ उपलब्ध हैं—

(1) इतिहास, जीवनी, यात्रा आदि के लिए **वर्णनात्मक;** (2) विज्ञान, सौन्दर्यशास्त्र, आलोचना, दर्शन, विधि आदि के

लिए **विवेचनात्मक;** (3) ललित निबन्ध, गद्य गीत, नाटक आदि के लिए **भावात्मक**। विविध विषयों के अनुरूप गद्य-प्रवाह, स्पष्टता, चित्रमयता, अलंकरण आदि की मात्राओं में भी कमी-वेशी करनी पड़ी है। गद्य की उपर्युक्त कोटियों में अभेद्य दीवार खड़ी नहीं की जा सकती; लेखक की रुचि, प्रयोजन, मन की अवस्था, व्यक्तिगत अनुभूति आदि के कारण वे एक-दूसरे में अंतःप्रविष्ट होती हैं। आचार्य शुक्ल के एक ही निबन्ध का प्रारम्भ जहाँ विवेचनात्मक होता है, वहीं बीच-बीच में भावात्मक कोटि की भाषा के भी दर्शन हो जाते हैं। इस प्रकार प्रत्येक शाखा और विधा ने आवश्यकतानुसार अपनी विशिष्ट विधि और शैली का विकास किया है, साथ ही परस्पर उनका आदान-प्रदान भी चलता रहता है।

संसार की दूसरी भाषाओं के समान हिन्दी भाषा के साहित्य में भी पद्य का अवतरण गद्य के बहुत पहले हुआ है। पद्य की इस प्राचीनता के अनेक कारण हैं। एक प्रमुख कारण तो यह है कि आरम्भ में मानव को अपनी भावप्रधान प्रकृति के कारण पद्य-रचना में ही वास्तविक आनन्द की अनुभूति होती थी। मन की प्रसन्नता के लिए कविता से बढ़कर दूसरा साधन उसे कहाँ मिलता? दूसरा कारण यह है कि उस समय टंकण-मुद्रण आदि साधनों के अभाव में विचारों को सँजोये रख सकना सम्भव नहीं था। पद्य चूँकि निश्चित लय-ताल में होने के कारण सरलता से कण्ठस्थ हो जाता है, इसलिए प्राचीनकाल के मानव ने ज्योतिष, विज्ञान, आयुर्वेद जैसे विषयों से सम्बन्धित अनुभव-सामग्री को भी पद्य का स्वरूप देकर भविष्य की पीढ़ियों के लिए संचित कर लिया था। परिणामतः कई शताब्दियों तक पद्य का ही प्राधान्य रहा और ब्रजभाषा-गद्य के कुछ छुटपुट प्रयत्नों को अपवाद मान लें तो उसका वास्तविक जन्म 19वीं शताब्दी में ही हुआ, परन्तु पिछले 100 वर्षों में जिस त्वरित गति से उसके चरण बढ़े हैं, जिन विविध दिशाओं में उसने मानव-अनुभूतियों का प्रसार किया है, उसे देखकर आश्चर्य होता है।

हिन्दी गद्य के आविर्भाव के सम्बन्ध में विद्वानों के अलग-अलग मत हैं। कुछ 10वीं शताब्दी मानते हैं, तो बहुतेरे 13वीं शताब्दी। 19वीं शताब्दी के नवजागरण काल में हिन्दी गद्य का वास्तविक स्वरूप उस समय स्पष्ट दिखायी देने लगा जब हमारा देश मध्यकालीन रूढ़ियों से मुक्त होता हुआ पश्चिम से आती हुई नवीन सांस्कृतिक चेतना की लहरों को आत्मसात् कर रहा था। नये आधुनिक विचारों, नवीन शिक्षा पद्धति और नये वैज्ञानिक आविष्कारों का प्रभाव हमारे सामाजिक जीवन पर पड़ रहा था; अतः साहित्य में उनकी प्रतिध्वनि स्वाभाविक थी। इन नवीन परिस्थितियों के साथ ही शासन सम्बन्धी आवश्यकताएँ भी गद्य के नवीन माध्यम की माँग कर रही थीं।

हिन्दी गद्य के प्राचीनतम प्रयोग राजस्थानी ब्रजभाषा में मिलते हैं। राजस्थानी गद्य हमें 10वीं शताब्दी के दान-पत्रों, पट्टे-परवानों, टीकाओं व अनुवाद-ग्रन्थों में देखने को मिलता है। ब्रजभाषा के गद्य का सूत्रपात संवत् 1400 वि0 के आस-पास हुआ। कृष्ण-भक्ति धारा के कवियों तथा भक्तों ने उसके विकास और संवर्द्धन में विशेष योग दिया। 17वीं शताब्दी तक की लिखी हुई जो रचनाएँ उपलब्ध हैं, उनमें गोस्वामी विट्ठलनाथ का '**शृंगार रस-मण्डन**', गोकुलनाथ जी के '**चौरासी वैष्णवन की वार्त्ता**' और '**दो सौ बावन वैष्णवन की वार्त्ता**', नाभादासजी का '**अष्टयाम**', बैकुण्ठमणि शुक्ल के '**अगहन माहात्म्य**' और **वैशाख माहात्म्य** तथा लल्लूलाल कृत '**माधव विलास**' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन्हीं के साथ टीकाओं की परम्परा भी चलती रही।

खड़ीबोली गद्य के प्रथम दर्शन अकबर के दरबारी कवि गंग द्वारा लिखित '**चन्द छन्द बरनन की महिमा**' नामक ग्रन्थ और फिर '**कुतुबशतक**' तथा स्वामी प्राणनाथ के ग्रन्थों में होते हैं, परन्तु उसका वास्तविक प्रादुर्भाव कई सौ वर्षों बाद 19वीं शताब्दी से ही मानना चाहिए, जब उसकी क्रमबद्ध परम्परा स्थापित हुई। 19वीं शताब्दी के कुछ पूर्व ही उस धारा के आगमन के संकेत हमें मिलने लगते हैं। ये आरम्भिक प्रयोग 18वीं शताब्दी के मध्य और उत्तरार्द्ध में रामप्रसाद निरंजनी कृत '**योग वाशिष्ठ**', दौलतराम कृत '**पद्म पुराण**' के भाषानुवाद, मथुरानाथ शुक्ल के '**पंचांग दर्शन**', मुंशी सदासुखलाल के '**सुखसागर**', 'इंशाअल्ला खाँ की '**रानी केतकी की कहानी**', लल्लूलाल के '**प्रेमसागर**' व सदल मिश्र के '**नासिकेतोपाख्यान**' आदि ग्रन्थों में मिलते हैं। खड़ीबोली गद्य को एक साथ बढ़ाने के महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए अन्तिम चार लेखकों—सदासुखलाल, इंशाअल्ला खाँ, लल्लूलाल और सदल मिश्र को विशेष श्रेय दिया जाता है। इन चारों लेखकों का रचना-काल सन् 1803 ई0 के आस-पास ही ठहरता है।

मुंशी सदासुखलाल का गद्य पुराने कथावाचकों जैसा पण्डिताऊपन लिये हुए था। लल्लूलाल की भाषा पर ब्रज का प्रभाव था। सदल मिश्र का गद्य अपेक्षाकृत अधिक स्वस्थ, संयत था, पर पूरबी प्रयोगों की अधिकता का दोष उनकी भाषा

में भी था। इंशाअल्ला खाँ की भाषा में ठेठ खड़ीबोली के दर्शन होते हैं। उसमें न तो विदेशी शब्दों का प्रयोग हुआ है और न संस्कृत और ब्रजभाषा आदि के शब्दों का। उसमें गम्भीरता की कमी और पद्यात्मकता की गन्ध मिलती है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इंशाअल्ला खाँ की भाषा को 'रंगीन और चुलबुली' कहा है।

खड़ीबोली गद्य के प्रसार में ईसाई पादरियों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। उन्होंने बाइबिल का खड़ीबोली में अनुवाद कराया और उसे उत्तर भारत के विभिन्न स्थानों में वितरित कर अपने धर्म के साथ ही हिन्दी का भी प्रसार किया। आगे चलकर आर्य-समाज के आन्दोलन से भी हिन्दी प्रसार को अपूर्व शक्ति मिली। स्वामी दयानन्द ने अपने 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना हिन्दी में ही की थी।

19वीं शताब्दी के मध्य में दो और लेखक सामने आये। **राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द'** (सन् 1823-1895) ने हिन्दी गद्य का अरबी-फारसी मिश्रित रूप प्रतिष्ठित करना चाहा और इसके विरुद्ध **राजा लक्ष्मण सिंह** (सन् 1826-1896) ने विशुद्ध संस्कृतगर्भित हिन्दी गद्य को प्रश्रय दिया। उन्होंने उर्दू, अंग्रेजी के दैनिक व्यवहार में प्रचलित शब्दों तक को अपनी भाषा से दूर रखा। इसके अतिरिक्त आगरा की बोली का प्रभाव भी उनकी भाषा पर कम नहीं था। इसी समय देश के क्षितिज पर **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** (1850-1885) का उदय हुआ। भारतेन्दु ने अपनी अनोखी प्रतिभा और महान् व्यक्तित्व से तत्कालीन समाज को अद्‌भुत रूप से प्रभावित किया। उन्होंने पूर्ववर्ती लेखकों की एकांगिता और भाषा-सम्बन्धी दोषों से बचते हुए हिन्दी गद्य का स्वच्छ, सन्तुलित और शिष्ट रूप सामने रखा। उन्होंने संस्कृत के सरल शब्दों को लेने के साथ-साथ सर्वसाधारण में प्रचलित विदेशी शब्दों को भी ग्रहण किया, तद्‌भव और देशज शब्द तो थे ही। इसके अतिरिक्त कहावतों और मुहावरों के प्रयोग से उन्होंने भाषा को सजीवता प्रदान की। उनके नेतृत्व में हिन्दी साहित्य को नये क्षितिज प्राप्त हुए। वे वस्तुतः आधुनिकता के जनक थे। ललित साहित्य की अनेक विधाओं के अतिरिक्त उपयोगी साहित्य के अन्तर्गत आनेवाले विभिन्न विषयों की ओर भी उनकी दृष्टि गयी। यह उन्हीं की प्रेरणा थी कि खड़ीबोली हिन्दी की बाल्यावस्था में ही इतिहास, भूगोल, विज्ञान, धर्म, पुराण, उपन्यास, नाटक, निबन्ध, पुरातत्त्व आदि न जाने कितने विषयों की ओर हिन्दी के लेखक प्रवृत्त हुए। भारतेन्दु एक व्यक्ति नहीं, वरन् संस्था थे। उन्होंने कितने ही लेखकों को जन्म दिया, जिनमें प्रमुख हैं—**श्रीनिवासदास** (1851-1887), **बालकृष्ण भट्ट** (1844-1914), **प्रतापनारायण मिश्र** (1856-1894), **राधाकृष्णदास** (1865-1907), **कार्तिकप्रसाद खत्री** (1851-1904), **राधाचरण गोस्वामी** (1850-1925), **बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'** (1855-1923) आदि। भारतेन्दु-युग का गद्य अत्यन्त सजीव है। इस युग के लेखकों में अपनी भाषा, अपनी जाति और अपने राष्ट्र के उत्थान के लिए बड़ी अकुलाहट थी और उन्होंने नव युग की इस नयी लहर को घर-घर पहुँचाने का अथक प्रयास किया था।

भारतेन्दु-युग के बाद 20वीं शताब्दी में जिस एक व्यक्ति ने हिन्दी गद्य के निर्माण व प्रसार के लिए सर्वाधिक स्तुत्य कार्य किया, उसका नाम **महावीरप्रसाद द्विवेदी** है। इण्डियन प्रेस, प्रयाग से 'सरस्वती' मासिक पत्रिका का प्रकाशन हिन्दी साहित्य की महत्त्वपूर्ण घटना थी। **आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी** इसके यशस्वी सम्पादक थे। इस पत्रिका के माध्यम से द्विवेदीजी ने भाषा के परिमार्जन का अभूतपूर्व कार्य सम्पन्न किया। **द्विवेदी युग** के प्रवर्तक भी यही हैं। उनकी प्रेरणा और निर्देशन से ललित और उपयोगी दोनों प्रकार का साहित्य विपुल परिमाण में लिखा गया। 'सरस्वती' ने हिन्दी भाषा का एक स्तर प्रतिष्ठित किया। भाषा के शब्द-भण्डार की वृद्धि के साथ-साथ उसकी अभिव्यञ्जना-शक्ति की भी अभिवृद्धि हुई। विविध प्रकार की भाषा-शैलियों के जन्म के साथ-साथ गद्य के विविध रूपों का विकास हुआ।

उपन्यास साहित्य में देवकीनन्दन खत्री के चमत्कारप्रधान तिलिस्मी उपन्यासों की परम्परा से हटकर मानव-चरित्र की ओर इस युग के रचनाकार सचेष्ट हुए; जैसे—जासूसी, सामाजिक, ऐतिहासिक, पौराणिक, चरित्रप्रधान, भावप्रधान सभी प्रकार के उपन्यास इस युग में लिखे गये। द्विवेदी युग के उपन्यासकारों में किशोरीलाल गोस्वामी, गोपालराम गहमरी, वृन्दावनलाल वर्मा, विश्वम्भरनाथ 'कौशिक' और चतुरसेन शास्त्री उल्लेखनीय हैं।

कहानी का तो जन्म ही 'सरस्वती' से हुआ। पहले अंग्रेजी और संस्कृत साहित्य की प्रसिद्ध कृतियों के कहानी-रूपान्तर 'सरस्वती' में प्रकाशित हुए। इसके बाद हिन्दी की मौलिक कहानी ने जन्म लिया और धीरे-धीरे घटनाप्रधान, चरित्रप्रधान, वातावरणप्रधान, भावनाप्रधान कहानियाँ प्रकाश में आयीं। 'प्रसाद', 'कौशिक', चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' और सुदर्शन इस युग के प्रतिनिधि कहानीकार हैं।

द्विवेदी युग में द्विवेदी जी के अतिरिक्त माधव मिश्र, गोविन्दनारायण मिश्र, पद्मसिंह शर्मा, सरदार पूर्णसिंह,

श्यामसुन्दर दास, मिश्र-बन्धु, लाला भगवानदीन, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी आदि लेखकों ने योगदान दिया।

पत्र-पत्रिकाओं में '**सरस्वती**' के अतिरिक्त '**नागरी प्रचारिणी पत्रिका**', '**इन्दु**', '**माधुरी**', '**मर्यादा**', '**सुधा**', '**जागरण**', '**हंस**', '**प्रभा**', '**कर्मवीर**', '**विशाल भारत**' आदि ने हिन्दी साहित्य के सर्वतोमुखी विकास में बहुत बड़ी भूमिका प्रस्तुत की।

➤ शुक्ल (छायावादी) युग

विभिन्न विधाओं के लेखक एवं उनकी कृति

लेखक	कृति	विधा
● आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	चिन्तामणि	निबन्ध
● गुलाब राय	ठलुआ क्लब	निबन्ध
● प्रेमचन्द	गबन	उपन्यास
● चतुरसेन शास्त्री	आत्मदाह	उपन्यास
● जयशंकर प्रसाद	पुरस्कार	कहानी
● प्रेमचन्द	पंच परमेश्वर	कहानी
● जयशंकर प्रसाद	चन्द्रगुप्त	नाटक
● हरिकृष्ण प्रेमी	प्रतिशोध	नाटक

सन् 1919 से 1938 ई० तक के काल को हिन्दी-गद्य-साहित्य में **पं० रामचन्द्र शुक्ल** के महत्त्वपूर्ण योगदान के कारण 'शुक्ल युग' नाम दिया गया। इस युग को 'छायावादी युग', 'प्रसाद युग', 'प्रेमचन्द युग' के नामों से भी जाना जाता है। सन् 1919 ई० में पंजाब के जलियाँवाला बाग काण्ड ने राष्ट्रीय चेतना को और दृढ़ता प्रदान की। युवकों का कल्पनाशील मानस कुछ कर गुजरने के लिए तड़पने लगा। इस युग में पराधीनता और विवशता की अनुभूति से आकुल होकर यदि कभी वेदना और पीड़ा के गीत गाये गये, तो दूसरे ही क्षण स्वाधीनता के लिए सतत संघर्ष की बलवती प्रेरणा से उत्साहित होकर स्फूर्ति और आत्मविश्वास की भावना को मुखरित किया गया। इस युग की सीमा में रचित गद्य अधिक कलात्मक हो गया है। वह चित्रण-प्रधान, लाक्षणिक, अलंकृत और कवित्वपूर्ण हो गया है। उसमें अनुभूति की सघनता और भावों की तरलता है। उसकी प्रकृति अन्तर्मुखी हो गयी है। रायकृष्णदास, वियोगी हरि,डॉ० रघुवीर सिंह, माखनलाल चतुर्वेदी, जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, सुमित्रानन्दन पन्त, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', नन्ददुलारे वाजपेयी, बेचन शर्मा 'उग्र', शिवपूजन सहाय आदि गद्य-लेखकों ने छायावादयुगीन गद्य साहित्य को समृद्ध किया है।

शुक्ल युग के प्रमुख **निबन्धकारों** में बाबू गुलाबराय, प्रेमचन्द, श्यामसुन्दर दास, जयशंकर प्रसाद, पन्त, निराला, राहुल सांकृत्यायन, वियोगी हरि, हजारीप्रसाद द्विवेदी, वासुदेवशरण अग्रवाल, डॉ० सम्पूर्णानन्द, शान्तिप्रिय द्विवेदी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। प्रमुख **एकांकीकारों** में भुवनेश्वर प्रसाद, जयशंकर प्रसाद, धर्मप्रकाश आनन्द, गोविन्दवल्लभ पन्त, चतुरसेन शास्त्री, डॉ० रामकुमार वर्मा, उपेन्द्रनाथ अश्क, उदयशंकर भट्ट, सेठ गोविन्ददास, लक्ष्मीनारायण मिश्र, विष्णु प्रभाकर एवं भगवतीचरण वर्मा आदि हैं। इस युग के **उपन्यासकारों** में प्रेमचन्द, प्रसाद, चतुरसेन शास्त्री, भगवतीचरण वर्मा, बाबू दुर्गाप्रसाद खत्री आदि हैं। शुक्ल युग के **कहानीकारों** में प्रेमचन्द, उग्र, रायकृष्णदास, विनोद शंकर व्यास, सियारामशरण गुप्त, गोविन्दवल्लभ पन्त, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी के नाम उल्लेखनीय हैं।

इस युग के अन्तर्गत नाटक के क्षेत्र में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण योगदान जयशंकर प्रसाद के ऐतिहासिक नाटकों का है। उनके नाटकों में देश के प्राचीन गौरव के चित्र हैं और उनमें संस्कृति और राष्ट्र-प्रेम की भावनाओं के रंग पर्याप्त गहरे हैं। चरित्र-चित्रण, कथोपकथन व उद्देश्य की दृष्टि से 'प्रसाद' के नाटकों की महत्ता असन्दिग्ध है। 'प्रसाद' के परवर्ती **नाटककारों** में लक्ष्मीनारायण मिश्र, हरिकृष्ण प्रेमी, रामकुमार वर्मा, सेठ गोविन्ददास, उदयशंकर भट्ट, गोविन्दवल्लभ पन्त व उपेन्द्रनाथ 'अश्क' के नाम उल्लेखनीय हैं।

समालोचना और इतिहास-लेखन में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के विराट् योगदान के पश्चात् आलोचना-क्षेत्र में नन्ददुलारे वाजपेयी, हजारीप्रसाद द्विवेदी, विश्वनाथप्रसाद मिश्र, डॉ० नगेन्द्र और डॉ० रामविलास शर्मा एवं इतिहास-लेखन के लिए डॉ० रामकुमार वर्मा, डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त, डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, डॉ० मोहन अवस्थी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

➤ शुक्लोत्तर (छायावादोत्तर) युग

सन् 1936 ई० के बाद देश की स्थिति में तेजी से परिवर्तन हुआ और हम कल्पना के लोक से उतरकर ठोस जमीन पर आने की चेष्टा करने लगे थे। राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना से प्रेरित लेखकों ने यथार्थवादी जीवन-दर्शन को महत्त्व देना

आरम्भकिया। छायावादी युग के कई लेखक नयी भूमि पर पदार्पण कर नवीन युग-चेतना के अनुसार साहित्य-रचना में प्रवृत्त हुए। फलस्वरूप 1938 ई० के बाद के साहित्य को छायावादोत्तर कहा गया है। इस युग में साहित्यकारों की दो पीढ़ियाँ साहित्य-रचना में प्रवृत्त हैं। एक पीढ़ी उन साहित्यकारों की है जो स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पूर्व से लिखते आ रहे थे और उसके बाद भी सक्रिय रहे हैं। दूसरी पीढ़ी उन लेखकों की है जो स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद साहित्य-सृजन में प्रवृत्त हुए हैं। पहली पीढ़ी में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, शान्तिप्रिय द्विवेदी, रामधारीसिंह 'दिनकर', यशपाल, उपेन्द्रनाथ 'अश्क', भगवतीचरण वर्मा, अमृतलाल नागर, जैनेन्द्र, अज्ञेय, नगेन्द्र, रामवृक्ष बेनीपुरी, बनारसीदास चतुर्वेदी, वासुदेवशरण अग्रवाल, कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर', भगवतशरण उपाध्याय आदि गद्य लेखक हैं। दूसरी पीढ़ी में विद्यानिवास मिश्र, हरिशंकर परसाई, फणीश्वरनाथ 'रेणु', कुबेरनाथ राय, धर्मवीर भारती, शिवप्रसाद सिंह आदि उल्लेखनीय हैं।

विभिन्न विधाओं के लेखक एवं उनकी कृति

लेखक	कृति	विधा
● डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी	कल्पलता	निबन्ध
● जैनेन्द्रकुमार	जड़ की बात	निबन्ध
● यशपाल	झूठा-सच	उपन्यास
● भगवतीचरण वर्मा	भूले-बिसरे चित्र	उपन्यास
● इलाचन्द्र जोशी	आहुति	कहानी
● राजेन्द्र यादव	प्रतीक्षा	कहानी
● उपेन्द्रनाथ अश्क	जय-पराजय	नाटक

गद्य-लेखकों की उक्त दोनों पीढ़ियों ने हिन्दी गद्य को सशक्त बनाया है, उसकी शब्द-सम्पदा में वृद्धि की है। उसे जीवन की बाह्य परिस्थितियों, सामाजिक सम्बन्धों, विसंगतियों, आधुनिक मानव के आन्तरिक द्वन्द्वों एवं तनावों को व्यक्त करने में सक्षम बनाया है, अनेक नवीन कलात्मक गद्य-विधाओं का विकास किया है और सब मिलाकर उसे राष्ट्रीय गरिमा प्रदान की है।

शुक्लोत्तर युग के निबन्धकारों में मानवतावादी दृष्टिकोण के सशक्त प्रतिपादक आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी सर्वश्रेष्ठ निबन्धकार हैं। यात्रा सम्बन्धी निबन्धकारों में राहुल सांकृत्यायन और देवेन्द्र सत्यार्थी के नाम उल्लेखनीय हैं। प्रभाकर माचवे, कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर', धर्मवीर भारती, अज्ञेय, दिनकर आदि ने भी इस क्षेत्र में कार्य किया। पं० बनारसीदास चतुर्वेदी का नाम संस्मरणात्मक निबन्धकारों में अग्रगण्य है।

इस युग के **कहानीकारों** में अज्ञेय, जैनेन्द्रकुमार, इलाचन्द्र जोशी, यशपाल, उपेन्द्रनाथ अश्क, भगवतीचरण वर्मा, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, विष्णु प्रभाकर, अमृतलाल नागर आदि हैं। **उपन्यासकारों** में यशपाल, राहुल सांकृत्यायन, नागार्जुन, रांगेय राघव, उपेन्द्रनाथ, अश्क, धर्मवीर भारती, फणीश्वरनाथ 'रेणु' आदि का नाम इस युग के अन्तर्गत लिया जा सकता है। लक्ष्मीनारायण लाल, उपेन्द्रनाथ अश्क, डॉ० रामकुमार वर्मा, धर्मवीर भारती, रामवृक्ष बेनीपुरी, रांगेय राघव तथा वृन्दावनलाल वर्मा इस युग के ऐसे **नाटककार** हैं, जिन्होंने सामाजिक समस्याओं को अपने नाटकों का विषय बनाया।

प्रगतिवादी युग में सहज, व्यावहारिक और अलङ्कारविहीन गद्य की प्रतिष्ठा हुई। उसमें भावुकतापूर्ण अभिव्यक्ति का स्थान सतेज और चुटीली उक्तियों ने लिया। डॉ० गमविलास शर्मा, शिवदानसिंह चौहान, प्रकाशचन्द्र गुप्त इस युग के लेखक हैं। रेखाचित्र और संस्मरण-लेखकों में पद्मसिंह शर्मा, बनारसीदास चतुर्वेदी, महादेवी वर्मा, रामवृक्ष बेनीपुरी और कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

हिन्दी में इधर कुछ उत्कृष्ट साहित्यिक जीवन-चरित्र और आत्मकथाएँ प्रकाशित हुई हैं। इनमें अमृत राय की 'कलम का सिपाही' और डॉ० रामविलास शर्मा की 'निराला की साहित्य-साधना' उत्कृष्ट कृतियाँ हैं। **आत्मकथाओं** में **डॉ० राजेन्द्र प्रसाद** की आत्मकथा के बाद **पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'** की **'अपनी खबर'** और **बच्चन** की **'क्या भूलूँ क्या याद करूँ'** व **'नीड़ का निर्माण'** आदि कृतियाँ लोकप्रिय हुई हैं।

आज निबन्ध, नाटक, कहानी, उपन्यास आदि के अतिरिक्त डायरी, रिपोर्ताज, फैण्टेसी, रेडियोरूपक आदि कितनी ही नयी विधाओं के अन्तर्गत उत्तमोत्तम साहित्य की रचना हो रही है। इसके अतिरिक्त विभिन्न विश्वविद्यालयों में प्रतिवर्ष जो शोध-प्रबन्ध निकल रहे हैं, उनके द्वारा वैज्ञानिक विवेचन, विश्लेषण तथा मूल्यांकन के लिए पूर्ण सक्षम हिन्दी गद्य का स्वरूप विकसित हो रहा है। अब हिन्दीतर प्रदेशों के लेखक भी हिन्दी में रुचि लेने लगे हैं। विदेशों में भी हिन्दी का प्रचार बढ़ रहा है। हिन्दी का भविष्य उज्ज्वल है और उसके विश्व-स्तर पर प्रतिष्ठित होने की सम्भावना बढ़ गयी है।

|| हिन्दी गद्य की विधाएँ ||

➤ निबन्ध

निबन्ध वह गद्य विधा है, जिसमें लेखक सीमित आकार में किसी विषय की सर्वांगीण, स्वच्छन्द एवं सुव्यवस्थित व्याख्या प्रस्तुत करता है। गद्य की नवीन विधाओं में यह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तथा विकसित विधा है। आलोचकों ने निबन्ध को वास्तव में गद्य की कसौटी कहा है। निबन्ध का प्रयोग दार्शनिक तथा बौद्धिक अभिव्यक्ति के लिए होता था, किन्तु आधुनिक हिन्दी निबन्ध संस्कृत के निबन्ध से पूर्णतया भिन्न है तथा अंग्रेजी के 'एस्से' के अधिक निकट है। गद्य की भाषा की अभिव्यञ्जना-शक्ति का सबसे अधिक प्रसार इसी विधा से होता है। इसके विषय की सीमा मानव-जीवन के समान ही विस्तृत है। यद्यपि इसमें बुद्धि-तत्त्व की प्रधानता रहती है, तथापि उसका सम्बन्ध हृदय-तत्त्व से बना रहता है। निबन्ध में लेखक का व्यक्तित्व प्रमुख होता है। यह निबन्धकार के मानस का उस समय का चित्र है, जिस समय वह किसी विषय से प्रभावित होता है। इसमें लेखक किसी भी विषय का पूर्ण विवेचन, विश्लेषण, परीक्षण, व्याख्या तथा मूल्यांकन करता है। विषय तथा शैली के अनुसार इसके चार भेद होते हैं—

(i) विचारात्मक निबन्ध—इस प्रकार के निबन्ध में बुद्धि-तत्त्व की प्रधानता होती है तथा विचार कस-कसकर भरे जाते हैं। इसमें तर्कपूर्ण विवेचन, विश्लेषण एवं गवेषणा का आधिपत्य होता है तथा विषय भी अधिकांश में दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, शास्त्रीय, विवेचनात्मक आदि होते हैं। इसके लेखन के लिए चिन्तन, मनन तथा अध्ययन की अधिक अपेक्षा होती है। प्रस्तुत संकलन में रामचन्द्र शुक्ल कृत **'मित्रता'**, डॉ० राजेन्द्र प्रसाद का **'भारतीय संस्कृति'** इसी प्रकार के निबन्ध हैं।

(ii) भावात्मक निबन्ध—इन निबन्धों में हृदय-तत्त्व अथवा रागात्मकता का प्राधान्य होता है। इनका लक्ष्य पाठक की बुद्धि की अपेक्षा उसके हृदय को प्रभावित करना होता है। इसकी भाषा सरल, सुन्दर, ललित तथा मधुर होती है तथा भावों को उत्कर्ष प्रदान करने के लिए कल्पना तथा अलङ्कारों का भी समुचित प्रयोग किया जाता है। इनका वाक्य-विन्यास सरल तथा शैली कवित्वपूर्ण होती है।

(iii) वर्णनात्मक निबन्ध—इन निबन्धों में किसी भी वर्णनीय वस्तु, स्थान, व्यक्ति, दृश्य आदि का निरीक्षण के आधार पर आकर्षक, सरस तथा रमणीय रूप में वर्णन होता है। इनकी शैली दो प्रकार की होती है। एक में यथार्थ वर्णन तथा दूसरी में अलंकृत वर्णन होता है। यथार्थ वर्णन सूक्ष्म निरीक्षण तथा निजी अनुभूति के आधार पर होता है तथा अलंकृत वर्णन में कल्पना का प्रयोग होता है। इन निबन्धों में चित्रात्मकता, रोचकता, कौतूहल तथा मानसिक प्रत्यक्षीकरण कराने की क्षमता होती है। इनकी शैली भी प्रायः सरस, सुबोध तथा सरल होती है।

(iv) विवरणात्मक निबन्ध—इन निबन्धों में प्रायः ऐतिहासिक तथा सामाजिक घटनाओं, स्थानों, दृश्यों, यात्राओं तथा जीवन के अन्य विविध कार्य-कलापों का विवरण दिया जाता है। इनमें आख्यानात्मकता का पुट रहता है तथा विषयवस्तु के प्रत्येक ब्योरे का सुसम्बद्ध विवरण रोचक, हृदयग्राही तथा क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इनकी शैली सरल, आकर्षक, भावानुकूल, व्यावहारिक तथा चित्रात्मक होती है। प्रस्तुत संकलन में 'अजन्ता' इस प्रकार के निबन्ध का उदाहरण है।

➤ कहानी

कहानी उस गद्य रचना को कहते हैं, जिसमें पात्रों के चरित्र-चित्रण एवं घटनाओं के माध्यम से मानव या समाज के किसी आदर्श, चरित्र, भाव या गुण विशेष को संक्षिप्त या कलात्मक रूप में प्रस्तुत किया जाता है। यह आधुनिक साहित्य की सबसे अधिक लोकप्रिय विधा है। इसका लक्ष्य किसी पात्र, घटना, भाव, संवेदना आदि की मार्मिक अभिव्यञ्जना करना होता है। इसका

शीर्षक आकर्षक तथा रोचक होता है जो कहानी के मूल भाव अथवा संवेदना की व्यञ्जना करने में समर्थ होता है। कहानी तथा उपन्यास की विधा एक-दूसरे से भिन्न है। कहानी कलात्मक छोटी रचना होती है, जो बड़े-से-बड़े भाव की व्यञ्जना करने में समर्थ होती है। इसका आरम्भ तथा अन्त कलात्मक एवं प्रभावपूर्ण होता है।

विषयवस्तु के आधार पर हिन्दी की कहानियों का विभाजन इस प्रकार से हो सकता है—ऐतिहासिक, सामाजिक, यथार्थवादी, दार्शनिक, प्रतीकवादी, मनोवैज्ञानिक, हास्य-व्यंग्य प्रधान आदि। कहानी के तत्त्वों में किसी एक की प्रधानता के आधार पर इनका विभाजन घटना-प्रधान, भाव-प्रधान तथा वातावरण-प्रधान के रूप में किया जाता है। कहानी-लेखन में प्रायः कथात्मक, आत्म-चरित्र-प्रधान, पत्रात्मक, डायरी, नाटकीय, मिश्रित आदि शैलियों का प्रयोग किया जाता है। प्रसाद, प्रेमचन्द, जैनेन्द्र, यशपाल, अज्ञेय, शिवानी, कृष्णा सोबती आदि कुछ प्रसिद्ध कहानीकार हैं। इस संकलन में रखी गयी प्रसाद की कहानी **'ममता'** एक श्रेष्ठ कहानीकार की शैलीगत विशिष्टताओं का परिचय कराती है।

➤ लघु कथा

गद्य के क्षेत्र में लघु कथा धीरे-धीरे एक विधा के रूप में स्वयं को स्थापित करती जा रही है। इसमें आधुनिक संवेदना की गहरी पीड़ा दिखाई पड़ती है। लघु कथा के कथाकारों में राजेन्द्र यादव, चित्रा मुद्गल, विष्णु नागर, असगर वजाहत, रमेश बतरा के नाम उल्लेखनीय हैं।

➤ भेंटवार्त्ता

भेंटवार्त्ता के लिए हिन्दी में 'भेंट', 'चर्चा', 'विशेष परिचर्चा', 'साक्षात्कार' तथा 'इण्टरव्यू' नाम प्रचलित हैं। 'इण्टरव्यू' का शाब्दिक अर्थ है 'आन्तरिक दृष्टिकोण'। इस प्रकार भेंटवार्त्ता वह विधा है, जिसके माध्यम से भेंटकर्त्ता किसी महान् व्यक्ति के मन और जीवन में प्रश्नों के झरोखे से झाँककर उसके आन्तरिक दृष्टिकोण को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता है।

भेंटवार्त्ता वास्तविक भी होती है और काल्पनिक भी। हिन्दी में वास्तविक और काल्पनिक दोनों ही प्रकार की भेंटवार्त्ताएँ लिखी गई हैं। वास्तविक भेंटवार्त्ता लिखनेवालों में पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' और रणवीर रांग्रा के नाम उल्लेखनीय हैं और काल्पनिक भेंटवार्त्ता लिखनेवालों में राजेन्द्र यादव **(चैखव : एक इण्टरव्यू)** और लक्ष्मीचन्द्र जैन **(भगवान् महावीर : एक इण्टरव्यू)** उल्लेखनीय हैं। भेंटवार्त्ताएँ छायावादोत्तर युग में ही लिखी गई हैं। शिवदान सिंह चौहान तथा रामचरण महेन्द्र ने भी इस क्षेत्र में अपना योगदान दिया है।

➤ उपन्यास

उपन्यास वर्तमान हिन्दी साहित्य की सर्वप्रिय विधा है। उपन्यास के स्वरूप में साहित्य की सभी विधाओं को सन्निहित करने की क्षमता है। उपन्यास में कथा तो है ही, साथ ही अवसर आने पर वह काव्य की-सी भावुकता और संवेदना जाग्रत कर पाठकों को तल्लीन करता है।

श्रीनिवास द्वारा रचित **'परीक्षा गुरु'** हिन्दी का प्रथम मौलिक उपन्यास माना जाता है। इस युग के उपन्यास में गम्भीरता का प्रायः अभाव है तथा वे घटनाप्रधान हैं। इस युग के प्रमुख उपन्यासकार और उनके उपन्यास हैं–बालकृष्ण भट्ट **(नूतन ब्रह्मचारी)**; देवकीनन्दन खत्री **(चन्द्रकान्ता सन्तति** और **भूतनाथ)**; गोपालदास गहमरी **(नये बाबू, चतुर चंचला)**; किशोरीलाल गोस्वामी **(तारा, सुल्ताना, सोना और सुगन्ध)**।

प्रेमचन्द युग में मुंशी प्रेमचन्द ने **'सेवासदन', 'निर्मला', 'गबन', 'रंगभूमि', 'कर्मभूमि', 'गोदान',** जयशंकर प्रसाद ने **'कंकाल', 'तितली', 'इरावती'** (अपूर्ण) जैसे सशक्त उपन्यास हिन्दी को दिये। इनके अतिरिक्त इस युग के प्रमुख उपन्यासकार आचार्य चतुरसेन शास्त्री, विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक', भगवतीचरण वर्मा, वृन्दावनलाल वर्मा आदि हैं। प्रेमचन्दोत्तर युग के प्रमुख उपन्यासकार एवं उनके उपन्यास इस प्रकर हैं–जैनेन्द्र **(परख, सुनीता, त्यागपत्र)**; इलाचन्द्र जोशी **(जहाज का पंछी, घृणापथ)**; अज्ञेय **(शेखर : एक जीवनी, नदी के द्वीप)**। इस युग के अन्य उपन्यासकार हैं–यशपाल, रांगेय राघव, अमृतलाल नागर, धर्मवीर भारती, उपेन्द्रनाथ 'अश्क', फणीश्वरनाथ 'रेणु', रामदरश मिश्र, राही मासूम रजा, शिवानी, शैलेश मटियानी, उषा प्रियंवदा आदि।

➤ आलोचना

आलोचना का शाब्दिक अर्थ है– ''किसी पदार्थ, तथ्य आदि की परख सही रूप में करना या उसे भली प्रकार देखना।''

भली-भाँति देखने से ही किसी वस्तु के गुण-दोष प्रकट होते हैं, इसीलिए किसी साहित्यिक रचना का सूक्ष्मतापूर्वक अवलोकन करते हुए उसके गुण-दोषों को प्रकट करना उसकी आलोचना कहलाता है।

यद्यपि भारतेन्दुजी के समय में ही अनूदित पुस्तकों की समीक्षाएँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगी थीं, किन्तु हिन्दी-आलोचना की अविच्छिन्न परम्परा का सूत्रपात द्विवेदी युग से ही प्रारम्भ होता है। **'कालिदास की निरंकुशता'** में द्विवेदीजी ने गुण-दोष दिखानेवाली शैली में भाषा और व्याकरण के दोषों का संग्रह किया है। इसी युग में मिश्रबन्धुओं ने **'हिन्दी नवरत्न'** नाम से एक आलोचनात्मक निबन्ध प्रकाशित किया था।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी के युगद्रष्टा आलोचक रहे हैं। शुक्लजी ने साहित्य के सभी अंगों का सैद्धान्तिक विवेचन करके एक सम्पूर्ण साहित्यशास्त्र का निर्माण किया। बाबू श्यामसुन्दरदास ने अपनी पुस्तक **'साहित्यालोचन'** में साहित्य सिद्धान्तों का और पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी ने **'विश्व-साहित्य'** में विश्व के साहित्य मुख्यतः अंग्रेजी साहित्य का गम्भीर विवेचन किया है।

प्रगतिवादी युग के प्रमुख आलोचकों में शिवदानसिंह चौहान, प्रकाशचन्द्र गुप्त, डॉ0 रामविलास शर्मा, नरेन्द्र शर्मा, अमृतराय, शमशेरबहादुर सिंह आदि हैं। इलाचन्द्र जोशी, अज्ञेय और एक सीमा तक नलिनविलोचन शर्मा आदि मनोविश्लेषणात्मक आलोचना के प्रमुख लेखक हैं। आधुनिक-साहित्य और नई कविता के आलोचकों में डॉ0 इन्द्रनाथ मदान, डॉ0 नामवर सिंह, डॉ0 जगदीश गुप्त, लक्ष्मीकान्त वर्मा आदि के नाम विशेष महत्त्वपूर्ण हैं।

➤ नाटक

रंगमंच पर अभिनय द्वारा प्रस्तुत करने की दृष्टि से लिखी गयी तथा पात्रों एवं संवादों पर आधारित एक से अधिक अंकोंवाली दृश्यात्मक साहित्यिक रचना को नाटक कहते हैं। नाटक वस्तुतः रूपक का एक भेद है। नट (अभिनेता) से सम्बद्ध होने के कारण इसे नाटक कहते हैं। नाटक में ऐतिहासिक पात्र-विशेष की शारीरिक एवं मानसिक अवस्था का अनुकरण किया जाता है। आज नाटक शब्द अंग्रेजी 'ड्रामा' या 'प्ले' का पर्याय बन गया है। हिन्दी में मौलिक नाटकों का आरम्भ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से माना जाता है। द्विवेदी युग में इसका अधिक विकास नहीं हुआ। छायावाद-युग में जयशंकर प्रसाद ने ऐतिहासिक नाटकों के विकास में महत्त्वपूर्ण योग दिया। छायावादोत्तर-युग में लक्ष्मीनारायण मिश्र, उदयशंकर भट्ट, उपेन्द्रनाथ अश्क, सेठ गोविन्ददास, डॉ0 रामकुमार वर्मा, जगदीशचन्द्र माथुर, मोहन राकेश आदि ने इस विधा को विकसित किया है।

➤ एकांकी

नाटक का एक महत्त्वपूर्ण रूप एकांकी है। 'एकांकी' किसी एक महत्त्वपूर्ण घटना, परिस्थिति या समस्या को आधार बनाकर लिखा जाता है और उसकी समाप्ति एक ही अंक में उस घटना के चरम क्षणों को मूर्त करते हुए कर दी जाती है। हिन्दी में एकांकी नाटकों का विकास छायावाद युग से माना जाता है। सामान्यतः श्रेष्ठ नाटककारों ने ही श्रेष्ठ एकांकियों की भी रचना की है। डॉ0 रामकुमार वर्मा द्वारा लिखित 'दीपदान', 'रेशमी टाई' तथा उपेन्द्रनाथ अश्क के 'तौलिये', 'अंधी गली' प्रमुख एकांकी हैं।

➤ जीवनी

यह साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण विधा है, जिसमें किसी महापुरुष या विख्यात व्यक्ति के जीवन की घटनाओं, उसके कार्य-कलापों तथा अन्य गुणों का आत्मीयता, औपचारिकता तथा गम्भीरता से व्यवस्थित रूप में वर्णन किया जाता है। इसमें व्यक्ति विशेष के जीवन की छोटी-से-छोटी बात तथा बड़ी-से-बड़ी बात का इस प्रकार वर्णन किया जाता है कि पाठक उसके अन्तरंग जीवन से परिचित ही नहीं होता, वरन् तादात्म्य भी स्थापित कर लेता है। जीवनीकार जीवनी में प्रायः उन स्थलों पर विशेष बल देता है, जिनके द्वारा पाठक प्रेरणा ग्रहण कर अपने जीवन को अधिक उन्नतिशील बनाने में समर्थ हो सके। जीवनी का प्रामाणिक होना आवश्यक है। यह तभी सम्भव है, जब जीवनीकार को उस व्यक्ति के जीवन के विभिन्न स्वरूपों, तथ्यों तथा घटनाओं का निजी तथा पूर्ण ज्ञान हो। जीवनी में जहाँ एक ओर इतिहास जैसी प्रामाणिकता तथा तथ्यपूर्णता होती है, वहीं दूसरी ओर वह साहित्यिकता के तत्त्वों से पूर्ण होती है। हिन्दी के जीवनी-साहित्य को समृद्ध बनानेवालों में गुलाबराय, रामनाथ सुमन, डॉ0 रामविलास शर्मा, अमृत राय आदि जीवनीकार उल्लेखनीय हैं।

➤ आत्मकथा

यह विधा भी जीवनी के समान ही लोकप्रिय है। इसका लेखक स्वयं अपने जीवन की कथा को पाठकों के समक्ष

आत्मीयता के साथ रखता है। यह संस्मरणात्मक होती है। लेखक अपने जीवन की विभिन्न परिस्थितियों तथा दशाओं में अपने मानसिक तथा भावात्मक विकास की कहानी कहता है। उसका यह वर्णन उसके जीवनकाल की पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक पृष्ठभूमि के सन्दर्भ में होता है। वह अपने जीवन में घटी हुई महत्त्वपूर्ण तथा मार्मिक घटनाओं का ही क्रमबद्ध विवरण प्रस्तुत नहीं करता, वरन् अपने जीवन पर पड़े हुए विभिन्न प्रभावों का भी उल्लेख करता चलता है। इसमें लेखक अपने जीवन की महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक तथा सामाजिक घटनाओं पर अपनी प्रतिक्रिया प्रकट करता है तथा यह भी बताता है कि अपने समय की विचारधारा को उसने क्या निजी योगदान दिया है। महापुरुषों द्वारा लिखी गयी आत्मकथाएँ पाठकों का मार्गदर्शन करती हैं तथा उन्हें प्रेरणा देती हैं। डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद की आत्मकथा इस दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण कृति है। साहित्यिक आत्मकथाओं में हरिवंशराय 'बच्चन' और पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' की कृतियाँ उत्कृष्ट मानी गयी हैं।

➤ पत्र-साहित्य

जब कोई लेखक अपने किसी मित्र, परिचित अथवा अल्प-परिचित व्यक्ति को अपने सम्बन्ध में या किसी महत्त्वपूर्ण समस्या के सम्बन्ध में उसकी और अपनी सामाजिक स्थिति को ध्यान में रखकर तथा उसके प्रति उचित आदर, सम्मान या स्नेह का भाव प्रकट करते हुए निजी तौर पर पत्र लिखकर भेजता है और उत्तर की अपेक्षा रखता है तो वह पत्र-साहित्य का सृजन करता है।

पत्र व्यक्तिगत भी हो सकते हैं और सार्वजनिक भी। पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशनार्थ भेजे जानेवाले पत्र प्रायः सार्वजनिक प्रश्नों को लेकर लिखे जाते हैं। साहित्यिक दृष्टि से वे पत्र अधिक महत्त्वपूर्ण होते हैं, जो तत्काल प्रकाशनार्थ नहीं लिखे जाते, वरन् दो व्यक्तियों की व्यक्तिगत सम्मति होते हैं। साहित्यिक दृष्टिकोण से ऐसे पत्रों को कुछ काल के पश्चात् प्रकाशित किया जा सकता है। हिन्दी साहित्य में पत्र-प्रकाशन का आरम्भ द्विवेदी युग में ही हो गया था। महात्मा मुंशीराम ने स्वामी दयानन्द सम्बन्धी पत्रों का संकलन सन् 1904 ई0 में प्रकाशित कराया था। छायावादी युग में 'रायकृष्ण आश्रम, देहरादून' से **'विवेकानन्द पत्रावली'** का प्रकाशन किया गया था। छायावादोत्तर युग में पत्र-साहित्य के संकलन और प्रकाशन की दिशा में कई महत्त्वपूर्ण कार्य हुए हैं। इस क्षेत्र में वैजनाथ सिंह 'विनोद' द्वारा संकलित **'द्विवेदी पत्रावली'** (सन् 1954 ई0); बनारसीदास चतुर्वेदी द्वारा संकलित **'पद्मसिंह शर्मा के पत्र'** (सन् 1956 ई0); वियोगी हरि द्वारा **'बड़ों के प्रेरणादायक कुछ पत्र'**; तथा हरिवंशराय बच्चन के द्वारा **'पन्त के दो सौ पत्र बच्चन के नाम'** उल्लेखनीय पत्र-संकलन हैं।

➤ डायरी

डायरी लेखन-कला का प्रारम्भ लगभग सन् 1930 ई0 के आस-पास माना जाता है। नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ को प्रथम डायरी लेखक माना जाता है। उनकी डायरी **'नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ की जेल डायरी'** के प्रकाशन के साथ ही हिन्दी में डायरी लेखन-कला का उदय हुआ था। छायावादी युग में धीरेन्द्र वर्माकृत **'मेरी कॉलेज डायरी'** उल्लेखनीय है। छायावादोत्तर युग में इलाचन्द्र जोशी, रामधारीसिंह 'दिनकर', शमशेरबहादुर सिंह, मोहन राकेश आदि की डायरियाँ प्रकाशित हुई हैं। हिन्दी में गद्य की इस कलात्मक विधा का अभी पूर्ण विकास नहीं हुआ है, लेकिन यह अपने विकास-पथ पर अग्रसर है तथा भविष्य में इसके विकसित होने की पर्याप्त सम्भावनाएँ हैं।

➤ रेखाचित्र

रेखाचित्र शब्द अंग्रेजी के 'स्केच' शब्द का अनुवाद है तथा दो शब्दों 'रेखा' और 'चित्र' के योग से बना है। इसमें शब्दों की कलात्मक रेखाओं द्वारा किसी व्यक्ति, वस्तु अथवा घटना के बाह्य तथा आन्तरिक स्वरूप का शब्द-चित्र इस प्रकार अंकित किया जाता है कि पाठक के हृदय में उसका सजीव तथा यथार्थ चित्र अंकित हो जाता है। रेखाचित्र में चित्रकला तथा साहित्य का सुन्दर सामंजस्य दिखायी पड़ता है। जिस प्रकार चित्रकार तूलिका तथा रंगों के माध्यम से किसी सजीव चित्र का निर्माण करता है, उसी प्रकार रेखाचित्रकार शब्दों के द्वारा ऐसा भावपूर्ण चित्र प्रस्तुत करता है, जो उसकी वास्तविक संवेदना को मूर्त रूप प्रदान करने में सफल होता है।

रेखाचित्र कहानी तथा निबन्ध के बीच की विधा है, किन्तु तात्त्विक रूप में यह दोनों से भिन्न है और इसकी अपनी ही एक विशिष्ट कला है। निबन्ध तथा रेखाचित्र दोनों में कल्पना, अनुभूति, शब्द-व्यञ्जना, प्रतीक आदि का समावेश होता है, किन्तु इनका प्रयोग रेखाचित्रों में अधिक होता है। रेखाचित्र का आकार भी निबन्ध से प्रायः छोटा होता है। महादेवी वर्मा, अमृत राय, प्रकाशचन्द्र गुप्त आदि ने अच्छे रेखाचित्रों का सृजन किया है।

➤ संस्मरण

संस्मरण का अर्थ है 'सम्यक् स्मरण'। संस्मरण में लेखक स्वयं अपनी अनुभव की हुई किसी वस्तु, व्यक्ति तथा घटना का आत्मीयता तथा कलात्मकता के साथ विवरण प्रस्तुत करता है। इसका सम्बन्ध प्रायः महापुरुषों से होता है। इसमें लेखक अपनी अपेक्षा उस व्यक्ति को अधिक महत्त्व देता है, जिसका वह संस्मरण लिखता है। इसमें किसी विशिष्ट व्यक्ति का स्वरूप, आकार-प्रकार, स्वभाव, भाव-भंगिमा, व्यवहार, जीवन के प्रति दृष्टिकोण, अन्य व्यक्तियों के साथ सम्बन्ध, बातचीत आदि सभी बातों का विश्वसनीय रूप में आत्मीयता के साथ वर्णन होता है। रेखाचित्र में किसी के चरित्र का कलात्मक चित्र प्रस्तुत किया जाता है, किन्तु संस्मरण में किसी के चरित्र का यथातथ्य रूप प्रदर्शित किया जाता है। हिन्दी के प्रमुख संस्मरण लेखकों में श्री नारायण चतुर्वेदी, बनारसीदास चतुर्वेदी, पद्मसिंह शर्मा आदि हैं। श्री हरिभाऊ उपाध्याय के **'आचार्य द्विवेदीजी'** नामक संस्मरणात्मक निबन्ध को इस विधा के प्रतिनिधि निबन्ध के रूप में रखा गया है।

➤ यात्रा-साहित्य

यह साहित्य की एक रोचक तथा मनोरंजन-प्रधान विधा है। इसमें लेखक विशेष स्थलों की यात्रा का सरस तथा सुन्दर वर्णन इस दृष्टि से करता है कि जो पाठक उन स्थलों की यात्रा करने में समर्थ न हों, वे उसका मानसिक आनन्द उठा सकें और घर बैठे ही उन स्थलों के प्राकृतिक दृश्यों, वहाँ के निवासियों के आचार-विचार, खान-पान, रहन-सहन आदि से परिचित हो सकें। इस विधा का यह लक्ष्य रहता है कि लेखक अपनी यात्रा में प्राप्त किये हुए आनन्द तथा ज्ञान को पाठकों तक पहुँचा सके। यह विधा आत्मपरक, अनौपचारिक, संस्मरणात्मक तथा मनोरंजक होती है। इसकी सफलता लेखक के स्वरूप-निरीक्षण तथा उसकी वर्णन-शैली के सौष्ठव एवं सौन्दर्य पर अधिक निर्भर रहती है। इसमें लेखक अपनी यात्रा की कठिनाई, सम्बन्धों तथा उपलब्धियों का रोचक विवरण पाठकों के समक्ष रखता है। यात्रा-साहित्य की रचना की दृष्टि से राहुल सांकृत्यायन, 'अज्ञेय', देवेन्द्र सत्यार्थी, डॉ0 नगेन्द्र, यशपाल और विनयमोहन शर्मा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

➤ रिपोर्ताज

रिपोर्ताज मूलतः फ्रांसीसी शब्द है और अंग्रेजी के 'रिपोर्ट' शब्द का पर्यायवाची तथा साहित्यिक नाम है। रिपोर्ताज में किसी घटना का इस प्रकार वर्णन किया जाता है कि पाठक उससे प्रभावित हो जाता है। रिपोर्ताज के लेखक को अपने वर्ण्य-विषय का पूर्ण ज्ञान होता है। वह इस प्रकार लिखता है कि वह जो कुछ लिख रहा है, मानो आँखों-देखा ही हो। इसमें कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाओं तथा पाठकों की विशिष्टताओं का निजी सूक्ष्म निरीक्षण के आधार पर मनोवैज्ञानिक विवेचन तथा विश्लेषण होता है।

इसकी शैली विवरणात्मक तथा वर्णनात्मक होती है, जिसमें सरलता, रोचकता, आत्मीयता तथा प्रभावपूर्णता का विशेष महत्त्व होता है। इसमें लेखक प्रतिपाद्य विषय को सरसता तथा सरलता से पाठक को हृदयंगम कराने में सफल होता है। पत्रकारिता के गुणों से सम्पन्न रिपोर्ताज का लेखक इसमें अधिक सफल होता है। विष्णु प्रभाकर, प्रकाशचन्द्र गुप्त, प्रभाकर माचवे आदि ने कुछ अच्छे रिपोर्ताज लिखे हैं।

➤ गद्य-काव्य

छन्दमुक्त एवं कविता के गुणों से युक्त रचना को गद्यगीत कहते हैं। यह गद्य तथा काव्य के बीच की विधा है। गद्य-काव्य के माध्यम से किसी भावपूर्ण विषय की काव्यात्मक अभिव्यक्ति होती है। गद्य-काव्य सामान्य गद्य से अधिक सरस, भावात्मक, अलंकृत, संवेदनात्मक तथा संगीतात्मक होता है। इसमें लेखक अपने हृदय की संवेदना की अभिव्यक्ति इस प्रकार करता है कि पाठक उसे पढ़कर रसमय हो जाता है। इसमें विचारों की अभिव्यक्ति की ओर लेखक का अधिक ध्यान रहता है। यह निबन्ध की अपेक्षा संक्षिप्त, वैयक्तिक तथा एकतथ्यता लिये होता है। इसका ध्येय प्रायः निश्चित होता है तथा इसमें केवल एक ही केन्द्रीय भाव की प्रधानता होती है। गद्य-काव्य की शैली प्रायः चमत्कारपूर्ण एवं कवित्वपूर्ण होती है तथा इसमें विचारों का समावेश भी प्रायः भावों के ही रूप में होता है। गद्य-काव्य के लेखकों में यशपाल, राहुल सांकृत्यायन, वियोगी हरि, रायकृष्णदास तथा रामवृक्ष बेनीपुरी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त चतुरसेन शास्त्री, सुदर्शन, रघुवीर सिंह, रामवृक्ष बेनीपुरी ने सशक्त गद्य-काव्य प्रदान किये हैं।

हिन्दी गद्य के विकास से सम्बन्धित प्रश्न

1. भाषा-योगवाशिष्ठ के लेखक का नाम लिखिए।
2. आधुनिककाल की दो प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
3. प्रगतिवादी युग की दो विशेषताओं को लिखिए।
4. किसी एक रिपोर्ताज लेखक का नाम लिखिए। **(2020HF)**
5. शुक्लोत्तर युग की समय-सीमा बताइए।
6. 'बालबोधिनी' पत्रिका के सम्पादक का नाम लिखिए।
7. किसी एक संस्मरण-लेखक का नाम लिखिए।
8. शुक्लोत्तर युग के किसी एक साहित्यकार का नाम लिखिए।
9. दो आत्मकथा लेखकों के नाम लिखिए। **(2020ME)**
10. गद्य और पद्य में अन्तर बताइए।
11. हिन्दी के दो प्रसिद्ध विचारात्मक निबन्ध लेखकों के नाम लिखिए।
अथवा हिन्दी के दो प्रसिद्ध उपन्यासकारों के नाम लिखिए। **(2017AG, 19AC)**
12. खड़ीबोली गद्य के चार प्रारम्भिक उन्नायकों के नाम लिखिए।
13. भारतेन्दु युग के दो लेखकों के नाम लिखिए।
14. द्विवेदी युग के दो कहानीकारों के नाम लिखिए। **(2017AA, 19AF)**
15. रामचन्द्र शुक्ल को गद्य की किन दो विधाओं में सर्वाधिक सफलता मिली है?
16. हिन्दी के दो प्रसिद्ध कहानी-लेखकों के नाम लिखिए।
17. शुक्ल युग के सबसे प्रसिद्ध उपन्यास लेखक और उसके एक प्रमुख उपन्यास का नाम लिखिए।
18. शुक्ल-युग के सशक्त आलोचक एवं निबन्धकार का नाम लिखिए।
19. शुक्ल युग कब से कब तक माना जाता है?
20. शुक्ल युग को अन्य किन नामों से जाना जाता है?
21. शुक्ल युग के दो प्रमुख गद्यकारों के नाम लिखिए।
अथवा शुक्ल युग के दो प्रमुख लेखकों के नाम लिखिए।
22. शुक्ल युग (छायावाद युग) की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
23. वर्णनात्मक तथा विवरणात्मक निबन्धों का अन्तर स्पष्ट कीजिए।
24. शुक्ल युग (छायावाद युग) के किन्हीं दो ऐसे गद्य लेखकों के नाम लिखिए, जो कवि न हों।
25. ऐसे तीन गद्य-लेखकों के नाम लिखिए, जिन्होंने द्विवेदी युग तथा छायावादी युग दोनों में लेखन-कार्य किया।
26. शुक्ल युग के दो प्रसिद्ध कहानीकारों के नाम लिखिए।
27. शुक्ल युग के दो निबन्ध-लेखकों के नाम बताइए।
अथवा शुक्ल युग के दो प्रमुख लेखकों के नाम लिखिए।
अथवा किसी एक निबन्धकार का नाम लिखिए। **(2017AB)**
28. शुक्ल युग के दो नाटककारों के नाम लिखिए।
29. शुक्ल युग के दो उपन्यासकारों के नाम लिखिए।
अथवा उपन्यास विधा के किसी एक लेखक का नाम लिखिए। **(2020ME)**
अथवा किसी एक निबन्धकार का नाम लिखिए।
30. शुक्ल युग के दो प्रमुख हिन्दी-साहित्य के इतिहासकारों के नाम लिखिए।
31. द्विवेदी युग के दो प्रमुख लेखकों के नाम लिखिए।
32. शुक्लोत्तर युग के किन्हीं दो समालोचकों के नाम लिखिए।

33. छायावादोत्तर (शुक्लोत्तर) युग की प्रमुख गद्य विधाओं का उल्लेख कीजिए।
34. शुक्लोत्तर युग के दो कहानीकारों के नाम बताइए।
35. शुक्लोत्तर युग के दो प्रमुख नाटककारों के नाम लिखिए।
36. शुक्लोत्तर युग के दो निबन्धकारों के नाम बताइए। **(2020MF)**
37. शुक्लोत्तर युग के तीन एकांकीकारों के नाम बताइए।
अथवा किसी एक एकांकीकार का नाम लिखिए।
38. 'हंस' पत्रिका के सम्पादक का नाम लिखिए। **(2017AC)**
39. प्रेमचन्दोत्तर युग के किन्हीं दो कहानीकारों का नामोल्लेख कीजिए।
40. हिन्दी गद्य की किन्हीं चार प्रमुख विधाओं का उल्लेख करते हुए इनके प्रतिनिधि लेखकों का नामोल्लेख कीजिए।
41. 'कलम का सिपाही' किस साहित्यकार की जीवनी है?
42. किसी एक यात्रा-वृत्तान्त-लेखक का नाम लिखिए।
43. आलोचना क्षेत्र के दो लेखकों के नाम लिखिए।
44. शुक्लोत्तर युग के दो प्रमुख जीवनी लेखकों एवं उनकी कृतियों का उल्लेख कीजिए।
45. शुक्लोत्तर युग के साहित्य की दो प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
46. शुक्लोत्तर युग के दो गद्य-लेखकों के नाम लिखिए।
47. छायावादोत्तर-युगीन साहित्यकारों की दोनों पीढ़ियों के एक-एक साहित्यकार का नाम लिखिए।
48. हिन्दी गद्य की दो प्रमुख विधाओं के नाम लिखिए।
49. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की किसी एक रचना का नाम बताइए।
50. शुक्लोत्तर युग के दो प्रमुख गद्य लेखकों एवं उनकी रचनाओं के नाम लिखिए।
51. प्रगतिवादी युग के दो लेखक और उनकी एक-एक रचना का नाम बताइए।
52. 'जहाज का पंछी' के लेखक का नाम लिखिए। **(2020MF)**
53. दो आत्म-कथा लेखकों के नाम लखिए।
54. 'ध्रुवस्वामिनी' और 'राज्यश्री' नाटकों के लेखक का नाम लिखिए।
55. 'अज्ञेय' की किसी एक रचना का नाम लिखिए।
56. 'उदय शंकर भट्ट' किस गद्य-विधा के प्रमुख लेखक हैं?
57. प्रसाद-युग के किसी एक नाटककार का नाम लिखिए।
58. 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' किस विधा की रचना है?
59. आधुनिक हिन्दी साहित्य के दो प्रमुख आलोचकों के नाम लिखिए।
अथवा समालोचना विधा के किसी एक लेखक का नाम लिखिए।
60. यात्रा-साहित्य की एक प्रमुख रचना का उल्लेख कीजिए।
61. गोदान के लेखक का नाम लिखिए।
62. 'राहुल सांकृत्यायन' की एक रचना का नाम लिखिए।
63. गद्य-काव्य विधा की दो प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
64. 'अपनी खबर', 'संस्कृति के चार अध्याय' एवं 'आँधी' के लेखकों के नाम लिखिए।
65. छायावादयुगीन गद्य की दो प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
66. प्रेमचन्द के दो प्रमुख उपन्यासों के नाम लिखिए।
67. हिन्दी साहित्य का विकास करनेवाली दो प्रमुख पत्रिकाओं के नाम लिखिए।
68. जयशंकर प्रसाद के दो ऐतिहासिक नाटकों के नाम लिखिए।
69. शुक्ल युग के दो जीवनी लेखकों के नाम लिखिए।
अथवा किसी एक जीवनी लेखक का नाम लिखिए। **(2019AF)**
70. शुक्लोत्तर युग के दो प्रमुख आलोचकों के नाम लिखिए।
71. शुक्ल युग की दो प्रमुख पत्रिकाओं के नाम लिखिए। **(2020MG)**
72. रेखाचित्र तथा संस्मरण के लिए प्रसिद्ध एक-एक रचनाकार का नाम लिखिए।
73. गद्यगीत, जीवनी, आत्मकथा में से किसी एक विधा के प्रसिद्ध लेखक का नाम लिखकर उसकी एक कृति का उल्लेख कीजिए।

74. 'रेखाचित्र' और 'संस्मरण' विधाओं में अन्तर बताइए।
75. आत्मकथा की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
76. 'जीवनी' और 'आत्मकथा' की विधाओं में मुख्य अन्तर क्या है?
77. जयशंकर प्रसाद के किसी एक उपन्यास का नाम लिखिए।
78. विषय एवं शैली के अनुसार निबन्ध के किन्हीं दो भेदों का नामोल्लेख कीजिए।
79. 'क्या लिखूँ?' के लेखक कौन हैं?
80. 'मेरी असफलताएँ' के लेखक का नाम लिखिए।
81. 'कामायनी' किसकी रचना है?
82. 'परशुराम की प्रतीक्षा' के लेखक कौन हैं?
83. निम्नलिखित में से किसी एक विधा के एक प्रसिद्ध लेखक और उसकी एक कृति का नामोल्लेख कीजिए–
(i) नाटक (ii) निबन्ध (iii) आत्मकथा।
84. 'प्रिय-प्रवास', 'आकाशदीप', 'पंचपात्र' एवं 'ठलुआ क्लब' के लेखक का नाम बताइए।
85. 'रसमीमांसा', 'अजातशत्रु' एवं 'रश्मिरथी' के लेखक का नाम बताइए।
86. 'गोदान', 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' एवं 'चिन्तामणि' के लेखक का नाम बताइए।
87. 'गोदान' और 'नासिकेतोपाख्यान' के रचनाकारों के नाम लिखिए।
88. शुक्ल युग के दो समालोचक एवं इतिहास लेखकों के नाम लिखिए।
89. प्रसाद के परवर्ती दो नाटककारों के नाम लिखिए।
90. 'खून के छींटे', 'शिक्षा और संस्कृति' एवं 'अर्द्धनारीश्वर' के रचनाकार का नाम लिखिए।
91. निम्नलिखित कृतियों में से किन्हीं दो लेखकों के नाम लिखिए–
(i) त्रिवेणी (ii) साधना के पथ पर (iii) साहित्य और कला।
92. यात्रा साहित्य के दो प्रमुख लेखकों के नाम लिखिए। **(2017AG, 19AC)**
अथवा किसी एक यात्रावृत्त लेखक का नाम लिखिए।
93. निम्नलिखित लेखकों की कृतियों का नाम लिखिए–
(i) जयप्रकाश भारती (ii) भगवतशरण उपाध्याय (iii) रामधारीसिंह 'दिनकर'।
94. निम्नलिखित कृतियों के लेखक का नाम बताइए– (i) त्यागपत्र (ii) रस-मीमांसा (iii) अथाह सागर।
95. निम्नलिखित कृतियों के लेखक का नाम बताइए– (i) प्रबन्ध पारिजात (ii) कंकाल (iii) खून के छींटे।
96. 'सरस्वती' पत्रिका के प्रथम सम्पादक का नाम लिखिए। **(2020MF)**
97. 'सरस्वती' पत्रिका किस युग में प्रकाशित हुई? **(2020MA)**
98. 'मतवाला' पत्रिका के सम्पादक का नाम लिखिए।
99. शुक्लोत्तर युग के दो प्रमुख नाटककारों के नाम लिखिए।
100. 'इन्दुमती' कहानी के लेखक का नाम लिखिए।
101. हिन्दी के दो संस्मरण-लेखकों के नाम लिखिए।
102. निम्नलिखित कृतियों में से किसी एक के लेखक का नाम लिखिए–
(i) तीर्थ सलिल (ii) भारतीय शिक्षा (iii) मंदिर और भवन (iii) बर्फ की गुड़िया।
103. किसी एक रिपोर्ताज लेखक का नाम लिखिए। **(2020MB)**
104. 'दैनिकी' नामक डायरी के लेखक का नामोल्लेख कीजिए।
105. निम्नलिखित कृतियों में से किसी एक के लेखक का नाम लिखिए–
(i) हिमालय की पुकार (ii) खून के छींटे (iii) हिन्दी-साहित्य-विमर्श (iii) अर्द्धनारीश्वर।
106. निम्नलिखित कृतियों में से किसी एक के लेखक का नाम लिखिए–
(i) प्रबन्ध पारिजात (ii) भारतीय शिक्षा (iii) चिन्तामणि (iii) त्यागपत्र।
107. किसी एक एकांकी नाटक के लेखक का नाम लिखिए। **(2017AF, 19AB, AF)**
108. निम्नलिखित कृतियों में से किसी एक के लेखक का नाम लिखिए–
(i) पंचपात्र (ii) साहित्य, शिक्षा एवं संस्कृति (iii) राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय एकता (iii) रस मीमांसा।
109. किसी एक प्रसिद्ध आलोचक का नाम लिखिए।

110. 'त्यागपत्र' के रचनाकार का नाम लिखिए।
111. 'मर्यादा' पत्रिका के सम्पादक का नाम लिखिए।
112. निम्नलिखित कृतियों में से किसी एक के लेखक का नाम लिखिए–
(i) रस-मीमांसा (ii) अर्द्धनारीश्वर (iii) हिमालय की पुकार (iv) आकाशदीप।
113. 'ठूँठा आम' के लेखक का नाम लिखिए।
114. 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' किस विधा की रचना है? **(2017AG, 20MG)**
115. निम्नलिखित में से किसी एक के लेखक का नाम लिखिए–
(i) अथाह सागर (ii) अर्द्धनारीश्वर (iii) मेरी असफलताएँ (iv) लहरों के राजहंस।
116. डॉ0 रामकुमार वर्मा का प्रसिद्ध एकांकी का नाम लिखिए।
117. 'मेरी लद्दाख यात्रा' किस विधा पर आधारित रचना है?
118. 'अर्द्धनारीश्वर' किस विधा की रचना है?
119. 'मेरी कालेज डायरी' के लेखक का नाम लिखिए। **(2017AB, 20MC)**
120. 'जीवनी' विधा के किसी एक लेखक का नाम लिखिए।
121. 'त्रिवेणी' किस विधा की रचना है?
122. 'मेरी यूरोप यात्रा' के लेखक का नाम लिखिए। **(2019AE)**
123. निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का नाम लिखिए–
(i) मैला आँचल (ii) मेरी यूरोप यात्रा (iii) रेती के फूल (iv) साहित्य और कला।
124. निम्नलिखित कृतियों में से किसी एक के लेखक का नाम लिखिए–
(i) आवारा मसीहा (ii) कुटज (iii) ठूँठा आम (iv) ग्यारह वर्ष का समय।
125. किसी एक रेखाचित्र लेखक का नाम लिखिए।
126. 'उसने कहा था' किस विधा की रचना है?
127. 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' के लेखक का नाम लिखिए।
128. निम्नलिखित कृतियों में से किसी एक कृति के लेखक का नाम लिखिए–
(i) इन्दुमती (ii) माटी की मूरतें (iii) साहित्यालोचन (iv) ठलुआ क्लब।
129. निम्नलिखित कृतियों में से किसी एक कृति के लेखक का नाम लिखिए–
(i) सूरज का सातवाँ घोड़ा (ii) आवारा मसीहा (iii) दुनिया रंग-बिरंगी (iv) अनामदास का पोथा।
130. निम्नलिखित कृतियों में से किसी एक कृति के लेखक का नाम लिखिए–
(i) चिन्तामणि (ii) अजातशत्रु (iii) खून के छींटे (iv) पैरों में पंख बाँधकर।
131. निम्नलिखित में से किसी एक रचना के लेखक का नाम लिखिए–
(i) रस-मीमांसा (ii) तितली (iii) अर्द्धनारीश्वर (iv) गाँधीजी की देन।
132. निम्नलिखित कृतियों में से किसी एक कृति के लेखक का नाम लिखिए–
(i) एक घूँट (ii) पंचपात्र (iii) शिक्षा एवं संस्कृति (iv) अनन्त आकाश।
133. निम्नलिखित में से किसी एक के लेखक का नाम लिखिए–
(i) भोर का तारा (ii) भाषा-विज्ञान (iii) पतितों के देश में (iv) मृगनयनी।
134. निम्नलिखित में से किसी एक कृति के लेखक का नाम लिखिए–
(i) मकरन्द बिन्दु (ii) इन्द्रजाल (iii) रसमीमांसा (iv) झाँसी की रानी।
135. निम्नलिखित कृतियों में से किसी एक कृति के लेखक का नाम लिखिए–
(i) हिमालय की पुकार (ii) गेहूँ और गुलाब (iii) मेरी असफलताएँ (iv) अर्द्धनारीश्वर।
136. 'कलम का सिपाही' के लेखक का नाम लिखिए। **(2019AC)**
137. गद्य-साहित्य का विविध रूपों में विकास किस काल में हुआ?
138. 'प्रेमचन्द अपने घर में' किस विधा की रचना है?
139. हजारीप्रसाद द्विवेदी कृत एक उपन्यास का नाम लिखिए।
140. 'किन्नर देश में' रचना किस विधा पर आधारित है?
141. यशपाल की किसी एक रचना का नाम लिखिए।

142. किसी एक नाटककार का नाम लिखिए।
143. 'आवारा मसीहा' किस विधा की रचना है?
144. 'गाँधीजी की देन' कृति के लेखक का नाम लिखिए।
145. 'कलम का सिपाही' किस विधा की कृति है?
146. 'किन्नर देश में' कृति के लेखक का नाम लिखिए।
147. डॉ0 भगवतशरण उपाध्याय की किसी एक रचना का नाम लिखिए।
148. किसी एक कहानीकार का नाम लिखिए।
149. 'बाणभट्ट की आत्मकथा' के लेखक का नाम बताइए। **(2017AA, AC, 20ME)**
150. 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' किस साहित्यकार की आत्मकथा है? **(2017AA,AF)**
151. सेवासदन, मैला आँचल एवं चन्द्रगुप्त कृति के लेखक का नाम लिखिए।
152. 'इण्डिया इन कालिदास', उजली आग, तीर्थ सलिल एवं एक घूँट के लेखक का नाम लिखिए।
153. 'बर्फ की गुड़िया' के रचयिता का नाम लिखिए। **(2020MC)**
154. प्रायश्चित के लेखक का नामोल्लेख कीजिए।
155. 'देश' पत्रिका के सम्पादक का नाम लिखिए।
156. तितली, बिखरे पन्ने, रेती के फूल, मन्दिर और भवन के रचनाकार का नाम लिखिए।
157. डायरी विधा के लेखकों में से किसी एक लेखक का नाम लिखिए।
अथवा किसी एक डायरी लेखक का नाम लिखिए। **(2019AD, AG)**
158. 'दीपदान' एकांकी के लेखक का नाम लिखिए। **(2020MG)**
159. शुक्लोत्तर युग की हिन्दी पत्रिका के किसी एक सम्पादक का नाम लिखिए।
160. निम्नलिखित कृतियों में से किसी एक कृति के लेखक का नाम बताइए– (i) इन्द्रजाल, (ii) सेवा-सदन, (iii) दीपदान, (iv) मिट्टी ओर।
161. रेखाचित्र साहित्य के किन्हीं दो लेखक के नाम लिखिए। **(2019AA)**
162. 'बाणभट्ट की आत्मकथा' किस विधा की रचना है?
163. 'पथ के साथी' किस विधा की रचना है?
164. 'शेखर एक जीवनी' किस विधा की रचना है?
165. 'मतवाला' एवं 'देश' पत्रिका के सम्पादक का नाम लिखिए। **(2017AD)**
166. भेंटवार्त्ता विधा के किसी एक लेखक का नाम लिखिए। **(2020MD)**
167. किसी एक महिला कहानीकार का नाम लिखिए। **(2020MC)**
168. 'रेशमी टाई' किस विधा पर आधारित रचना है? **(2020MD,ME)**
169. 'भूले-बिसरे चित्र' के रचनाकार का नाम लिखिए। **(2020MD)**
170. 'नीड़ का निर्माण फिर' किस गद्य विधा पर आधारित रचना है? **(2020MB)**
171. 'वट पीपल' के रचयिता का नामोल्लेख कीजिए। **(2020MB)**
172. 'ठलुआ क्लब' के लेखक का नाम लिखिए। **(2020MA)**
173. 'यात्रा के पन्ने' किस विधा पर आधारित रचना है? **(2020MA)**

●●

॥ अध्ययन-अध्यापन ॥

विद्यार्थीगण अनुभव कर रहे होंगे कि कक्षा 10 के हिन्दी पाठ्यक्रम के अन्तर्गत पाठों के चयन में कुछ अन्तर आ गया है, ऐसा इसलिए है कि वे निम्न माध्यमिक स्तर से उच्च माध्यमिक स्तर पर पहुँच गये हैं। उसके अनुरूप अध्ययन के लिए चुने गये पाठों का स्तर उठ गया है। बात यह है कि निम्न माध्यमिक स्तर तक की हिन्दी पाठ्य-पुस्तक में भाषा पर विशेष ध्यान दिया जाता है। उद्देश्य यह होता है कि उनके अध्ययन से विद्यार्थियों को अपनी मातृभाषा के व्यवहृत रूप का ज्ञान हो और उसके शुद्ध रूप को बोलने, लिखने का अच्छी तरह अभ्यास हो जाय। हिन्दी भाषा के व्याकरण का क्रमिक ज्ञान कराना भी इस स्तर पर हिन्दी पढ़ाने का एक विशेष उद्देश्य होता है।

अब उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों का परिचय हिन्दी साहित्य के विविध रूपों से कराया जाना अभीष्ट है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए विद्यार्थी इस स्तर पर और इसके आगे भी, हिन्दी के सुविख्यात लेखकों और कवियों की मूल रचनाओं का अध्ययन करेंगे। ध्यान में रखने की बात है कि ये रचनाएँ, पूर्व कक्षाओं की भाँति, केवल विद्यार्थियों के लिए ही नहीं लिखी गयी हैं। उनका लक्ष्य पाठक या अध्येता पूरा समाज है। ये रचनाएँ लेखक की सहज प्रेरणा से लिखी गयी हैं। लेखक में लिखने की प्रेरणा क्यों होती है। यह प्रश्न स्वाभाविक है। लेखक को उसके चारों ओर की परिस्थितियों से ही लिखने की प्रेरणा प्राप्त होती है। समाज में रहने के कारण सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों से वह प्रभावित होता है, उसके संवेदनशील मन में तरह-तरह के भाव या विचार उठते हैं। इन्हीं भावों और विचारों की अभिव्यक्ति वह अपनी रचनाओं में करता है, जो विविध साहित्यिक रूपों में हमें पढ़ने को मिलता है।

यदि विद्यार्थीगण चाहते हैं कि कक्षा में हिन्दी की पढ़ाई से पूरा लाभ उठायें तो आवश्यक है कि इसके लिए वे पूरी तैयारी करके कक्षा में जायँ। विद्यार्थियों को चाहिए कि जो पाठ अगले दिन पढ़ाया जानेवाला है, उसे घर से पढ़कर जायँ। बहुत सम्भव है कि पाठ की सभी बातें उनकी समझ में न आयें। पाठ में ऐसे कठिन शब्द हो सकते हैं जिनका सामना आज से पहले छात्रों को कभी नहीं हुआ हो, ऐसे वाक्य हो सकते हैं जो इनको अटपटे अथवा अस्पष्ट लगें। ऐसे विचार या भाव हो सकते हैं जो इनकी समझ के ऊपर हों।

ऐसी सभी कठिनाइयों को अलग लिख लें। कक्षा में जब पाठ का अध्ययन हिन्दी अध्यापक के निर्देशन में चलने लगे तो अपनी पहले से नोट की गयी कठिनाइयों को ध्यान में रखें। कुछ कठिनाइयाँ ऐसी होंगी जिनका समाधान विद्यार्थियों को कक्षा के अध्ययन-क्रम में स्वयं ही मिल जायगा। शेष कठिनाइयाँ अपने सहपाठियों अथवा विषय-अध्यापक के सामने रखकर उनका समाधान पा सकते हैं। विद्यार्थियों की सजगता पर सब कुछ निर्भर करता है।

हिन्दी-शिक्षण की अपनी खास विधि है, पर उसका अनुगमन वर्तमान परिस्थितियों में प्रायः नहीं हो पाता। चाहिए तो यह कि पहले अध्यापक पढ़ाये जानेवाले पाठ के लिए विद्यार्थियों को मानसिक रूप से तैयार करें, पहले पढ़ाई गयी समान विषयवस्तु से पाठ को सम्बद्ध करें, फिर पाठ को टुकड़ों में बाँटकर एक-एक टुकड़े को विद्यार्थियों से मौन पाठ करायें, फिर पूरी कक्षा से प्रश्न पूछ कर आश्वस्त हो लें कि इनकी समझ में पाठ की विषयवस्तु आयी या नहीं। पूछे गये प्रश्नों का उत्तर कोई छात्र या छात्रा न दे सके तो स्वयं उत्तर स्पष्ट करें। फिर चुन-चुन कर कुछ छात्र/छात्राओं से अध्यापक पाठ का सस्वर पाठ करायें। तत्पश्चात् पाठ में आये कठिन शब्दों, वाक्यों आदि की विस्तृत व्याख्या कक्षा के सामने प्रस्तुत करें। अन्त में पाठ पर आधारित गृह-कार्य निर्धारित करें।

विद्यार्थियों के हित में है कि वे भाषा-दक्षता के उन सभी अंगों का अभ्यास अपने से करते रहें जिनका आरम्भ पिछली

कक्षाओं में कर चुके हैं। भाषा में मौखिक अथवा लिखित रूप में अभिव्यक्त विचारों को समझने की योग्यता का विस्तार निरन्तर अभ्यास पर निर्भर करता है। इसलिए विद्यार्थियों को चाहिए कि अपने विचारों को दोनों रूपों में अभिव्यक्त करने का अभ्यास बनाये रखें। कहने का तात्पर्य यह है कि भाषा की चारों दक्षताएँ अभ्यास-सापेक्ष हैं। भाषा का शुद्ध बोलना और लिखना अभ्यास से ही आता है।

प्रस्तुत **'हिन्दी गद्य'** के प्रत्येक पाठ के अन्त में उपयोगी प्रश्न दिये गये हैं। हर प्रश्न का उत्तर सम्बन्धित पाठ में मिलता है। ध्यानपूर्वक पाठ पढ़कर विद्यार्थी प्रश्नों के उत्तर मालूम करें और उन्हें लिख डालें। मौखिक उत्तर से लिखित उत्तर हमेशा अच्छा होता है। उन्हें अध्यापक से जाँच करा लें तो और भी उत्तम होगा। प्रश्नों के उत्तर लिखकर उन्हें सहेज कर रख लें। कुछ दिन पढ़ने पर त्रुटियों को स्वयं पकड़ लेंगे। शायद इसीलिए कहावत चल पड़ी है कि पढ़ना व्यक्ति को बहुज्ञ बनाता है, किन्तु लिखने के अभ्यास से उसका ज्ञान अधिक परिपूर्ण बनता है।

विविध भाषा-कौशलों का ध्यान रखते हुए माध्यमिक स्तर पर भाषा-शिक्षण के निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्य निर्धारित किये जा सकते हैं—

(1) विद्यार्थियों को मौन तथा व्यक्त पठन में कुशल बनाना। (2) उनके शब्द-भण्डार में पर्याप्त वृद्धि कराना। (3) उन्हें विविध स्थितियों के अनुरूप लिखित एवं मौखिक अभिव्यक्ति में कुशल बनाना। (4) उन्हें शुद्ध, सशक्त और प्रभावपूर्ण भाषा के प्रयोग में कुशल बनाना। (5) उन्हें विविध साहित्यिक विधाओं और भाषा-शैलियों से अवगत कराना। (6) उनमें भावात्मक और साहित्यिक सौन्दर्य की अनुभूत्यात्मक क्षमता का विकास करना। (7) उनमें भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन की रुचि उत्पन्न करना। (8) उनमें समीक्षा-शक्ति का विकास करना।

उपर्युक्त में से प्रत्येक उद्देश्य को छात्र-छात्राओं में अपेक्षित व्यावहारिक परिवर्तन के सन्दर्भ में विश्लेषण करने पर अनेक विशिष्ट उद्देश्य सामने आयेंगे। अध्यापकों को चाहिए कि वे किसी भी पाठ को पढ़ाने से पहले उसे स्वयं भली-भाँति पढ़ लें और देख लें कि इस पाठ में विषय-वस्तु, भाषा-शैली, व्याकरण, जीवन-मूल्यों आदि की दृष्टि से कौन-कौन सी बातें प्रमुख हैं जिनकी ओर छात्रों का ध्यान आकृष्ट कराना आवश्यक है।

प्रश्न और अध्यापकीय कथन ऐसे होने चाहिए जिनसे छात्रों को अन्य पुस्तकें एवं पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ने की प्रेरणा मिले। जहाँ आवश्यक हो, बीच-बीच में विलोम, पर्याय, शब्द-रचना, पंक्तियों की व्याख्या, भाषा-शैली, चरित्र-चित्रण आदि से सम्बन्धित प्रश्न भी किये जायँ। शब्दार्थ-बोध कराने में व्युत्पत्तिमूलक अर्थ और प्रयोग पर विशेष ध्यान दिया जाय। सम्पूर्ण कार्य यथासम्भव प्रश्नों के माध्यम से होना चाहिए और छात्रों को आत्माभिव्यक्ति का अवसर देना चाहिए। इससे कक्षा का वातावरण सजीव रहता है और पाठ में रोचकता बनी रहती है। अध्यापक को आवश्यकतानुसार श्यामपट्ट का भी उपयोग करते रहना चाहिए। अच्छे श्यामपट्ट-कार्य से बच्चों को सुलेख और शुद्ध वर्तनी लिखने में विशेष सहायता मिलती है।

अन्त में कुछ गृह-कार्य भी दिया जाना चाहिए, जिससे छात्र घर जाकर पुनः उस पाठ को पढ़ें। पाठ का सारांश, गद्यांश की व्याख्या, शब्दों का वाक्यों में प्रयोग, शब्द-रचना की सामग्री का पाठ से भिन्न स्थिति एवं क्रिया में प्रस्तुतीकरण आदि से सम्बन्धित गृह-कार्य हो सकता है। आवश्यकतानुसार अगला पाठ, किसी पत्र-पत्रिका का कोई लेख या किसी अन्य पुस्तक की सामग्री भी पढ़ने को दी जा सकती है।

यह शंका उठायी जा सकती है कि यदि उपर्युक्त विधि से ही प्रत्येक पाठ पढ़ाया जाय तो अध्यापन नीरस हो सकता है और यह भी सम्भव है कि वर्ष के अन्त में पुस्तक समाप्त ही न हो। प्रत्येक पाठ में उपर्युक्त समस्त सोपानों का अनुसरण आवश्यक नहीं है। अध्यापक जहाँ आवश्यक समझें, अन्य विधियाँ भी अपना सकते हैं।

●●

1 आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

हिन्दी के इस प्रतिभासम्पन्न साहित्यकार का जन्म 4 अक्टूबर, 1884 ई० में बस्ती जिले के अगोना नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम पं० चन्द्रबली शुक्ल था, जो सुपरवाइजर कानूनगो थे। बालक रामचन्द्र शुक्ल ने एण्ट्रेन्स (हाईस्कूल) की परीक्षा मिर्जापुर जिले के मिशन स्कूल से उत्तीर्ण की। गणित में कमजोर होने के कारण इनकी शिक्षा आगे नहीं बढ़ सकी। इण्टर की परीक्षा के लिए कायस्थ पाठशाला, इलाहाबाद में प्रवेश लिया, किन्तु अन्तिम वर्ष की परीक्षा से पूर्व ही विद्यालय छूट गया। इन्होंने मिर्जापुर के न्यायालय में नौकरी कर ली, किन्तु स्वभावानुकूल न होने के कारण छोड़ दी और मिर्जापुर के मिशन स्कूल में चित्रकला के अध्यापक हो गये।

लेखक-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**–4 अक्टूबर, 1884 ई०।
- **जन्म-स्थान**–अगोना (बस्ती), उ०प्र०।
- **पिता**–चन्द्रबली शुक्ल।
- **मृत्यु**–2 फरवरी, 1941 ई०।
- शुक्ल युग के प्रवर्तक।
- **भाषा**–खड़ीबोली।

इसी बीच स्वाध्याय से इन्होंने हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, बँगला आदि भाषाओं का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया और पत्र-पत्रिकाओं में लिखना आरम्भ कर दिया। बाद में इनकी नियुक्ति काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक पद पर हो गयी। बाबू श्यामसुन्दर दास के अवकाश प्राप्त करने के बाद शुक्लजी ने हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद को भी सुशोभित किया। इसी पद पर कार्य करते हुए 2 फरवरी, 1941 ई० में आप स्वर्ग सिधार गये।

हिन्दी निबन्ध को नया आयाम देकर उसे ठोस धरातल पर प्रतिष्ठित करनेवाले शुक्लजी हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य आलोचक, श्रेष्ठ निबन्धकार, निष्पक्ष इतिहासकार, महान् शैलीकार एवं युग-प्रवर्तक आचार्य थे। इन्होंने सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक दोनों प्रकार की आलोचनाएँ लिखीं। इनकी विद्वत्ता के कारण ही 'हिन्दी शब्द सागर' के सम्पादन-कार्य में सहयोग के लिए इन्हें बुलाया गया। इन्होंने 19 वर्षों तक 'काशी नागरी प्रचारिणी' पत्रिका का सम्पादन भी किया। इन्होंने अंग्रेजी और बँगला में कुछ अनुवाद भी किये। आलोचना इनका मुख्य और प्रिय विषय था। इन्होंने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' लिखकर इतिहास-लेखन की परम्परा का सूत्रपात किया।

शुक्लजी एक उच्चकोटि के निबन्धकार ही नहीं, अपितु युग-प्रवर्तक आलोचक भी रहे हैं। इनकी कृतियाँ इस प्रकार हैं :

(1) निबन्ध-संग्रह—'चिन्तामणि' भाग 1 और 2 तथा 'विचार वीथी'।

(2) इतिहास—'हिन्दी साहित्य का इतिहास'।

(3) आलोचना—'सूरदास', 'रसमीमांसा', 'त्रिवेणी'।

(4) सम्पादन—'जायसी ग्रन्थावली', 'तुलसी ग्रन्थावली', 'भ्रमरगीत सार', 'हिन्दी शब्द सागर', 'काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका', 'आनन्द कादम्बिनी'।

(5) अन्य—इसके अतिरिक्त शुक्लजी ने कहानी (ग्यारह वर्ष का समय), काव्यकृति (अभिमन्यु-वध) की रचना की

तथा अन्य भाषाओं के कई ग्रन्थों का हिन्दी में अनुवाद भी किया। इनमें 'मेगस्थनीज का भारतवर्षीय विवरण', 'आदर्श जीवन', 'कल्पना का आनन्द', 'विश्व प्रपञ्च', 'बुद्धचरित' (काव्य), स्फुट अनुवाद, शशांक आदि प्रमुख हैं।

शुक्लजी की भाषा संस्कृतनिष्ठ, शुद्ध तथा परिमार्जित खड़ीबोली है। परिष्कृत साहित्यिक भाषा में संस्कृत के शब्दों का प्रयोग होने पर भी उसमें बोधगम्यता सर्वत्र विद्यमान है। कहीं-कहीं आवश्यकतानुसार उर्दू, फारसी और अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग भी देखने को मिलता है। शुक्लजी ने मुहावरे और लोकोक्तियों का प्रयोग करके भाषा को अधिक व्यञ्जनापूर्ण, प्रभावपूर्ण एवं व्यावहारिक बनाने का भरसक प्रयास किया है।

शुक्लजी की भाषा-शैली गठी हुई है, उसमें व्यर्थ का एक भी शब्द नहीं आने पाता। कम-से-कम शब्दों में अधिक विचार व्यक्त कर देना इनकी विशेषता है। अवसर के अनुसार इन्होंने वर्णनात्मक, विवेचनात्मक, भावात्मक तथा व्याख्यात्मक शैली का प्रयोग किया है। हास्य-व्यंग्य-प्रधान शैली के प्रयोग के लिए भी शुक्लजी प्रसिद्ध हैं।

प्रस्तुत **'मित्रता'** निबन्ध शुक्लजी के प्रसिद्ध निबन्ध संग्रह 'चिन्तामणि' से संकलित है। इस निबन्ध में अच्छे मित्र के गुण की पहचान तथा मित्रता करने की इच्छा और आवश्यकता आदि का सुन्दर विश्लेषणात्मक वर्णन किया गया है। इसके साथ ही कुसंग के दुष्परिणामों का विशद् विवेचन किया गया है।

●●

मित्रता

जब कोई युवा पुरुष अपने घर से बाहर निकलकर बाहरी संसार में अपनी स्थिति जमाता है, तब पहली कठिनता उसे मित्र चुनने में पड़ती है। यदि उसकी स्थिति बिल्कुल एकान्त और निराली नहीं रहती तो उसकी जान-पहचान के लोग धड़ाधड़ बढ़ते जाते हैं और थोड़े ही दिनों में कुछ लोगों से उसका हेल-मेल हो जाता है। यही हेल-मेल बढ़ते-बढ़ते मित्रता के रूप में परिणत हो जाता है। मित्रों के चुनाव की उपयुक्तता पर उसके जीवन की सफलता निर्भर हो जाती है; क्योंकि संगति का गुप्त प्रभाव हमारे आचरण पर बड़ा भारी पड़ता है। हम लोग ऐसे समय में समाज में प्रवेश करके अपना कार्य आरम्भ करते हैं, जबकि हमारा चित्त कोमल और हर तरह का संस्कार ग्रहण करने योग्य रहता है, हमारे भाव अपरिमार्जित और हमारी प्रवृत्ति अपरिपक्व रहती है। हम लोग कच्ची मिट्टी की मूर्ति के समान रहते हैं, जिसे जो जिस रूप का चाहे, उस रूप का करे—चाहे राक्षस बनावे, चाहे देवता। ऐसे लोगों का साथ करना हमारे लिए बुरा है, जो हमसे अधिक दृढ़ संकल्प के हैं; क्योंकि हमें उनकी हर एक बात बिना विरोध के मान लेनी पड़ती है। पर ऐसे लोगों का साथ करना और बुरा है, जो हमारी ही बात को ऊपर रखते हैं; क्योंकि ऐसी दशा में न तो हमारे ऊपर कोई दबाव रहता है और न हमारे लिए कोई सहारा रहता है। दोनों अवस्थाओं में जिस बात का भय रहता है, उसका पता युवा पुरुषों को प्रायः बहुत कम रहता है। यदि विवेक से काम लिया जाय तो यह भय नहीं रहता, पर युवा पुरुष प्रायः विवेक से कम काम लेते हैं। कैसे आश्चर्य की बात है कि लोग एक घोड़ा लेते हैं तो उसके गुण-दोष कितना परख कर लेते हैं, पर किसी को मित्र बनाने में उसके पूर्व आचरण और प्रकृति आदि का कुछ भी विचार और अनुसन्धान नहीं करते। वे उसमें सब बातें अच्छी-ही-अच्छी मानकर अपना पूरा विश्वास जमा देते हैं। हँसमुख चेहरा, बातचीत का ढंग, थोड़ी चतुराई या साहस—ये ही दो-चार बातें किसी में देखकर लोग चटपट अपना बना लेते हैं। हम लोग यह नहीं सोचते कि मैत्री का उद्देश्य क्या है तथा जीवन के व्यवहार में उसका कुछ मूल्य भी है। यह बात हमें नहीं सूझती कि यह एक ऐसा साधन है, जिससे आत्मशिक्षा का कार्य बहुत सुगम हो जाता है। एक प्राचीन विद्वान् का वचन है—'विश्वासपात्र मित्र से बड़ी भारी रक्षा रहती है। जिसे ऐसा मित्र मिल जाये, उसे समझना चाहिए कि खजाना मिल गया।' विश्वासपात्र मित्र जीवन की एक ओषधि है। हमें अपने मित्रों से यह आशा रखनी चाहिए कि वे उत्तम संकल्पों में हमें दृढ़ करेंगे, दोषों और त्रुटियों से हमें बचायेंगे, हमारे सत्य, पवित्रता और मर्यादा के प्रेम को पुष्ट करेंगे, जब हम कुमार्ग पर पैर रखेंगे, तब वे हमें सचेत करेंगे, जब हम हतोत्साहित होंगे, तब वे हमें उत्साहित करेंगे। सारांश यह है कि वे हमें उत्तमतापूर्वक जीवन-निर्वाह करने में हर तरह से सहायता देंगे। सच्ची मित्रता में उत्तम-से-उत्तम वैद्य की-सी निपुणता और परख होती है, अच्छी-से-अच्छी माता का-सा धैर्य और कोमलता होती है। ऐसी ही मित्रता करने का प्रयत्न पुरुष को करना चाहिए।

छात्रावास में तो मित्रता की धुन सवार रहती है। मित्रता हृदय से उमड़ी पड़ती है। पीछे के जो स्नेह-बन्धन होते हैं, उसमें न तो उतनी उमंग रहती है, न उतनी खिन्नता। बाल-मैत्री में जो मग्न करनेवाला आनन्द होता है, जो हृदय को बेधने वाली ईर्ष्या और खिन्नता होती है, वह और कहाँ? कैसी मधुरता और कैसी अनुरक्ति होती है, कैसा अपार विश्वास होता है! हृदय के कैसे-कैसे उद्‌गार निकलते हैं! वर्तमान कैसा आनन्दमय दिखायी पड़ता है और भविष्य के सम्बन्ध में कैसी लुभानेवाली कल्पनाएँ मन में रहती हैं! कितनी जल्दी बातें लगती हैं और कितनी जल्दी मानना-मनाना होता है! 'सहपाठी की मित्रता' इस उक्ति में हृदय के कितने भारी उथल-पुथल का भाव भरा हुआ है! किन्तु जिस प्रकार युवा पुरुष की मित्रता स्कूल के बालक की मित्रता से दृढ़, शान्त और गम्भीर होती है, उसी प्रकार हमारी युवावस्था के मित्र बाल्यावस्था के मित्रों से कई बातों में भिन्न होते हैं। मैं समझता हूँ कि मित्र चाहते हुए बहुत-से लोग मित्र के आदर्श की कल्पना मन में करते होंगे, पर इस कल्पित आदर्श से तो हमारा काम जीवन की झंझटों में चलता नहीं। सुन्दर प्रतिमा, मनभावनी चाल और स्वच्छन्द प्रकृति ये ही दो-चार बातें देखकर मित्रता की जाती है; पर जीवन-संग्राम में साथ देनेवाले मित्रों में इनमें से कुछ अधिक बातें चाहिए। मित्र केवल उसे नहीं कहते, जिसके गुणों की तो हम प्रशंसा करें, पर जिससे हम स्नेह न कर सकें। जिससे अपने छोटे-छोटे काम तो हम निकालते जायँ, पर भीतर-ही-भीतर घृणा करते रहें? मित्र सच्चे पथ-प्रदर्शक के समान होना चाहिए, जिस पर

हम पूरा विश्वास कर सकें, भाई के समान होना चाहिए, जिसे हम अपना प्रीति-पात्र बना सकें। हमारे और हमारे मित्र के बीच सच्ची सहानुभूति होनी चाहिए—ऐसी सहानुभूति, जिससे एक के हानि-लाभ को दूसरा अपना हानि-लाभ समझे। मित्रता के लिए यह आवश्यक नहीं है कि दो मित्र एक ही प्रकार का कार्य करते हों या एक ही रुचि के हों। इसी प्रकार प्रकृति और आचरण की समानता भी आवश्यक या वांछनीय नहीं है। दो भिन्न प्रकृति के मनुष्यों में बराबर प्रीति और मित्रता रही है। राम धीर और शान्त प्रकृति के थे, लक्ष्मण उग्र और उद्धत स्वभाव के थे, पर दोनों भाइयों में अत्यन्त प्रगाढ़ स्नेह था। उदार तथा उच्चाशय कर्ण और लोभी दुर्योधन के स्वभावों में कुछ विशेष समानता न थी, पर उन दोनों की मित्रता खूब निभी। यह कोई बात नहीं है कि एक ही स्वभाव और रुचि के लोगों में ही मित्रता हो सकती है। समाज में विभिन्नता देखकर लोग एक-दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं। जो गुण हममें नहीं हैं, हम चाहते हैं कि कोई ऐसा मित्र मिले, जिसमें वे गुण हों। चिन्ताशील मनुष्य प्रफुल्लित चित्त का साथ ढूँढ़ता है, निर्बल बली का, धीर उत्साही का। उच्च आकांक्षा वाला चन्द्रगुप्त युक्ति और उपाय के लिए चाणक्य का मुँह ताकता था। नीति-विशारद अकबर मन बहलाने के लिए बीरबल की ओर देखता था।

मित्र का कर्त्तव्य इस प्रकार बताया गया है—'उच्च और महान् कार्यों में इस प्रकार सहायता देना, मन बढ़ाना और साहस दिलाना कि तुम अपनी निज की सामर्थ्य से बाहर काम कर जाओ।' यह कर्त्तव्य उसी से पूरा होगा, जो दृढ़-चित्त और सत्य-संकल्प का हो। इससे हमें ऐसे ही मित्रों की खोज में रहना चाहिए, जिनमें हमसे अधिक आत्मबल हो। हमें उनका पल्ला उसी तरह पकड़ना चाहिए, जिस तरह सुग्रीव ने राम का पल्ला पकड़ा था। मित्र हों तो प्रतिष्ठित और शुद्ध हृदय के हों, मृदुल और पुरुषार्थी हों, शिष्ट और सत्यनिष्ठ हों, जिससे हम अपने को उनके भरोसे पर छोड़ सकें और यह विश्वास कर सकें कि उनसे किसी प्रकार का धोखा न होगा।

जो बात ऊपर मित्रों के सम्बन्ध में कही गयी है, वही जान-पहचान वालों के सम्बन्ध में भी ठीक है। जान-पहचान के लोग ऐसे हों, जिनसे हम कुछ लाभ उठा सकते हों, जो हमारे जीवन को उत्तम और आनन्दमय करने में कुछ सहायता दे सकते हों, यद्यपि उतनी नहीं, जितनी गहरे मित्र दे सकते हैं। मनुष्य का जीवन थोड़ा है, उसमें खोने के लिए समय नहीं। यदि क, ख और ग हमारे लिए कुछ नहीं कर सकते हैं, न कोई बुद्धिमानी या विनोद की बातचीत कर सकते हैं, न कोई अच्छी बात बतला सकते हैं, न सहानुभूति द्वारा हमें ढाढ़स बँधा सकते हैं, न हमारे आनन्द में सम्मिलित हो सकते हैं, न हमें कर्त्तव्य का ध्यान दिला सकते हैं तो ईश्वर हमें उनसे दूर ही रखे। हमें अपने चारों ओर जड़ मूर्तियाँ सजाना नहीं है। आजकल जान-पहचान बढ़ाना कोई बड़ी बात नहीं है। कोई भी युवा पुरुष ऐसे अनेक युवा पुरुषों को पा सकता है, जो उसके साथ थियेटर देखने जायँगे, नाच-रंग में जायँगे, सैर-सपाटे में जायँगे, भोजन का निमन्त्रण स्वीकार करेंगे। यदि ऐसे जान-पहचान के लोगों से कुछ हानि न होगी तो लाभ भी न होगा। पर यदि हानि होगी तो बड़ी भारी होगी। सोचो तो तुम्हारा जीवन कितना नष्ट होगा। यदि ये जान-पहचान के लोग उन मनचले युवकों में से निकले जिनकी संख्या दुर्भाग्यवश आजकल बहुत बढ़ रही है, यदि उन शोहदों में से निकले, जो अमीरों की बुराइयों और मूर्खताओं की नकल किया करते हैं, दिन-रात बनाव-सिंगार में रहा करते हैं, महफिलों में 'ओ-हो-हो', 'वाह-वाह' किया करते हैं, गलियों में ठट्ठा मारते हैं और सिगरेट का धुआँ उड़ाते चलते हैं। ऐसे नवयुवकों से बढ़कर शून्य, निःसार और शोचनीय जीवन और किसका है? वे अच्छी बातों के सच्चे आनन्द से कोसों दूर हैं। उनके लिए न तो संसार में सुन्दर और मनोहर उक्ति वाले कवि हुए हैं और न संसार में सुन्दर आचरण वाले महात्मा हुए हैं। उनके लिए न तो बड़े-बड़े वीर अद्‌भुत कर्म कर गये हैं और न बड़े-बड़े ग्रन्थकार ऐसे विचार छोड़ गये हैं, जिनसे मनुष्य जाति के हृदय में सात्विकता की उमंगें उठती हैं। उनके लिए फूल-पत्तियों में कोई सौन्दर्य नहीं, झरनों के कल-कल में मधुर संगीत नहीं, अनन्त सागर-तरंगों पर गम्भीर रहस्यों का आभास नहीं, उनके भाग्य में सच्चे प्रयत्न और पुरुषार्थ का आनन्द नहीं, उनके भाग्य में सच्ची प्रीति का सुख और कोमल हृदय की शान्ति नहीं। जिनकी आत्मा अपने इन्द्रिय-विषयों में ही लिप्त है; जिनका हृदय नीचाशयों और कुत्सित विचारों से कलुषित है, ऐसे नाशोन्मुख प्राणियों को दिन-दिन अन्धकार में पतित होते देख कौन ऐसा होगा, जो तरस न खायेगा? उसे ऐसे प्राणियों का साथ न करना चाहिए।

मकदूनिया का बादशाह डेमेट्रियस कभी-कभी राज्य का सब काम छोड़ अपने ही मेल के दस-पाँच साथियों को लेकर विषय-वासना में लिप्त रहा करता था। एक बार बीमारी का बहाना करके इसी प्रकार वह अपने दिन काट रहा था। इसी बीच उसका पिता उससे मिलने के लिए गया और उसने एक हँसमुख जवान को कोठरी से बाहर निकलते देखा। जब पिता कोठरी के भीतर पहुँचा, तब डेमेट्रियस ने कहा—'ज्वर ने मुझे अभी छोड़ा है।' पिता ने कहा—'हाँ! ठीक है, वह दरवाजे पर मुझे मिला था।'

कुसंग का ज्वर सबसे भयानक होता है। यह केवल नीति और सद्वृत्ति का ही नाश नहीं करता, बल्कि बुद्धि का भी क्षय करता है। किसी युवा पुरुष की संगति यदि बुरी होगी, तो वह उसके पैरों में बँधी चक्की के समान होगी, जो उसे दिन-दिन अवनति के गड्ढे में गिराती जायगी और यदि अच्छी होगी तो सहारा देनेवाली बाहु के समान होगी, जो उसे निरन्तर उन्नति की ओर उठाती जायगी।

इंग्लैण्ड के एक विद्वान् को युवावस्था में राज-दरबार में जगह नहीं मिली। इस पर जिन्दगी भर वह अपने भाग्य को सराहता रहा। बहुत-से लोग इसे अपना बड़ा दुर्भाग्य समझते, पर वह अच्छी तरह जानता था कि वहाँ वह बुरे लोगों की संगति में पड़ता, जो उसकी आध्यात्मिक उन्नति में बाधक होते। बहुत-से लोग ऐसे होते हैं, जिनके घड़ी भर के साथ से भी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है; क्योंकि उतने ही बीच में ऐसी-ऐसी बातें कही जाती हैं, जो कानों में न पड़नी चाहिए, चित्त पर ऐसे प्रभाव पड़ते हैं, जिनसे उसकी पवित्रता का नाश होता है। बुराई अटल भाव धारण करके बैठती है। बुरी बातें हमारी धारणा में बहुत दिनों तक टिकती हैं। इस बात को प्रायः सभी लोग जानते हैं कि भद्दे व फूहड़ गीत जितनी जल्दी ध्यान पर चढ़ते हैं, उतनी जल्दी कोई गम्भीर या अच्छी बात नहीं। एक बार एक मित्र ने मुझसे कहा कि उसने लड़कपन में कहीं से एक बुरी कहावत सुन पायी थी, जिसका ध्यान वह लाख चेष्टा करता है कि न आये, पर बार-बार आता है। जिन भावनाओं को हम दूर रखना चाहते हैं, जिन बातों को हम याद करना नहीं चाहते, वे बार-बार हृदय में उठती हैं और बेधती हैं; अतः तुम पूरी चौकसी रखो, ऐसे लोगों को कभी साथी न बनाओ, जो अश्लील, अपवित्र और फूहड़ बातों से तुम्हें हँसाना चाहें। सावधान रहो, ऐसा न हो कि पहले-पहल तुम इसे एक बहुत सामान्य बात समझो और सोचो कि एक बार ऐसा हुआ, फिर ऐसा न होगा अथवा तुम्हारे चरित्र-बल का ऐसा प्रभाव पड़ेगा कि ऐसी बातें बकने वाले आगे चलकर आप सुधर जायँगे। नहीं, ऐसा नहीं होगा। जब एक बार मनुष्य अपना पैर कीचड़ में डाल देता है, तब फिर यह नहीं देखता कि वह कहाँ और कैसी जगह पैर रखता है। धीरे-धीरे उन बुरी बातों में अभ्यस्त होते-होते तुम्हारी घृणा कम हो जायगी। पीछे तुम्हें उनसे चिढ़ न मालूम होगी; क्योंकि तुम यह सोचने लगोगे कि चिढ़ने की बात ही क्या है। तुम्हारा विवेक कुण्ठित हो जायगा और तुम्हें भले-बुरे की पहचान न रह जायगी। अन्त में होते-होते तुम भी बुराई के भक्त बन जाओगे; अतः हृदय को उज्ज्वल और निष्कलंक रखने का सबसे अच्छा उपाय यही है कि बुरी संगत की छूत से बचो। यह पुरानी कहावत है कि—

''काजल की कोठरी में कैसो हू सयानो जाय,
एक लीक काजल की लागि है पै लागि है।''

● **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल**

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

1. निम्नलिखित गद्यांशों के नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) हम लोग कच्ची मिट्टी की मूर्ति के समान रहते हैं जिसे जो जिस रूप का चाहे उस रूप का करे–चाहे राक्षस बनावे, चाहे देवता। ऐसे लोगों का साथ करना हमारे लिए बुरा है जो हमसे अधिक दृढ़ संकल्प के हैं; क्योंकि हमें उनकी हर एक बात बिना विरोध के मान लेनी पड़ती है। पर ऐसे लोगों का साथ करना और बुरा है, जो हमारी ही बात को ऊपर रखते हैं; क्योंकि ऐसी दशा में न तो हमारे ऊपर कोई दबाव रहता है और न हमारे लिए कोई सहारा रहता है। **(2018HF)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) हमें किन लोगों का साथ नहीं करना चाहिए?

(ख) ''विश्वासपात्र मित्र से बड़ी भारी रक्षा रहती है। जिसे ऐसा मित्र मिल जाये उसे समझना चाहिए कि खजाना मिल गया।'' विश्वासपात्र मित्र जीवन की एक औषध है। हमें अपने मित्रों से यह आशा रखनी चाहिए कि वे उत्तम संकल्पों से हमें दृढ़ करेंगे, दोषों और त्रुटियों से हमें बचाएँगे, हमारे सत्य, पवित्रता और मर्यादा के प्रेम को पुष्ट करेंगे, जब हम कुमार्ग पर पैर रखेंगे, तब वे हमें सचेत करेंगे, जब हम हतोत्साहित होंगे तब वे हमें उत्साहित करेंगे। सारांश यह है कि वे हमें उत्तमतापूर्वक जीवन-निर्वाह करने में हर

प्रकार से सहायता देंगे। सच्ची मित्रता में उत्तम से उत्तम वैद्य की-सी निपुणता और परख होती है, अच्छी-से-अच्छी माता का-सा धैर्य और कोमलता होती है, ऐसी ही मित्रता करने का प्रयत्न प्रत्येक पुरुष को करना चाहिए। **(2016CB,CE,20MF)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) (a) हमें अपने मित्रों से क्या आशा करनी चाहिए?

अथवा **लेखक ने सच्ची मित्रता की तुलना किससे की है?**

अथवा **विश्वासपात्र मित्र की तुलना किससे की है?**

(iii) (b) लेखक ने अच्छे मित्र के क्या-क्या कर्त्तव्य बताये हैं?

(ग) मित्र केवल उसे नहीं कहते, जिसके गुणों की तो हम प्रशंसा करें, पर जिससे हम स्नेह न कर सकें। जिससे अपने छोटे-छोटे काम तो हम निकालते जायँ पर भीतर-ही-भीतर घृणा करते रहें? मित्र सच्चे पथ-प्रदर्शक के समान होना चाहिए, जिस पर हम पूरा विश्वास कर सकें; भाई के समान होना चाहिए, जिसे हम अपना प्रीति-पात्र बना सकें। हमारे और हमारे मित्र के बीच सच्ची सहानुभूति होनी चाहिए–ऐसी सहानुभूति, जिससे एक के हानि-लाभ को दूसरा अपना हानि-लाभ समझे। मित्रता के लिए यह आवश्यक नहीं कि दो मित्र एक ही प्रकार के कार्य करते हों या एक ही रुचि के हों। इसी प्रकार प्रकृति और आचरण की समानता भी आवश्यक या वांछनीय नहीं है। दो भिन्न प्रकृति के मनुष्यों में बराबर प्रीति और मित्रता रही है। **(2017AA,19AF)**

अथवा **मित्र सच्चे पथ-प्रदर्शक ..... प्रीति और मित्रता रही है।**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) (a) मित्र किसे कहते हैं?

(b) हमारे और हमारे मित्र के बीच कैसी सहानुभूति होनी चाहिए?

(c) सच्चा मित्र कैसा होना चाहिए?

(घ) यह कोई बात नहीं है कि एक ही स्वभाव और रुचि के लोगों में ही मित्रता हो सकती है। समाज में विभिन्नता देखकर लोग एक-दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं। जो गुण हममें नहीं हैं, हम चाहते हैं कि कोई ऐसा मित्र मिले, जिसमें वे गुण हों। चिन्ताशील मनुष्य प्रफुल्लित चित्त का साथ ढूँढ़ता है, निर्बल बली का, धीर उत्साही का। उच्च आकांक्षा वाला चन्द्रगुप्त युक्ति और उपाय के लिए चाणक्य का मुँह ताकता था। नीति-विशारद अकबर मन बहलाने के लिए बीरबल की ओर देखता था।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) लेखक के अनुसार समाज में विभिन्नता देखकर लोग एक-दूसरे की ओर क्यों आकर्षित होते हैं?

(ङ) मित्र का कर्त्तव्य इस प्रकार बताया गया है–'उच्च और महान् कार्य में इस प्रकार सहायता देना, मन बढ़ाना और साहस दिलाना कि तुम अपनी निज की सामर्थ्य से बाहर काम कर जाओ।' यह कर्त्तव्य उसी से पूरा होगा, जो दृढ़-चित्त और सत्य-संकल्प का हो। इससे हमें ऐसे ही मित्रों की खोज में रहना चाहिए, जिनमें हमसे अधिक आत्मबल हो। हमें उनका पल्ला उसी तरह पकड़ना चाहिए, जिस तरह सुग्रीव ने राम का पल्ला पकड़ा था। मित्र हों तो प्रतिष्ठित और शुद्ध हृदय के हों, मृदुल और पुरुषार्थी हों, शिष्ट और सत्यनिष्ठ हों, जिससे हम अपने को उनके भरोसे पर छोड़ सकें और यह विश्वास कर सकें कि उनसे किसी प्रकार का धोखा न होगा। **(2018HA)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) हमें कैसे मित्रों की खोज में रहना चाहिए?

(च) उनके लिए न तो बड़े-बड़े वीर अद्भुत कार्य कर गये हैं और न बड़े-बड़े ग्रन्थकार ऐसे विचार छोड़ गये हैं, जिनसे मनुष्य जाति के हृदय में सात्विकता की उमंगें उठती हैं। उनके लिए फूल-पत्तियों में कोई सौन्दर्य नहीं, झरनों के कल-कल में मधुर संगीत

नहीं, अनन्त सागर-तरंगों पर गम्भीर रहस्यों का आभास नहीं, उनके भाग्य में सच्चे प्रयत्न और पुरुषार्थ का आनन्द नहीं, उनके भाग्य में सच्ची प्रीति का सुख और कोमल हृदय की शान्ति नहीं। जिनकी आत्मा अपने इन्द्रिय-विषयों में ही लिप्त है; जिनका हृदय नीचाशयों और कुत्सित विचारों से कलुषित है, ऐसे नाशोन्मुख प्राणियों को दिन-दिन अन्धकार में पतित होते देख कौन ऐसा होगा जो तरस न खाएगा? उसे ऐसे प्राणियों का साथ न करना चाहिए।

अथवा **उनके लिए फूल-पत्तियों में.....साथ नहीं करना चाहिए।** **(2020MD)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) (a) हमें किस प्रकार के प्राणियों का साथ नहीं करना चाहिए?

(b) लेखक किस बात पर तरस खाने की बात कह रहा है?

(छ) कुसंग का ज्वर सबसे भयानक होता है। यह केवल नीति और सद्वृत्ति का ही नाश नहीं करता, बल्कि बुद्धि का भी क्षय करता है। किसी युवा पुरुष की संगति यदि बुरी होगी, तो वह उसके पैरों में बँधी चक्की के समान होगी, जो उसे दिन-दिन अवनति के गड्ढे में गिराती जाएगी और यदि अच्छी होगी तो सहारा देने वाली सुदृढ़ बाहु के समान होगी, जो उसे निरन्तर उन्नति की ओर उठाती जायगी। **(2017AC, AF 19AE)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) (a) कुसंग का क्या प्रभाव होता है?

अथवा **कुसंग का प्रभाव व्यक्ति के जीवन पर किस प्रकार पड़ता है?**

अथवा **युवा पुरुष की संगति यदि बुरी होगी तो उसका क्या परिणाम होगा?**

(b) कुसंग और अच्छी संगति में क्या अन्तर है?

(ज) सावधान रहो, ऐसा न हो कि पहले-पहल तुम इसे एक बहुत सामान्य बात समझो और सोचो कि एक बार ऐसा हुआ, फिर ऐसा न होगा अथवा तुम्हारे चरित्र-बल का ऐसा प्रभाव पड़ेगा कि ऐसी बातें बकने वाले आगे चलकर आप सुधर जायँगे। नहीं, ऐसा नहीं होगा। जब एक बार मनुष्य अपना पैर कीचड़ में डाल देता है, तब फिर यह नहीं देखता कि वह कहाँ और कैसी जगह पैर रखता है। धीरे-धीरे उन बुरी बातों में अभ्यस्त होते-होते तुम्हारी घृणा कम हो जायगी। पीछे तुम्हें उनसे चिढ़ न मालूम होगी; क्योंकि तुम यह सोचने लगोगे कि चिढ़ने की बात ही क्या है? तुम्हारा विवेक कुण्ठित हो जायगा और तुम्हें भले-बुरे की पहचान न रह जायगी। अन्त में होते-होते तुम भी बुराई के भक्त बन जाओगे; अतः हृदय को उज्ज्वल और निष्कलंक रखने का सबसे अच्छा उपाय यही है कि बुरी संगत की छूत से बचो। **(2016CF)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) हृदय को उज्ज्वल रखने का क्या उपाय है?

(झ) बहुत से लोग ऐसे होते हैं जिनके घड़ी भर के साथ से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, क्योंकि उतने ही बीच में ऐसी-ऐसी बातें कही जाती हैं जो कानों में न पड़नी चाहिए, चित्त पर ऐसे प्रभाव पड़ते हैं, जिससे उसकी पवित्रता का नाश होता है। बुराई अटल भाव धारण करके बैठती है। बुरी बातें हमारी धारणा में बहुत दिनों तक टिकती हैं। **(2017AG)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) बुराई की प्रकृति कैसी होती है?

2. रामचन्द्र शुक्ल का जीवन-परिचय बताते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।**(2016CA, CF, 17AA, AC, AD, AE, 19AA, AC,AD,AG, 20MG,ME,MA,MF)**

अथवा आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का जीवन-परिचय दीजिए एवं उनकी किसी एक रचना का नाम लिखिए।

3. रामचन्द्र शुक्ल की भाषा-शैली स्पष्ट करते हुए उनकी साहित्यिक सेवाओं पर प्रकाश डालिए।
4. रामचन्द्र शुक्ल का जीवन-परिचय देते हुए उनके साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डालिए।
5. मित्र का चुनाव करने में हमें किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
6. विश्वासपात्र को जीवन की एक ओषधि क्यों कहा गया है?
7. मित्र का चुनाव करने में लोग प्रायः क्या भूल करते हैं?
8. बाल्यावस्था की मित्रता युवावस्था से किन बातों में भिन्न होती है?
9. 'दो भिन्न प्रकृति के मनुष्यों में बराबर प्रीति और मित्रता रही है।' लेखक के इस कथन को उदाहरणों से पुष्ट कीजिए।
10. लेखक कैसे लोगों से बचने की हमें शिक्षा देता है?
11. 'कुसंग का ज्वर सबसे भयानक होता है।' लेखक ने ऐसा क्यों कहा है?
12. स्थिति जमाना, धड़ाधड़ बढ़ना, बात सूझना, धुन सवार होना, पल्ला पकड़ना, चौकसी रखना—इन क्रिया पदों का अर्थ बताइए और वाक्यों में इनका प्रयोग कीजिए।
13. कोमल, उपयुक्त, घन, गहरा, भारी शब्दों में प्रत्यय जोड़कर इनका संज्ञा रूप लिखिए।
14. अनन्त, अनुसन्धान, अत्यन्त, दुर्भाग्य, निस्सार इन शब्दों में उपसर्ग और मूल रूप अलग-अलग लिखिए।
15. निम्नलिखित शब्दों का समास विग्रह करते हुए समास का नाम बताइए–
विश्वासपात्र, सहानुभूति, उच्चाशय, जीवन-निर्वाह, हानि-लाभ।
16. निम्नलिखित शब्दों का तत्सम रूप बताइए–
चतुराई, बनाव, सिंगार, कान।

➥ आन्तरिक मूल्यांकन

(1) रामचन्द्र शुक्ल के समकालीन लेखकों की एक सूची बनाइए एवं उनकी एक-एक रचनाओं का भी उल्लेख कीजिए।
(2) मित्रता से होने वाले लाभों की एक सूची तैयार कीजिए।

शब्दार्थ

धड़ाधड़ = बहुत तेजी से। **परिणत** = बदलना। **अपरिमार्जित** = बिना शुद्ध किया हुआ। **चित्त** = हृदय। **प्रवृत्ति** = रुचि। **अपरिपक्व** = अविकसित। **संकल्प** = इच्छा। **हतोत्साहित** = उत्साह-रहित। **विवेक** = उचित-अनुचित को समझने की क्षमता। **प्रकृति** = स्वभाव। **अनुसन्धान** = खोज। **सुगम** = सरल। **निपुणता** = चतुरता। **खिन्नता** = दुःख। **अनुरक्ति** = प्रेम। **उद्‌गार** = भावनाएँ। **प्रतिमा** = मूर्ति। **सहानुभूति** = साथ-साथ सुख-दुःख का अनुभव करना। **वांछनीय** = चाहने योग्य। **उग्र** = तेज। **उद्धत** = अक्खड़। **प्रगाढ़** = गहरा। **प्रफुल्लित** = प्रसन्न। **नीति-विशारद** = नीति का विद्वान्। **मृदुल** = कोमल। **निःसार** = सारहीन। **कुत्सित** = बुरे। **नीचाशयों** = नीच विचारों। **कलुषित** = मलिन। **नाशोन्मुख** = नाश की ओर बढ़ते हुए। **क्षय** = विनाश। **चेष्टा** = प्रयत्न। **अभ्यस्त** = आदी। **निष्कलंक** = कलंक-रहित। **सयानो** = चतुर। **कुसंग** = बुरा साथ। **सद्‌वृत्ति** = अच्छा आचरण।

●●

2 जयशंकर प्रसाद

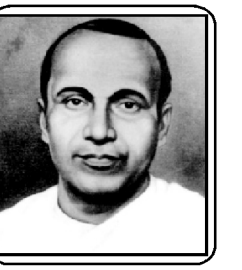

लेखक-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**–सन् 1889 ई0।
- **जन्म-स्थान**–काशी।
- **पिता**–देवीप्रसाद।
- **मृत्यु**–सन् 1937 ई0।
- छायावादी युग के लेखक।

जयशंकर प्रसाद का जन्म काशी के प्रसिद्ध वैश्य परिवार में 30 जनवरी, 1889 ई0 को हुआ था। इनका परिवार 'सुंघनी साहू' के नाम से प्रसिद्ध था। प्रसादजी के पिता देवीप्रसाद स्वयं साहित्य-प्रेमी थे। इस प्रकार प्रसादजी को जन्म से ही साहित्यिक वातावरण प्राप्त हुआ। प्रसादजी ने 9 वर्ष की आयु में ही एक कविता की रचना की जिसे पढ़कर इनके पिता ने इन्हें महान् कवि बनने का आशीर्वाद दिया। प्रसादजी ने बाल्यावस्था में ही अपने माता-पिता के साथ देश के विभिन्न तीर्थस्थानों की यात्रा की। कुछ समय बाद ही इनके माता-पिता की मृत्यु हो गयी। इनकी शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध बड़े भाई श्री शम्भूनाथ जी ने किया। सर्वप्रथम इनका नाम 'क्वींस कालेज' में लिखाया गया, किन्तु वहाँ इनका मन नहीं लगा और घर पर ही योग्य शिक्षकों से अंग्रेजी और संस्कृत का अध्ययन करने लगे। जब आप 17 वर्ष के थे तभी बड़े भाई शम्भूनाथ जी की मृत्यु हो गयी। इन्होंने तीन शादियाँ कीं, किन्तु तीनों ही पत्नियों की असमय मृत्यु हो गयी। इसी बीच इनके छोटे भाई की मृत्यु हो गयी। इन सभी असामयिक मौतों से यह अन्दर-ही-अन्दर टूट गये। संघर्ष और चिन्ताओं ने स्वास्थ्य को बहुत हानि पहुँचायी। क्षय रोग से पीड़ित होने के कारण 15 नवम्बर, 1937 ई0 को 47 वर्ष की आयु में इनका निधन हो गया।

प्रसादजी ने विषम परिस्थितियों में भी अपने धैर्य को बनाये रखा। आपने स्वाध्याय को कभी नहीं छोड़ा। घर पर ही वेद, पुराण, इतिहास, दर्शन, संस्कृत, फारसी, अंग्रेजी और हिन्दी का गहन अध्ययन करते हुए हिन्दी की सेवा में जुट गये। इन्होंने भारत के उज्ज्वल अतीत को अपनी रचनाओं में चित्रित किया है। प्रसादजी ने भारतीय इतिहास एवं दर्शन का अध्ययन किया और उसके आधार पर ऐतिहासिक नाटकों के क्षेत्र में युगान्तर उपस्थित किया। इन्होंने अल्पायु में ही श्रेष्ठ ग्रन्थों की रचना करके हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया। इनका सम्पूर्ण जीवन माँ भारती की आराधना में समर्पित था।

प्रसादजी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। ये महान् कवि, सफल नाटककार, उपन्यासकार, कुशल कहानीकार और श्रेष्ठ निबन्धकार थे। इनकी **कृतियाँ** निम्नलिखित हैं :

(i) नाटक–इनके प्रमुख नाटक चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, अजातशत्रु, ध्रुवस्वामिनी, विशाख, राज्यश्री, कामना, जनमेजय का नागयज्ञ, करुणालय, एक घूँट, सज्जन एवं प्रायश्चित आदि हैं।

(ii) कहानी संग्रह–प्रतिध्वनि, छाया, इन्द्रजाल, आकाशदीप तथा आँधी प्रमुख कहानी-संग्रह हैं।

(iii) काव्य–कामायनी (महाकाव्य), झरना, लहर, आँसू, महाराणा का महत्त्व, कानन कुसुम आदि प्रसिद्ध काव्य-ग्रन्थ हैं।

(iv) उपन्यास–कंकाल, तितली, इरावती (अपूर्ण) आदि प्रमुख उपन्यास हैं।

(v) निबन्ध-संग्रह–'काव्य कला' और अन्य निबन्ध हैं।

प्रसादजी की भाषा शुद्ध, सरस, साहित्यिक एवं संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली है। एक-एक शब्द मोती की भाँति जड़ा हुआ है।

इनकी **शैली के विविध रूप** इस प्रकार हैं—

(i) वर्णनात्मक शैली–प्रसादजी ने अपने नाटकों, उपन्यासों एवं कहानियों में घटनाओं का वर्णन करते समय इस शैली को अपनाया है।

(ii) आलंकारिक शैली–प्रसादजी स्वभावतः कवि थे, अतः इनके गद्य में भी विविध अलंकारों का प्रयोग मिलता है।

(iii) भावात्मक शैली–भावों के चित्रण में प्रसादजी का गद्य भी काव्यमय हो जाता है। इसमें भाषा अलंकृत और काव्यमयी है। इनकी प्रायः सभी रचनाओं में इस शैली के दर्शन होते हैं।

(iv) चित्रात्मक शैली–प्रकृति वर्णन और रेखाचित्रों में यह शैली मिलती है।

(v) इसके अतिरिक्त सूक्ति शैली, संवाद शैली, विचारात्मक शैली एवं अनुसन्धानात्मक शैली का प्रयोग भी प्रसादजी ने किया है।

प्रस्तुत '**ममता**' शीर्षक कहानी में प्रसादजी ने भारतीय नारी के आदर्शों को स्थापित करते हुए उसकी बेबसी एवं दयनीय स्थिति का सुन्दर चित्र उपस्थित किया है। ममता विपरीत परिस्थितियों में भी अपने स्वाभिमान की रक्षा करते हुए अपने कर्त्तव्य एवं धर्म का पालन करती है।

●●

ममता

(1)

रोहतास-दुर्ग के प्रकोष्ठ में बैठी हुई युवती ममता, शोण के तीक्ष्ण गम्भीर प्रवाह को देख रही है। ममता विधवा थी। उसका यौवन शोण के समान ही उमड़ रहा था। मन में वेदना, मस्तक में आँधी, आँखों में पानी की बरसात लिये, वह सुख के कंटक-शयन में विकल थी। वह रोहतास दुर्गपति के मंत्री चूड़ामणि की अकेली दुहिता थी, फिर उसके लिए कुछ अभाव होना असम्भव था, परन्तु वह विधवा थी–हिन्दू-विधवा संसार में सबसे निराश्रय प्राणी है– तब उसकी विडम्बना का कहाँ अन्त था?

चूड़ामणि ने चुपचाप उसके प्रकोष्ठ में प्रवेश किया। शोण के प्रवाह में, उसके कल-नाद में, अपना जीवन मिलाने में वह बेसुध थी। पिता का आना न जान सकी। चूड़ामणि व्यथित हो उठे। स्नेह-पालिता पुत्री के लिए क्या करें, यह स्थिर न कर सकते थे। लौटकर बाहर चले गये। ऐसा प्रायः होता, पर आज मंत्री के मन में बड़ी दुश्चिन्ता थी। पैर सीधे न पड़ते थे।

एक पहर बीत जाने पर वे फिर ममता के पास आये। उस समय उनके पीछे दस सेवक चाँदी के बड़े थालों में कुछ लिए खड़े थे। कितने ही मनुष्यों के पद-शब्द सुन ममता ने घूमकर देखा। मंत्री ने सब थालों को रखने का संकेत किया। अनुचर थाल रखकर चले गये।

ममता ने पूछा—"यह क्या है पिताजी?"

"तेरे लिए बेटी! उपहार है।"—कहकर चूड़ामणि ने उसका आवरण उलट दिया। स्वर्ण का पीलापन उस सुनहली संध्या में विकीर्ण होने लगा। ममता चौंक उठी—

"इतना स्वर्ण! यह कहाँ से आया?"

"चुप रहो ममता, यह तुम्हारे लिए है!"

"तो क्या आपने म्लेच्छ का उत्कोच स्वीकार कर लिया? पिताजी, यह अनर्थ है, अर्थ नहीं। लौटा दीजिये। पिताजी! हम लोग ब्राह्मण हैं, इतना सोना लेकर क्या करेंगे?"

"इस पतनोन्मुख प्राचीन सामन्त-वंश का अन्त समीप है, बेटी! किसी भी दिन शेरशाह रोहिताश्व पर अधिकार कर सकता है। उस दिन मंत्रित्व न रहेगा, तब के लिए बेटी।"

"हे भगवान्! तब के लिए! विपद के लिए! इतना आयोजन! परमपिता की इच्छा के विरुद्ध इतना साहस! पिताजी, क्या भीख न मिलेगी? क्या कोई हिन्दू भू-पृष्ठ पर न बचा रह जायगा, जो ब्राह्मण को दो मुट्ठी अन्न दे सके? यह असम्भव है। फेर दीजिये पिताजी, मैं काँप रही हूँ—इसकी चमक आँखों को अन्धा बना रही है।"

"मूर्ख है"—कहकर चूड़ामणि चले गये।

दूसरे दिन जब डोलियों का ताँता भीतर आ रहा था, ब्राह्मण मंत्री चूड़ामणि का हृदय धक्-धक् करने लगा। वह अपने को रोक न सका। उसने जाकर रोहतास-दुर्ग के तोरण पर डोलियों का आवरण खुलवाना चाहा। पठानों ने कहा—

"यह महिलाओं का अपमान करना है।"

बात बढ़ गयी। तलवारें खिंचीं, ब्राह्मण वहीं मारा गया और राजा-रानी और कोष सब छली शेरशाह के हाथ पड़े; निकल गयी ममता। डोली में भरे हुए पठान सैनिक दुर्ग भर में फैल गये, पर ममता न मिली।

(2)

काशी के उत्तर में धर्मचक्र विहार मौर्य और गुप्त सम्राटों की कीर्ति का खँडहर था। भग्न चूड़ा, तृण-गुल्मों से ढके हुए प्राचीर, ईंटों के ढेर में बिखरी हुई भारतीय शिल्प की विभूति, ग्रीष्म की चन्द्रिका में अपने को शीतल कर रही थी।

जहाँ पंचवर्गीय भिक्षु गौतम का उपदेश ग्रहण करने के लिए पहले मिले थे, उसी स्तूप के भग्नावशेष की मलिन छाया में एक झोंपड़ी के दीपालोक में एक स्त्री पाठ कर रही थी—

"अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते—"

पाठ रुक गया। एक भीषण और हताश आकृति दीप के मन्द प्रकाश में सामने खड़ी थी। स्त्री उठी, उसने कपाट बन्द करना चाहा; परन्तु उस व्यक्ति ने कहा—"माता! मुझे आश्रय चाहिए।"

"तुम कौन हो?"—स्त्री ने पूछा।

"मैं मुगल हूँ। चौसा-युद्ध में शेरशाह से विपन्न होकर रक्षा चाहता हूँ। इस रात अब आगे चलने में असमर्थ हूँ।"

"क्या शेरशाह से!" स्त्री ने अपने ओंठ काट लिये।

"हाँ, माता!"

"परन्तु तुम भी वैसे ही क्रूर हो, वही भीषण रक्त की प्यास, वही निष्ठुर प्रतिबिम्ब तुम्हारे मुख पर भी है। सैनिक! मेरी कुटी में स्थान नहीं, जाओ कहीं दूसरा आश्रय खोज लो!"

"गला सूख रहा है, साथी छूट गये हैं, अश्व गिर पड़ा है—इतना थका हुआ हूँ, इतना!"—कहते-कहते वह व्यक्ति धम से बैठ गया और उसके सामने ब्रह्माण्ड घूमने लगा। स्त्री ने सोचा, यह विपत्ति कहाँ से आयी। उसने जल दिया, मुगल के प्राणों की रक्षा हुई। वह सोचने लगी—"सब विधर्मी दया के पात्र नहीं—मेरे पिता का वध करनेवाले आततायी!" घृणा से उसका मन विरक्त हो गया।

स्वस्थ होकर मुगल ने कहा—"माता! तो फिर मैं चला जाऊँ?" स्त्री विचार कर रही थी—"मैं ब्राह्मणी हूँ, मुझे तो अपने धर्म अतिथि-देव की उपासना—का पालन करना चाहिए, परन्तु यहाँ.....नहीं-नहीं, सब विधर्मी दया के पात्र नहीं। परन्तु यह दया तो नहीं.....कर्त्तव्य करना है। तब?"

मुगल अपनी तलवार टेककर उठ खड़ा हुआ। ममता ने कहा—"क्या आश्चर्य है कि तुम भी छल करो; ठहरो।"

"छल! नहीं तब नहीं स्त्री! जाता हूँ, तैमूर का वंशधर स्त्री से छल करेगा? जाता हूँ। भाग्य का खेल है।"

ममता ने मन में कहा—"यहाँ कौन दुर्ग है! यही झोंपड़ी न, जो चाहे ले ले, मुझे अपना कर्त्तव्य करना पड़ेगा।" वह बाहर चली आयी और मुगल से बोली—"जाओ भीतर, थके हुए भयभीत पथिक। तुम चाहे कोई हो, मैं तुम्हें आश्रय देती हूँ। मैं ब्राह्मण-कुमारी हूँ, सब अपना धर्म छोड़ दें, तो मैं भी क्यों छोड़ दूँ?" मुगल ने चन्द्रमा के मन्द प्रकाश में वह महिमामय मुखमण्डल देखा, उसने मन-ही-मन नमस्कार किया। ममता पास की टूटी हुई दीवार में चली गयी। भीतर, थके पथिक ने झोंपड़ी में विश्राम किया।

प्रभात में खँडहर की सन्धि से ममता ने देखा, सैकड़ों अश्वारोही उस प्रान्त में घूम रहे हैं। वह अपनी मूर्खता पर अपने को कोसने लगी।

अब उस झोंपड़ी से निकलकर उस पथिक ने कहा—"मिरजा। मैं यहाँ हूँ।"

शब्द सुनते ही प्रसन्नता की चीत्कार-ध्वनि से वह प्रान्त गूँज उठा। ममता अधिक भयभीत हुई। पथिक ने कहा—"वह स्त्री कहाँ है? उसे खोज निकालो।" ममता छिपने के लिए अधिक सचेष्ट हुई। वह मृग-दाव में चली गयी। दिनभर उसमें से न निकली। सन्ध्या में जब उन लोगों के जाने का उपक्रम हुआ, तो ममता ने सुना, पथिक घोड़े पर सवार होते हुए कह रहा है—"मिरजा! उस स्त्री को मैं कुछ दे न सका। उसका घर बनवा देना; क्योंकि मैंने विपत्ति में यहाँ विश्राम पाया था। यह स्थान भूलना मत।" इसके बाद वे चले गये।

चौसा के मुगल-पठान-युद्ध को बहुत दिन बीत गये। ममता अब सत्तर वर्ष की वृद्धा है। वह अपनी झोंपड़ी में एक दिन पड़ी थी। शीतकाल का प्रभात था। उसका जीर्ण कंकाल खाँसी से गूँज रहा था। ममता की सेवा के लिए गाँव की दो-तीन स्त्रियाँ उसे घेरकर बैठी थीं; क्योंकि वह आजीवन सबके दुःख-सुख की सहभागिनी रही।

ममता ने जल पीना चाहा, एक स्त्री ने सीपी से जल पिलाया। सहसा एक अश्वारोही उसी झोंपड़ी के द्वार पर दिखायी पड़ा। वह अपनी धुन में कहने लगा—"मिरजा ने जो चित्र बनाकर दिया है, वह तो इसी जगह का होना चाहिए। वह बुढ़िया मर गयी होगी, अब किससे पूछूँ कि एक दिन शहंशाह हुमायूँ किस छप्पर के नीचे बैठे थे? यह घटना भी तो सैंतालीस वर्ष से ऊपर की हुई!"

ममता ने अपने विकल कानों से सुना। उसने पास की स्त्री से कहा—"उसे बुलाओ।"

अश्वारोही पास आया। ममता ने रुक-रुककर कहा—"मैं नहीं जानती कि वह शहंशाह था या साधारण मुगल; पर एक दिन इसी झोंपड़ी के नीचे वह रहा। मैंने सुना था कि वह मेरा घर बनवाने की आज्ञा दे चुका था। मैं आजीवन अपनी झोंपड़ी

के खोदे जाने के डर से भयभीत रही। भगवान् ने सुन लिया, मैं आज इसे छोड़े जाती हूँ। तुम इसका मकान बनाओ या महल, मैं अपने चिर-विश्राम-गृह में जाती हूँ!''

वह अश्वारोही अवाक् खड़ा था। बुढ़िया के प्राण-पक्षी अनन्त में उड़ गये।

वहाँ एक अष्टकोण मन्दिर बना और उस पर शिलालेख लगाया गया—

''सातों देश के नरेश हुमायूँ ने एक दिन यहाँ विश्राम किया था। उसके पुत्र अकबर ने उसकी स्मृति में यह गगनचुम्बी मन्दिर बनवाया।''

पर उसमें ममता का कहीं नाम नहीं।

● **जयशंकर प्रसाद**

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

1. निम्नलिखित गद्यांशों के नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) रोहतास-दुर्ग के प्रकोष्ठ में बैठी हुई युवती ममता, शोण के तीक्ष्ण गम्भीर प्रवाह को देख रही है। ममता विधवा थी। उसका यौवन शोण के समान ही उमड़ रहा था। मन में वेदना, मस्तक में आँधी, आँखों में पानी की बरसात लिए, वह सुख के कंटक-शयन में विकल थी। वह रोहतास-दुर्गपति के मंत्री चूड़ामणि की अकेली दुहिता थी, फिर उसके लिए कुछ अभाव होना असम्भव था, परन्तु वह विधवा थी—हिन्दू-विधवा संसार में सबसे तुच्छ निराश्रय प्राणी है—तब उसकी विडम्बना का कहाँ अन्त था?

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) उपर्युक्त गद्यांश में हिन्दू विधवा की स्थिति कैसी है?

(ख) ''हे भगवान! तब के लिए! विपद् के लिए! इतना आयोजन! परमपिता की इच्छा के विरुद्ध इतना साहस। पिताजी, क्या भीख न मिलेगी? क्या कोई हिन्दू भू-पृष्ठ पर न बचा रह जायगा, जो ब्राह्मण को दो मुट्ठी अन्न दे सके? यह असम्भव है। फेर दीजिए पिताजी, मैं काँप रही हूँ—इसकी चमक आँखों को अन्धा बना रही है।'' **(2019AC, 20MG)**

''मूर्ख है''—कहकर चूड़ामणि चले गये।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) उपर्युक्त गद्यांश में किस कार्य को ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध बताया गया है?

***अथवा* अपने पिता का कौन-सा कृत्य ममता को परमपिता की इच्छा के विरुद्ध लगा?**

(ग) ''गला सूख रहा है, साथी छूट गए हैं, अश्व गिर पड़ा है—इतना थका हुआ हूँ, इतना!'' कहते-कहते वह व्यक्ति धम से बैठ गया और उसके सामने ब्रह्माण्ड घूमने लगा। स्त्री ने सोचा, ''यह विपत्ति कहाँ से आई?'' उसने जल दिया, मुगल के प्राणों की रक्षा हुई। वह सोचने लगी—''सब विधर्मी दया के पात्र नहीं—मेरे पिता का वध करनेवाले आततायी!'' घृणा से उसका मन विरक्त हो गया।

स्वस्थ होकर मुगल ने कहा—''माता! तो फिर मैं चला जाऊँ?'' स्त्री विचार कर रही थी–''मैं ब्राह्मणी हूँ, मुझे तो अपने धर्म अतिथि देव की उपासना— का पालन करना चाहिए। परन्तु यहाँ.....नहीं-नहीं, सब विधर्मी दया के पात्र नहीं। परन्तु यह दया तो नहीं.....कर्त्तव्य करना है। तब?''

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) स्त्री किस धर्म के पालन के विषय में विचार कर रही थी?

(घ) ममता ने मन में कहा—"यहाँ कौन दुर्ग है? यही झोंपड़ी न, जो चाहे ले ले, मुझे अपना कर्त्तव्य करना पड़ेगा।" वह बाहर चली आयी और मुगल से बोली–"जाओ भीतर, थके हुए भयभीत पथिक। तुम चाहे कोई हो, मैं तुम्हें आश्रय देती हूँ। मैं ब्राह्मण-कुमारी हूँ, सब अपना धर्म छोड़ दें, तो मैं भी क्यों छोड़ दूँ?" मुगल ने चन्द्रमा के मन्द प्रकाश में वह महिमामय मुखमण्डल देखा, उसने मन-ही-मन नमस्कार किया। ममता पास की टूटी हुई दीवार में चली गई। भीतर, थके पथिक ने झोंपड़ी में विश्राम किया।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) ममता ने मुगल को क्यों आश्रय दिया?

(ङ) शब्द सुनते ही प्रसन्नता की चीत्कार-ध्वनि से वह प्रान्त गूँज उठा। ममता अधिक भयभीत हुई। पथिक ने कहा—"वह स्त्री कहाँ है? उसे खोज निकालो।" ममता छिपने के लिए अधिक सचेष्ट हुई। वह मृग-दाव में चली गई। दिन-भर उसमें से न निकली। संध्या में जब उन लोगों के जाने का उपक्रम हुआ, तो ममता ने सुना, पथिक घोड़े पर सवार होते हुए कह रहा है– "मिरजा! उस स्त्री को मैं कुछ दे न सका। उसका घर बनवा देना, क्योंकि मैंने विपत्ति में यहाँ विश्राम पाया था। यह स्थान भूलना मत।" इसके बाद वे चले गए।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) ममता क्यों भयभीत हुई?

(च) अश्वारोही पास आया। ममता ने रुक-रुककर कहा–"मैं नहीं जानती कि वह शहंशाह था या साधारण मुगल; पर एक दिन इसी झोंपड़ी के नीचे वह रहा। मैंने सुना था कि वह मेरा घर बनवाने की आज्ञा दे चुका था। मैं आजीवन अपनी झोंपड़ी के खोदे जाने के डर से भयभीत रही। भगवान् ने सुन लिया, मैं आज इसे छोड़े जाती हूँ। तुम इसका मकान बनाओ या महल, मैं अपने चिर-विश्राम-गृह में जाती हूँ।" **(2019AA)**

वह अश्वारोही अवाक् खड़ा था। बुढ़िया के प्राण-पक्षी अनन्त में उड़ गए।

अथवा मैं नहीं जानती कि वह शहंशाह ..... चिर-विश्राम गृह जाती हूँ।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) ममता ने अश्वारोही को क्या बताया?
(iv) आजीवन भयभीत रहने का कारण लिखिए।

2. जयशंकर प्रसाद का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए। **(2016 CB, CC, CE, CG, 17AF, AG, 18HA, HF, 19AA, AD, AE, AF, 20MG)**

3. जयशंकर प्रसाद का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

4. जयशंकर प्रसाद का जीवन-परिचय देते हुए उनके साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डालिए।

5. कहानी में उल्लिखित घटनाओं की ऐतिहासिकता के सम्बन्ध में आपका क्या मत है?

6. 'ममता' कहानी के लिखने में लेखक का क्या उद्देश्य प्रतीत होता है? सही उत्तर चुन कर लिखिए—

(क) कल्पना-प्रसूत रोमांस का चित्रण करना।

(ख) हिन्दू विधवा की दयनीय दशा का चित्रण करना।

(ग) हिन्दू विधवा के आदर्श आचरण का उदाहरण रखना।

(घ) मुगल सरदार की कृतघ्नता को रेखांकित करना।

(ङ) एक ऐतिहासिक घटना को साहित्यिक रूप देना।

7. ममता की तुलना में उसके पिता का चरित्र आपको कैसा लगता है?

8. पठानों ने रोहिताश्व के दुर्ग पर विजय कैसे पायी?

9. ममता के पिता का क्या हाल हुआ?

10. हुमायूँ किस रूप में और किन परिस्थितियों में ममता की कुटिया पर प्रकट होता है?

11. ममता उसे शरण देने में क्यों हिचकती है?

12. हुमायूँ की किस उक्ति से ममता का उस पर विश्वास हो गया और उसने उसे अपनी कुटी में शरण दे दी?

13. अकबर के सरदारों ने उसके पिता की शरण-स्थली को अमर कैसे बनाना चाहा?

14. कहानी का मर्म-वेधी स्थल कहाँ आता है?

15. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए—

दुश्चिंता, पतनोन्मुख, दीपालोक, हताश, अश्वारोही।

16. कहानी के भाव-प्रवण स्थलों को चुनकर लिखिए।

17. मूर्खता, प्रसन्नता एवं पीलापन शब्दों में प्रयुक्त प्रत्यय बताइए।

➥ आन्तरिक मूल्यांकन

जयशंकर प्रसाद की रचनाओं की एक सूची तैयार कीजिए।

शब्दार्थ

प्रकोष्ठ = राजप्रासाद या महल के मुख्य द्वार के पास का कमरा। **शोण** = सोन नदी, जो मध्य प्रदेश से निकलकर बिहार राज्य में गंगा से मिल जाती है। **वेदना** = दुःख। **दुहिता** = पुत्री। **म्लेच्छ** = असभ्य और गन्दा व्यक्ति, प्राचीन और मध्ययुग में विदेशियों के लिए प्रयुक्त शब्द, विदेशी। **उत्कोच** = घूस, रिश्वत। **तोरण** = किले का मुख्य फाटक। **धर्मचक्र** = महात्मा बुद्ध का धर्म-शिक्षारूपी चक्र। **विहार** = बौद्ध भिक्षुओं का आश्रम। **गुल्म** = झाड़ी। **प्राचीर** = परकोटा, चहारदीवारी। **अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते** = गीता में श्रीकृष्ण का कथन (जो भक्त अनन्य भावना से मेरा चिन्तन करते हैं, उपासना करते हैं, उनका योगक्षेम मैं स्वयं वहन करता हूँ)। **चौसायुद्ध** = शेरशाह और हुमायूँ के बीच 1536 ई० में बिहार के चौसा नामक स्थान पर हुई लड़ाई। **ब्रह्माण्ड** = सम्पूर्ण सृष्टि। **वंशधर** = जो किसी वंश में उत्पन्न हुआ हो, वंशज। **मृगदाव** = हरिणों के रहने का स्थान, वाराणसी के निकट इसी स्थान पर बुद्धदेव ने अपने धर्मचक्र का प्रवर्तन किया था। अब इसका नाम सारनाथ है। **उपक्रम** = कार्यक्रम, तैयारी। **जीर्ण कंकाल** = वृद्ध शरीर।

●●

3 पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

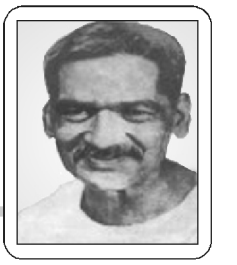

लेखक-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म–**27 मई, 1894 ई0।
- **जन्म-स्थान–**खैरागढ़ (जबलपुर)।
- **पिता–**पुन्नालाल बख्शी
- **मृत्यु–**27 दिसम्बर, 1971 ई0।
- **भाषा–**खड़ीबोली।
- **सम्पादन–**'सरस्वती' एवं 'छाया' पत्रिका।

पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी का जन्म 27 मई, 1894 ई0 में जबलपुर के खैरागढ़ नामक स्थान में हुआ था। इनके पिता पुन्नालाल बख्शी तथा बाबा उमराव बख्शी साहित्य-प्रेमी और कवि थे। इनकी माता को भी साहित्य से प्रेम था। परिवार के साहित्यिक वातावरण के प्रभाव के कारण ये विद्यार्थी जीवन से ही कविताएँ रचते थे। बी0 ए0 पास करते ही इन्होंने 'सरस्वती' में अपनी रचनाएँ प्रकाशित कराना प्रारम्भ किया। बाद में 'सरस्वती' के अतिरिक्त अन्य पत्र-पत्रिकाओं में भी इनकी रचनाएँ प्रकाशित होने लगीं। इनकी कविताएँ स्वच्छन्दतावादी थीं, जिन पर अंग्रेजी कवि वर्ड्सवर्थ का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। बख्शीजी की प्रसिद्धि का मुख्य आधार आलोचना और निबन्ध-लेखन है। साहित्य का यह महान् साधक 27 दिसम्बर, 1971 ई0 में परलोकवासी हो गया।

बख्शीजी की गणना द्विवेदी-युग के प्रमुख साहित्यकारों में होती है। बख्शीजी विशेष रूप से अपने ललित निबन्धों के लिए स्मरण किये जाते हैं। ये एक विशेष शैलीकार के रूप में भी प्रसिद्ध हैं। इन्होंने जीवन, समाज, धर्म, संस्कृति और साहित्य आदि विषयों में उच्चकोटि के निबन्ध लिखे हैं। यत्र-तत्र शिष्ट हास्य-व्यंग्य के कारण इनके निबन्ध रोचक बन पड़े हैं। बख्शीजी ने 1920 ई0 से 1927 ई0 तक बड़ी कुशलता से 'सरस्वती' का सम्पादन किया। कुछ वर्षों तक इन्होंने 'छाया' मासिक पत्रिका का भी सम्पादन बड़ी योग्यता से किया। इन्होंने स्वतन्त्रतावादी काव्य एवं समीक्षात्मक कृतियों का सृजन किया। निबन्धों, आलोचनाओं, कहानियों, कविताओं और अनुवादों में इनके गहन अध्ययन और व्यापक दृष्टिकोण की स्पष्ट छाप है। इन्हें हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा 1949 में साहित्य वाचस्पति की उपाधि से अलंकृत किया गया।

बख्शीजी की कृतियों का विवरण इस प्रकार है—

(i) निबन्ध-संग्रह–'प्रबन्ध पारिजात', 'पंचपात्र', 'पद्मवन', 'मकरन्द बिन्दु', 'कुछ बिखरे पन्ने', 'मेरा देश' आदि।

(ii) कहानी-संग्रह–'झलमला', 'अञ्जलि'।

(iii) आलोचना–'विश्व साहित्य', 'हिन्दी साहित्य विमर्श', 'साहित्य शिक्षा', 'हिन्दी उपन्यास साहित्य', 'हिन्दी कहानी साहित्य', विश्व साहित्य, प्रदीप (प्राचीन तथा अर्वाचीन कविताओं का आलोचनात्मक अध्ययन), समस्या, समस्या और समाधान, पंचपात्र, पंचरात्र, नवरात्र, यदि मैं लिखता।

(iv) नाटक–अन्नपूर्णा का अनुवाद (मौरिस मैटरलिंक के नाटक 'सिस्टर बीट्रिस' का अनुवाद) 'उन्मुक्ति का बंधन' (मौरिस मैटरलिंक के नाटक 'दी यूजलेस डेलिवरेन्स' का अनुवाद)।

(v) काव्य-संग्रह—'शतदल', 'अश्रुदल', 'पंचपात्र'।

(vi) उपन्यास—कथाचक्र, भोला (बाल उपन्यास), वे दिन (बाल उपन्यास)।

(vii) आत्मकथा-संस्मरण—मेरी अपनी कथा, जिन्हें नहीं भूलूँगा, अंतिम अध्याय।

(viii) साहित्य समग्र—बख्शी ग्रन्थावली (आठ खण्डों में)।

बख्शीजी की भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ीबोली है। भाषा में संस्कृत शब्दावली का अधिक प्रयोग है। उर्दू तथा अंग्रेजी के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। उनकी भाषा में विशेष प्रकार की स्वच्छन्द गति के दर्शन होते हैं। इनकी शैली गम्भीर, प्रभावोत्पादक, स्वाभाविक और स्पष्ट है। अपने लेखन में समीक्षात्मक, भावात्मक, विवेचनात्मक, व्यंग्यात्मक शैली को इन्होंने अपनाया है।

'क्या लिखूँ?' एक ललित निबन्ध है, जिसके विषय-प्रतिपादन, प्रस्तुतीकरण एवं भाषा-शैली में बख्शीजी की सभी विशेषताएँ सन्निविष्ट हैं। इस निबन्ध की उत्कृष्टता के दर्शन उस समन्वित रचना-कौशल में होते हैं, जिसके अन्तर्गत लेखक ने दो विषयों पर निबन्ध की विषय-सामग्री प्रस्तुत करने आदि का संकेत ही नहीं दिया है, वरन् संक्षिप्त रूप में उन्हें प्रस्तुत भी कर दिया है। इस निबन्ध को पढ़कर निबन्ध के सम्बन्ध में जॉनसन की उक्ति का स्मरण हो आता है— 'निबन्ध मन का आकस्मिक और उच्छृंखल आवेग है—असंबद्ध और चिन्तनहीन बुद्धिविलासमात्र।' इसमें बख्शीजी ने बताया है कि अच्छे निबन्ध के लिए लेखक को ठीक विषय का चुनाव करना चाहिए।

●●

क्या लिखूँ?

मुझे आज लिखना ही पड़ेगा। अंग्रेजी के प्रसिद्ध निबन्ध लेखक ए० जी० गार्डिनर का कथन है कि लिखने की एक विशेष मानसिक स्थिति होती है। उस समय मन में कुछ ऐसी उमंग-सी उठती है, हृदय में कुछ ऐसी स्फूर्ति-सी आती है, मस्तिष्क में कुछ ऐसा आवेग-सा उत्पन्न होता है कि लेख लिखना ही पड़ता है। उस समय विषय की चिन्ता नहीं रहती। कोई भी विषय हो, उसमें हम अपने हृदय के आवेग को भर ही देते हैं। हैट टाँगने के लिए कोई भी खूँटी काम दे सकती है। उसी तरह अपने मनोभावों को व्यक्त करने के लिए कोई भी विषय उपयुक्त है। असली वस्तु है हैट, खूँटी नहीं। इसी तरह मन के भाव ही तो यथार्थ वस्तु हैं, विषय नहीं।

गार्डिनर साहब के इस कथन की यथार्थता में मुझे सन्देह नहीं, पर मेरे लिए कठिनता यह है कि मैंने उस मानसिक स्थिति का अनुभव ही नहीं किया है, जिसमें भाव अपने-आप उत्थित हो जाते हैं। मुझे तो सोचना पड़ता है, चिन्ता करनी पड़ती है, परिश्रम करना पड़ता है, तब कहीं मैं एक निबन्ध लिख सकता हूँ। आज तो मुझे विशेष परिश्रम करना पड़ेगा, क्योंकि मुझे कोई साधारण निबन्ध नहीं लिखना है। आज मुझे नमिता और अमिता के लिए आदर्श निबन्ध लिखना होगा। नमिता का आदेश है कि मैं 'दूर के ढोल सुहावने होते हैं' इस विषय पर लिखूँ। अमिता का आग्रह है कि मैं 'समाज सुधार' पर लिखूँ, ये दोनों ही विषय परीक्षा में आ चुके हैं और उन दोनों पर आदर्श निबन्ध लिखकर मुझे उन दोनों को निबन्ध-रचना का रहस्य समझाना पड़ेगा।

दूर के ढोल सुहावने अवश्य होते हैं पर क्या वे इतने सुहावने होते हैं कि उन पर पाँच पेज लिखे जा सकें? इसी प्रकार समाज-सुधार की चर्चा अनादि काल से लेकर आज तक होती आ रही है और जिसके सम्बन्ध में बड़े-बड़े विज्ञों में भी विरोध है, उसको मैं पाँच पेज में कैसे लिख दूँ? मैंने सोचा कि सबसे पहले निबन्धशास्त्र के आचार्यों की सम्मति जान लूँ। पहले यह तो समझ लूँ कि आदर्श निबन्ध है क्या और वह कैसे लिखा जाता है; तब फिर मैं भविष्य की चिन्ता करूँगा। इसलिए मैंने निबन्धशास्त्र के कई आचार्यों की रचनाएँ देखीं।

एक विद्वान् का कथन है कि निबन्ध छोटा होना चाहिए। छोटा निबन्ध बड़े की अपेक्षा अधिक अच्छा होता है, क्योंकि बड़े निबन्ध में रचना की सुन्दरता नहीं बनी रह सकती। इस कथन को मान लेने में ही मेरा लाभ है। मुझे छोटा ही निबन्ध लिखना है, बड़ा नहीं। पर लिखूँ कैसे? निबन्धशास्त्र के उन्हीं आचार्य महोदय का कथन है कि निबन्ध के दो प्रधान अंग हैं—सामग्री और शैली। पहले तो मुझे सामग्री एकत्र करनी होगी, विचार-समूह संचित करना होगा। इसके लिए मुझे मनन करना चाहिए। यह तो सच है कि जिसने जिस विषय का अच्छा अध्ययन किया है, उसके मस्तिष्क में उस विषय के विचार आते हैं। पर यह कौन जानता था कि 'दूर के ढोल सुहावने' पर भी निबन्ध लिखने की आवश्यकता होगी। यदि यह बात पहले ज्ञात होती तो पुस्तकालय में जाकर इस विषय का अनुसंधान कर लेता; पर अब समय नहीं। मुझे तो यहीं बैठकर दो घण्टों में दो निबन्ध तैयार कर देने होंगे। यहाँ न तो विश्वकोश है और न कोई ऐसा ग्रन्थ, जिनमें इन विषयों की सामग्री उपलब्ध हो सके। अब तो मुझे अपने ही ज्ञान पर विश्वास कर लिखना होगा।

विज्ञों का कथन है कि निबन्ध लिखने के पहले उसकी रूपरेखा बना लेनी चाहिए। अतएव सबसे पहले मुझे 'दूर के ढोल सुहावने' की रूपरेखा बनानी है। मैं सोच ही नहीं सकता कि इस विषय की कैसी रूपरेखा है। निबन्ध लिख लेने के बाद मैं उसका सारांश कुछ ही वाक्यों में भले ही लिख दूँ, पर निबन्ध लिखने के पहले उसका सार दस-पाँच शब्दों में कैसे लिखा जाय? क्या सचमुच हिन्दी के सब विज्ञ लेखक पहले से अपने-अपने निबन्धों के लिए रूपरेखा तैयार कर लेते हैं? ए० जी० गार्डिनर को तो अपने लेखों का शीर्षक बनाने में ही सबसे अधिक कठिनाई होती है। उन्होंने लिखा है कि मैं लेख लिखता हूँ और शीर्षक देने का भार मैं अपने मित्र पर छोड़ देता हूँ। उन्होंने यह भी लिखा है कि शेक्सपीयर को भी नाटक लिखने में उतनी कठिनाई न हुई होगी, जितनी कठिनाई नाटकों के नामकरण में हुई होगी। तभी तो घबराकर नाम न रख सकने के कारण उन्होंने अपने एक नाटक का नाम रखा 'जैसा तुम चाहो'। इसलिए मुझसे तो यह रूपरेखा तैयार न होगी।

अब मुझे शैली निश्चित करनी है। आचार्य महोदय का कथन है कि भाषा में प्रवाह होना चाहिए। इसके लिए वाक्य

छोटे-छोटे हों, पर एक-दूसरे से सम्बद्ध हों। यह तो बिल्कुल ठीक है। मैं छोटे-छोटे वाक्य अच्छी तरह लिख सकता हूँ। पर मैं हूँ मास्टर। कहीं नमिता और अमिता यह न समझ बैठें कि मैं यह निबन्ध बहुत मोटी अक्ल वालों के लिए लिख रहा हूँ। अपनी विद्वत्ता का प्रदर्शन करने के लिए, अपना गौरव स्थापित करने के लिए यह आवश्यक है कि वाक्य कम-से-कम आधे पृष्ठ में तो समाप्त हों। बाणभट्ट ने कादम्बरी में ऐसे ही वाक्य लिखे हैं। वाक्यों में कुछ अस्पष्टता भी चाहिए; क्योंकि यह अस्पष्टता या दुर्बोधता गाम्भीर्य ला देती है। इसलिए संस्कृत के प्रसिद्ध कवि श्रीहर्ष ने जान-बूझकर अपने काव्य में ऐसी गुत्थियाँ डाल दी हैं, जो अज्ञों से न सुलझ सकें और सेनापति ने भी अपनी कविता मूढ़ों के लिए दुर्बोध कर दी है। तभी तो अलंकारों, मुहावरों और लोकोक्तियों का समावेश भी निबन्धों के लिए आवश्यक बताया जाता है। तब क्या किया जाय?

अंग्रेजी के निबन्धकारों ने एक दूसरी पद्धति को अपनाया है। उनके निबन्ध इन आचार्यों की कसौटी पर भले ही खरे सिद्ध न हों, पर अंग्रेजी साहित्य में उनका मान अवश्य है। उस पद्धति के जन्मदाता मानटेन समझे जाते हैं। उन्होंने स्वयं जो कुछ देखा, सुना और अनुभव किया, उसी को अपने निबन्धों में लिपिबद्ध कर दिया। ऐसे निबन्धों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे मन की स्वच्छन्द रचनाएँ हैं। उनमें न कवि की उदात्त कल्पना रहती है, न आख्यायिका-लेखक की सूक्ष्म दृष्टि और न विज्ञों की गम्भीर तर्कपूर्ण विवेचना। उनमें लेखक की सच्ची अनुभूति रहती है। उनमें उसके सच्चे भावों की सच्ची अभिव्यक्ति होती है, उनमें उसका उल्लास रहता है। ये निबन्ध तो उस मानसिक स्थिति में लिखे जाते हैं, जिसमें न ज्ञान की गरिमा रहती है और न कल्पना की महिमा, जिसमें हम संसार को अपनी ही दृष्टि से देखते हैं और अपने ही भाव से ग्रहण करते हैं। तब इसी पद्धति का अनुसरण कर मैं भी क्यों न निबन्ध लिखूँ। पर मुझे तो दो निबन्ध लिखने होंगे।

मुझे अमीर खुसरो की एक कहानी याद आयी। एक बार प्यास लगने पर वे एक कुएँ के पास पहुँचे। वहाँ चार औरतें पानी भर रही थीं। पानी माँगने पर पहले उनमें से एक ने खीर पर कविता सुनने की इच्छा प्रकट की, दूसरी ने चर्खे पर, तीसरी ने कुत्ते पर और चौथी ने ढोल पर। अमीर खुसरो प्रतिभावान थे, उन्होंने एक ही पद्य में चारों की इच्छाओं की पूर्ति कर दी। उन्होंने कहा—

खीर पकायी जतन से, चर्खा दिया चला।
आया कुत्ता खा गया, तू बैठी ढोल बजा॥

मुझमें खुसरो की प्रतिभा नहीं है, पर उनकी इस पद्धति को स्वीकार करने से मेरी कठिनाई आधी रह जाती है। मैं भी एक निबन्ध में इन दोनों विषयों का समावेश कर दूँगा। एक ही ढेले से दो चिड़ियाँ मार लूँगा।

दूर के ढोल सुहावने होते हैं; क्योंकि उनकी कर्कशता दूर तक नहीं पहुँचती। जब ढोल के पास बैठे हुए लोगों के कान के पर्दे फटते रहते हैं, तब दूर किसी नदी के तट पर सन्ध्या समय, किसी दूसरे के कान में वही शब्द मधुरता का संचार कर देते हैं। ढोल के उन्हीं शब्दों को सुनकर वह अपने हृदय में किसी के विवाहोत्सव का चित्र अंकित कर लेता है। कोलाहल से पूर्ण घर के एक कोने में बैठी हुई किसी लज्जाशीला नव-वधू की कल्पना वह अपने मन में कर लेता है। उस नव-वधू के प्रेम, उल्लास, संकोच, आशंका और विषाद से युक्त हृदय के कम्पन ढोल की कर्कश ध्वनि को मधुर बना देते हैं; क्योंकि उसके साथ आनन्द का कलरव, उत्सव व प्रमोद और प्रेम का संगीत ये तीनों मिले रहते हैं। तभी उसकी कर्कशता समीपस्थ लोगों को भी कटु नहीं प्रतीत होती और दूरस्थ लोगों के लिए तो वह अत्यन्त मधुर बन जाती है।

जो तरुण संसार के जीवन-संग्राम से दूर हैं, उन्हें संसार का चित्र बड़ा ही मनमोहक प्रतीत होता है, जो वृद्ध हो गये हैं, जो अपनी बाल्यावस्था और तरुणावस्था से दूर हट आये हैं, उन्हें अपने अतीतकाल की स्मृति बड़ी सुखद लगती है। वे अतीत का ही स्वप्न देखते हैं। तरुणों के लिए जैसे भविष्य उज्ज्वल होता है, वैसे ही वृद्धों के लिए अतीत। वर्तमान से दोनों को असन्तोष होता है। तरुण भविष्य को वर्तमान में लाना चाहते हैं और वृद्ध अतीत को खींचकर वर्तमान में देखना चाहते हैं। तरुण क्रान्ति के समर्थक होते हैं और वृद्ध अतीत गौरव के संरक्षक। इन्हीं दोनों के कारण वर्तमान सदैव क्षुब्ध रहता है और इसी से वर्तमान काल सदैव सुधारों का काल बना रहता है।

मनुष्य जाति के इतिहास में कोई ऐसा काल ही नहीं हुआ, जब सुधारों की आवश्यकता न हुई हो। तभी तो आज तक कितने ही सुधारक हो गये हैं, पर सुधारों का अन्त कब हुआ? भारत के इतिहास में बुद्धदेव, महावीर स्वामी, नागार्जुन, शंकराचार्य, कबीर, नानक, राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द और महात्मा गाँधी में ही सुधारकों की गणना समाप्त नहीं होती। सुधारकों का दल नगर-नगर और गाँव-गाँव में होता है। यह सच है कि जीवन में नये-नये क्षेत्र उत्पन्न होते जाते हैं और नये-नये सुधार

हो जाते हैं। न दोषों का अन्त है और न सुधारों का। जो कभी सुधार थे, वही आज दोष हो गये हैं और उन सुधारों का फिर नव सुधार किया जाता है। तभी तो यह जीवन प्रगतिशील माना गया है।

हिन्दी में प्रगतिशील साहित्य का निर्माण हो रहा है। उसके निर्माता यह समझ रहे हैं कि उनके साहित्य में भविष्य का गौरव निहित है। पर कुछ ही समय के बाद उनका यह साहित्य भी अतीत का स्मारक हो जायगा और आज जो तरुण हैं, वही वृद्ध होकर अतीत के गौरव का स्वप्न देखेंगे। उनके स्थान में तरुणों का फिर दूसरा दल आ जायगा, जो भविष्य का स्वप्न देखेगा। दोनों के ही स्वप्न सुखद होते हैं; क्योंकि दूर के ढोल सुहावने होते हैं।

● **पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी**

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

1. निम्नलिखित गद्यांशों के नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) मुझे आज लिखना ही पड़ेगा। अंग्रेजी के प्रसिद्ध निबन्ध लेखक ए0जी0 गार्डिनर का कथन है कि लिखने की एक विशेष मानसिक स्थिति होती है। उस समय मन में कुछ ऐसी उमंग-सी उठती है, हृदय में कुछ ऐसी स्फूर्ति-सी आती है, मस्तिष्क में कुछ ऐसा आवेग-सा उत्पन्न होता है कि लेख लिखना ही पड़ता है। उस समय विषय की चिन्ता नहीं रहती। कोई भी विषय हो, उसमें हम अपने हृदय के आवेग को भर ही देते हैं। हैट टाँगने के लिए कोई भी खूँटी काम दे सकती है। उसी तरह अपने मनोभावों को व्यक्त करने के लिए कोई भी विषय उपयुक्त है। असली वस्तु है हैट, खूँटी नहीं। इसी तरह मन के भाव ही तो यथार्थ वस्तु हैं, विषय नहीं। **(2017AB)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) (a) उपर्युक्त गद्यांश में मनोभावों को क्या बताया गया है?

(b) लिखने की विशेष मानसिक स्थिति कैसी होती है?

(ख) ऐसे निबन्धों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे मन की स्वच्छन्द रचनाएँ हैं। उनमें न कविता की उदात्त कल्पना रहती है, न आख्यायिका-लेखक की सूक्ष्म दृष्टि और न विज्ञों की गम्भीर तर्कपूर्ण विवेचना। उनमें लेखक की सच्ची अनुभूति रहती है। उनमें उसके सच्चे भावों की सच्ची अभिव्यक्ति होती है, उनमें उसका उल्लास रहता है। ये निबन्ध तो उस मानसिक स्थिति में लिखे जाते हैं, जिसमें न ज्ञान की गरिमा रहती है और न कल्पना की महिमा, जिसमें हम संसार को अपनी ही दृष्टि से देखते हैं और अपने ही भाव से ग्रहण करते हैं। तब इसी पद्धति का अनुसरण कर मैं भी क्यों न निबन्ध लिखूँ। पर मुझे तो दो निबन्ध लिखने होंगे। **(2017AD)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) (a) उपर्युक्त गद्यांश में किस प्रकार के निबन्ध में सच्चे भावों की सच्ची अभिव्यक्ति होती है?

अथवा (b) निबन्ध की किन विशेषताओं का उल्लेख हुआ है?

(ग) दूर के ढोल सुहावने होते हैं; क्योंकि उनकी कर्कशता दूर तक नहीं पहुँचती। जब ढोल के पास बैठे हुए लोगों के कान के पर्दे फटते रहते हैं, तब दूर किसी नदी के तट पर, संध्या समय किसी दूसरे के कान में वही शब्द मधुरता का संचार कर देते हैं। ढोल के उन्हीं शब्दों को सुनकर वह अपने हृदय में किसी के विवाहोत्सव का चित्र अंकित कर लेता है। कोलाहल से पूर्ण घर के एक कोने में बैठी हुई किसी लज्जाशीला नव-वधू की कल्पना वह अपने मन में कर लेता है। उस नव-वधू के प्रेम, उल्लास, संकोच, आशंका और विषाद से युक्त हृदय के कम्पन ढोल की कर्कश ध्वनि को मधुर बना देते हैं; क्योंकि उसके साथ आनन्द का कलरव, उत्सव व प्रमोद और प्रेम का संगीत ये तीनों मिले रहते हैं। तभी उसकी कर्कशता समीपस्थ लोगों को भी कटु नहीं प्रतीत होती और दूरस्थ लोगों के लिए तो वह अत्यन्त मधुर बन जाती है।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) ढोल की कर्कशता समीपस्थ लोगों को कब कटु प्रतीत नहीं होती है?

(घ) जो तरुण संसार के जीवन-संग्राम से दूर हैं, उन्हें संसार का चित्र बड़ा ही मनमोहक प्रतीत होता है, जो वृद्ध हो गये हैं, जो अपनी बाल्यावस्था और तरुणावस्था से दूर हट आए हैं, उन्हें अपने अतीत काल की स्मृति बड़ी सुखद लगती है। वे अतीत का ही स्वप्न देखते हैं। तरुणों के लिए जैसे भविष्य उज्ज्वल होता है, वैसे ही वृद्धों के लिए अतीत। वर्तमान से दोनों को असन्तोष होता है। तरुण भविष्य को वर्तमान में लाना चाहते हैं और वृद्ध अतीत को खींचकर वर्तमान में देखना चाहते हैं। तरुण क्रान्ति के समर्थक होते हैं और वृद्ध अतीत-गौरव के संरक्षक। इन्हीं दोनों के कारण वर्तमान सदैव क्षुब्ध रहता है और इसी से वर्तमान काल सदैव सुधारों का काल बना रहता है। **(2017AF, 18HAB,20MC, MF)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) (a) तरुण और वृद्ध दोनों क्या चाहते हैं?
(b) तरुण जीवन के संग्राम के अनुभव किस प्रकार से देखना चाहते हैं?
(c) वर्तमान सदैव क्षुब्ध क्यों रहता है?

(ङ) मनुष्य जाति के इतिहास में कोई ऐसा काल ही नहीं हुआ, जब सुधारों की आवश्यकता न हुई हो। तभी तो आज तक कितने ही सुधारक हो गए हैं पर सुधारों का अन्त कब हुआ? भारत के इतिहास में बुद्धदेव, महावीर स्वामी, नागार्जुन, शंकराचार्य, कबीर, नानक, राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द और महात्मा गाँधी में ही सुधारकों की गणना समाप्त नहीं होती। सुधारकों का दल नगर-नगर और गाँव-गाँव में होता है। यह सच है कि जीवन में नये-नये क्षेत्र उत्पन्न होते जाते हैं और नये-नये सुधार हो जाते हैं। न दोषों का अन्त है और न सुधारों का। जो कभी सुधार थे, वही आज दोष हो गये हैं और उन सुधारों का फिर नवसुधार किया जाता है। तभी तो यह जीवन प्रगतिशील माना गया है। **(2016 CB, CC)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) जीवन प्रगतिशील क्यों माना गया है?

(च) हिन्दी में प्रगतिशील साहित्य का निर्माण हो रहा है। उसके निर्माता यह समझ रहे हैं कि उनके साहित्य में भविष्य का गौरव निहित है। पर कुछ ही समय के बाद उनका यह साहित्य भी अतीत का स्मारक हो जायगा और आज जो तरुण हैं, वही वृद्ध होकर अतीत के गौरव का स्वप्न देखेंगे। उनके स्थान में तरुणों का फिर दूसरा दल आ जाएगा, जो भविष्य का स्वप्न देखेगा। दोनों के ही स्वप्न सुखद होते हैं; क्योंकि दूर के ढोल सुहावने होते हैं। **(2016 CD, 20MA)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) भविष्य तरुण और वृद्ध दोनों के लिए क्यों सुखद होते हैं?
अथवा **प्रगतिशील साहित्य-निर्माता क्या समझकर साहित्य-निर्माण कर रहे हैं?**
अथवा **'दूर के ढोल सुहावने होते हैं' का भावार्थ लिखिए।**

2. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए। **(2016CA, 17AA, AC, 19AB, AD, AE, AF, AG, 20MD, ME, MF)**

अथवा पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी का जीवन-परिचय दीजिए एवं उनकी किसी रचना का नाम लिखिए।

3. बख्शीजी का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

4. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी का जीवन-परिचय देते हुए उनके साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डालिए।

5. नमिता और अमिता की लेखक से क्या अपेक्षा है?

6. अपेक्षित निबन्ध लिखने में लेखक की क्या कठिनाई थी?

7. लेखक निबन्धशास्त्र के किन आचार्यों की रचनाओं का अवलोकन करता है?
8. एक आदर्श निबन्ध के किन गुणों पर उसकी दृष्टि टिकती है?
9. 'वाक्यों में कुछ अस्पष्टता भी चाहिए' इससे क्या लाभ होता है?
10. अंग्रेजी के निबन्धकार मानटेन निबन्ध की सबसे बड़ी विशेषता क्या मानते हैं?
11. नमिता और अमिता के बताये विषयों को एक ही निबन्ध में समेट देने की बात लेखक के ध्यान में कैसे आयी?
12. निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त प्रत्यय बताइए—
यथार्थता, कठिनाई, ममत्व, बनावट।
13. निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त उपसर्ग बताइए—
उपर्युक्त, अभिव्यक्त, अनुसरण, विभूषण, निर्मल।
14. प्रयोग द्वारा निम्नलिखित शब्दों का अर्थ स्पष्ट कीजिए—
आवेग, आदेश, मनन, गरिमा और अभिव्यक्ति।

➥ आन्तरिक मूल्यांकन

(1) पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी की रचनाओं की एक सूची तैयार कीजिए।
(2) पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी का संक्षिप्त परिचय चार्ट के माध्यम से कीजिए।

शब्दार्थ

ए0 जी0 गार्डिनर = 19वीं शताब्दी में हुए आधुनिक शैली के प्रसिद्ध अंग्रेजी निबन्धकार। **बाणभट्ट** = 7वीं शताब्दी के संस्कृत भाषा के प्रसिद्ध गद्यकार जिनकी 'कादम्बरी' नामक पुस्तक रमणीय वृत्तों, लम्बे वाक्यों और क्लिष्ट शैली के लिए प्रसिद्ध है। **श्रीहर्ष** = 12वीं शती में हुए संस्कृत भाषा के प्रसिद्ध कवि, 'नैषधचरित' नामक महाकाव्य के रचयिता। **सेनापति** = 16वीं शताब्दी के ब्रजभाषा के प्रसिद्ध कवि, 'कवित्त रत्नाकर' नामक काव्यग्रन्थ के रचयिता। **मानटेन** = (मानतेन) 16वीं शताब्दी के फ्रेंच भाषा के प्रसिद्ध निबन्धकार। **आख्यायिका** = लम्बी कथा, जिसमें सिलसिलेवार अनेक कहानियाँ गुँथी रहती हैं। **कलरव** =(कल + रव) मधुर ध्वनि। **अतीत** = बीता हुआ समय। **नागार्जुन** = बौद्ध धर्म को दार्शनिक रूप प्रदान करनेवाले कनिष्क के राज्यकाल के एक आचार्य। **उदात्त** = श्रेष्ठ। **विज्ञ** = जानकार। **तरुण** = युवक। **गरिमा** = गौरव। **उल्लास** = हर्ष। **क्षुब्ध** = दुःखी। **दुर्बोध** = कठिन। **कर्कशता** = कठोरता।

●●

4 डॉ० राजेन्द्र प्रसाद

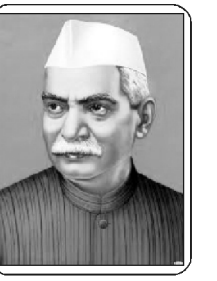

लेखक-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**–3 दिसम्बर, 1884 ई०।
- **जन्म-स्थान**–जीरादेई (छपरा), बिहार।
- **मृत्यु**–28 फरवरी, सन् 1963 ई०।
- भारत के राष्ट्रपति रहे।
- भारतरत्न से अलंकृत।
- **सम्पादन**–'देश' पत्रिका।

देशरत्न डॉ० राजेन्द्र प्रसाद का जन्म 3 दिसम्बर, 1884 ई० में बिहार राज्य के छपरा जिले के जीरादेई ग्राम में हुआ था। कलकत्ता (अब कोलकाता) विश्वविद्यालय से इन्होंने एम० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। राजेन्द्र बाबू बड़े मेधावी छात्र थे और प्रायः सभी परीक्षाओं में इन्होंने प्रथम स्थान प्राप्त किया। मुजफ्फरपुर के एक कॉलेज में कुछ दिन अध्यापन-कार्य करने के पश्चात् सन् 1911 से 1920 ई० तक राजेन्द्र बाबू ने क्रमशः कलकत्ता तथा पटना हाईकोर्ट में वकालत की, परन्तु गाँधीजी के आदर्शों, सिद्धान्तों तथा आन्दोलनों से प्रभावित होकर सन् 1920 ई० में इन्होंने वकालत छोड़ दी और पूर्ण रूप से देश-सेवा के कार्य में लग गये।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के ये तीन बार सभापति चुने गये। राजेन्द्र बाबू 1946 एवं 1947 में भारत के पहले मंत्रिमण्डल में कृषि एवं खाद्य मंत्री रहे। आप 26 जनवरी, 1950 से 14 मई, 1962 तक देश के राष्ट्रपति रहे। 1962 ई० में इन्हें भारत की सर्वोच्च उपाधि 'भारत-रत्न' से अलंकृत किया गया। सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, निर्भीकता, देशभक्ति, साधुता और सादगी इनके रोम-रोम में व्याप्त थी। राजेन्द्र बाबू की मृत्यु 28 फरवरी, सन् 1963 ई० को हुई।

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद एक कुशल लेखक भी थे। सामाजिक, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक विषयों पर इनके लेख बराबर निकलते रहते थे। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति पद को भी इन्होंने सुशोभित किया। 'नागरी प्रचारिणी सभा' और 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा' के माध्यम से हिन्दी को समृद्ध बनाने में योगदान देते रहे। इन्होंने 'देश' नामक पत्रिका का सफलतापूर्वक सम्पादन किया। तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं में इनके लेख एवं व्याख्यान भी प्रकाशित होते रहते थे। राजनीति, समाज, शिक्षा, संस्कृति, जन-सेवा आदि विषयों पर इन्होंने अनेक प्रभावपूर्ण निबन्धों की रचना की। जनसेवा, राष्ट्रीय भावना एवं सर्वजन हिताय की भावना ने इनके साहित्य को विशेष रूप से प्रभावित किया है। इनकी रचनाओं में उद्धरणों एवं उदाहरणों की प्रचुरता है। इनकी रचनाओं में अत्यन्त प्रभावपूर्ण भावाभिव्यक्ति देखने को मिलती है।

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद जी ने अनेक विषयों पर लेखनी चलायी है। इनकी कृतियों का विवरण इस प्रकार है—

'इण्डिया डिवाइडेड', 'सत्याग्रह एट चम्पारण', 'भारतीय शिक्षा', 'गाँधीजी की देन', 'शिक्षा और संस्कृति', 'मेरी आत्मकथा', 'बापू के कदमों में', 'मेरी यूरोप यात्रा', 'संस्कृति का अध्ययन', 'चम्पारन में महात्मा गाँधी' तथा **'खादी का अर्थशास्त्र'**। इनके अतिरिक्त इनके भाषणों के भी कई संग्रह प्रकाशित हुए हैं।

राजेन्द्र बाबू की भाषा सहज, सरल, सुबोध खड़ीबोली है। इनकी भाषा व्यावहारिक है, इसलिए उसमें संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी आदि भाषाओं के शब्दों का समुचित प्रयोग हुआ है। ग्रामीण कहावतों एवं ग्रामीण शब्दों का भी प्रयोग किया है। इनकी भाषाओं में कहीं भी बनावटीपन की गन्ध नहीं आती। मुख्य रूप से इनकी शैली के साहित्यिक एवं भाषण दो रूप प्राप्त होते हैं।

प्रस्तुत **'भारतीय संस्कृति'** पाठ एक भाषण का अंश है। इसमें बताया गया है कि भारत जैसे विशाल देश में व्याप्त जीवन व रहन-सहन की विविधता में भी एकता के दर्शन होते हैं। विभिन्न भाषा, जाति व धर्म की मणियों को एकसूत्र में पिरोकर रखनेवाली हमारी भारतीय संस्कृति विशिष्ट है।

●●

भारतीय संस्कृति

कोई विदेशी, जो भारत से बिल्कुल अपरिचित हो, एक छोर से दूसरे छोर तक सफर करे तो उसको इस देश में इतनी विभिन्नताएँ देखने में आयेंगी कि वह कह उठेगा कि यह एक देश नहीं, बल्कि कई देशों का एक समूह है, जो एक-दूसरे से बहुत बातों में और विशेष करके ऐसी बातों में, जो आसानी से आँखों के सामने आती हैं, बिल्कुल भिन्न है। प्राकृतिक विभिन्नताएँ भी इतनी और इतने प्रकार की और इतनी गहरी नजर आयेंगी, जो किसी भी एक महाद्वीप के अन्दर ही नजर आ सकती हैं। हिमालय की बर्फ से ढकी हुई पहाड़ियाँ एक छोर पर मिलेंगी और जैसे-जैसे वह दक्खिन की ओर बढ़ेगा गंगा, जमुना, ब्रह्मपुत्र से प्लावित समतलों को छोड़कर फिर विन्ध्य, अरावली, सतपुड़ा, सह्याद्रि, नीलगिरि की श्रेणियों के बीच समतल हिस्से रंग-बिरंगे देखने में आयेंगे। पश्चिम से पूर्व तक जाने में भी उसे इसकी विभिन्नताएँ देखने को मिलेंगी। हिमालय की सर्दी के साथ-साथ जो साल में कभी भी मनुष्य को गर्म कपड़ों से और आग से छुटकारा नहीं देती, समतल प्रान्तों की जलती हुई लू और कन्याकुमारी का वह सुखद मौसम, जिसमें न कभी सर्दी होती है और न गर्मी, देखने को मिलेगी। अगर असम की पहाड़ियों में वर्ष में तीन सौ इंच वर्षा मिलेगी तो जैसलमेर की तप्तभूमि भी मिलेगी, जहाँ साल में दो-चार इंच भी वर्षा नहीं होती। कोई ऐसा अन्न नहीं, जो यहाँ उत्पन्न न किया जाता हो। कोई ऐसा फल नहीं, जो यहाँ पैदा नहीं किया जा सके। कोई ऐसा खनिज पदार्थ नहीं, जो यहाँ के भू-गर्भ में न पाया जाता हो और न कोई ऐसा वृक्ष अथवा जानवर है, जो यहाँ फैले हुए जंगलों में न मिले। यदि इस सिद्धान्त को देखना हो कि आबहवा का असर इंसान के रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा, शरीर और मस्तिष्क पर पड़ता है तो उसका जीता-जागता सबूत भारत में बसने वाले भिन्न-भिन्न प्रान्तों के लोग देते हैं। इसी तरह मुख्य-मुख्य भाषाएँ भी कई प्रचलित हैं और बोलियों की तो कोई गिनती ही नहीं; क्योंकि यहाँ एक कहावत मशहूर है—

'कोस-कोस पर बदले पानी, चार कोस पर बानी।'

भिन्न-भिन्न धर्मों के माननेवाले भी, जो सारी दुनिया के सभी देशों में बसे हुए हैं, यहाँ भी थोड़ी-बहुत संख्या में पाये जाते हैं और जिस तरह यहाँ की बोलियों की गिनती आसान नहीं, उसी तरह यहाँ भिन्न-भिन्न धर्मों के सम्प्रदायों की भी गिनती आसान नहीं। इन विभिन्नताओं को देखकर अगर अपरिचित आदमी घबड़ाकर कह उठे कि यह एक देश नहीं, अनेक देशों का एक समूह है; यह एक जाति नहीं, अनेक जातियों का समूह है तो इसमें आश्चर्य की बात नहीं। क्योंकि ऊपर से देखने वाले को, जो गहराई में नहीं जाता, विभिन्नता ही देखने में आयेगी। पर विचार करके देखा जाय तो इन विभिन्नताओं की तह में एक ऐसी समता और एकता फैली हुई है, जो अन्य विभिन्नताओं को ठीक उसी तरह पिरो लेती है और पिरोकर एक सुन्दर समूह बना देती है— जैसे रेशमी धागा भिन्न-भिन्न प्रकार की और विभिन्न रंग की सुन्दर मणियों अथवा फूलों को पिरोकर एक सुन्दर हार तैयार कर देता है, जिसकी प्रत्येक मणि या फूल दूसरों से न तो अलग है और न हो सकता है और केवल अपनी ही सुन्दरता से लोगों को मोहता नहीं, बल्कि दूसरों की सुन्दरता से वह स्वयं सुशोभित होता है और इसी तरह अपनी सुन्दरता से दूसरों को भी सुशोभित करता है। यह केवल एक काव्य की भावना नहीं है, बल्कि एक ऐतिहासिक सत्य है, जो हजारों वर्षों से अलग-अलग अस्तित्व रखते हुए अनेकानेक जल-प्रपातों और प्रवाहों का संगमस्थल बनकर एक प्रकाण्ड और प्रगाढ़ समुद्र के रूप में भारत में व्याप्त है, जिसे भारतीय संस्कृति का नाम दे सकते हैं। इन अलग-अलग नदियों के उद्गम भिन्न-भिन्न हो सकते हैं और रहे हैं। इनकी धाराएँ भी अलग-अलग बही हैं और प्रदेश के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकार के अन्न और फल-फूल पैदा करती रही हैं; पर सब में एक ही शुद्ध, सुन्दर, स्वस्थ और शीतल जल बहता रहा है, जो उद्गम और संगम में एक ही हो जाता है।

आज हम इसी निर्मल, शुद्ध, शीतल और स्वस्थ अमृत की तलाश में हैं और हमारी इच्छा, अभिलाषा और प्रयत्न यह है कि वह इन सभी अलग-अलग बहती हुई नदियों में अभी भी उसी तरह बहता रहे और इनको वह अमर तत्त्व देता रहे, जो जमाने के हजारों थपेड़ों को बरदाश्त करता हुआ भी आज हमारे अस्तित्व को कायम रखे हुए है और रखेगा, जैसा कि हमारे कवि इकबाल कह गये हैं—

'बाकी मगर है अब तक नामो-निशाँ हमारा,
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जमाँ हमारा।'

यह एक नैतिक और आध्यात्मिक स्रोत है, जो अनन्तकाल से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सम्पूर्ण देश में बहता रहा है और कभी-कभी मूर्त रूप होकर हमारे सामने आता रहा है। यह हमारा सौभाग्य रहा है कि हमने ऐसे ही एक मूर्त रूप को अपने बीच चलते-फिरते, हँसते-रोते भी देखा है और जिसने अमरत्व की याद दिलाकर हमारी सूखी हड्डियों में नयी मज्जा डाल हमारे मृतप्राय शरीर में नये प्राण फूँके और मुरझाये हुए दिलों को फिर खिला दिया। वह अमरत्व सत्य और अहिंसा का है, जो केवल इसी देश के लिए नहीं, आज मानवमात्र के जीवन के लिए अत्यन्त आवश्यक हो गया है। हम इस देश में प्रजातन्त्र की स्थापना कर चुके हैं, जिसका अर्थ है व्यक्ति की पूर्ण स्वतन्त्रता, जिसमें वह अपना पूरा विकास कर सके और साथ ही सामूहिक और सामाजिक एकता भी। व्यक्ति और समाज के बीच में विरोध का आभास होता है। व्यक्ति अपनी उन्नति और विकास चाहता है और यदि एक की उन्नति और विकास दूसरे की उन्नति और विकास में बाधक हो तो संघर्ष पैदा होता है और यह संघर्ष तभी दूर हो सकता है, जब सबके विकास के पथ अहिंसा के हों। हमारी सारी संस्कृति का मूलाधार इसी अहिंसा-तत्त्व पर स्थापित रहा है। जहाँ-जहाँ हमारे नैतिक सिद्धान्तों का वर्णन आया है, अहिंसा को ही उसमें मुख्य स्थान दिया गया है। अहिंसा का दूसरा नाम या दूसग रूप त्याग है और हिंसा का दूसरा रूप या नाम स्वार्थ है, जो प्रायः भोग के रूप में हमारे सामने आता है। पर हमारी सभ्यता ने तो भोग भी त्याग से ही निकाला है और भोग भी त्याग में ही पाया है। श्रुति कहती है—'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः' इसी के द्वारा हम व्यक्ति-व्यक्ति के बीच का विरोध, व्यक्ति और समाज के बीच का विरोध, समाज और समाज के बीच का विरोध, देश और देश के बीच के विरोध को मिटाना चाहते हैं। हमारी सारी नैतिक चेतना इसी तत्त्व से ओत-प्रोत है। इसलिए हमने भिन्न-भिन्न विचारधाराओं को स्वच्छतापूर्वक अपने-अपने रास्ते बहने दिया। भिन्न-भिन्न धर्मों और सम्प्रदायों को स्वतन्त्रतापूर्वक पनपने और भिन्न-भिन्न भाषाओं को विकसित और प्रस्फुटित होने दिया। भिन्न-भिन्न देशों के लोगों को अपने में अभिन्न भाव से मिल जाने दिया। भिन्न-भिन्न देशों की संस्कृतियों को अपने में मिलाया और अपने को उनमें मिलने दिया और देश और विदेश में एकसूत्रता तलवार के जोर से नहीं, बल्कि प्रेम और सौहार्द से स्थापित की। दूसरों के हाथों और पैरों पर, घर और सम्पत्ति पर जबरदस्ती कब्जा नहीं किया, उनके हृदयों को जीता और इसी वजह से प्रभुत्व, जो चरित्र और चेतना का प्रभुत्व है, आज भी बहुत अंशों में कायम है, जब हम स्वयं उस चेतना को बहुत अंशों में भूल गये हैं और भूलते जा रहे हैं।

वैज्ञानिक और औद्योगिक विकास के उद्दण्ड परिणामों से अपने को सुरक्षित रखकर हम उनका उपयोग अपनी रीति से किस प्रकार करें—इस बारे में दो बातों का हमें बराबर ध्यान रखना है। पहली बात तो यह है कि हर प्रकार की प्रकृतिजन्य और मानव-कृत विपदाओं के पड़ने पर भी हम लोगों की सृजनात्मक शक्ति कम नहीं हुई। हमारे देश में साम्राज्य बने और मिटे, विभिन्न सम्प्रदायों का उत्थान-पतन हुआ, हम विदेशियों से आक्रान्त और पददलित हुए, हम पर प्रकृति और मानवों ने अनेक बार मुसीबतों के पहाड़ ढा दिये, पर फिर भी हम लोग बने रहे, हमारी संस्कृति बनी रही और हमारा जीवन एवं सृजनात्मक शक्ति बनी रही। हम अपने दुर्दिनों में भी ऐसे मनीषियों और कर्मयोगियों को पैदा कर सके जो संसार के इतिहास के किसी युग में अत्यन्त उच्च आसन के अधिकारी होते। अपनी दासता के दिनों में हमने गाँधी जैसे कर्मठ, धर्मनिष्ठ, क्रान्तिकारी को, रवीन्द्र जैसे मनीषी कवि को और अरविन्द तथा रमण महर्षि जैसे योगियों को पैदा किया और उन्हीं दिनों में हमने ऐसे अनेक उद्भट विद्वान् और वैज्ञानिक पैदा किये, जिनका सिक्का संसार मानता है। जिन हालातों में पड़कर संसार की प्रसिद्ध जातियाँ मिट गयीं, उनमें हम न केवल जीवित ही रहे, वरन् अपने आध्यात्मिक और बौद्धिक गौरव को बनाये रख सके। उसका कारण यही है कि हमारी सामूहिक चेतना ऐसे नैतिक आधार पर ठहरी हुई है, जो पहाड़ों से भी मजबूत, समुद्रों से भी गहरी और आकाश से भी अधिक व्यापक है।

दूसरी बात जो इस सम्बन्ध में विचारणीय है, वह यह है कि संस्कृति अथवा सामूहिक चेतना ही हमारे देश का प्राण है। इसी नैतिक चेतना के सूत्र से हमारे नगर और ग्राम, हमारे प्रदेश और सम्प्रदाय, हमारे विभिन्न वर्ग और जातियाँ आपस में बँधी हुई हैं। जहाँ उनमें और सब तरह की विभिन्नताएँ हैं, वहाँ उन सबमें यह एकता है। इसी बात को ठीक तरह से पहचान लेने से बापू ने जनसाधारण को बुद्धिजीवियों के नेतृत्व में क्रान्ति करने के लिए तत्पर करने के लिए इसी नैतिक चेतना का सहारा लिया था। अहिंसा, सेवा और त्याग की बातों से जनसाधारण का हृदय इसीलिए आन्दोलित हो उठा; क्योंकि उन्हीं से तो वह शताब्दियों से प्रभावित और प्रेरित रहा। जनसाधारण के हृदय में उनकी धड़कती चेतना को क्रान्ति की शक्ति बनाने में ही बापू की दूरदर्शिता थी और इसी में उनकी सफलता थी।

मैं तो यही समझता हूँ कि यदि हमें अपने समाज और देश में उन सब अन्यायों और अत्याचारों की पुनरावृत्ति नहीं करनी है, जिनके द्वारा आज के सारे संघर्ष उत्पन्न होते हैं तो हमें अपनी ऐतिहासिक, नैतिक चेतना या संस्कृति के आधार पर ही अपनी आर्थिक व्यवस्था बनानी चाहिए अर्थात् उसके पीछे वैयक्तिक लाभ और भोग की भावना प्रधान न होकर वैयक्तिक त्याग और

सामाजिक कल्याण की भावना ही प्रधान होनी चाहिए। हमारे प्रत्येक देशवासी को अपने सारे आर्थिक व्यापार उसी भावना से प्रेरित होकर करने चाहिए। वैयक्तिक स्वार्थों और स्वत्वों पर जोर न देकर वैयक्तिक कर्त्तव्य और सेवा-निष्ठा पर जोर देना चाहिए और हमारी प्रत्येक कार्यवाही इसी तराजू पर तौली जानी चाहिए। किसी भी क्रिया के पीछे जो भावना निहित होती है, उसका बड़ा प्रभाव हुआ करता है और परिणाम भी, यद्यपि देखने में क्रिया का रूप एक ही क्यों न हो। एक छोटे-से उदाहरण से यह बात स्पष्ट की जा सकती है। एक सम्मिलित परिवार है, जिसका प्रत्येक व्यक्ति इस नैतिक भावना से काम करता है कि उसका कर्त्तव्य है कि सभी व्यक्तियों को अधिक-से-अधिक वह सुख पहुँचा सके और प्रत्येक व्यक्ति पूरी शक्ति लगाकर जितना भी उपार्जन किया जा सकता है, करता है। सबका सामूहिक उपार्जन मान लीजिए कि एक रकम होती है, जिससे अधिक उपार्जन करने की शक्ति परिवार में नहीं हो। उसी परिवार का प्रत्येक व्यक्ति इस भावना से काम करता है कि उसको अपने सुख के लिए अधिक-से-अधिक उपार्जन करना चाहिए और उपार्जन करता हो तो भी सब व्यक्तियों का सामूहिक उपार्जन उतना होगा, जितना कि प्रथमोक्त स्थिति में और सामूहिक सम्पत्ति दोनों स्थितियों में बराबर होगी और उसका बराबर बँटवारा कर दिया जाय तो प्रत्येक को बराबर ही सुख होगा। पर इन दोनों स्थितियों में बहुत बड़ा अन्तर यह पड़ जायगा कि पहली स्थिति में संघर्ष का कोई भय नहीं; क्योंकि कोई केवल अपने लिए कुछ नहीं कर रहा है और दूसरे में संघर्ष अनिवार्य है; क्योंकि प्रत्येक अपने लिए ही कर रहा है। हम समझते हैं कि हमारी संस्कृति का तकाजा है कि पहली स्थिति में हम अपने को लायें और यदि संसार का संघर्ष मिटाना है तो उसी भावना को सर्वमान्य बनाना होगा। जब तक ऐसा नहीं होता, संघर्ष, चाहे वह व्यक्ति-व्यक्ति के बीच का हो, चाहे देश-देश के बीच का हो, वर्तमान रहेगा ही।

आज विज्ञान मनुष्यों के हाथों में अद्‌भुत और अतुल शक्ति दे रहा है, उसका उपयोग एक व्यक्ति और समूह के उत्कर्ष और दूसरे व्यक्ति और समूह के गिराने में होता ही रहेगा। इसलिए हमें उस भावना को जाग्रत रखना है और उसे जाग्रत रखने के लिए कुछ ऐसे साधनों को भी हाथ में रखना होगा, जो उस अहिंसात्मक त्याग-भावना को प्रोत्साहित करें और भोग-वासना को दबाये रखें। नैतिक अंकुश के बिना शक्ति मानव के लिए हितकर नहीं होती। वह नैतिक अंकुश यह चेतना या भावना ही दे सकती है। वही उस शक्ति को परिमित भी कर सकती है और उसके उपयोग को नियन्त्रित भी।

वर्तमान युग में भारतीय संस्कृति के समन्वय के प्रश्न के अतिरिक्त यह बात भी विचारणीय है कि भारत की प्रत्येक प्रादेशिक भाषा की सुन्दर और आनन्दप्रद कृतियों का स्वाद भारत के अन्य प्रदेशों के लोगों को कैसे चखाया जाय। मैं समझता हूँ कि इस बारे में दो बातें विचारणीय हैं। क्या इस सम्बन्ध में यह उचित नहीं होगा कि प्रत्येक भाषा की साहित्यिक संस्थाएँ उस भाषा की कृतियों को संघ-लिपि अर्थात् देवनागरी में भी छपवाने का आयोजन करें। मुझे विश्वास है कि कम-से-कम जहाँ तक उत्तर की भाषाओं का सम्बन्ध है, यदि वे सब अपनी कृतियों को देवनागरी में भी छपवाने लगें तो उनका स्वाद लगभग सारे उत्तर भारत में लोग आसानी से ले सकेंगे; क्योंकि इन सब भाषाओं में इतना साम्य है कि एक भाषा का अच्छा ज्ञाता दूसरी भाषाओं की कृतियों को स्वल्प परिश्रम से समझ जायगा।

दूसरी बात यह है, ऐसी संस्था की स्थापना की जाय, जो इन सब भाषाओं में आदान-प्रदान का सिलसिला अनुवाद द्वारा आरम्भ करे। यदि सब भारतीय भाषाओं का प्रतिनिधित्व करनेवाला सांस्कृतिक संगम स्थापित हो जाता है तो इस बारे में बड़ी सहूलियत होगी। साथ ही वह संगम साहित्यिकों को प्रोत्साहन भी प्रदान कर सकेगा और अच्छे साहित्य के स्तर के निर्धारण और सृजन करने में भी पर्याप्त अच्छा कार्य कर सकेगा। साहित्य संस्कृति का एक व्यक्त रूप है। उसके दूसरे रूप—गान, नृत्य, चित्रकला, वास्तुकला, मूर्तिकला इत्यादि में देखे जाते हैं। भारत अपनी एकसूत्रता इन सब कलाओं द्वारा प्रदर्शित करता आया है।

इन सब विषयों पर हमको इस प्रतिज्ञा को ध्यान में रखकर विचार करना है, जो इस भवन में शाहजहाँ ने उसके निर्माण के पश्चात् खुदवा दी थी। उसने गर्व के साथ खुदवा दिया था—

'गर फिरदौस बर रुए जमीनस्त,
हमींअस्तो, हमींअस्तो, हमींअस्त।''

(यदि पृथ्वी पर स्वर्ग कहीं है तो यहाँ ही है, यहाँ ही है, यहाँ ही है) यह स्वप्न तभी सत्य होगा और पृथ्वी पर स्वर्ग तो तभी स्थापित होगा, जब अहिंसा, सत्य और सेवा का आदर्श सारे भूमण्डल में मानव-जीवन का मुख्य आधार और प्रधान प्रेरकशक्ति हो गया होगा।

● **राजेन्द्र प्रसाद**

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

1. निम्नलिखित गद्यांशों के नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) अगर असम की पहाड़ियों में वर्ष में तीन सौ इंच वर्षा मिलेगी, तो जैसलमेर की तप्तभूमि भी मिलेगी, जहाँ साल में दो-चार इंच भी वर्षा नहीं होती। कोई ऐसा अन्न नहीं, जो यहाँ उत्पन्न न किया जाता हो। कोई ऐसा फल नहीं, जो यहाँ पैदा नहीं किया जा सके। कोई ऐसा खनिज पदार्थ नहीं, जो यहाँ के भूगर्भ में न पाया जाता हो और न कोई ऐसा वृक्ष अथवा जानवर है, जो यहाँ फैले हुए जंगलों में न मिले। यदि इस सिद्धान्त को देखना हो कि आबहवा का असर इंसान के रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा, शरीर और मस्तिष्क पर पड़ता है तो उसका जीता-जागता सबूत भारत में बसने वाले भिन्न-भिन्न प्रान्तों के लोग देते हैं।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) उपर्युक्त गद्यांश में असम और जैसलमेर की वर्षा के विषय में क्या बताया गया है?

(ख) भिन्न-भिन्न धर्मों के माननेवाले भी, जो सारी दुनिया के सभी देशों में बसे हुए हैं, यहाँ भी थोड़ी-बहुत संख्या में पाए जाते हैं और जिस तरह यहाँ की बोलियों की गिनती आसान नहीं, उसी तरह यहाँ भिन्न-भिन्न धर्मों के सम्प्रदायों की भी गिनती आसान नहीं। इन विभिन्नताओं को देखकर यदि अपरिचित आदमी घबड़ाकर कह उठे कि यह एक देश नहीं अनेक देशों का एक समूह है; यह एक जाति नहीं, अनेक जातियों का समूह है तो इसमें आश्चर्य की बात नहीं।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) उपर्युक्त गद्यांश में भारत की बोलियों एवं सम्प्रदायों के सम्बन्ध में क्या बताया गया है?

(ग) यह केवल एक काव्य की भावना नहीं है, बल्कि एक ऐतिहासिक सत्य है, जो हजारों-वर्षों से अलग-अलग अस्तित्व रखते हुए अनेकानेक जल-प्रपातों और प्रवाहों का संगमस्थल बनकर एक प्रकाण्ड और प्रगाढ़ समुद्र के रूप में भारत में व्याप्त है जिसे भारतीय संस्कृति का नाम दे सकते हैं। इन अलग-अलग नदियों के उद्‌गम भिन्न-भिन्न हो सकते हैं और रहे हैं। इनकी धाराएँ भी अलग-अलग बही हैं और प्रदेश के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकार के अन्न और फल-फूल पैदा करती रही हैं; पर सब में एक ही शुद्ध, सुन्दर, स्वस्थ और शीतल जल बहता रहा है, जो उद्‌गम और संगम में एक ही हो जाता है।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर भारतीय संस्कृति की एक विशेषता बताइए।

(घ) आज हम इसी निर्मल, शुद्ध-शीतल और स्वस्थ अमृत की तलाश में हैं और हमारी इच्छा, अभिलाषा और प्रयत्न यह है कि वह इन सभी अलग-अलग बहती हुई नदियों में अभी भी उसी तरह बहता रहे और इनको वह अमर तत्त्व देता रहे, जो जमाने के हजारों थपेड़ों को बर्दाश्त करता हुआ भी आज हमारे अस्तित्व को कायम रखे हुए है और रखेगा। **(2016CD)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) उपर्युक्त गद्यांश के अनुसार हमारी इच्छा और प्रयत्न क्या है?

अथवा **हमारे अस्तित्व को कौन कायम रखे हुए है?**

(ङ) यह एक नैतिक और आध्यात्मिक स्रोत है, जो अनन्त काल से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सम्पूर्ण देश में बहता रहा है और कभी-कभी मूर्त रूप होकर हमारे सामने आता रहा है। यह हमारा सौभाग्य रहा है कि हमने ऐसे ही एक मूर्त रूप को अपने बीच चलते-फिरते, हँसते-रोते भी देखा है और जिसने अमरत्व की याद दिलाकर हमारी सूखी हड्डियों में नई मज्जा डाल हमारे मृतप्राय शरीर में नए प्राण फूँके और मुरझाए हुए दिलों को फिर खिला दिया। वह अमरत्व सत्य और अहिंसा का है, जो केवल इसी देश के लिए नहीं, आज मानव मात्र के जीवन के लिए अत्यन्त आवश्यक हो गया है। **(2020MB, ME)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) (a) लेखक ने गद्यांश में क्या सन्देश देना चाहा है?

(b) हमें अमरत्व की याद दिलाकर किसने मृतप्राय शरीर में नये प्राण फूँके?

(च) व्यक्ति अपनी उन्नति और विकास चाहता है और यदि एक की उन्नति और विकास दूसरे की उन्नति और विकास में बाधक हो, तो संघर्ष उत्पन्न होता है और यह संघर्ष तभी दूर हो सकता है, जब सबके विकास के पथ अहिंसा के हों। हमारी सारी संस्कृति का मूलाधार इसी अहिंसा तत्त्व पर स्थापित रहा है। जहाँ-जहाँ हमारे नैतिक सिद्धान्तों का वर्णन आया है, अहिंसा को ही उसमें मुख्य स्थान दिया गया है। अहिंसा का दूसरा नाम या दूसरा रूप त्याग है और हिंसा का दूसरा रूप या दूसरा नाम स्वार्थ है, जो प्रायः भोग के रूप में हमारे सामने आता है। पर हमारी सभ्यता ने तो भोग भी त्याग से ही निकाला है और भोग भी त्याग में ही पाया है।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) हमारी संस्कृति का मूलाधार क्या है?

(छ) हम अपने दुर्दिनों में भी ऐसे मनीषियों और कर्मयोगियों को पैदा कर सके, जो संसार के इतिहास के किसी युग में अत्यन्त उच्च आसन के अधिकारी होते। अपनी दासता के दिनों में हमने गाँधी जैसे कर्मठ, धर्मनिष्ठ, क्रान्तिकारी को, रवीन्द्र जैसे मनीषी कवि को और अरविन्द तथा रमण महर्षि जैसे योगियों को पैदा किया और उन्हीं दिनों में हमने ऐसे अनेक उद्भट विद्वान् और वैज्ञानिक पैदा किए, जिनका सिक्का संसार मानता है। जिन हालातों में पड़कर संसार की प्रसिद्ध जातियाँ मिट गईं, उनमें हम न केवल जीवित ही रहे वरन् अपने आध्यात्मिक और बौद्धिक गौरव को बनाए रख सके। उसका कारण यही है कि हमारी सामूहिक चेतना ऐसे नैतिक आधार पर ठहरी हुई है जो पहाड़ों से भी मजबूत, समुद्रों से भी गहरी और आकाश से भी अधिक व्यापक है।

अथवा जिन हालातों में पड़कर संसार .....से भी अधिक व्यापक है? **(2020MD)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) (a) हम अपने दुर्दिनों में किस प्रकार के मनीषियों को पैदा कर सके हैं?

(b) लेखक ने गद्यांश में क्या सन्देश देना चाहा है?

(ज) मैं तो यही समझता हूँ कि यदि हमें अपने समाज और देश में उन सब अन्यायों और अत्याचारों की पुनरावृत्ति नहीं करनी है, जिनके द्वारा आज के सारे संघर्ष उत्पन्न होते हैं, तो हमें अपनी ऐतिहासिक, नैतिक चेतना या संस्कृति के आधार पर ही अपनी आर्थिक व्यवस्था बनानी चाहिए अर्थात् उसके पीछे वैयक्तिक लाभ और भोग की भावना प्रधान न होकर वैयक्तिक त्याग और सामाजिक कल्याण की भावना ही प्रधान होनी चाहिए। हमारे प्रत्येक देशवासी को अपने सारे आर्थिक व्यापार उसी भावना से प्रेरित होकर करने चाहिए। वैयक्तिक स्वार्थों और स्वत्वों पर जोर न देकर वैयक्तिक कर्त्तव्य और सेवा-निष्ठा पर जोर देना चाहिए और प्रत्येक कार्यवाही इसी तराजू पर तौली जानी चाहिए। **(2019AB, AD)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) (a) हमें अपने आर्थिक व्यापार किस भावना से प्रेरित होकर करना चाहिए?

(b) अन्यायों एवं अत्याचारों को रोकने का उपाय क्या है?

(झ) आज विज्ञान मनुष्यों के हाथों में अद्भुत और अतुल शक्ति दे रहा है, उसका उपयोग एक व्यक्ति और समूह के उत्कर्ष और दूसरे व्यक्ति और समूह के गिराने में होता ही रहेगा। इसलिए हमें उस भावना को जाग्रत रखना है और उसे जाग्रत रखने के लिए कुछ

ऐसे साधनों को भी हाथ में रखना होगा, जो उस अहिंसात्मक त्याग-भावना को प्रोत्साहित करें और भोग-वासना को दबाए रखें। नैतिक अंकुश के बिना शक्ति मानव के लिए हितकर नहीं होती। वह नैतिक अंकुश यह चेतना या भावना ही दे सकती है। वही उस शक्ति को परिमित भी कर सकती है और उसके उपयोग को नियंत्रित भी। **(2016CA)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) आज विज्ञान मनुष्य को क्या दे रहा है?

(ञ) वैज्ञानिक और औद्योगिक विकास के उद्दण्ड परिणामों से अपने को सुरक्षित रखकर हम उनका उपयोग अपनी रीति से किस प्रकार करें – इस बारे में दो बातों का हमें बराबर ध्यान रखना है। पहली बात तो यह है कि हर प्रकार की प्रकृतिजन्य और मानवकृत विपदाओं के पड़ने पर भी हम लोगों की सृजनात्मक शक्ति कम नहीं हुई। हमारे देश में साम्राज्य बने और मिटे, विभिन्न सम्प्रदायों का उत्थान-पतन हुआ, हम विदेशियों से आक्रान्त और पददलित हुए, हम पर प्रकृति और मानवों ने अनेक बार मुसीबतों के पहाड़ ढा दिये, पर फिर भी हम लोग बने रहे, हमारी संस्कृति बनी रही और हमारा जीवन एवं सृजनात्मक शक्ति बनी रही। हम अपने दुर्दिनों में भी ऐसे मनीषियों और कर्मयोगियों को पैदा कर सके, जो संसार के इतिहास के किसी युग में अत्यन्त उच्च आसन के अधिकारी होते।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्य का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) लेखक ने उपर्युक्त गद्यांश में भारतीयों की किस विशेषता का उल्लेख किया है?

(ट) हमारी संस्कृति का मूलाधार इसी अहिंसा तत्व पर स्थापित रहा है। जहाँ-जहाँ हमारे नैतिक सिद्धान्तों का वर्णन आया है, अहिंसा को ही उसमें मुख्य स्थान दिया गया है। अहिंसा का दूसरा नाम या दूसरा रूप त्याग है और हिंसा का दूसरा रूप या दूसरा नाम स्वार्थ है, जो प्रायः भोग के रूप में हमारे सामने आता है। पर हमारी सभ्यता ने तो भोग भी त्याग से ही निकाला है और भोग भी त्याग में ही पाया है। श्रुति कहती है–'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः'। इसी के द्वारा हम व्यक्ति-व्यक्ति के बीच का विरोध, व्यक्ति और समाज के बीच का विरोध, समाज और समाज के बीच का विरोध, देश और देश के बीच के विरोध को मिटाना चाहते हैं। हमारी सारी नैतिक चेतना इसी तत्त्व से ओत-प्रोत है। **(2019AE)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।
(iii) (a) हमारे नैतिक सिद्धान्तों में किस चीज़ को प्रमुख स्थान दिया गया है? इसका दूसरा रूप क्या है?
(b) स्वार्थ के क्या-क्या दुष्परिणाम होते हैं?
(c) पारस्परिक विरोध को कैसे मिटाया जा सकता है?

(ठ) दूसरी बात, जो इस सम्बन्ध में विचारणीय है, वह यह है कि संस्कृति अथवा सामूहिक चेतना ही हमारे देश का प्राण है। इसी नैतिक चेतना के सूत्र से हमारे नगर और ग्राम, हमारे प्रदेश और सम्प्रदाय, हमारे विभिन्न वर्ग और जातियाँ आपस में बँधी हुई हैं, वहाँ उन सब में यह एकता है। इसी बात को ठीक तरह से पहचान लेने से बापू ने जनसाधारण को बुद्धिजीवियों के नेतृत्व में क्रान्ति करने के लिए इसी नैतिक चेतना का सहारा लिया था। अहिंसा, सेवा और त्याग की बातों से जनसाधारण का हृदय इसीलिए आन्दोलित हो उठा, क्योंकि उन्हीं से तो वह शताब्दियों से प्रभावित और प्रेरित रहा।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।
(iii) जनसाधारण का हृदय किन बातों से आन्दोलित हो उठा?

(ड) वर्तमान युग में भारतीय संस्कृति के समन्वय के प्रश्न के अतिरिक्त यह बात भी विचारणीय है कि भारत की प्रत्येक प्रादेशिक भाषा की सुन्दर और आनन्दप्रद कृतियों का स्वाद भारत के अन्य प्रदेशों के लोगों को कैसे चखाया जाय। मैं समझता हूँ कि इस बारे में दो बातें विचारणीय हैं। क्या इस सम्बन्ध में यह उचित नहीं होगा कि प्रत्येक भाषा की साहित्यिक संस्थाएँ उस भाषा की कृतियों को संघ-लिपि अर्थात् देवनागरी में छपवाने का आयोजन करें। मुझे विश्वास है कि कम से कम जहाँ तक उत्तर की

भाषाओं का सम्बन्ध है, यदि वे सब अपनी कृतियों को देवनागरी में छपवाने लगें तो उनका स्वाद लगभग सारे उत्तर भारत के लोग आसानी से ले सकेंगे, क्योंकि इन सब भाषाओं में इतना साम्य है कि एक भाषा का अच्छा ज्ञाता दूसरी भाषा की कृतियों को स्वल्प परिश्रम से समझा जायेगा। **(2019AC)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंशों में से किसी एक अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) कृतियों को देवनागरी लिपि में छपवाने का क्यों सुझाव दिया गया है?

2. डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए। **(2016CD, CE, CG, 17AB, 18HA, HF,19AC,20MC, MD, MB, MF)**

3. डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद की कृतियाँ एवं भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

4. हमारे देश में जाति, धर्म, जलवायु, आचार-विचार में जो इतनी विभिन्नता दिखायी देती है, उसका कारण क्या है?

5. देश की इस विभिन्नता में एकता स्थापित करनेवाली वस्तु को हम क्या कहते हैं?

6. भारतीय संस्कृति का मूल तत्त्व क्या है?

7. भारत की सांस्कृतिक एकता को स्पष्ट करने के लिए लेखक ने किन दो उपमाओं का सहारा लिया है?

8. भारतीय प्रजातन्त्र का मूल आधार क्या है?

9. 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः'—श्रुति के इस कथन को लेखक भारतीय संस्कृति की किस विशेषता को प्रकट करने के लिए उद्धृत करता है?

10. लेखक ने गाँधी, रवीन्द्र और अरविन्द का स्मरण किस सन्दर्भ में किया है?

11. वैज्ञानिक और औद्योगिक उन्नति का भारतीय संस्कृति पर विपरीत प्रभाव न पड़े, इसके लिए इस देश के मनीषियों ने क्या प्रयास किये हैं?

12. लेखक क्यों कहता है कि 'सामूहिक चेतना ही हमारे देश का प्राण है?'

13. इस सामूहिक चेतना को कैसे बनाये रखा जा सकता है?

14. लेखक देवनागरी लिपि की वकालत क्यों करता है?

15. भारत की एकसूत्रता बनाये रखने में भारतीय कलाओं का क्या महत्त्व है?

16. प्रस्तुत लेख में जहाँ कहीं लम्बे वाक्य आ गये हैं, उनके कथ्य को कई वाक्यों में अभिव्यक्त कीजिए।

17. प्रस्तुत लेख में कई शब्द ऐसे आये हैं जो न तत्सम हैं, न तद्भव; ऐसे विदेशी शब्दों की सूची तैयार कीजिए।

18. विभिन्नता, सुन्दरता, स्वतन्त्रता शब्दों में प्रत्यय बताइए।

➥ आन्तरिक मूल्यांकन

(1) डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद की कृतियों की एक सूची तैयार कीजिए।
(2) भारतीय संस्कृति की विशेषताओं को तालिका के माध्यम से दर्शाइए।

शब्दार्थ

जल-प्रपात = झरना। **अस्तित्व** = सत्ता। **प्रगाढ़** = अत्यन्त गहरा। **उद्गम** = निकलने का स्थान। **मज्जा** = हड्डियों के अन्दर का गूदे जैसा पदार्थ। **तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः** = उपनिषद् का एक उद्धरण जिसका अर्थ है—इसलिए त्याग (की भावना) से भोग करो। **सौहार्द** = सहृदयता, आत्मीयता, सद्भाव, मैत्री। **आक्रान्त** = जिस पर आक्रमण किया गया हो। **अरविन्द** = बंगाल के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी, जो बाद में महान् योगी और दार्शनिक के रूप में विख्यात हुए। **रमण महर्षि** = 'महर्षि' की उपाधि से विभूषित प्रसिद्ध भारतीय वैज्ञानिक डॉ0 चन्द्रशेखर वेंकटरमण; नोबुल पुरस्कार विजेता। **बुद्धिजीवी** = प्रमुखतः दिमागी कार्यों से जीविकोपार्जन करनेवाला, जैसे अध्यापक, वकील, लेखक आदि। **अतुल** = जिसे तोला न जा सके। **उत्कर्ष** = उन्नति। **परिमित** = सीमित।

●●

5 रामधारीसिंह 'दिनकर'

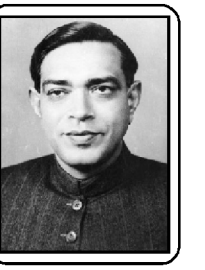

रामधारीसिंह 'दिनकर' का जन्म 30 सितम्बर, 1908 ई० में बिहार राज्य के मुंगेर जिले के सिमरिया ग्राम में एक साधारण किसान परिवार में हुआ था। बी०ए० की परीक्षा पास करने के पश्चात् इन्होंने कुछ दिनों के लिए उच्च माध्यमिक विद्यालय में प्रधानाध्यापक का कार्य सँभाला। उसके बाद ये सरकारी नौकरी में चले आये। इनकी सरकारी सेवा अवर-निबंधक के रूप में प्रारम्भ हुई। बाद में ये उप निदेशक, प्रचार विभाग के पद पर स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद तक कार्य करते रहे। तदनन्तर

इन्होंने कुछ समय तक बिहार विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद पर कार्य किया। सन् 1952 ई० में ये भारतीय संसद के सदस्य मनोनीत हुए। कुछ समय ये भागलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति भी रहे। उसके पश्चात् भारत सरकार के गृह-विभाग में हिन्दी सलाहकार के रूप में एक लम्बे अर्से तक हिन्दी के संवर्द्धन एवं प्रचार-प्रसार के लिए कार्यरत रहे। इन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। सन् 1959 ई० में भारत सरकार ने इन्हें 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया तथा सन् 1962 ई० में भागलपुर विश्वविद्यालय ने डी० लिट्० की उपाधि प्रदान की। प्रतिनिधि लेखक व कवि के रूप में इन्होंने अनेक प्रतिनिधि मण्डलों में रहकर विदेश यात्राएँ कीं। 'दिनकरजी' की असामयिक मृत्यु 24 अप्रैल, 1974 ई० को हुई।

लेखक-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म–**30 सितम्बर, 1908 ई०।
- **जन्म-स्थान–**सिमरिया (मुंगेर), बिहार।
- **शिक्षा–**बी.ए.।
- **मृत्यु–**24 अप्रैल, 1974 ई०।
- **लेखन विधा–**निबन्ध, संस्कृति ग्रंथ, आलोचना, काव्य ग्रंथ।
- **भाषा–**शुद्ध साहित्यिक, संस्कृतनिष्ठ, प्रांजल, प्रौढ़ तथा सुबोध खड़ीबोली।
- **शैली–**भावात्मक, समीक्षात्मक, सूक्ति-परक तथा विवेचनात्मक।
- **प्रमुख रचनाएँ–**रेणुका, रसवन्ती, रश्मिरथी, परशुराम की प्रतीक्षा, कुरुक्षेत्र, उर्वशी, अर्द्धनारीश्वर, उजली आग, संस्कृति के चार अध्याय, मिट्टी की ओर, शुद्ध कविता की खोज।
- **साहित्य में स्थान–**इन्हें हिन्दी साहित्य जगत में 'राष्ट्रकवि' की ख्याति प्राप्त थी। आपको 'पद्मभूषण' व 'ज्ञानपीठ पुरस्कारों' से सम्मानित किया गया था।

इनकी प्रसिद्धि का मुख्य आधार कविता है तथा देश और विदेश में ये मुख्यतः कवि रूप में प्रसिद्ध हैं। लेकिन गद्य-लेखन में भी ये आगे रहे और अनेक अनमोल ग्रन्थ लिखकर हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि की। इसका ज्वलन्त उदाहरण है 'संस्कृति के चार अध्याय', जो साहित्य अकादमी से पुरस्कृत है। इसमें इन्होंने प्रधानतया शोध और अनुशीलन के आधार पर मानव सभ्यता के इतिहास को चार मंजिलों में बाँटकर अध्ययन किया है। इसके अतिरिक्त 'दिनकर' के स्फुट, समीक्षात्मक तथा विविध निबन्धों के संग्रह हैं, जो पठनीय हैं, विशेषतः इस कारण कि उनसे 'दिनकर' के कवित्व को समझने-परखने में यथेष्ट सहायता मिलती है। इनके गद्य में विषयों की विविधता और शैली की प्राञ्जलता के सर्वत्र दर्शन होते हैं। भाषा की भूलों के बावजूद शैली की प्राञ्जलता ही 'दिनकर' के गद्य को आकर्षक बना देती है। इनका गद्य-साहित्य काव्य की भाँति ही अत्यन्त सजीव एवं स्फूर्तिमय है तथा भाषा ओज

से ओत-प्रोत है। इन्होंने काव्य, संस्कृति, समाज, जीवन आदि विषयों पर बहुत ही उत्कृष्ट लेख लिखे हैं। दिनकर जी के गद्य साहित्य में मुख्य रूप से आलोचनात्मक, भावात्मक, विवेचनात्मक, सूक्ति शैली के दर्शन होते हैं।

प्रमुख कृतियाँ–'प्रणभंग', 'रेणुका', 'रसवन्ती', 'द्वन्द्वगीत', 'धूप-छाँह', 'हुंकार', 'बापू', 'एकायन', 'इतिहास के आँसू', 'परशुराम की प्रतीक्षा', 'रश्मिरथी', 'नील कुसुम', 'नील के पत्ते', 'सीपी और शंख', 'कुरुक्षेत्र' तथा 'उर्वशी'।

निबन्ध-संग्रह–'अर्द्धनारीश्वर', 'रेती के फूल', 'बट पीपल', 'उजली आग', 'विवाह की मुसीबतें' आदि।

दार्शनिक और सांस्कृतिक निबन्ध–'धर्म', 'भारतीय संस्कृति की एकता', 'संस्कृति के चार अध्याय'।

आलोचना–'मिट्टी की ओर', 'शुद्ध कविता की खोज', 'काव्य की भूमिका', 'पंत, प्रसाद और मैथिलीशरण' आदि।

यात्रा–वृत्तान्त–'देश-विदेश', 'मेरी यात्राएँ'।

रेडियो रूपक–'हेराम'।

दिनकर के संस्मरण–'शेष–निःशेष'।

दिनकर जी की भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ीबोली है। इन्होंने तद्भव और देशज शब्दों तथा मुहावरों और लोकोक्तियों का भी सहज स्वाभाविक प्रयोग किया है। इनकी शैलियों में विवेचनात्मक, समीक्षात्मक, भावात्मक, सूक्तिपरक शैली प्रमुख रूप से हैं।

'ईर्ष्या, तू न गयी मेरे मन से' पाठ लेखक की 'अर्द्धनारीश्वर' पुस्तक से संकलित किया गया है। लेखक ने ईर्ष्या की उत्पत्ति का कारण एवं उससे होनेवाली हानियों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया है। साथ ही लेखक ने ईर्ष्या से विमुक्ति का साधन भी प्रस्तुत किया है।

हिन्दी साहित्य में स्थान–'संस्कृति के चार अध्याय' दिनकर जी की एक प्रमुख कृति है। यह हिन्दी गद्य साहित्य की एक अमूल्य धरोहर है। आप मानवता के पोषक तथा शोषण के विरोधी हैं। इन्होंने समाज, संस्कृति और धर्म में व्याप्त रूढ़ियों का खण्डन करके जन-मानस में यथार्थ राष्ट्रीयता का भाव पिरोने का प्रयत्न किया। राष्ट्रीयता की भावना पर आश्रित इनका साहित्य, भारतीय साहित्य की अमूल्य धरोहर है। दिनकर जी की गणना देश के श्रेष्ठ साहित्यकारों में की जाती है।

●●

ईर्ष्या, तू न गयी मेरे मन से

मेरे घर के दाहिने एक वकील रहते हैं, जो खाने-पीने में अच्छे हैं, दोस्तों को भी खूब खिलाते हैं और सभा-सोसाइटियों में भी काफी भाग लेते हैं। बाल-बच्चों से भरा-पूरा परिवार, नौकर भी सुख देनेवाले और पत्नी भी अत्यन्त मृदुभाषिणी। भला एक सुखी मनुष्य को और क्या चाहिए?

मगर वे सुखी नहीं हैं। उनके भीतर कौन-सा दाह है, इसे मैं भली-भाँति जानता हूँ। दरअसल उनकी बगल में जो बीमा एजेण्ट हैं, उनके विभव की वृद्धि से वकील साहब का कलेजा जलता रहता है। वकील साहब को भगवान् ने जो कुछ दे रखा है, वह उनके लिए काफी नहीं दीखता। वे इस चिन्ता में भुने जा रहे हैं कि काश, एजेण्ट की मोटर, उसकी मासिक आय और उसकी तड़क-भड़क मेरी भी हुई होती।

ईर्ष्या का यही अनोखा वरदान है। जिस मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या घर बना लेती है, वह उन चीजों से आनन्द नहीं उठाता जो उसके पास मौजूद हैं, बल्कि उन वस्तुओं से दुःख उठाता है जो दूसरों के पास हैं। वह अपनी तुलना दूसरों के साथ करता है और इस तुलना में अपने पक्ष के सभी अभाव उसके हृदय पर दंश मारते रहते हैं। दंश के इस दाह को भोगना कोई अच्छी बात नहीं है। मगर, ईर्ष्यालु मनुष्य करे भी तो क्या? आदत से लाचार होकर उसे यह वेदना भोगनी पड़ती है।

एक उपवन को पाकर भगवान् को धन्यवाद देते हुए उसका आनन्द नहीं लेना और बराबर इस चिन्ता में निमग्न रहना कि इससे भी बड़ा उपवन क्यों नहीं मिला, एक ऐसा दोष है, जिससे ईर्ष्यालु व्यक्ति का चरित्र भी भयंकर हो उठता है। अपने अभाव पर दिन-रात सोचते-सोचते वह सृष्टि की प्रक्रिया को भूलकर विनाश में लग जाता है और अपनी उन्नति के लिए उद्यम करना छोड़कर वह दूसरों को हानि पहुँचाने को ही अपना श्रेष्ठ कर्त्तव्य समझने लगता है।

ईर्ष्या की बड़ी बेटी का नाम निन्दा है। जो व्यक्ति ईर्ष्यालु होता है, वही बुरे किस्म का निन्दक भी होता है। दूसरों की निन्दा वह इसलिए करता है कि इस प्रकार, दूसरे लोग जनता अथवा मित्रों की आँखों से गिर जायँगे और जो स्थान रिक्त होगा, उस पर मैं अनायास ही बैठा दिया जाऊँगा।

मगर ऐसा न आज तक हुआ है और न आगे होगा। दूसरों को गिराने की कोशिश तो अपने को बढ़ाने की कोशिश नहीं कही जा सकती। एक बात और है कि संसार में कोई भी मनुष्य निन्दा से नहीं गिरता। उसके पतन का कारण सद्गुणों का ह्रास होता है। इसी प्रकार कोई भी मनुष्य दूसरों की निन्दा करने से अपनी उन्नति नहीं कर सकता। उन्नति तो उसकी तभी होगी, जब वह अपने चरित्र को निर्मल बनाये तथा अपने गुणों का विकास करे।

ईर्ष्या का काम जलाना है, मगर सबसे पहले वह उसी को जलाती है, जिसके हृदय में उसका जन्म होता है। आप भी ऐसे बहुत-से लोगों को जानते होंगे, जो ईर्ष्या और द्वेष की साकार मूर्ति हैं और जो बराबर इस फिक्र में लगे रहते हैं कि कहाँ सुननेवाला मिले और अपने दिल का गुबार निकालने का मौका मिले। श्रोता मिलते ही उनका ग्रामोफोन बजने लगता है और वे बड़ी ही होशियारी के साथ एक-एक काण्ड इस ढंग से सुनाते हैं, मानो विश्व-कल्याण को छोड़कर उनका और कोई ध्येय नहीं हो। अगर जरा उनके अपने इतिहास को देखिए और समझने की कोशिश कीजिए कि जबसे उन्होंने इस सुकर्म का आरम्भ किया है, तब से वे अपने क्षेत्र में आगे बढ़े हैं या पीछे हटे हैं। यह भी कि वे निन्दा करने में समय व शक्ति का अपव्यय नहीं करते तो आज इनका स्थान कहाँ होता?

चिन्ता को लोग चिता कहते हैं। जिसे किसी प्रचण्ड चिन्ता ने पकड़ लिया है, उस बेचारे की जिन्दगी ही खराब हो जाती है, किन्तु ईर्ष्या शायद चिन्ता से भी बदतर चीज है; क्योंकि वह मनुष्य के मौलिक गुणों को ही कुण्ठित बना डालती है।

मृत्यु शायद, फिर भी श्रेष्ठ है, बनिस्बत इसके कि हमें अपने गुणों को कुण्ठित बनाकर जीना पड़े। चिन्तादग्ध व्यक्ति समाज की दया का पात्र है, किन्तु ईर्ष्या से जला-भुना आदमी जहर की एक चलती-फिरती गठरी के समान है, जो हर जगह वायु को दूषित करती फिरती है।

ईर्ष्या मनुष्य का चारित्रिक दोष नहीं है, प्रत्युत् इससे मनुष्य के आनन्द में भी बाधा पड़ती है। जब भी मनुष्य के हृदय का उदय होता है, सामने का सुख उसे मद्धिम-सा दीखने लगता है। पक्षियों के गीत में जादू नहीं रह जाता और फूल तो ऐसे हो जाते हैं, मानो वे देखने के योग्य ही न हों।

आप कहेंगे कि निन्दा के बाण से अपने प्रतिद्वन्द्वियों को बेधकर हँसने में एक आनन्द है और यह आनन्द ईर्ष्यालु व्यक्ति का सबसे बड़ा पुरस्कार है। मगर, यह हँसी मनुष्य की नहीं, राक्षस की हँसी होती है और यह आनन्द भी दैत्यों का आनन्द होता है।

ईर्ष्या का सम्बन्ध प्रतिद्वन्द्विता से होता है, क्योंकि भिखमंगा करोड़पति से ईर्ष्या नहीं करता। यह एक ऐसी बात है, जो ईर्ष्या के पक्ष में भी पड़ सकती है; क्योंकि प्रतिद्वन्द्विता से मनुष्य का विकास होता है, किन्तु अगर आप संसारव्यापी सुयश चाहते हैं तो आप रसेल के मतानुसार, शायद नेपोलियन से स्पर्द्धा करेंगे। मगर, याद रखिये कि नेपोलियन भी सीजर से स्पर्द्धा करता था और सीजर सिकन्दर से तथा सिकन्दर हरकुलिस से।

ईर्ष्या का एक पक्ष, सचमुच ही लाभदायक हो सकता है, जिसके अधीन हर आदमी, हर जाति और हर दल अपने को अपने प्रतिद्वन्द्वी का समकक्ष बनाना चाहता है, किन्तु यह तभी सम्भव है, जब कि ईर्ष्या से जो प्रेरणा आती हो, वह रचनात्मक हो। अक्सर तो ऐसा ही होता है कि ईर्ष्यालु व्यक्ति यह महसूस करता है कि कोई चीज है जो उसके भीतर नहीं है, कोई वस्तु है जो दूसरों के पास है। किन्तु वह यह नहीं समझ पाता कि इस वस्तु को प्राप्त कैसे करना चाहिए और गुस्से में आकर वह अपने किसी पड़ोसी, मित्र या समकालीन व्यक्ति को अपने से श्रेष्ठ मानकर उससे जलने लगता है, जबकि ये लोग भी अपने आपसे शायद वैसे ही असन्तुष्ट हों।

आपने यही देखा होगा कि शरीफ लोग यह सोचते हुए अपना सिर खुजलाया करते हैं कि फलाँ आदमी मुझसे जलता है, मैंने तो उसका कुछ नहीं बिगाड़ा और अमुक व्यक्ति इस कदर मेरी निन्दा में क्यों लगा हुआ है? सच तो यह है कि मैंने सबसे अधिक भलाई उसी की की है।

यह सोचते हैं—मैं तो पाक-साफ हूँ, मुझमें किसी व्यक्ति के लिए दुर्भावना नहीं है, बल्कि अपने दुश्मनों की भी मैं भलाई ही सोचा करता हूँ। फिर ये लोग मेरे पीछे क्यों पड़े हुए हैं? मुझमें कौन-सा वह ऐब है, जिसे दूर करके मैं इन दोस्तों को चुप कर सकता हूँ?

ईश्वरचन्द विद्यासागर जब इस तजुरबे से होकर गुजरे, तब उन्होंने एक सूत्र कहा 'तुम्हारी निन्दा वही करेगा, जिसकी तुमने भलाई की है।'

और नीत्से जब इस कूचे से होकर निकला, तब उसने जोरों का एक ठहाका लगाया और कहा कि 'यार, ये तो बाजार की मक्खियाँ हैं, जो अकारण हमारे चारों ओर भिनभिनाया करती हैं।'

ये सामने प्रशंसा और पीठ पीछे निन्दा किया करते हैं। हम इनके दिमाग में बैठे हुए हैं, ये मक्खियाँ हमें भूल नहीं सकतीं और चूँकि ये हमारे बारे में बहुत सेवा करती हैं, इसलिए ये हमसे डरती हैं और हम पर शंका भी करती हैं।

ये मक्खियाँ हमें सजा देती हैं हमारे गुणों के लिए। ये ऐब को तो माफ कर देंगी, क्योंकि बड़ों के ऐब को माफ करने में भी शान है, जिस शान का स्वाद लेने के लिए ये मक्खियाँ तरस रही हैं।

जिनका चरित्र उन्नत है, जिनका हृदय निर्मल और विशाल है, वे कहते हैं—'इन बेचारों की बातों से क्या चिढ़ना? ये तो खुद ही छोटे हैं।'

मगर जिनका दिल छोटा और दृष्टि संकीर्ण है, वे मानते हैं कि जितनी भी बड़ी हस्तियाँ हैं, उनकी निन्दा ही ठीक है। और जब हम प्रीति, उदारता और भलमनसाहत का बरताव करते हैं, तब भी ये यही समझते हैं कि हम उनसे घृणा कर रहे हैं और हम चाहे उनका जितना उपकार करें, बदले में हमें अपकार ही मिलेगा।

दरअसल, हम जो उनकी निन्दा का जवाब न देकर चुप्पी साधे रहते हैं, उसे भी वे हमारा अहंकार समझते हैं। खुशी तो उन्हें तभी हो सकती है, जब हम उनके धरातल पर उतरकर उनके छोटेपन के भागीदार बन जायँ।

सारे अनुभवों को निचोड़कर नीत्से ने एक दूसरा सूत्र कहा, 'आदमी में जो गुण महान् समझे जाते हैं, उन्हीं के चलते लोग उससे जलते भी हैं।'

तो ईर्ष्यालु लोगों से बचने का क्या उपाय है? नीत्से कहता है कि 'बाजार की मक्खियों को छोड़कर एकान्त की ओर भागो। जो कुछ भी अमर तथा महान् है, उसकी रचना और निर्माण बाजार तथा सुयश से दूर रहकर किया जाता है। जो लोग नये मूल्यों का निर्माण करनेवाले हैं, वे बाजारों में नहीं बसते, वे शोहरत के पास भी नहीं रहते।' जहाँ बाजार की मक्खियाँ नहीं भिनकतीं, वहाँ एकान्त है।

यह तो हुआ ईर्ष्यालु लोगों से बचने का उपाय, किन्तु ईर्ष्या से आदमी कैसे बच सकता है?

ईर्ष्या से बचने का उपाय मानसिक अनुशासन है। जो व्यक्ति ईर्ष्यालु स्वभाव का है, उसे फालतू बातों के बारे में सोचने की आदत छोड़ देनी चाहिए। उसे यह भी पता लगाना चाहिए कि जिस अभाव के कारण वह ईर्ष्यालु बन गया है, उसकी पूर्ति का रचनात्मक तरीका क्या है। जिस दिन उसके भीतर यह जिज्ञासा आयेगी, उसी दिन से वह ईर्ष्या करना कम कर देगा।

● **रामधारीसिंह 'दिनकर'**

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

1. निम्नलिखित गद्यांशों के नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) ईर्ष्या का यही अनोखा वरदान है। जिस मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या घर बना लेती है, वह उन चीजों से आनन्द नहीं उठाता, जो उसके पास मौजूद हैं, बल्कि उन वस्तुओं से दुःख उठाता है, जो दूसरों के पास हैं। वह अपनी तुलना दूसरों के साथ करता है और इस तुलना में अपने पक्ष के सभी अभाव उसके हृदय पर दंश मारते रहते हैं। दंश के इस दाह को भोगना कोई अच्छी बात नहीं है। मगर, ईर्ष्यालु मनुष्य करे भी तो क्या? आदत से लाचार होकर उसे यह वेदना भोगनी पड़ती है।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) लेखक ने ईर्ष्या का अनोखा वरदान किसे कहा है?

(ख) एक उपवन को पाकर भगवान् को धन्यवाद देते हुए उसका आनन्द नहीं लेना और बराबर इस चिन्ता में निमग्न रहना कि इससे भी बड़ा उपवन क्यों नहीं मिला, यह ऐसा दोष है, जिससे ईर्ष्यालु व्यक्ति का चरित्र और भी भयंकर हो उठता है। अपने अभाव पर दिन-रात सोचते-सोचते वह सृष्टि की प्रक्रिया को भूलकर विनाश में लग जाता है और अपनी उन्नति के लिए उद्यम करना छोड़कर वह दूसरों को हानि पहुँचाने को ही अपना श्रेष्ठ कर्त्तव्य समझने लगता है।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) लेखक ने ईर्ष्यालु व्यक्ति के चरित्र के भयंकर होने का क्या कारण बतलाया है?

(ग) ईर्ष्या की बड़ी बेटी का नाम निन्दा है। जो व्यक्ति ईर्ष्यालु होता है, वही बुरे किस्म का निन्दक भी होता है। दूसरों की निन्दा वह इसलिए करता है कि इस प्रकार, दूसरे लोग जनता अथवा मित्रों की आँखों से गिर जायँगे और जो स्थान रिक्त होगा, उस पर मैं अनायास ही बैठा दिया जाऊँगा। **(2016CG)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) ईर्ष्यालु व्यक्ति निन्दाप्रिय क्यों होता है?

अथवा **ईर्ष्यालु और निन्दक का क्या सम्बन्ध है?**

(घ) मगर ऐसा न आज तक हुआ है और न होगा। दूसरों को गिराने की कोशिश तो अपने को बढ़ाने की कोशिश नहीं कही जा सकती। एक बात और है कि संसार में कोई भी मनुष्य निन्दा से नहीं गिरता। उसके पतन का कारण सद्गुणों का ह्रास होता है। इसी प्रकार कोई भी मनुष्य दूसरों की निन्दा करने से अपनी उन्नति नहीं कर सकता। उन्नति तो उसकी तभी होगी, जब वह अपने चरित्र को निर्मल बनाए तथा अपने गुणों का विकास करे। **(2016CF, 17AA, 19AE,AG)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) (a) उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर निन्दा का प्रभाव स्पष्ट कीजिए।

अथवा **मनुष्य के पतन का क्या कारण होता है?**

(b) मनुष्य की उन्नति कैसे हो सकती है?

अथवा **मनुष्य की उन्नति का क्या कारण बताया गया है?**

(ङ) ईर्ष्या का काम जलाना है, मगर सबसे पहले वह उसी को जलाती है जिसके हृदय में उसका जन्म होता है। आप भी ऐसे बहुत-से लोगों को जानते होंगे, जो ईर्ष्या और द्वेष की साकार मूर्ति हैं और जो बराबर इस फिक्र में लगे रहते हैं कि कहाँ सुननेवाला मिले और अपने दिल का गुबार निकालने का मौका मिले। श्रोता मिलते ही उनका ग्रामोफोन बजने लगता है और वे बड़ी ही होशियारी के साथ एक-एक काण्ड इस ढंग से सुनाते हैं, मानो विश्व-कल्याण को छोड़कर उनका और कोई ध्येय नहीं हो। अगर जरा उनके अपने इतिहास को देखिए और समझने की कोशिश कीजिए कि जबसे उन्होंने इस सुकर्म का आरम्भ किया है, तब से वे अपने क्षेत्र में आगे बढ़े हैं या पीछे हटे हैं। **(2020MC)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) ईर्ष्या का क्या काम है? वह सबसे पहले किसे जलाती है?

(च) श्रोता मिलते ही उनका ग्रामोफोन बजने लगता है और वे बड़ी ही होशियारी के साथ एक-एक काण्ड इस ढंग से सुनाते हैं, मानो विश्व-कल्याण को छोड़कर उनका और कोई ध्येय नहीं हो। अगर जरा उनके अपने इतिहास को देखिए और समझने की कोशिश कीजिए कि जब से उन्होंने इस सुकर्म का आरम्भ किया है तब से वे अपने क्षेत्र में आगे बढ़े हैं या पीछे हटे हैं। यह भी कि वे निन्दा करने में समय व शक्ति का अपव्यय नहीं करते तो आज इनका स्थान कहाँ होता?

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) निन्दा का निन्दक पर प्रभाव बताइए।
***अथवा* मनुष्य की उन्नति का क्या कारण बताया गया है?**

(छ) ईर्ष्या का एक पक्ष, सचमुच ही लाभदायक हो सकता है, जिसके अधीन हर आदमी, हर जाति और हर दल अपने को अपने प्रतिद्वन्द्वी का समकक्ष बनाना चाहता है। किन्तु यह तभी सम्भव है, जबकि ईर्ष्या से जो प्रेरणा आती हो, वह रचनात्मक हो। अक्सर तो ऐसा ही होता है कि ईर्ष्यालु व्यक्ति यह महसूस करता है कि कोई चीज है जो उसके भीतर नहीं है, कोई वस्तु है, जो दूसरों के पास है। किन्तु वह यह नहीं समझ पाता कि इस वस्तु को प्राप्त कैसे करना चाहिए और गुस्से में आकर वह अपने किसी पड़ोसी, मित्र या समकालीन व्यक्ति को अपने से श्रेष्ठ मानकर उससे जलने लगता है, जबकि ये लोग भी अपने आपसे शायद वैसे ही असन्तुष्ट हों। **(2016CE)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।
(iii) ईर्ष्यालु व्यक्ति क्या महसूस करता है?
अथवा **ईर्ष्या का लाभदायक पक्ष क्या है?**

(ज) आप कहेंगे कि निन्दा के बाण से अपने प्रतिद्वन्द्वियों को बेधकर हँसने में एक आनन्द है और यह आनन्द ईर्ष्यालु व्यक्ति का सबसे बड़ा पुरस्कार है। मगर, यह हँसी मनुष्य की नहीं, राक्षस की हँसी होती है और यह आनन्द भी दैत्यों का आनन्द होता है।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) ईर्ष्यालु व्यक्ति का सबसे बड़ा पुरस्कार क्या है?

(झ) चिन्ता को लोग चिता कहते हैं। जिसे किसी प्रचण्ड चिन्ता ने पकड़ लिया है, उस बेचारे की जिन्दगी ही खराब हो जाती है किन्तु ईर्ष्या शायद चिन्ता से भी बदतर चीज है, क्योंकि वह मनुष्य के मौलिक गुणों को ही कुण्ठित बना डालती है।

मृत्यु शायद, फिर भी श्रेष्ठ है, बनिस्बत इसके कि हमें अपने गुणों को कुण्ठित बना कर जीना पड़े। चिन्तादग्ध व्यक्ति समाज की दया का पात्र है, किन्तु ईर्ष्या से जला-भुना आदमी जहर की एक चलती-फिरती गठरी के समान है, जो हर जगह वायु को दूषित करती फिरती है। **(2017AG)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) (a) ईर्ष्यालु व्यक्ति की क्या दशा होती है?
(b) ईर्ष्या चिन्ता से भी बदतर चीज क्यों है?

(ञ) ईर्ष्या मनुष्य का चारित्रिक दोष नहीं है, प्रत्युत् इससे मनुष्य के आनन्द में भी बाधा पड़ती है। जब भी मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या का उदय होता है, सामने का सुख उसे मद्धिम-सा दिखने लगता है। पक्षियों के गीत में जादू नहीं रह जाता है और फूल तो ऐसे हो जाते हैं, मानो वे देखने के योग्य ही न हों। आप कहेंगे कि निन्दा के बाण से अपने प्रतिद्वन्द्वियों को बेधकर हँसने में एक आनन्द है और यह आनन्द ईर्ष्यालु व्यक्ति का सबसे बड़ा पुरस्कार है।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) ईर्ष्यालु व्यक्ति का सबसे बड़ा पुरस्कार क्या है?

(ट) ईर्ष्या का सम्बन्ध प्रतिद्वन्द्विता से होता है, क्योंकि भिखमंगा व्यक्ति करोड़पति से ईर्ष्या नहीं करता। यह एक ऐसी बात है, जो ईर्ष्या के पक्ष में भी पड़ सकती है, क्योंकि प्रतिद्वन्द्विता से मनुष्य का विकास होता है, किन्तु अगर आप संसारव्यापी सुयश चाहते हैं तो आप रसेल के मतानुसार, शायद नेपोलियन से स्पर्द्धा करेंगे। मगर, याद रखिए कि नेपोलियन भी सीजर से स्पर्द्धा करता था और सीजर सिकन्दर से तथा सिकन्दर हरकुलिस से। **(2017AD)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) (a) कौन किससे प्रतिद्वन्द्विता करता है?
(b) ईर्ष्या से प्रतिद्वन्द्विता का क्या सम्बन्ध है?

(ठ) तो ईर्ष्यालु लोगों से बचने का क्या उपाय है? नीत्से कहता है कि "बाजार की मक्खियों को छोड़कर एकान्त की ओर भागो। जो कुछ भी अमर तथा महान् है, उसकी रचना और निर्माण बाजार तथा सुयश से दूर रहकर किया जाता है। जो लोग नये मूल्यों का निर्माण करने वाले हैं, वे बाजारों में नहीं बसते वे शोहरत के पास भी नहीं रहते।" जहाँ बाजार की मक्खियाँ नहीं भिनकतीं, वहाँ एकान्त है। **(2016CA)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) ईर्ष्यालु लोगों से बचने का क्या उपाय है?

(ड) ईर्ष्या से बचने का उपाय मानसिक अनुशासन है। जो व्यक्ति ईर्ष्यालु स्वभाव का है, उसे फालतू बातों के बारे में सोचने की आदत छोड़ देनी चाहिए। उसे यह भी पता लगाना चाहिए कि जिस अभाव के कारण वह ईर्ष्यालु बन गया है, उसकी पूर्ति का रचनात्मक तरीका क्या है। जिस दिन उसके भीतर यह जिज्ञासा आयेगी, उसी दिन से वह ईर्ष्या करना कम कर देगा। **(2020ME)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) ईर्ष्या से बचने के लिए क्या उपाय है?

(ढ) जब एक बार मनुष्य अपना पैर कीचड़ में डाल देता है, तब फिर यह नहीं देखता कि वह कहाँ और कैसी जगह पैर रखता है। धीरे-धीरे उन बुरी बातों में अभ्यस्त होते-होते तुम्हारी घृणा कम हो जाएगी। पीछे तुम्हें उनसे चिढ़ न मालूम होगी क्योंकि तुम यह सोचने लगोगे कि चिढ़ने की बात ही क्या है? तुम्हारा विवेक कुंठित हो जाएगा और तुम्हें भले-बुरे की पहचान न रह जाएगी। अंत में होते-होते तुम भी बुराई के भक्त बन जाओगे। अत: हृदय को उज्ज्वल और निष्कलंक रखने का सबसे अच्छा उपाय यही है कि बुरी संगति की छूत से बचो।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।
(iii) लेखक ने उपर्युक्त गद्यांश में क्या संदेश दिया है?

2. रामधारीसिंह 'दिनकर' का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं पर प्रकाश डालिए। **(2016CB, CD, CG, 18HA, 19AB,AC)**

अथवा रामधारीसिंह दिनकर का जीवन-परिचय दीजिए एवं उनकी किसी एक रचना का नाम लिखिए। **(2017AA, AB, AF 20MB, MG)**

3. दिनकरजी के साहित्यिक अवदान एवं कृतियों का उल्लेख कीजिए।

4. रामधारीसिंह 'दिनकर' का जीवनवृत्त लिखकर उनके साहित्यिक योगदान का उल्लेख कीजिए।

5. लेखक ने दुःख को ईर्ष्या का अनोखा वरदान क्यों कहा है?

6. ईर्ष्या से प्रेरित मनुष्य प्रायः कैसे कामों में प्रवृत्त होता है?

7. ईर्ष्या का निन्दा से कैसा सम्बन्ध है?

8. ईर्ष्यालु मनुष्य दूसरों की निन्दा क्यों करता है?

9. मनुष्य के पतन का मुख्य कारण क्या है?

10. लेखक ने चिन्ता को चिता से भी बदतर क्यों कहा है?

11. जीवन में प्रतिद्वन्द्विता क्यों आवश्यक है?

12. प्रतिद्वन्द्विता का भाव किसके प्रति होना ठीक रहता है?

13. लेखक ने क्यों कहा है कि 'भिखमंगा करोड़पति से ईर्ष्या नहीं करता?'

14. ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के इस सूत्र का आशय स्पष्ट कीजिए कि 'तुम्हारी निन्दा वही करेगा जिसकी तुमने भलाई की है।'

15. नीत्से ने निन्दा करनेवालों की तुलना मक्खियों से क्यों की है?

16. निन्दकों से बचने का नीत्से ने क्या उपाय बताया है?

17. वाक्य-प्रयोग से निम्नांकित शब्द-युग्मों में परस्पर अन्तर स्पष्ट कीजिए—

(क) प्रतिद्वन्द्वी—प्रतिद्वन्द्विता (ख) मूर्ति—मूर्त

(ग) जिज्ञासा—जिज्ञासु (घ) चरित्र—चारित्रिक

18. निम्नलिखित शब्दों के उपसर्ग बताइए—

अभाव, उपवन, सुकर्म, उपकार, अनुशासन, अपव्यय।

➥ आन्तरिक मूल्यांकन

1. रामधारीसिंह 'दिनकर' की रचनाओं की एक सूची तैयार कीजिए।

2. ईर्ष्या से होनेवाली हानियों का एक चार्ट तैयार कीजिए।

शब्दार्थ

मृदुभाषिणी = मधुर बोलने वाली। **दाह** = जलन; कष्ट। **विभव** = ऐश्वर्य। **दंश** = दाँतों से काटना, डंक मारना। **अनायास** = बिना प्रयास, अपने आप। **ह्रास** = घटने की क्रिया, कमी होना, क्षय, अवनति। **कुण्ठित** = निस्तेज, बाधित, कुन्द किया हुआ। **प्रत्युत्** = बल्कि, वरन्। **प्रतिद्वन्द्विता** = एक वस्तु या एक लक्ष्य के लिए समान बलवालों की लड़ाई। **रसेल** = बर्ट्रेंड रसेल नामक प्रसिद्ध अंग्रेज दार्शनिक, नोबुल पुरस्कार विजेता, 1970 में दिवंगत। **स्पर्द्धा** = ईर्ष्यारहित होकर किसी कार्य या दिशा में किसी दूसरे से आगे बढ़ने की भावना, होड़। **सीजर** = प्रथम शताब्दी ई० पू० का प्रसिद्ध रोमन शासक एवं विजेता। **हरकुलिस** = प्राचीन यूनानी कथाओं में प्रसिद्ध वीर नायक। **ईश्वरचन्द्र विद्यासागर** = बंगाल में उत्पन्न 19वीं शताब्दी के प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री और समाज-सुधारक। **नीत्से** = एक यूरोपीय प्रसिद्ध दार्शनिक व लेखक। **शोहरत** = यश, प्रसिद्धि। **मानसिक अनुशासन** = मन का नियन्त्रण। **रचनात्मक** = निर्माणकारी। **जिज्ञासा** = जानने की इच्छा। **निन्दक** = निन्दा (बुराई) करने वाला। **द्वेष** = कटुता। **फिक्र** = चिन्ता। **श्रोता** = सुनने वाला। **ध्येय** = उद्देश्य। **अपव्यय** = निरर्थक व्यय। **प्रचण्ड** = अतितीव्र; घोर। **बदतर** = अधिक बुरा। **बनिस्पत** = अपेक्षाकृत। **चिन्ता-दग्ध** = चिन्ता में जलता हुआ। **मद्धिम** = हल्का; धीमा। **संसार-व्यापी** = सम्पूर्ण संसार में व्याप्त। **पक्ष** = पहलू। **समकक्ष** = समान। **समकालीन** = अपने समय के। **ऐब** = दोष। **तजुरबे** = अनुभव।

●●

6 डॉ० भगवतशरण उपाध्याय

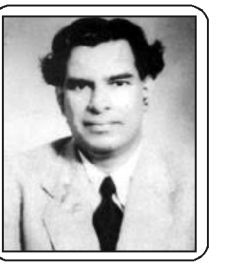

डॉ० भगवतशरण उपाध्याय का जन्म सन् 1910 ई० में बलिया जिले के उजियारीपुर गाँव में हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा यहीं पर हुई। इन्होंने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से प्राचीन इतिहास विषय में एम० ए० किया। ये संस्कृत-साहित्य तथा पुरातत्त्व के समर्थ अध्येता एवं हिन्दी-साहित्य के प्रसिद्ध उन्नायक रहे हैं। इन्होंने भारत के प्राचीन इतिहास एवं भारतीय संस्कृति का विशेष अध्ययन किया है। क्रमशः पुरातत्त्व विभाग, प्रयाग संग्रहालय एवं लखनऊ संग्रहालय के अध्यक्ष तथा पिलानी बिड़ला महाविद्यालय में प्राध्यापक पद पर कार्य किया। तत्पश्चात् इन्होंने विक्रम विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग में प्रोफेसर एवं अध्यक्ष पद पर कार्य कर अवकाश ग्रहण करने के पश्चात् देहरादून को अपना निवास-स्थान बनाया। भारत के प्रतिनिधि रूप में ये मारिशस में कार्यरत थे। उपाध्यायजी ने कई बार यूरोप, अमरीका, चीन आदि का भी भ्रमण किया, जहाँ भारतीय संस्कृति एवं साहित्य पर बहुत-से महत्त्वपूर्ण व्याख्यान दिये। सौ से भी अधिक पुस्तकें लिखकर इन्होंने हिन्दी-साहित्य को समृद्ध बनाने का स्तुत्य प्रयास किया है। इनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि प्राचीन भारत के प्रमुख अध्येता एवं व्याख्याता होते हुए भी रूढ़िवादिता एवं परम्परावादिता से सदैव ऊपर रहे। वस्तुतः अपने मौलिक एवं स्वतन्त्र विचारों के लिए ये प्रसिद्ध हैं। 12 अगस्त, 1982 ई० में इनका निधन हो गया।

लेखक-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म–**सन् 1910 ई०।
- **जन्म-स्थान–**उजियारीपुर (बलिया), उ० प्र०।
- **शिक्षा–**एम.ए. (प्राचीन इतिहास विषय में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से)।
- **मृत्यु–**12 अगस्त, 1982 ई०।
- **भाषा–**परिष्कृत खड़ीबोली।
- **शैली–**विवेचनात्मक, वर्णनात्मक और भावात्मक।
- **लेखन विधा–**आलोचना, यात्रा-साहित्य, पुरातत्त्व, संस्मरण, निबन्ध, रेखाचित्र, हिन्दी-साहित्य।
- **प्रमुख रचनाएँ–**मंदिर और भवन, भारतीय मूर्तिकला की कहानी, इतिहास साक्षी है, प्राचीन भारत का इतिहास, विश्व साहित्य की रूपरेखा, साहित्य और कला, कलकत्ता से पीकिंग, लालचीन, मैंने देखा, ठूँठा आम, खून के छींटे आदि।
- **हिन्दी साहित्य में स्थान–**इन्होंने साहित्य, संस्कृति के विषयों पर 100 से अधिक पुस्तकों की रचना की है। हिन्दी साहित्य में इनका विशिष्ट स्थान है।

उपाध्यायजी ने आलोचना, यात्रा-साहित्य, पुरातत्त्व, संस्मरण एवं रेखाचित्र आदि पर प्रचुर साहित्य का सृजन किया। इनकी रचनाओं में इनके गहन अध्ययन एवं विद्वत्ता की स्पष्ट छाप परिलक्षित होती है। गहन से गहन विषय को भी सरल भाषा में प्रस्तुत कर देना इनकी प्रधान साहित्यिक विशेषता थी। इनमें विवेचन एवं तुलना करने की विलक्षण योग्यता विद्यमान थी। अपनी इसी योग्यता के कारण इन्होंने भारतीय साहित्य, कला एवं संस्कृति की प्रमुख विशेषताओं को सम्पूर्ण विश्व के सामने स्पष्ट कर दिया।

डॉ० उपाध्याय ने शुद्ध, परिमार्जित एवं परिष्कृत खड़ीबोली भाषा का प्रयोग किया है। भाषा का लालित्य उनके गम्भीर चिन्तन और विवेचन को रोचक बनाये रखता है। भाषा में प्रवाह और बोधगम्यता की निराली छटा है। इनकी शैली तथ्यों के निरूपण

से युक्त, कल्पनामयी और सजीव है। इनकी रचनाओं में विवेचनात्मक, भावात्मक, वर्णनात्मक शैलियों के दर्शन होते हैं।

प्रमुख कृतियाँ–

पुरातत्त्व–'मंदिर और भवन', 'भारतीय मूर्तिकला की कहानी', 'भारतीय चित्रकला की कहानी', 'कालिदास का भारत' आदि।

इतिहास–'खून के छींटे', 'इतिहास साक्षी है', 'इतिहास के पन्नों पर', 'प्राचीन भारत का इतिहास', 'साम्राज्यों के उत्थान-पतन' आदि।

आलोचना–'विश्व साहित्य की रूपरेखा', 'साहित्य और कला' आदि।

यात्रा-वृत्तान्त–'कलकत्ता से पीकिंग', 'सागर की लहरों पर', 'लालचीन' आदि।

संस्मरण और रेखाचित्र–'मैंने देखा', 'ठूँठा आम' आदि अंग्रेजी में लिखी इनकी पुस्तकें विदेशों में बड़ी रुचि के साथ पढ़ी जाती हैं।

संकलित पाठ **'अजन्ता'** पुरातत्त्व सम्बन्धी लेख है, जिसमें लेखक ने अजन्ता की गुफाओं की चित्रकारी और शिल्प के इतिहास एवं सौन्दर्य का ही वर्णन नहीं किया है, बल्कि दर्शक के मन पर पड़नेवाले उनके प्रभाव को भी अपनी मनोरम शैली में साकार कर दिया है। भारतीय संस्कृति एवं साहित्य पर उपाध्याय जी द्वारा विदेशों में दिए गए व्याख्यान, हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि हैं। अपने कृत्यों के माध्यम से आपने हिन्दी साहित्याकाश में उच्च स्थान प्राप्त किया।

●●

अजन्ता

जिन्दगी को मौत के पंजों से मुक्त कर उसे अमर बनाने के लिए आदमी ने पहाड़ काटा है। किस तरह इन्सान की खूबियों की कहानी सदियों बाद आनेवाली पीढ़ियों तक पहुँचायी जाय, इसके लिए आदमी ने कितने ही उपाय सोचे और किये। उसने चट्टानों पर अपने सन्देश खोदे, ताड़ों-से ऊँचे धातुओं-से चिकने पत्थर के खम्भे खड़े किये, ताँबे और पीतल के पत्तरों पर अक्षरों के मोती बिखेरे और उसके जीवन-मरण की कहानी सदियों के उतार पर सरकती चली आयी, चली आ रही है, जो आज हमारी अमानत-विरासत बन गयी है।

इन्हीं उपायों में एक उपाय पहाड़ काटना भी रहा है। सारे प्राचीन सभ्य देशों में पहाड़ काटकर मन्दिर बनाये गये हैं और उनकी दीवारों पर एक से एक अभिराम चित्र लिखे गये हैं।

आज से कोई सवा दो हजार साल पहले से ही हमारे देश में पहाड़ काटकर मन्दिर बनाने की परिपाटी चल पड़ी थी। अजन्ता की गुफाएँ पहाड़ काटकर बनायी जानेवाली देश की सबसे प्राचीन गुफाओं में से हैं, जैसे एलोरा और एलीफैंटा की सबसे पिछले काल की। देश की गुफाओं या गुफा-मन्दिरों में सबसे विख्यात अजन्ता के हैं, जिनकी दीवारों और छतों पर लिखे चित्र दुनिया के लिए नमूने बन गये हैं। चीन के तुन-हुआँग और लंका के सिमिरिया की पहाड़ी दीवारों पर उसी के नमूने के चित्र नकल कर लिए गये थे और जब अजन्ता के चित्रों ने विदेशों को इस प्रकार अपने प्रभाव से निहाल किया, तब भला अपने देश के नगर-देहात उनके प्रभाव से कैसे निहाल न होते? वाघ और सित्तनवसल की गुफाएँ उसी अजन्ता की परम्परा में हैं, जिनकी दीवारों पर जैसे प्रेम और दया की एक दुनिया ही सिरज गयी है।

और जैसे संगसाजों ने उन गुफाओं पर रौनक बरसायी है, चितेरे जैसे रंग और रेखा में दर्द और दया की कहानी लिखते गये हैं, कलावन्त छेनी से मूरतें उभारते-कोरते गये हैं, वैसे ही अजन्ता पर कुदरत का नूर बरस पड़ा है, प्रकृति भी वहाँ थिरक उठी है। बम्बई (अब मुम्बई) के सूबे में बम्बई और हैदराबाद के बीच, विन्ध्याचल के पूरब-पश्चिम दौड़ती पर्वतमालाओं से निचौंधे पहाड़ों का एक सिलसिला उत्तर से दक्खिन चला गया है, जिसे सह्याद्रि कहते हैं। अजन्ता के गुहा मन्दिर उसी पहाड़ी जंजीर को सनाथ करते हैं।

अजन्ता गाँव से थोड़ी ही दूर पर पहाड़ों के पैरों में साँप-सी लोटती बाधुर नदी कमान-सी मुड़ गयी है। वहीं पर्वत का सिलसिला एकाएक अर्द्धचन्द्राकार हो गया है, कोई दो-सौ पचास फुट ऊँचा हरे वनों के बीच मंच पर मंच की तरह उठते पहाड़ों का यह सिलसिला हमारे पुरखों को भा गया है और उन्होंने उसे खोदकर भवनों-महलों से भर दिया। सोचिये जरा ठोस पहाड़ की चट्टानी छाती और कमजोर इन्सान का उन्होंने मेल जो किया, तो पर्वत का हिया दरकता चला गया और वहाँ एक-से-एक बरामदे, हाल और मन्दिर बनते चले गये।

पहले पहाड़ काटकर उसे खोखला कर दिया गया, फिर उसमें सुन्दर भवन बना लिए गये, जहाँ खम्भों पर उभारी मूरतें विहँस उठीं। भीतर की समूची दीवारें और छतें रगड़ कर चिकनी कर ली गयीं और तब उनकी जमीन पर चित्रों की एक दुनिया ही बसा दी गयी। पहले पलस्तर लगाकर आचार्यों ने उन पर लहराती रेखाओं में चित्रों की काया सिरज दी, फिर उनके चेले कलावन्तों ने उनमें रंग भरकर प्राण फूँक दिये। फिर तो दीवारें उमग उठीं, पहाड़ पुलकित हो उठे।

कितना जीवन बरस पड़ा है इन दीवारों पर; जैसे फसाने अजायब का भण्डार खुल पड़ा हो। कहानी से कहानी टकराती चली गयी है। बन्दरों की कहानी, हाथियों की कहानी, हिरनों की कहानी। कहानी क्रूरता और भय की, दया और त्याग की। जहाँ बेरहमी है, वहीं दया का भी समुद्र उमड़ पड़ा है। जहाँ पाप है, वहीं क्षमा का सोता फूट पड़ा है। राजा और कँगले, विलासी और भिक्षु, नर और नारी, मनुष्य और पशु सभी कलाकारों के हाथों सिरजते चले गये हैं। हैवान की हैवानी को इन्सान की इन्सानियत से कैसे जीता जा सकता है, कोई अजन्ता में जाकर देखे। बुद्ध का जीवन हजार धाराओं में होकर बहता है। जन्म से लेकर निर्वाण तक उनके जीवन की प्रधान घटनाएँ कुछ ऐसे लिख दी गयी हैं कि आँखें अटक जाती हैं, हटने का नाम नहीं लेतीं।

यह हाथ में कमल लिये बुद्ध खड़े हैं, जैसे छवि छलकी पड़ती है, उभरे नयनों की जोत पसरती जा रही है। और यह यशोधरा है, वैसे ही कमल नाल धारण किये त्रिभंग में खड़ी। और यह दृश्य है महाभिनिष्क्रमण का—यशोधरा और राहुल निद्रा

में खोये, गौतम दृढ़ निश्चय पर धड़कते हिया को सँभालते। और यह नन्द है, अपनी पत्नी सुन्दरी का भेजा, द्वार पर आये बिना भिक्षा के लौटे भाई बुद्ध को लौटाने जो आया था और जिसे भिक्षु बन जाना पड़ा था। बार-बार वह भागने को होता है, बार-बार पकड़कर संघ में लौटा लिया जाता है। उधर फिर वह यशोधरा है बालक राहुल के साथ। बुद्ध आये हैं, पर बजाय पति की तरह आने के भिखारी की तरह आये हैं और भिक्षापात्र देहली में चढ़ा देते हैं, यशोधरा क्या दे, जब उसका स्वामी भिखारी बनकर आया है? क्या न दे डाले? पर है ही क्या अब उसके पास, उसकी मुकुटमणि सिद्धार्थ के खो जाने के बाद? सोना-चाँदी, मणि-मानिक, हीरा-मोती तो उस त्यागी जगत्राता के लिए मिट्टी के मोल नहीं। पर हाँ, है कुछ उसके पास—उसका बचा एकमात्र लाल—उसका राहुल। और उसे ही वह अपने सरबस की तरह बुद्ध को दे डालती है।

और उधर वह बन्दरों का चित्र है, कितना सजीव कितना गतिमान। उधर सरोवर में जल-विहार करता वह गजराज कमल-दण्ड तोड़-तोड़कर हथिनियों को दे रहा है। वहाँ महलों में वह प्यालों के दौर चल रहे हैं, उधर वह रानी अपनी जीवन-यात्रा समाप्त कर रही है, उसका दम टूटा जा रहा है। खाने-खिलाने, बसने-बसाने, नाचने-गाने, कहने-सुनने, वन-नगर, ऊँच-नीच, धनी-गरीब के जितने नजारे हो सकते हैं, सब आदमी अजन्ता की गुफाओं की इन दीवारों पर देख सकता है।

बुद्ध के इस जन्म की घटनाएँ तो इन चित्रित कथाओं में हैं ही, उनके पिछले जन्मों की कथाओं का भी इसमें चित्रण हुआ है। पिछले जन्म की ये कथाएँ 'जातक' कहलाती हैं। उनकी संख्या 555 है और इनका संग्रह 'जातक' नाम से प्रसिद्ध है, जिनका बौद्धों में बड़ा मान है। इन्हीं जातक कथाओं में से अनेक अजन्ता के चित्रों में विस्तार के साथ लिख दी गयी हैं। इन पिछले जन्मों में बुद्ध ने गज, कपि, मृग आदि के रूप में विविध योनियों में जन्म लिया था और संसार के कल्याण के लिए दया और त्याग का आदर्श स्थापित करते वे बलिदान हो गये थे। उन स्थितियों में किस प्रकार पशुओं तक ने मानवोचित व्यवहार किया था, किस प्रकार औचित्य का पालन किया था, यह सब उन चित्रों में असाधारण खूबी से दर्शाया गया है। और उन्हीं को दर्शाते समय चितेरों ने अपनी जानकारी की गाँठ खोल दी है, जिससे नगरों और गाँवों, महलों और झोंपड़ियों, समुद्रों और पनघटों का संसार अजन्ता के उस पहाड़ी जंगल में उतर पड़ा है। और वह चित्रकारी इस खूबी से सम्पन्न हुई है कि देखते ही बनता है। जुलूस-के-जुलूस हाथी, घोड़े, दूसरे जानवर जैसे सहसा जीवित होकर अपने-अपने समझाये हुए काम जादूगर के इशारे पर सँभालने लग जाते हैं।

इन गुफाओं का निर्माण ईसा से करीब दो सौ साल पहले ही शुरू हो गया था और वे सातवीं सदी तक बनकर तैयार भी हो चुकी थीं। एक-दो गुफाओं में करीब दो हजार साल पुराने चित्र भी सुरक्षित हैं। पर अधिकतर चित्र भारतीय इतिहास के सुनहरे युग गुप्तकाल (पाँचवीं सदी) और चालुक्य काल (सातवीं सदी) के बीच बने।

अजन्ता संसार की चित्रकलाओं में अपना अद्वितीय स्थान रखता है। इतने प्राचीनकाल के इतने सजीव, इतने गतिमान, इतने बहुसंख्यक कथाप्राण चित्र कहीं नहीं बने। अजन्ता के चित्रों ने देश-विदेश सर्वत्र की चित्रकला को प्रभावित किया। उसका प्रभाव पूर्व के देशों की कला पर तो पड़ा ही, मध्य-पश्चिमी एशिया भी उसके कल्याणकर प्रभाव से वंचित न रह सका।

● **भगवतशरण उपाध्याय**

|| अभ्यास प्रश्न ||

1. निम्नलिखित गद्यांशों के नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) जिन्दगी को मौत के पंजों से मुक्त कर उसे अमर बनाने के लिए आदमी ने पहाड़ काटा है। किस तरह इंसान की खूबियों की कहानी सदियों बाद आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचायी जाय, इसके लिए आदमी ने कितने ही उपाय सोचे और किये। उसने चट्टानों पर अपने सन्देश खोदे, ताड़ों-से ऊँचे धातुओं-से चिकने पत्थर के खम्भे खड़े किए, ताँबे और पीतल के पत्तरों पर अक्षरों के मोती बिखेरे और उसके जीवन-मरण की कहानी सदियों के उतार पर सरकती चली आई, चली आ रही है, जो आज हमारी अमानत-विरासत बन गई है। **(2019AD)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) इन्सान की विशेषताओं को पीढ़ियों तक पहुँचाने के लिए आदमी ने कौन-सी युक्तियाँ सोचीं और की हैं?
***अथवा* इन्सान की खूबियों को अगली पीढ़ियों तक पहुँचाने के लिए आदमी ने कौन-कौन से उपाय किए?**

(ख) और जैसे संगसाजों ने उन गुफाओं पर रौनक बरसाई है, चितेरे जैसे रंग और रेखा में दर्द और दया की कहानी लिखते गए हैं,

कलावन्त छेनी से मूरतें उभारते-कोरते गये हैं, वैसे ही अजन्ता पर कुदरत का नूर बरस पड़ा है, प्रकृति भी वहाँ थिरक उठी है। बम्बई (अब मुम्बई) के सूबे में बम्बई और हैदराबाद के बीच, विन्ध्याचल के पूरब-पश्चिम दौड़ती पर्वतमालाओं से निचौंधे पहाड़ों का एक सिलसिला उत्तर से दक्खिन चला गया है, जिसे सह्याद्रि कहते हैं। अजन्ता के गुहा मन्दिर उसी पहाड़ी जंजीर को सनाथ करते हैं।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) अजन्ता की मूर्तिकला की कौन-सी विशेषताएँ इस गद्यांश में बतायी गयी हैं?

(ग) पहले पहाड़ काटकर उसे खोखला कर दिया गया, फिर उसमें सुन्दर भवन बना लिये गये, जहाँ खंभों पर उभारी मूरतें विहँस उठीं। भीतर की समूची दीवारें और छतें रगड़कर चिकनी कर ली गईं और तब उनकी जमीन पर चित्रों की एक दुनिया ही बसा दी गई। पहले पलस्तर लगाकर आचार्यों ने उन पर लहराती रेखाओं में चित्रों की काया सिरज दी, फिर उनके चेले कलावन्तों ने उनमें रंग भरकर प्राण फूँक दिये। फिर तो दीवारें उमग उठीं, पहाड़ पुलकित हो उठे। **(2019AC)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।
(iii) पहाड़ों को किस प्रकार जीवन्त बनाया गया? गद्यांश के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

(घ) कितना जीवन बरस पड़ा है इन दीवारों पर, जैसे फसाने अजायब का भण्डार खुल पड़ा हो। कहानी से कहानी टकराती चली गई है। बन्दरों की कहानी, हाथियों की कहानी, हिरनों की कहानी। कहानी क्रूरता और भय की, दया और त्याग की। जहाँ बेरहमी है वहीं दया का भी समुद्र उमड़ पड़ा है। जहाँ पाप है, वहीं क्षमा का सोता फूट पड़ा है। राजा और कँगले, विलासी और भिक्षु, नर और नारी, मनुष्य और पशु सभी कलाकारों के हाथों सिरजते चले गए हैं। हैवान की हैवानी को इन्सान की इन्सानियत से कैसे जीता जा सकता है, कोई अजन्ता में जाकर देखे। **(2017AE)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) दीवारों पर बने चित्र किन-किन से सम्बन्धित हैं?

(ङ) और उधर वह बन्दरों का चित्र है, कितना सजीव कितना गतिमान। उधर सरोवर में जल-विहार करता वह गजराज कमल-दण्ड तोड़-तोड़कर हथिनियों को दे रहा है। वहाँ महलों में वह प्यालों के दौर चल रहे हैं, उधर वह रानी अपनी जीवन-यात्रा समाप्त कर रही है, उसका दम टूटा जा रहा है। खाने-खिलाने, बसने-बसाने, नाचने-गाने, कहने-सुनने, वन-नगर, ऊँच-नीच, धनी-गरीब के जितने नजारे हो सकते हैं, सब आदमी अजन्ता की गुफाओं की इन दीवारों पर देख सकता है। **(2017CF)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) आदमी अजन्ता की गुफाओं की दीवारों पर क्या देख सकता है?

(च) अजन्ता संसार की चित्रकलाओं में अपना अद्वितीय स्थान रखता है। इतने प्राचीनकाल के इतने सजीव, इतने गतिमान, इतने बहुसंख्यक कथाप्राण चित्र कहीं नहीं बने। अजन्ता के चित्रों ने देश-विदेश सर्वत्र की चित्रकला को प्रभावित किया। उसका प्रभाव पूर्व के देशों की कला पर तो पड़ा ही, मध्य-पश्चिमी एशिया भी उसके कल्याणकर प्रभाव से वंचित न रह सका।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।
(iii) अजन्ता की चित्रकला का बाहर के देशों पर क्या प्रभाव पड़ा?

(छ) जहाँ बेरहमी है वहीं दया का समुद्र भी उमड़ पड़ा है, जहाँ पाप है वहीं क्षमा का सोता फूट पड़ा है। राजा और कँगले, विलासी और भिक्षु, नर और नारी, मनुष्य और पशु सभी कलाकार के हाथों सिरजते चले गये हैं। हैवान की हैवानी को इन्सान की

इन्सानियत से कैसे जीता जा सकता है, कोई अजन्ता में जाकर देखे। बुद्ध का जीवन हजार धाराओं में होकर बहता है। जन्म से लेकर निर्वाण तक उनके जीवन की प्रधान घटनायें कुछ ऐसे लिख दी गयी हैं कि आँखें अटक जाती हैं, हटने का नाम नहीं लेतीं। **(2020MB, MG)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

(iii) कलाकारों ने किसके जीवन का चित्रांकन किया है?

2. डॉ० भगवतशरण उपाध्याय का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं पर प्रकाश डालिए।**(2016CB, CC, CD, 17AC, AD,19AE, AF, AG, 20MC, MD, ME, MA)**

अथवा भगवतशरण उपाध्याय का जीवन-परिचय दीजिए एवं उनकी एक रचना का नाम लिखिए।

3. डॉ० भगवतशरण उपाध्याय की कृतियाँ एवं भाषा-शैली का उल्लेख कीजिए।

4. अजन्ता की गुफाओं में बने भित्ति-चित्रों का इतिहास कितना पुराना है?

5. अजन्ता की गुफाओं की भौगोलिक स्थिति के बारे में लेखक ने क्या कहा है?

6. अजन्ता की गुफाओं का निर्माण किस तरह किया गया होगा?

7. गुफाओं की दीवारों पर किस-किसके चित्र अंकित हैं?

8. गुफाओं की दीवारों पर अंकित महात्मा बुद्ध के चित्रों की विशेषताएँ बताइए।

9. यशोधरा और राहुल किस मुद्रा में अंकित हैं?

10. गजराज किस मुद्रा में चित्रित है?

11. 'जातक' किसे कहते हैं?

12. अपने पूर्व जन्मों में महात्मा बुद्ध का चित्रण किन रूपों में हुआ है? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

13. 'अजन्ता' पाठ में प्रयुक्त तद्भव और विदेशी शब्दों की अलग-अलग दो सूचियाँ बनाइए।

14. अजन्ता पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

15. अभि, अनु, अप, सह, परि उपसर्ग लगाकर दो-दो शब्द बनाइए।

16. ता, वा, आई, त्व प्रत्ययों का प्रयोग करके नये शब्द बनाइए।

➥ आन्तरिक मूल्यांकन

1. अजन्ता के महत्त्वपूर्ण चित्रों एवं घटनाओं को दर्शाते हुए एक चार्ट तैयार कीजिए।
2. महात्मा बुद्ध के समान आप कुछ अन्य महापुरुषों के विषय में जानते होंगे। उनकी एक सूची तैयार कीजिए।

शब्दार्थ

सदियों = सैकड़ों वर्ष। **अमानत** = थाती, सुरक्षित रखने के लिए दी गयी वस्तु, धरोहर। **विरासत** = पूर्वजों से प्राप्त सम्पत्ति या गुण, उत्तराधिकार। **अभिराम** = सुन्दर, रमणीय। **एलोरा** = महाराष्ट्र के औरंगाबाद स्टेशन से 24 किमी० उत्तर-पश्चिम में स्थित प्रसिद्ध गुफा। अजन्ता चित्रप्रधान है, जबकि एलोरा मूर्तिप्रधान है। **सिरजना** = रचना, सृष्टि करना, बनाना। **सह्याद्रि** = महाराष्ट्र में स्थित एक पर्वतमाला, जो पश्चिमी घाट का उत्तरी भाग है। **फसाने-अजायब** = आश्चर्यजनक कहानियाँ। **निर्वाण** = परमगति। **महाभिनिष्क्रमण** = संसार से वैराग्य होने पर शान्ति की खोज, जैसे महान् उद्देश्य को लेकर गौतम बुद्ध अपने परिवार और प्रासाद को त्यागकर निष्क्रमण कर गये थे; अतः वह 'महाभिनिष्क्रमण' कहलाया। **मानवोचित** = जो मानव के लिए उचित हो, मनुष्य जैसा व्यवहार, आचरण आदि। **संगसाजो** = पत्थर के कलाकारों। **कलावन्त** = कलाकार। **कुदरत** = प्रकृति। **नूर** = आभा; चमक। **निचौंधे** = नीचे का। **गुहा** = गुफा। **रौनक** = सुंदरता। **चितेरे** = चित्रकार। **कोरते** = तराशते। **सूबे** = प्रान्त। **सिलसिला** = क्रम। **अर्द्धचन्द्राकार** = आधे चन्द्रमा के आकार का। **हिया दरकना** = हृदय फटना। **जगत्राता** = संसार की रक्षा करने वाला। **नजारे** = दृश्य। **खूबी** = विशेषता।

●●

7 जयप्रकाश भारती

लेखक-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म-**2 जनवरी, 1936 ई0।
- **जन्म-स्थान-**मेरठ (उ0प्र0)।
- **पिता-**रघुनाथ सहाय।
- **मृत्यु-**5 फरवरी, 2005 ई0।
- **शिक्षा-**बी.एस-सी.।
- **संपादन-**साप्ताहिक हिन्दुस्तान, नन्दन (पत्रिका)।
- **लेखन-विधा-**पत्रिका एवं पुस्तक तथा बाल साहित्य।
- **भाषा-**सरल एवं सहज।
- **शैली-**वर्णनात्मक, चित्रात्मक, उद्धरण, रेखाचित्र, भावात्मक।
- **प्रमुख रचनाएँ-**हमारे गौरव के प्रतीक, आदिम युग से अणु युग तक, सरदार भगत सिंह, लोकमान्य तिलक, बर्फ की गुड़िया, दुनिया रंग-बिरंगी।
- **साहित्य में स्थान-**भारतीजी ने हिन्दी साहित्य जगत् में बाल-साहित्य व वैज्ञानिक लेखों के क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण कार्य किया।

बाल-साहित्य के सफलतम साहित्यकार जयप्रकाश भारती का जन्म 2 जनवरी, 1936 ई0 में उत्तर प्रदेश के मेरठ नगर में हुआ था। इनके पिता श्री रघुनाथ सहाय, एडवोकेट मेरठ के पुराने कांग्रेसी और समाजसेवी रहे। भारती ने मेरठ में ही बी0 एस-सी0 तक अध्ययन किया। इन्होंने छात्र जीवन में ही अनेक समाजसेवी संस्थाओं में प्रमुख रूप से भाग लेना आरम्भ कर दिया था। मेरठ में साक्षरता प्रसार के कार्य में इनका उल्लेखनीय योगदान रहा तथा वर्षों तक इन्होंने निःशुल्क प्रौढ़ रात्रि-पाठशाला का संचालन किया। इन्होंने 'सम्पादन कला विशारद' करके 'दैनिक प्रभात' (मेरठ) तथा 'नवभारत टाइम्स' (दिल्ली) में पत्रकारिता का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त किया। साक्षरता निकेतन (लखनऊ) में नवसाक्षर साहित्य के लेखन का इन्होंने विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किया। हिन्दी के पत्रकारिता जगत् और किशोरोपयोगी वैज्ञानिक साहित्य के क्षेत्र को इनसे बहुत आशाएँ थीं। 5 फरवरी, 2005 ई0 को इस साहित्यकार का निधन हो गया।

इनकी अनेक पुस्तकें यूनेस्को एवं भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत हुई हैं। **'हिमालय की पुकार', 'अनन्तआकाश : अथाह सागर'** (यूनेस्को द्वारा पुरस्कृत), **'विज्ञान की विभूतियाँ', 'देश हमारा देश', 'चलो चाँद पर चलें'** (भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत)। अन्य प्रकाशित पुस्तकें हैं— **'सरदार भगत सिंह', 'हमारे गौरव के प्रतीक', 'अस्त्र-शस्त्र आदिम युग से अणु युग तक', 'उनका बचपन यूँ बीता', 'ऐसे थे हमारे बापू', 'लोकमान्य तिलक', 'बर्फ की गुड़िया', 'संयुक्त राष्ट्र संघ', 'भारत का संविधान', 'दुनिया रंग-बिरंगी'** आदि।

एक सफल पत्रकार तथा सशक्त लेखक के रूप में हिन्दी साहित्य को समृद्ध करने की दृष्टि से भारतीजी का उल्लेखनीय योगदान रहा। इन्होंने नैतिक, सामाजिक एवं वैज्ञानिक विषयों पर लेखनी चलाकर बाल-साहित्य को अत्यधिक समृद्ध बना दिया है। ये लगभग सौ पुस्तकों का सम्पादन भी कर चुके हैं, जिनमें विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं—**'भारत की प्रतिनिधि लोककथाएँ'** तथा **'किरण माला'** (3 भाग)। अनेक वर्षों तक ये 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' में सह-सम्पादक रहे। इन्होंने सुप्रसिद्ध बाल पत्रिका 'नंदन' (हिन्दुस्तान टाइम्स द्वारा संचालित, दिल्ली) का सम्पादन भी किया है। इनके लेख, कहानियाँ, रिपोर्ताज सभी प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते हैं। रेडियो पर भी इनकी वार्त्ताओं तथा रूपकों का प्रसारण हुआ है।

भारतीजी की भाषा सरल और शैली रोचक है। विज्ञान की जानकारी को साधारण जनता और किशोर मानस तक पहुँचाने के

लिए ये वर्णन को रोचक और नाटकीय बनाते हैं। आवश्यकता के अनुसार विज्ञान की पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग भी इनके लेखों में होता है, फिर भी जटिलता नहीं आने पाती। इनकी शैली में वर्णनात्मकता और चित्रात्मकता का मेल बना रहता है। भारतीजी वैज्ञानिक प्रसंगों का यथावश्यक विवरण भी अपने लेखों में प्रस्तुत करते हैं। पर नीरसता नहीं आने देते। यथावश्यक कवित्व का पुट देकर ये अपने निबन्धों को सरस बनाते हैं, साथ ही विज्ञान की यथार्थता की रक्षा भी करते हैं। वैज्ञानिक विषयों को हिन्दी में ढालने के लिए इन्होंने एक मार्ग दिखलाया है।

प्रस्तुत निबन्ध **'पानी में चंदा और चाँद पर आदमी'** में विचार-सामग्री, विवरण और इतिहास के साथ एक रोमांचक कथा का आनन्द प्राप्त होता है। लेखक ने पृथ्वी और चन्द्रमा की दूरी, चन्द्रयान और उसको ले जानेवाले अन्तरिक्ष-यान तथा चन्द्रतल के वातावरण का सजीव परिचय प्रस्तुत किया है तथा अन्तरिक्ष-यात्रा का संक्षिप्त इतिहास भी प्रस्तुत किया है। चन्द्रमा के विषय में प्रचलित कवि-कल्पना और लोक-विश्वासों के साथ वैज्ञानिक सत्य का मिलान करने पर कितना अन्तर दिखायी पड़ता है, यह तथ्य इस निबन्ध से स्पष्ट हो जाता है। भारतीजी ने बाल-साहित्य, वैज्ञानिक निबन्ध और पत्रकारिता से विशेष प्रसिद्धि प्राप्त की। वैज्ञानिक विषयों को भारतीजी ने हिन्दी में प्रस्तुत किया तथा उसे सरल, रोचक और चित्रात्मक बनाया। इसके साथ ही इन्होंने लेख, कहानियाँ एवं रिपोर्ताज आदि साहित्यिक क्षेत्रों में भी अपना योगदान दिया।

●●

पानी में चंदा और चाँद पर आदमी

दुनिया के सभी भागों में स्त्री-पुरुष और बच्चे रेडियो से कान सटाये बैठे थे, जिनके पास टेलीविजन थे, वे उसके पर्दे पर आँखें गड़ाये थे। मानवता के सम्पूर्ण इतिहास की सर्वाधिक रोमांचक घटना के एक-एक क्षण के वे भागीदार बन रहे थे—उत्सुकता और कुतूहल के कारण अपने अस्तित्व से ही बिल्कुल बेखबर हो गये थे। युग-युग से किस देश और जाति ने चन्द्रमा पर पहुँचने के सपने नहीं सँजोये—आज इस धरा के ही दो मानव उन सपनों को सच कर दिखाने के लिए कृत-संकल्प थे।

सोमवार 21 जुलाई, 1969 को बहुत सबेरे ईगल नामक चन्द्रयान नील आर्मस्ट्रांग और एडविन एल्ड्रिन को लेकर चन्द्रतल पर उतर गया। चन्द्रयान धूल उड़ाता हुआ चन्द्रमा के जलविहीन 'शान्ति सागर' में उतरा। भारतीय समय के अनुसार एक बजकर, सैंतालीस मिनट पर किसी अन्य ग्रह पर मानव पहली बार पहुँचा। असीम अन्तरिक्ष को चीरते हुए पृथ्वी से चार लाख किलोमीटर दूर चन्द्रमा पर पहुँचने में मानव को 102 घण्टे, 45 मिनट और 42 सेकण्ड का समय लगा।

अपोलो-11 को केप केनेडी से बुधवार 16 जुलाई, 1969 को छोड़ा गया था। इसमें तीन यात्री थे—कमाण्डर नील आर्मस्ट्रांग, माइकल कालिन्स और एडविन एल्ड्रिन। चन्द्रमा की कक्षा में चन्द्रयान मूल यान कोलम्बिया से अलग हो गया और फिर चन्द्रतल पर उतर गया, उस समय माइकल कालिन्स मूल यान में 96 किलोमीटर की ऊँचाई पर निरन्तर चन्द्रमा की परिक्रमा कर रहे थे।

नील आर्मस्ट्रांग ने चन्द्रतल से पृथ्वी का वर्णन करते हुए कहा कि यह बहुत बड़ी चमकीली और सुन्दर (बिग ब्राइट एण्ड ब्यूटीफुल) दिखायी दे रही है। एल्ड्रिन ने भाव-विभोर होकर कहा—सुन्दर दृश्य है, सब कुछ सुन्दर है। उसने कहा कि जहाँ हम उतरे हैं, उससे कुछ ही दूरी पर हमने बैंगनी रंग की चट्टान देखी है। चन्द्रमा की मिट्टी और चट्टानें सूर्य की रोशनी में चमक रही हैं। यही एक भव्य एकान्त स्थान है।

चन्द्रयान ठीक स्थिति में है, यह निरीक्षण करके, कुछ खा-पीकर और सुस्ता लेने के बाद नील आर्मस्ट्रांग चन्द्रयान से बाहर निकले। चन्द्रयान की सीढ़ियों से धीरे-धीरे वह नीचे उतरे। उन्होंने अपना बायाँ पाँव चन्द्रतल पर रखा, जबकि दायाँ पाँव चन्द्रयान पर ही रहा। इस बीच आर्मस्ट्रांग दोनों हाथ से चन्द्रयान को अच्छी तरह पकड़े रहे। उन्हें यह तय कर लेना था कि वैज्ञानिक चन्द्रतल को जैसा समझते रहे हैं, वह उससे एकदम भिन्न तो नहीं है। आश्वस्त होने के बाद, वह यान के आस-पास ही कुछ कदम चले। चन्द्रतल पर पाँव रखते हुए उन्होंने कहा—यद्यपि यह मानव का छोटा-सा कदम है, लेकिन मानवता के लिए बहुत ही ऊँची छलाँग है।

अभी तक एल्ड्रिन भले ही भीतर बैठा हो, लेकिन वह निष्क्रिय नहीं था। उसने मूवी कैमरे से आर्मस्ट्रांग के चित्र लेने शुरू कर दिये थे। बीस मिनट बाद ही एडविन एल्ड्रिन भी चन्द्रयान से बाहर निकले। उन्होंने भी चन्द्रतल पर चलकर देखा। तब तक आर्मस्ट्रांग चन्द्रधूल का एक तात्कालिक नमूना जेब में रख चुके थे। अब उन्होंने टेलीविजन कैमरे को त्रिपाद पर जमा दिया।

अरबों डालर खर्च करके मानव चन्द्रतल पर पहुँचा था, उसे अपने सीमित समय में एक-एक क्षण का उपयोग करना था। दोनों चन्द्र-विजेताओं को चन्द्रमा की चट्टानों तथा मिट्टी के नमूने लेने थे। कई तरह के उपकरण भी वहाँ स्थापित करने थे, जो बाद में भी पृथ्वी पर वैज्ञानिक जानकारी भेजते रह सकें।

इन चन्द्र-विजेताओं ने चन्द्रतल पर भूकम्पमापी यंत्र स्थापित किया और लेसर परावर्तक रखा। इन्होंने एक धातु-फलक, जिन पर तीनों यात्रियों और अमेरिकी राष्ट्रपति निक्सन के हस्ताक्षर थे, वहाँ रखा। धातु-फलक पर खुदे शब्दों को आर्मस्ट्रांग ने जोर से पढ़ा—"जुलाई, 1969 में पृथ्वी ग्रह के मानव चन्द्रमा के इस स्थान पर उतरे। हम यहाँ सारी मानव जाति के लिए शान्ति की कामना लेकर आये।"

दोनों चन्द्र-यात्रियों ने अमेरिकी ध्वज चन्द्रतल पर फहरा दिया। वायु न होने के कारण इस ध्वज को इस तरह बनाया गया था कि स्प्रिंग की सहायता से यह फैला हुआ ही रहे। विभिन्न राष्ट्रध्वजों के सन्देशों की माइक्रो फिल्म भी उन्होंने चन्द्रतल पर छोड़ दी। दो रूसी अन्तरिक्ष यात्रियों (यूरी गागरिन और एम० के० मोरोव) को मरणोपरन्त दिये पदक और तीन अमेरिकी

अन्तरिक्ष यात्रियों (ग्रिसम, ह्वाट और शैफी) को दिये गये पदकों की अनुकृतियाँ वहाँ रखीं।

अपने व्यस्त कार्यक्रम को पूरा करने में चन्द्र-यात्रियों को थकान हो जानी स्वाभाविक थी, लेकिन फिर भी वे बड़े प्रसन्न थे। आरम्भ में वे बड़ी सावधानी के साथ एक-एक कदम रख रहे थे लेकिन बाद में वे कंगारुओं की तरह उछल-उछलकर चलते देखे गये।

मानव को चन्द्रमा पर उतारने का यह सर्वप्रथम प्रयास होते हुए भी असाधारण रूप से सफल रहा, यद्यपि हर क्षण, हर पग पर खतरे थे। चन्द्रतल पर मानव के पाँव के निशान उसके द्वारा वैज्ञानिक तथा तकनीकी क्षेत्र में की गयी असाधारण प्रगति के प्रतीक हैं। जिस क्षण डगमग-डगमग करते मानव के पग उस धूलि-धूसरित अनछुई सतह पर पड़े तो मानो वह हजारों-लाखों साल से पालित-पोषित सैकड़ों अन्धविश्वासों तथा कपोल-कल्पनाओं पर पद-प्रहार ही हुआ। कवियों की कल्पना के सलोने चाँद को वैज्ञानिकों ने बदसूरत और जीवनहीन करार दे दिया—भला अब चन्द्रमुखी कहलाना किसे रुचिकर लगेगा।

हमारे देश में ही नहीं, संसार की प्रत्येक जाति ने अपनी भाषा में चन्द्रमा के बारे में कहानियाँ गढ़ी हैं और कवियों ने कविताएँ रची हैं। किसी ने उसे रजनीपति माना तो किसी ने उसे रात्रि की देवी कहकर पुकारा। किसी विरहिणी ने उसे अपना दूत बनाया तो किसी ने उसके पीलेपन से क्षुब्ध होकर उसे बूढ़ा और बीमार ही समझ लिया। बालक श्रीराम चन्द्रमा को खिलौना समझकर उसके लिए मचलते हैं तो सूर के श्रीकृष्ण भी उसके लिए हठ करते हैं। बालक को शान्त करने के लिए एक ही उपाय था– चन्द्रमा की छवि को पानी में दिखा देना। लेकिन मानव की प्रगति का चक्र कितना घूम गया है। इस लम्बी विकास-यात्रा को श्रीमती महादेवी वर्मा ने एक ही वाक्य में बाँध दिया है—"पहले पानी में चंदा को उतारा जाता था और आज चाँद पर मानव पहुँच गया है।"

मानव मन सदा से ही अज्ञात के रहस्यों को खोलने और जानने-समझने को उत्सुक रहा है। जहाँ तक वह नहीं पहुँच सकता था, वहाँ वह कल्पना के पंखों पर उड़कर पहुँचा। उसकी अनगढ़ और अविश्वसनीय कथाएँ उसे सत्य के निकट पहुँचाने में प्रेरणा-शक्ति का काम करती रहीं।

अन्तरिक्ष युग का सूत्रपात 4 अक्टूबर, 1957 को हुआ था, जब सोवियत रूस ने अपना पहला स्पुतनिक छोड़ा। प्रथम अन्तरिक्ष यात्री बनने का गौरव यूरी गागरिन को प्राप्त हुआ। अन्तरिक्ष युग के आरम्भ के ठीक 11 वर्ष 9 मास 17 दिन बाद चन्द्रतल पर मानव उतर गया।

दिसम्बर, 1968 में पहली बार अपोलो-8 के तीनों अंतरिक्ष-यात्री चन्द्रमा के पड़ोस तक पहुँचे थे। बीच की अवधि में रूस और अमेरिका दोनों ही देशों ने अनेक अन्तरिक्ष यान छोड़े। इनमें कुछ स-मानव यान थे और कुछ मानव-रहित। इसे मानव का साहस कहें या दुस्साहस कि उसने अन्तरिक्ष में पहुँचकर यान से बाहर निकल अनन्त अन्तरिक्ष में विचरण भी शुरू कर दिया। अन्तरिक्ष में परिक्रमा करते दो यानों को जोड़ने और एक यान से दूसरे यान में यात्रियों के चले जाने के चमत्कारी करतब भी किये गये। अपोलो-11 द्वारा चन्द्रविजय से पूर्व मानो—अपोलो-10 के द्वारा इस नाटक का पूर्वाभिनय ही किया गया था। इसके तीन यात्री अन्तरिक्ष यान को चन्द्रमा की कक्षा में ले गये थे। एक यात्री मूल यान को कक्षा में घुमाता रहा था और अन्य दो यात्री चन्द्रयान में बैठकर उसे चन्द्रमा से केवल 9 मील की दूरी तक ले गये थे। इन्होंने चन्द्र-विजेताओं के उतरने के सम्भावित स्थल का अध्ययन किया और अनेक चित्र खींचे थे। चन्द्रयान को मूल यान से जोड़ा और फिर सकुशल पृथ्वी पर लौट आये।

मानव को चन्द्रतल तक ले जाने और लौटा लाने वाले यान के बारे में भला कौन नहीं जानना चाहेगा। अपोलो-यान-सैटर्न-5 राकेट से प्रक्षेपित किया जाता है। वह विश्व का सबसे शक्तिशाली वाहन है। अन्तरिक्ष यान के तीन भाग होते हैं या इन्हें तीन माड्यूल कह सकते हैं।

कमाण्ड माड्यूल का निर्माण इस दृष्टि से किया जाता है कि वापसी के समय पृथ्वी के वायुमण्डल में प्रवेश करते समय तीव्र ताप और दबावों को सहन कर सके। नियन्त्रण कक्ष, शयनागार, भोजनकक्ष और प्रयोगशाला—इन सबका मिला-जुला रूप ही यह माड्यूल होता है। प्रक्षेपण के समय यदि कोई दुर्घटना हो जाये तो यात्री अपने बचाव के लिए इसे शेष यान से पृथक् कर सकते हैं। पुनः प्रवेश के लिए बने कमाण्ड कैप्सूल का वजन 5500 किलोग्राम था। इसमें लगभग साढ़े पाँच घन मीटर खाली स्थान था, जहाँ कि तीनों यात्री अपने सामान्य कार्य सम्पन्न कर सकें। इस स्थान को हम औसत दर्जे की कार जितना मान सकते हैं। कैप्सूल जब तैयार होता है, उस समय इसमें पाँच विद्युत बैटरियाँ होती हैं और 12 राकेट इन्जन जुड़े होते हैं। तीन आदमियों के लिए चौदह दिन की खाद्य सामग्री और पानी के भण्डार एवं मल के निष्कासन की व्यवस्था रहती है। इसमें पैराशूट भी रहते हैं। यात्रियों को बिना चोट पहुँचाये, यह कड़ी-से-कड़ी जमीन पर उतर सकता है।

अन्तरिक्ष यान का दूसरा भाग होता है सर्विस माड्यूल—यह औसतन आकार के ट्रक जितना होता है। इसमें दस लाख किलोमीटर की यात्रा करने के लिए पर्याप्त ईंधन था और 14 दिन तक तीन यात्रियों के साँस लेने लायक प्राण-वायु की व्यवस्था थी। यान को चन्द्र कक्षा में स्थापित करने के लिए उसकी गति कम करनी पड़ती है और सर्विस माड्यूल के शक्तिशाली राकेट मोटर दागकर ही ऐसा किया जाता है।

चन्द्रयान यानी अपोलो-11 का ईगल अन्तरिक्ष यान का एक भाग होते हुए भी अपने में पूर्ण था। इसमें दो खण्ड थे—अवरोह भाग और आरोह भाग। अवरोह भाग में 8200 किलो प्राणोदक था, जिससे 4500 किलो प्रघात के इन्जन को चलाया जा सके। चालकों के साँस लेने के लिए आक्सीजन गैस, पीने का पानी, चन्द्रतल पर यान को ठण्डा रखने की व्यवस्था की गयी थी। चन्द्रयान की सभी टाँगें समतल पर टिकनी आवश्यक नहीं, यह आड़ा-तिरछा भी खड़ा हो सकता है। अवरोही भाग में चार रेडियो रिसीवर, ट्रांसमीटर, बैटरियाँ, मूल यान से और पृथ्वी से संचार-व्यवस्था कायम रखने के लिए सात एरियल लगे थे। ईगल के दोनों भाग किसी भी समय अलग किये जा सकते थे। चन्द्रतल से वापसी के समय चन्द्रयान का नीचे का भाग प्रक्षेपण यन्त्र का काम देता है और उसे चन्द्रतल पर ही छोड़ दिया गया।

नील आर्मस्ट्रांग और एडविन एल्ड्रिन ने चन्द्रतल पर 21 घंटे, 36 मिनट बिताये। चन्द्रतल पर इन दो यात्रियों ने पाँवों के ऐसे निशान छोड़े जैसे कि किसी हल चलाये खेत में पड़ जाते हैं। उन्होंने लाखों डालर का सामान भी वहीं छोड़ दिया।

दोनों चन्द्र-विजेताओं ने ऊपरी भाग में उड़ान भरकर चन्द्रकक्ष में परिक्रमा करते हुए मूल यान से अपने यान को जोड़ा। फिर वे दोनों यात्री अपने साथी माइकल कालिन्स से आ मिले। अब चन्द्रयान को अलग कर दिया गया और उसके कक्ष में ही छोड़ दिया गया। इंजन दागकर यात्री वापसी के लिए पृथ्वी के मार्ग पर बढ़ चले। ये यात्री प्रशान्त महासागर में उतरे।

इन यात्रियों को सीधे चन्द्र प्रयोगशाला में ले जाया गया। कई सप्ताह किसी से मिलने-जुलने नहीं दिया गया। उनके अनुभव रिकार्ड किये गये। वैज्ञानिकों को यह भी जाँच करनी थी कि ये यात्री ऐसे कीटाणु तो अपने साथ नहीं ले आये, जो मानव जाति के लिए घातक हों। उन यात्रियों के द्वारा लायी गयी धूल और चन्द्र-चट्टानों के नमूनों को अनुसंधान और प्रयोग करने के लिए विभिन्न देशों के विशेषज्ञों को सौंप दिया गया।

अपोलो-11 की सफलता के पश्चात् अमेरिका ने अपोलो-12 में भी तीन यात्रियों को चन्द्रतल पर खोज करने के लिए भेजा। इसके बाद अपोलो-13 की यात्रा दुर्घटनावश बीच में ही स्थगित करनी पड़ी।

अभी चन्द्रमा के लिए अनेक उड़ानें होंगी। दूसरे ग्रहों के लिए मानवरहित यान छोड़े जा रहे हैं। अन्तरिक्ष में परिक्रमा करने वाला स्टेशन स्थापित करने की दिशा में तेजी से प्रयत्न किये जा रहे हैं। ऐसा स्टेशन बन जाने पर ब्रह्माण्ड के रहस्यों की पर्तें खोलने में काफी सहायता मिलेगी।

यह पृथ्वी मानव के लिए पालने के समान है। वह हमेशा-हमेशा के लिए इसकी परिधि में बँधा हुआ नहीं रह सकता। अज्ञात की खोज में वह कहाँ तक पहुँचेगा, कौन कह सकता है?

● **जयप्रकाश भारती**

|| अभ्यास प्रश्न ||

1. निम्नलिखित गद्यांशों के नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) मानव को चन्द्रमा पर उतारने का यह सर्वप्रथम प्रयास होते हुए भी असाधारण रूप से सफल रहा। यद्यपि हर क्षण, हर पग पर खतरे थे। चन्द्रतल पर मानव के पाँव के निशान, उसके द्वारा वैज्ञानिक तथा तकनीकी क्षेत्र में की गई असाधारण प्रगति के प्रतीक हैं। जिस क्षण डगमग-डगमग करते मानव के पग उस धूलि-धूसरित अनछुई सतह पर पड़े तो मानो वह हजारों-लाखों साल से पालित-पोषित सैकड़ों अन्धविश्वासों और कपोल-कल्पनाओं पर पद-प्रहार ही हुआ। कवियों की कल्पना के सलोने चाँद को वैज्ञानिकों ने बदसूरत और जीवनहीन करार दे दिया–भला अब चन्द्रमुखी कहलाना किसे रुचिकर लगेगा।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) मानव के असाधारण प्रगति के प्रतीक क्या हैं?

(ख) हमारे देश में ही नहीं, संसार की प्रत्येक जाति ने अपनी भाषा में चन्द्रमा के बारे में कहानियाँ गढ़ी हैं और कवियों ने कविताएँ रची हैं। किसी ने उसे रजनीपति माना तो किसी ने उसे रात्रि की देवी कहकर पुकारा। किसी विरहिणी ने उसे अपना दूत बनाया तो किसी ने उसके पीलेपन से क्षुब्ध होकर उसे बूढ़ा और बीमार ही समझ लिया। बालक श्रीराम चन्द्रमा को खिलौना समझकर उसके लिए मचलते हैं तो सूर के श्रीकृष्ण भी उसके लिए हठ करते हैं। बालक को शान्त करने के लिए एक ही उपाय था—चन्द्रमा की छवि को पानी में दिखा देना। लेकिन मानव की प्रगति का चक्र कितना घूम गया है। इस लम्बी विकास यात्रा को श्रीमती महादेवी वर्मा ने एक ही वाक्य में बाँध दिया है-''पहले पानी में चन्दा को उतारा जाता था और आज चाँद पर मानव पहुँच गया है।'' **(2017AB)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) मचलते और हठ करते बालक को शान्त करने के लिए क्या उपाय था?

***अथवा* बालक को शान्त करने के लिए क्या उपाय था?**

(ग) मानव-मन सदा से ही अज्ञात के रहस्यों को खोलने और जानने-समझने को उत्सुक रहा है। जहाँ तक वह नहीं पहुँच सकता था, वहाँ वह कल्पना के पंखों पर उड़कर पहुँचा। उसकी अनगढ़ और अविश्वसनीय कथाएँ उसे सत्य के निकट पहुँचाने में प्रेरणा-शक्ति का काम करती रहीं।

अन्तरिक्ष युग का सूत्रपात 4 अक्टूबर, 1957 को हुआ था, जब सोवियत रूस ने अपना पहला स्पुतनिक छोड़ा। प्रथम अंतरिक्ष यात्री बनने का गौरव यूरी गागरिन को प्राप्त हुआ। अन्तरिक्ष युग के आरम्भ के ठीक 11 वर्ष 9 मास 17 दिन बाद चन्द्रतल पर मानव उतर गया। **(2016CC, CG, 19AA)**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) मनुष्य को सत्य के निकट पहुँचाने में कौन शक्ति काम करती रही है?

अथवा **अन्तरिक्ष युग का आरम्भ कब हुआ? प्रथम अन्तरिक्ष यात्री बनने का श्रेय किस व्यक्ति को है?**

अथवा **मनुष्य जहाँ नहीं पहुँच सकता था, वहाँ पहुँचने के लिए उसने क्या किया?**

(iv) मानव मन किसके लिए उत्सुक था।

2. जयप्रकाश भारती का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए। **(2016CA, CE, CF, 17AD,AE, AG, 18HF, 19AA, AB, 20MC, MB, MA)**

3. जयप्रकाश भारती की कृतियों एवं भाषा-शैली का उल्लेख कीजिए।

4. जयप्रकाश का जीवन-परिचय देते हुए उनके साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डालिए।

5. अपोलो चन्द्रयान को पृथ्वी से चन्द्रतल तक पहुँचने में कितना समय लगा था?

6. चन्द्रयान पर पैर रखनेवाले चन्द्रयात्री आर्मस्ट्रांग को चन्द्रमा का तल पहली नजर में कैसा लगा था?

7. चन्द्रतल पर पैर रखते हुए आर्मस्ट्रांग को भय क्यों लग रहा था?

8. चन्द्रतल पर पाँव रखते हुए आर्मस्ट्रांग के उद्‌गार का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

9. चन्द्रतल पर स्मारक रूप में क्या-क्या वस्तुएँ चन्द्रयात्रियों द्वारा छोड़ी गयीं?

10. अन्तरिक्ष युग का सूत्रपात कब से माना जाता है?

11. पहला अन्तरिक्ष यात्री कौन था और वह किस देश का नागरिक था?

12. चन्द्रयान में कुल कितने भाग होते हैं—प्रत्येक के बारे में पाठ के आधार पर लिखिए।

13. यह पृथ्वी मानव के लिए पालने के समान है—इस कथन का निहितार्थ स्पष्ट कीजिए।

14. अन्तरिक्ष की खोज में मानव को अब तक कितनी सफलता मिली है?

15. अन्तरिक्ष का रहस्य जानने के पीछे मानव का अंतिम उद्देश्य क्या है?

16. निम्नलिखित शब्दों से उपसर्ग अलग करके लिखिए—
बदसूरत, दुस्साहस, प्रघात, अनुसन्धान, प्रयोग, विशेष।

➥ आन्तरिक मूल्यांकन

1. अपोलो II की चन्द्रयात्रा पर अपने शब्दों में एक निबन्ध लिखिए।

2. जयप्रकाश भारती की रचनाओं की एक सूची तैयार कीजिए।

शब्दार्थ

कृत संकल्प = दृढ़ निश्चय। **अन्तरिक्ष** = शून्य, आकाश, जिसमें सभी ग्रह नक्षत्र विद्यमान हैं। **निष्क्रिय** = निश्चल, शान्त, क्रियाशून्य। **त्रिपाद** = तीन चरणवाला। **प्रक्षेपण** = फेंकना, राकेट की शक्ति का उपयोग कर चन्द्रयान को अन्तरिक्ष में प्रविष्ट कराया जाता है। **निष्कासन की** = निकलने की। **पद-प्रहार** = पैरों का आघात। **कपोल कल्पना** = निराधार-कल्पना। **रहस्य** = छिपे हुए तथ्य। **विरहिणी** = वियोगिनी। **मरणोपरान्त** = (मरण + उपरान्त) मरने के बाद। **भूकम्पमापी** = भूकम्प नापने वाला। **अनुकृतियाँ** = नकलें। **कामना** = इच्छा। **धूल-धूसरित** = धूल से सनी। **पालित–पोषित** = पाले–पोसे हुए। **क्षुब्ध** = दुःखी। **विचरण** = घूमना। **अनगढ़** = बेडौल। **अविश्वसनीय** = जिस पर विश्वास न किया जा सके।

●●

परिशिष्ट

॥ हिन्दी व्याकरण ॥

शब्द रचना के तत्त्व

➥ (क) उपसर्ग

वे शब्दांश, जो किसी शब्द के पहले जुड़कर उस शब्द के अर्थ में विशेषता उत्पन्न कर देते हैं या उसके अर्थ को बदल देते हैं, 'उपसर्ग' कहलाते हैं। उपसर्गों का प्रयोग स्वतन्त्र रूप से नहीं होता, वे किसी शब्द के पूर्व प्रयोग किये जाते हैं; जैसे सम्भव, संहार, संचय में **'सम्'** उपसर्ग है; यह भव, हार, चय शब्दों से पहले जुड़ा हुआ है।

उदाहरणार्थ–

अ अनाथ, अविश्वास, असुविधा, अधर्म, अचेतन। **(2016CA, 17AE, AF, AG, 18HA, 19AA, AF, 20MG, ME, MA)**

अति अतिक्रम, अतिकाल, अतिवृष्टि। **(2019AC)**

अप अपव्यय, अपमान, अपकार, अपवाद, अपराध, अपशब्द। **(2016CB,CD,CE,CF,17AA,AD,AG,AE, 18HA,19AB,AD,AE,AF,AG,20MC,MF,MA,MB,MD)**

अनु अनुपस्थित, अनुराग, अनुरूप, अनुकरण, अनुक्रम, अनुशासन, अनुचर, अनुगमन, अनुभूति। **(2016CC,CE,CF,CG, 17AA,AB,AC,19AP,AB,AC,AD,AG,20MB,MA)**

अधि अधिकार, अधिमान, अधिपति। **(2016CA,CB,CD,CF,17AA,AC,AD,AE,AF,AG,19AB,20MC,MG,ME,MA,MF)**

ना नालायक, नासमझ।

दुर दुर्गम, दुर्गुण, दुर्लभ।

कु कुख्यात, कुकर्मी।

अभि अभिवादन, अभिशाप, अभिमान, अभिलाषा, अभिजात। **(2016CB,CC,CD,CE,CG,17AD,AG,18HA,HF, 19AA,AB,AC,AD,AF,AG,20MD,MF)**

आ आलेख, आकर्षण, आक्रमण, आगमन, आरम्भ, आजीवन। **(2020MB,MG)**

उप उपस्थिति, उपसंहार, उपकार, उपदेश, उपनाम, उपमंत्री, उपवन, उपयुक्त। **(2016CA,CD,CF,17AF,18HA, HF,19AB,AC,AE,AG,20MD,MB,MG)**

निर निरपराध, निर्भय, निर्वाह, निर्दोष, निरभिमान, निराकार। **(2017AB,AC,AF,18HA,19AB,AD,20MC,MG**

परा पराजय, पराभव।

प्रति प्रतिकूल, प्रतिरूप, प्रतिघात, प्रतिध्वनि।

परि परिक्रमा, परिजन, परिणाम, परिमाण, परिमार्जन, परिहास, परिवर्तन। **(2016CA,CC,CE,CF,CG,17AA,AB, AC,AE, 19AA,AE)**

वि विराग, विकार, विकास, विज्ञान, वियोग, विभाग, विक्रय, विनाश, विहार, विजय। **(2018HF,19AC,AE,20MF)**

स सपूत, सहृदय, सकारण, समान।

सु सुवास, सुपथ, सुजन, सुकर्म, सुपुत्र, सुलभ, सुगम, सुकवि, सुयोग्य, सुमार्ग, सुडौल, सुपात्र। **(2016CB,CD, CE,CG,17AA,AB,AG,19AA,AD,AE,AF,AG,20MC,MG,ME)**

अन अनजान, अनमोल, अनसुना। **(2020MD,MB,MF)**

सह सहचर, सहपाठी, सहयोग, सहमत। **(2016CB,CC,CD,CE,CF,17AB,AD,AP,AG,19AA,AC,AE,AG, 20MD,MB,MG,ME,MA)**

अवि अविकार।
सहा सहानुभूति।
प्र प्रभाव, प्रबल, प्रचण्ड, प्रमुख, प्रहार। **(2016CG,17AE,18HF)**
अध अधमरा, अधकचरा। **(2020MD)**
बे बेफिक्र, बेजान, बेरहम। **(2018HF)**
अव अवतार, अवगुण, अवसान, अवनति

➥ (ख) प्रत्यय

जो शब्दांश, किसी शब्द के अन्त में जोड़े जाते हैं और जिनके जुड़ने से शब्द का अर्थ बदल जाता है, उन्हें प्रत्यय कहते हैं। इन शब्दांशों का स्वतन्त्र रूप से प्रयोग नहीं होता।

प्रत्यय के भेद–प्रत्यय के दो भेद हैं—(1) कृत् प्रत्यय, (2) तद्धित प्रत्यय।

(1) कृत् प्रत्यय–जो शब्दांश, धातु के बाद लगाये जाते हैं, वे **कृत् प्रत्यय** कहलाते हैं (क्रियाओं के सामान्य रूप—उठना, पढ़ना आदि में से 'ना' को निकाल देने से बचा हुआ 'धातु' कहलाता है)। कृत् प्रत्यय से बने शब्दों को **कृदन्त** शब्द कहते हैं; जैसे—'पठ्' धातु में 'आई' प्रत्यय जोड़कर **'पढ़ाई'** शब्द बनता है। इन्हें जोड़कर संज्ञा, विशेषण तथा अव्यय शब्द बनाये जाते हैं।

(2) तद्धित प्रत्यय–जो शब्दांश, धातु के अतिरिक्त अन्य शब्दों (संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम आदि) के बाद जुड़कर नये शब्द बनाते हैं, वे तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं; जैसे—'सुन्दर' शब्द में 'ता' प्रत्यय जोड़कर 'सुन्दरता' शब्द बनता है।

पाठ्यक्रमानुसार प्रत्यय और उनसे बने शब्द नीचे दिये जा रहे हैं—

आई कठिनाई, भलाई, भराई, पढ़ाई, लिखाई, हँसाई। **(2016CB, CF, CG,17AA,AB,AC,AD,AE,AF,AG, 18HA,19AA,AC,AD,AE,20MC,MD,MG,MA,ME,MF)**

वट बनावट, सजावट, लिखावट। **(2016CA,CC,CE,CF,CG,18HA,19AA,AB,AD,AF,AG, 20MC,MG,ME,MA)**

हट गरमाहट, घबराहट, जगमगाहट, गड़गड़ाहट। **(2016CA,CB,CD,CG,17AA,AB,AD,AE,AF, 18HA,19AA,AE,AG,20MD,MB,MG,MA,MF)**

ता महानता, कविता, सुन्दरता, गुरुता। **(2016CA,CB,CC,CD,CE,CF,CG,17AA,AB,AC,AD, AG,18HA,HF,19AA,AB,AC,AE,AG,20MC,MD,MB,MG,ME,MA,MF)**

पन बचपन, भोलापन, पागलपन, बालकपन। **(2016CA,CB,CC,CD,CE,CF,CG,17AA,AB,AC,AD,AF, AG,18HA,19AB,AC,AE,AF,20MC,MD,MB,ME,MA,MF)**

त्व महत्व, ममत्व, कवित्व, प्रभुत्व, गुरुत्व, सतीत्व। **(2016CA,CB,CD,CE,CF,17AC,AE,AF,AG, 18HA,HF,19AA,AB,AD,AE,20MD,MB,MG,ME,MA,MF)**

वा पहनावा, दिखावा, चढ़ावा, चलावा। **(2019AA,AC,AE,AG)**

वान बलवान, पहलवान, गाड़ीवान। **(2018HF)**

ईय दैवीय, ईश्वरीय, पर्वतीय।

मान अपमान, सम्मान, गतिमान।

इक दैनिक, मौलिक, दैहिक।

वैया गवैया, सवैया, खेवैया।

औती फिरौती, कठौती।

➥ (ग) समास

समास शब्द का अर्थ है–संक्षिप्त करने की रचना विधि।

जब दो या दो से अधिक शब्दों को मिलाकर एक शब्द बना लिया जाता है, तब उस प्रक्रिया को 'समास' कहते हैं। जैसे–

'क'	'ख'
अश्रु लाने वाली गैस	अश्रुगैस
घन के समान श्याम	घनश्याम
पाँच तंत्रों का समाहार	पंचतंत्र
शक्ति के अनुसार	यथाशक्ति
युद्ध के लिए भूमि	युद्धभूमि
नीला है जो अंबर	नीलांबर
आचार और विचार	आचार-विचार

उपर्युक्त उदाहरणों में 'क' वर्ग के एक से अधिक शब्दों के लिए 'ख' वर्ग में एक-एक शब्द बना लिया गया है।

समास की परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है–

"समास वह शब्द-रचना है जिसमें अर्थ की दृष्टि से परस्पर स्वतंत्र संबंध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्द मिलकर किसी अन्य स्वतंत्र शब्द की रचना करते हैं।"

सरल भाषा में–"दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से नये शब्द बनाने की प्रक्रिया को समास कहते हैं।"

1. कर्मधारय समास

कर्मधारय समास में पहला (पूर्व) पद विशेषण और दूसरा (उत्तर) पद विशेष्य होता है अथवा एक पद उपमेय तथा दूसरा उपमान होता है। जैसे–

विशेषण–विशेष्य कर्मधारय–

समस्त पद	विग्रह	समस्त पद	विग्रह
कृष्णसर्प **(2017AE)**	कृष्ण (काला) है जो सर्प	महावीर	महान है जो वीर
नीलगगन **(2016CE) (17AG,19AC)**	नीला है जो गगन **(2020MF)**	नीलकमल	नीला है जो कमल **(2016CF,17AA)**
अधपका	आधा है जो पका	महात्मा	महान है जो आत्मा **(2019AA)**
प्रधानाध्यापक **(2020MB)**	प्रधान है जो अध्यापक	महादेव	महान है जो देव
परमानंद	परम है जो आनंद	कुबुद्धि	कु (बुरी) है जो बुद्धि **(2020MC)**
श्वेतकमल **(2016CG)**	श्वेत है जो कमल	श्वेतवस्त्र	श्वेत है जो वस्त्र
नीलपुष्प	नीला है जो पुष्प	शुभकर्म	शुभ है जो कर्म **(2016CD)**
सत्पुरुष **(2016CG)**	सत् है जो पुरुष	स्वर्णकलश	स्वर्ण का है जो कलश **(2017AF, 19AA,AE)**
नीलमणि	नीली है जो मणि		

उपमेय–उपमान कर्मधारय–

समस्त पद	विग्रह	समस्त पद	विग्रह
घनश्याम	घन के समान श्याम	मुखचंद्र	मुख रूपी चंद्र
कमल नयन	कमल के समान नयन	विद्याधन	विद्या रूपी धन
कर कमल	कमल के समान कर (हाथ)	नरसिंह	नर रूपी सिंह
कनकलता	कनक के समान लता **(2020MD)**	क्रोधाग्नि	क्रोध रूपी अग्नि
मृगलोचन	मृग के समान लोचन	वचनामृत	वचन रूपी अमृत
चरणकमल	कमल के समान चरण **(2020MA)**	चन्द्रवदन	चन्द्रमा के समान वदन **(2016CA)**

2. द्विगु समास

द्विगु समास में उत्तरपद प्रधान होता है तथा पूर्वपद संख्यावाची शब्द होता है। जैसे–

समस्त पद	विग्रह	समस्त पद	विग्रह
चौराहा **(2016CB,19AA)**	चार राहों का समूह	त्रिवेणी	तीन वेणियों का समाहार

नवरत्न **(2017AG, 19AB,AC,AD,20MF,MA)**	नौ रत्नों का समाहार	चतुर्भुज	चार भुजाओं का समूह
त्रिफला **(2019AF,20ME)**	तीन फलों का समूह	दोपहर	दो पहरों का समाहार
तिरंगा	तीन रंगों का समाहार	पंचतंत्र	पाँच तंत्रों का समाहार
सतसई	सात सौ दोहों का समूह	अष्टाध्यायी	आठ अध्यायों का समाहार
सप्तधान्य	सात धान्यों का समूह	पञ्चपल्लव	पाँच पल्लवों का समूह
चारपाई (चौपाया) **(2016CA)**	चार पावों का समूह	त्रिकोण **(2017AA)**	तीन कोणों का समूह
सप्तसिन्धु **(2018HA, 20MD,MB)**	सात समुद्रों का समूह	पंचपात्र	पाँच पात्रों का समूह **(2017AB, 20MA)**
अष्टग्रह **(2016CC)**	अष्ट ग्रहों का समाहार	दोराहा	दो राहों का समाहार **(2016CE)**
त्रिभुज	तीन भुजाओं का समूह	सप्तर्षि	सात ऋषियों का समूह **(2017AB,20MA)**
		नवग्रह **(2020MC)**	नव ग्रहों का समूह **(2020MC)**
सप्ताह **(2017AC)**	सात दिनों का समूह	षटकोण	छः कोणों का समूह **(2017AE)**
बारहमासा **(2019AF)**	बारह महीनों का समूह		

3. बहुव्रीहि समास

जब समस्त पद में आए दोनों पद मिलकर किसी तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं, वहाँ बहुव्रीहि समास होता है। जैसे– 'नीलकंठ' अर्थात् नीले कंठ वाला है जो–'शिव'। यहाँ–'नील' और 'कंठ' दोनों ही पद गौण हैं तथा ये दोनों मिलकर तीसरे पद–'शिव' की ओर संकेत कर रहे हैं। बहुव्रीहि समास में दोनों पद ही गौण होते हैं।

अन्य उदाहरण–

समस्त पद	**पहला पद (गौण)**	**दूसरा पद (गौण)**	**विग्रह**	**तीसरा पद (प्रधान)**
पीतांबर	पीत	अंबर	पीला है अंबर (वस्त्र) जिसका	श्रीकृष्ण **(2019AE,20MB)**
दशानन	दश	आनन	दस हैं आनन (मुख) जिसके	रावण
त्रिलोचन	त्रि	लोचन	तीन लोचन (नेत्र) हैं जिसके	शिव
चतुर्भुज	चतुर्	भुज	चार भुजाएँ हैं जिसकी	विष्णु
चक्रपाणि	चक्र	पाणि	चक्र है हाथ में जिसके	विष्णु **(2016CE,19AD,AF) 20MG,MA,MF)**
चतुर्मुख	चतुर्	मुख	चार मुख हैं जिसके	ब्रह्मा
षडानन	षट्	आनन	षट् (छः) आनन हैं जिसके	कार्तिकेय
एकदंत	एक	दंत	एक दाँत है जिसके	गणेश
लंबोदर	लंबा	उदर	लंबा है उदर जिसका	गणेश **(2016CF)**
अंशुमाली	अंशु	माली	अंशु (किरणें) हैं माला जिसकी	सूर्य **(2020MC)**
पतझड़	पत	झड़	झड़ते हैं पत्ते जिसमें वह	विशेष ऋतु
गजानन	गज	आनन	गज के समान आनन (मुख) वाला	गणेश
विषधर	विष	धर	विष को धारण करने वाला	सर्प **(2017AF,19AB)**
मेघनाद	मेघ	नाद	मेघ के समान नाद (शोर) है जिसका	रावण-पुत्र
बारहसिंगा	बारह	सिंगा	बारह सींग हैं जिसके	एक विशेष पशु **(2017AF)**
दिगंबर	दिक्	अंबर	दिशाएँ हैं अंबर (वस्त्र) जिसका	शिव
निशाचर	निशा	चर	निशा (रात्रि) में विचरण करने वाला	राक्षस

मुरलीधर	मुरली	धर	मुरली को धारण करने वाला	कृष्ण	
वीणापाणि	वीणा	पाणि	वीणा है हाथ में जिसके	सरस्वती	**(2016CB,20MD)**
कुसुमायुध	कुसुम	आयुध	कुसुम है आयुध जिसका	कामदेव	
चन्द्रशेखर	चन्द्र	शेखर	चन्द्र है शिखर पर जिसके	शिवजी	**(2019AA)**
चतुरानन	चतुर	आनन	चार हैं मुख जिनके	ब्रह्मा	**(2016CE)**
चक्रधर	चक्र	धर	चक्र को धारण करता है जो	विष्णु	**(2016CA)**
चन्द्रधर	चन्द्र	धर	चन्द्रमा को धारण करता है जो	शंकर	**(2016CC)**
पवनपुत्र	पवन	पुत्र	पवन के पुत्र हैं जो	हनुमान्	**(2016CD,17AD,19AE,AG)**
त्रिनेत्र	त्रि	नेत्र	तीन हैं नेत्र जिसके	शंकर	**(2016CF,17AG,19AG)**
गंगाधर	गंगा	धर	गंगा को धारण किया है जिसने	शंकर	**(2016CG)**
पंचानन	पंच	आनन	पाँच हैं मुख जिसके	हनुमान	**(2020MA)**

4. द्वन्द्व समास

जिस समस्त पद में दोनों पद (पूर्व तथा उत्तर) समान हों, वहाँ द्वन्द्व समास होता है। इसमें दोनों पदों को जोड़ने वाले समुच्चयबोधक अव्यय का लोप हो जाता है। जैसे–खट्टा-मीठा – खट्टा और मीठा।

अन्य उदाहरण–

समस्त पद	**विग्रह**	**समस्त पद**	**विग्रह**
गुण-दोष	गुण और दोष	पति-पत्नी	पति और पत्नी
खरा-खोटा **(2020MB)**	खरा या खोटा	माता-पिता	माता और पिता **(2019AE)**
पाप-पुण्य **(2017AA,AC, 19AG, 20MF)**	पाप या पुण्य	चराचर	चर और अचर
जीवन-मरण	जीवन और मरण	रुपया-पैसा	रुपया और पैसा
दाल-रोटी	दाल और रोटी	सुख-दुःख	सुख और दुःख
जल-थल **(2017AD,AF, 20ME)**	जल और थल	दिन-रात	दिन और रात
अपना-पराया	अपना और पराया	पिता-पुत्र	पिता और पुत्र
अन्न-जल **(2016CD,CG)**	अन्न और जल	देश-विदेश	देश और विदेश **(2016CA,CE,18HA)**
राधाकृष्ण **(2016CB)**	राधा और कृष्ण	आचार-विचार	आचार और विचार **(2016CC)**
हानि-लाभ **(2016CF,19AB)**	हानि और लाभ	आना-जाना	आना और जाना **(2017AE,19AF)**
नदी-नाले **(2017AG)**	नदी और नाले	रामकृष्ण	राम और कृष्ण **(2017AA)**
उत्थान-पतन **(2017AB) 20MC,MA,MD)**	उत्थान और पतन	शुभा शुभ	शुभ और अशुभ

5. अव्ययीभाव समास

जिस समास में पहला पद 'अव्यय' हो उसे 'अव्ययीभाव समास' कहते हैं। अव्ययीभाव समास में पहला पद (पूर्वपद) प्रधान होता है तथा समास प्रक्रिया से बना समस्त पद भी अव्यय की भाँति काम करता है। जैसे–प्रति + दिन = प्रतिदिन। यहाँ 'प्रति' (पहला पद) अव्यय है तथा समास प्रक्रिया से बना समस्त पद 'प्रतिदिन' भी अव्यय की भाँति कार्य करता है। यदि दो समान शब्द युग्म की भाँति पूर्व तथा उत्तर पद के रूप प्रयोग हो रहे हों, तो भी अव्ययीभाव समास होता है। जैसे–गली-गली – प्रत्येक गली।

समस्त पद	**विग्रह**	**समस्त पद**	**विग्रह**
यथाशक्ति **(2020MD)**	शक्ति के अनुसार	प्रतिदिन	दिन-दिन (प्रत्येक दिन)

बेखटके	बिना खटके के	प्रत्येक	एक-एक
आजन्म	जन्म से लेकर	हाथों हाथ	हाथ ही हाथ में
आजीवन	जीवनपर्यन्त तक	रातों रात	रात ही रात में
भर पेट	पेट भर कर	बीचों बीच	बीच ही बीच में
यथोचित	जितना उचित हो	एकाएक	अचानक
प्रत्यक्ष	आँखों के सामने	भरपूर	पूरा भरा हुआ
निडर	डर रहित	यथाविधि	विधि के अनुसार

कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में अन्तर–कर्मधारय समास में या तो पहला पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य होता है या फिर एक पद उपमेय और दूसरा उपमान।

बहुव्रीहि समास में दोनों पद मिलकर किसी तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं।

समस्त पद के विग्रह के अंतर से कर्मधारय समास और बहुव्रीहि समास के अंतर को भलीभाँति समझा जा सकता हैः–

समस्त पद	**विग्रह**	**समास**
महावीर	महान है जो वीर	कर्मधारय
	महान है जो वीर (हनुमान)	बहुव्रीहि
नीलकंठ	नीला है जो कंठ	कर्मधारय
	नीला है कंठ जिसका (शिव)	बहुव्रीहि
कमलनयन	कमल जैसे नयन	कर्मधारय
	कमल जैसे नयन हैं जिसके (श्रीकृष्ण)	बहुव्रीहि
महात्मा	महान आत्मा	कर्मधारय
	महान है जिसकी आत्मा (कोई महापुरुष)	बहुव्रीहि
पीतांबर	पीत (पीला) है जो अंबर (वस्त्र)	कर्मधारय
	पीले अंबर हैं जिसके (कृष्ण)	बहुव्रीहि
लंबोदर	लंबा है जो उदर	कर्मधारय **(2020MF)**
	लंबा है उदर जिसका (गणेश)	बहुव्रीहि
घनश्याम	घन के समान श्याम	कर्मधारय
	घन के समान श्याम है जो (कृष्ण)	बहुव्रीहि

द्विगु समास और बहुव्रीहि समास में अंतर–द्विगु समास में समस्त पद का पहला पद संख्यावाचक विशेषण होता है तथा दूसरा पद उसका विशेष्य, परन्तु बहुव्रीहि समास में पूरा पद किसी तीसरे पद की ओर संकेत करता है तथा पूरा पद विशेषण का काम करता है। द्विगु और बहुव्रीहि समास के अंतर को भी इनके विग्रह द्वारा समझा जा सकता है। जैसे–

समस्त पद	**विग्रह**	**समास**
दशानन	दस मुखों का समूह	द्विगु समास
	दस हैं आनन जिसके (रावण)	बहुव्रीहि समास
चतुर्मुख	चार मुखों का समूह	द्विगु समास
	चार मुख हैं जिसके (ब्रह्मा)	बहुव्रीहि समास
चतुर्भुज	चार भुजाओं का समूह	द्विगु समास
	चार भुजाएँ हैं जिसकी (विष्णु)	बहुव्रीहि समास
त्रिनेत्र	तीन नेत्रों का समूह	द्विगु समास **(2019AC)**
	तीन नेत्र हैं जिसके (शिव)	बहुव्रीहि समास
अनादि	न आदि	कर्मधारय
	नहीं आदि है जिसका (ईश्वर)	बहुव्रीहि समास

अमर	न मर	कर्मधारय
	जो कभी न मरे (देवता)	बहुव्रीहि
बारहसिंगा	बारहसींगों का समूह	द्विगु
	बारहसींगों वाला (एक जानवर)	बहुव्रीहि
चौमासा	चार मासों (महीनों) का समूह	द्विगु **(2016CD,CG)**
	चार मासों का है जो (वर्षा ऋतु)	बहुव्रीहि

द्विगु और कर्मधारय समास में अन्तर–कर्मधारय समास में समस्त पद का एक पद विशेषण होता है तथा समस्त पद में विशेषण और विशेष्य का योग रहता है जबकि द्विगु समास में पहला पद संख्यावाचक विशेषण होता है। जैसे–

समस्त पद	**विग्रह**	**समास**
नवग्रह	नव हैं जो ग्रह	कर्मधारय समास
	नव ग्रहों का समूह	द्विगु समास
पंचवटी	पाँच हैं जो वट	कर्मधारय समास
	पाँच वटों का समूह	द्विगु समास
त्रिभुवन	तीन हैं जो भुवन	कर्मधारय समास
	तीन भुवनों का समूह	द्विगु समास **(2019AB)**

➥ (घ) तत्सम शब्द

तत्सम–'तत्सम' शब्द दो शब्दों के मेल से बना है–'तत् 'और 'सम् '। 'तत् ' का अर्थ है 'उसके' और 'सम' का अर्थ है 'समान' अर्थात् 'उसके समान'। 'उसके समान' से यहाँ तात्पर्य है–स्रोत भाषा (संस्कृत) के समान। भाव यह है कि हिन्दी में अनेक ऐसे शब्दों का प्रयोग हो रहा है जो संस्कृत से सीधे आए हैं तथा अपने मूल रूप में ही हिन्दी में भी प्रयुक्त होते हैं। ऐसे शब्दों को तत्सम शब्द कहा जाता है। हिन्दी में प्रयुक्त होने वाले तत्सम शब्दों को संख्या काफी बड़ी है। उदाहरण के लिए, कुछ तत्सम शब्द हैं, बालक, गुरु, लता, कवि, भानु, नारी, भूमि, पृथ्वी, सुंदर, सौंदर्य, साहस, ममता, राष्ट्र, वायु आदि।

तद्भव शब्द–'तद्भव' शब्द का अर्थ है–'उससे होना' (तत् का अर्थ है 'उससे' और 'भव' से आशय है 'उत्पन्न होने वाला')। अब प्रश्न यह उठता है कि 'किससे उत्पन्न होने वाला'? 'उससे उत्पन्न होने वाला'–से यहाँ संस्कृत भाषा की ओर संकेत है। भाव यह है कि जिन शब्दों का निर्माण संस्कृत से बिगड़कर होता है, उन्हें तद्भव शब्द कहते हैं। जैसे– दुग्ध से दूध, रात्रि से रात, सर्प से साँप और वानर से बंदर आदि।

दूध, रात, साँप और बंदर तद्भव शब्द हैं।

तत्सम एवं तद्भव शब्दों के उदाहरण

तत्सम	**तद्भव**	**तत्सम**	**तद्भव**
अग्नि **(2016CG)**	आग **(2020ME)**	काष्ठ	काठ
आर्द्रक	अदरक	क्षीर	खीर **(2016CA,17AC)**
स्तंभ **(2017AD, 20MB)**	खंभा	गधा	गर्दभ
अंगुलि	उँगली	कोकिल	कोयल
अंगुष्ठ	अँगूठा	काक **(2019AE)**	कौआ, काग
अंधकार	अँधेरा	कर्ण	कान **(2020MF)**
अद्य	आज **(2020MA,ME)**	कुपुत्र	कपूत **(2020MC)**
अक्षि **(2017AB,AC,20MD,MB)**	आँख	कपाट	किवाड़
अमावस्या	अमावस **(2020MA)**	गोधूम	गेहूँ **(2018HA)**
ग्रीवा	गर्दन	ग्राहक	गाहक

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव	
अंध **(2016CB)**	अंधा	गृह	घर	
सम्पत्ति	सम्पति	मनुष्य	मानुष	**(2017AF)**
प्रमोद	परमोद	पार्वती	पारबती	
श्रवण **(2016CF,19AD)**	सरवन	क्लेश	कलेस	**(2020MC)**
गर्गर	गागर **(2020ME)**	ग्राम	गाँव	
अर्द्ध	आधा	घृत	घी	**(2016CD,20DG)**
आश्रय	आसरा	चंद्र	चाँद	
आश्चर्य	अचरज	चैत्र	चैत	
आलस्य	आलस	चर्म	चाम	**(2020MB)**
इक्ष	ईख	चंद्रिका	चाँदनी	
उच्च	ऊँचा **(2020MD)**	उपरी	ऊपर	
उष्ट्र	ऊँट	चणक	चना	**(2020MD,MA)**
उलूक	उल्लू **(2016CA)**	चतुष्पथ	चौराहा	**(2017AF)**
ओष्ठ	ओठ **(2016CB)**	चर्मकार	चमार	
घटिका	घड़ी	छत्र	छाता	
कर्म **(2017AA)**	काम	छिद्र	छेद	**(2016CE)**
कच्छप	कछुआ **(2020MB)**	जंबू	जामुन	
कर्पूर	कपूर	जंघा	जाँघ	
कंटक	काँटा	ज्येष्ठ	जेठ	
कर्पट **(2016CF)**	कपड़ा	त्वरित	तुरंत	
कुंभकार	कुम्हार	ताम्र	ताँबा	
कज्जल	काजल	तडाग	तालाब	
कूप	कुआँ **(2020MA)**	दशम	दसवाँ	
क्षेत्र	खेत	दंड	डंडा	
कृष्ण	किशन	कपोत	कबूतर	
कीट	कीड़ा	दंत	दाँत	
कुमार	कुँवर	घट	घड़ा	
कुमारी	कुँवारी	मृत्यु	मौत	
दीपक	दीया	बाहु	बाँह	
धूम्र	धुआँ	प्रहेलिका	पहेली	
जामाता	जमाई	फाल्गुन	फागुन	**(2017AA)**
धैर्य	धीरज	भगिनी	बहन	
नवीन	नया	बधिर	बहरा	
नग्न	नंगा	भक्त	भगत	**(2016CE)**
नासिका	नाक	भ्रातृ	भाई	**(2019AE)**
निद्रा	नींद	भ्रू	भौंह	
नृत्य	नाच	भ्रमर	भौंरा	**(2019AG)**
नयन	नैन	मातुल	मामा	
पितृ	पिता	मुष्टि	मुट्ठी	
पद	पैर	मस्तक	माथा	**(2017AC,20MC)**
पूर्ण	पूरा	भिक्षा	भीख	**(2016CG)**

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव	
पिपासा	प्यास	मयूर	मोर	**(2017AD,19AG,20MF)**
प्रिय	पिय	मृत्तिका	मिट्टी	**(2017AE)**
पौष	पूस	मौक्तिक	मोती	
पूर्णिमा	पूनो	मित्र	मीत	**(2020MC)**
पुत्रवधू	पतोहू **(2020MF)**	महिषी	भैंस	
प्रस्तर	पत्थर **(2020MD)**	यमुना	जमुना	
पत्र	पत्ता	रात्रि	रात	**(2016CG)**
पिप्पल	पीपल	रिक्ष	रीछ	
प्रहर	पहर	रुष्ट	रूठा	
पृष्ठ	पीठ	रोदन	रोना	
पर्यंक	पलंग	रुक्ष	रूखा	
पक्व	पक्का	राज्ञी	रानी	
पंच	पाँच	पानीय	पानी	
पक्षी	पंछी	मक्षिका **(2019AA)**	मक्खी	**(2020MF)**
परीक्षा	परख	लज्जा	लाज	
लक्ष	लाख	श्वास	साँस	
कातर	कायर	वैर	बैर	
वधू	बहू	बिंदु	बूँद	
वानर	बंदर	विवाह	विआह	
वाष्प **(2019AA)**	भाप **(2020MF)**	बालुका	बालू	
वार्ता	बात	श्वश्रु	सास	
वृद्ध	बूढ़ा (बुड्ढा)	शाक	साग	
वर्तिका **(2018HA,19AE)**	बत्ती, बाती	शैय्या	सेज	
शुष्क	सूखा	श्वसुर	ससुर	
सायं	शाम	स्थल	थल	
श्यामल	साँवला	सौभाग्य	सुहाग	
स्वप्न **(2017AG,19AC)**	सपना	स्तन	थन	
शत् **(2016CA)**	सौ	शीश	सिर	
वर्ष	बरस	अन्न	अनाज	
सूत्र	सूत	लशुन	लहसुन	
स्वर	सुर	सर्व	सब	
सूर्य **(2016CG)**	सूरज	सप्त	सात	**(2017AG,19AC)**
शर्करा	शक्कर	योगी	जोगी	
शृंग **(2017AF)**	सींग	हस्त	हाथ	**(2017AA,AC,AD)**
हृदय	हिय	स्फूर्ति	फुर्ती	
हरित	हरा	घोटक	घोड़ा	
सूचिका	सुई	मंडूक	मेंढक	
ताम्र	ताँबा	निंब	नीम	
नारिकेल	नारियल	पीत	पीला	
दधि	दही	पौत्र	पोता	
पौत्री	पोती	स्कंध	कंधा	

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव	
हस्ती	हाथी	सर्प	साँप	
वृषभ	बैल	दर्शन	दरसन	
वणिक	बनिया	कुंजिका	कुंजी	
मिष्ठान	मिठाई	पुष्प	फूल	
श्रावण	सावन **(2020MG)**	धर्म	धरम	
नक्षत्र **(2018HA)**	नखत	स्नेह	नेह	**(2020MG)**
कार्तिक	कातिक	गात्र	गात	**(2016CA)**
जीर्ण	जीरण **(2016CA)**	अक्षर	अच्छर	**(2017AB)**
निर्गुण	निरगुन **(2016CC,19AD,AF)**	अश्रु	आँसू	
उच्चारण	उचारन **(2016CC)**	शाप	श्राप	
वृश्चिक	बीछी **(2016CD,19AG)**	मुख्य	मुखिया	
दुग्ध	दूध **(2016CF,19AA)**	चरण	चरन	**(2016CF)**
बिल्व	बेल **(2016CG)**	कदली	केला	**(2017AB)**
प्रस्तर	पाहन	बरन	वर्ण	
कंकण	कंगन **(2017AE)**	मातृ	माता	
कृपा	किरपा **(2019AD)**	लक्ष्मण	लखन	**(2019AE)**
पुरुषार्थ	पुरुसारथ	कीर्ति	कीरति	**(2019AF)**
गुणी	गुनी **(2019AF)**			

➥ (ङ) पर्यायवाची शब्द

पर्यायवाची/समानार्थक शब्द–वे शब्द जो एक-दूसरे के लगभग समान अर्थ देते हैं, उन्हें पर्यायवाची या समानार्थक शब्दों के नाम से जाना जाता है। जैसे–आकाश को गगन, नभ, व्योम, आसमान तथा अंबर भी कहते हैं। ये सभी शब्द 'आकाश' के पर्यायवाची हैं।

विशेष–यद्यपि पर्यायवाची शब्दों के अर्थ में समानता होती है तथापि प्रत्येक समानार्थी अर्थ कुछ न कुछ विशिष्टता लिए रहता है तथा इसी कारण कभी-कभी इन्हें एक-दूसरे के स्थान पर प्रयोग नहीं किया जा सकता है। जैसे–

कौरवों ने द्रौपदी के चीर-हरण का प्रयास किया।

कौरवों ने द्रौपदी के कपड़ा-हरण का प्रयास किया।

इन दोनों वाक्यों में प्रयुक्त शब्द 'चीर' तथा 'कपड़ा' एक-दूसरे के पर्यायवाची होते हुए भी एक-दूसरे के स्थान पर प्रयुक्त किए जाने पर अटपटे लग रहे हैं।

इसी प्रकार 'गंगा-जल' के स्थान पर 'गंगा-पानी' का प्रयोग उचित नहीं है।

अतः पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग करते समय सावधान रहना चाहिए।

कुछ परीक्षोपयोगी पर्यायवाची शब्दों की सूची नीचे दी जा रही है–

1. **अग्नि** – अनल, पावक, ज्वाला, वह्नि, आग **(2016CB,19AB,AD,AF,AG,20MD,MG)**
2. **अतिथि** – आगंतुक, मेहमान, पाहुना, अभ्यागत **(2018HF)**
3. **अंधकार** – तिमिर, तम, अँधेरा, तमिस्र
4. **अश्व** – घोटक, हय, वाजि, सैंधव, तुरंग, घोड़ा **(2016CA,17AB,AE,18HA,20MG,MF)**
5. **आँख** – नेत्र, चक्षु, नयन, दृग, लोचन **(2016CG,19AA)**
6. **आकाश (नभ)** – नभ, व्योम, अंबर, अनंत, गगन, आसमान **(2016CE,CF,17AF,AG,19AA,AC,AE,AF)**
7. **आनंद** – खुशी, प्रसन्नता, हर्ष, उल्लास
8. **इंद्र** – देवेंद्र, सुरेश, सुरेंद्र, देवेश, देवराज **(2017AF,20MC,ME)**

9. **इच्छा** – अभिलाषा, कामना, लालसा, मनोरथ, चाह
10. **ईश्वर** – प्रभु, भगवान, परमेश्वर, ईश, अखिलेश, परमात्मा
11. **उन्नति** – प्रगति, उत्थान, उन्नयन, उत्कर्ष, विकास **(2020MA)**
12. **उपवन** – उद्यान, बाग, बगीचा, वाटिका, कुसुमाकर
13. **कपड़ा** – पट, वस्त्र, वसन, चीर, अंबर **(2016CB,18HF)**
14. **कमल** – जलज, पंकज, वारिज, सरसिज, सरोज, अंबुज, राजीव, अरविंद **(2017AB,19AC, 20MD,MB,MF)**
15. **कामदेव** – अनंग, मनोज, मदन, रतिपति, पंचशटर, कंदर्प **(2018HA)**
16. **किरण** – अंशु, रश्मि, मरीचिका
17. **किनारा** – कूल, तट, तीर, पुलिन
18. **कृपा** – दया, मेहरबानी, अनुकंपा, अनुग्रह
19. **कोयल** – पिक, वसंत दूत, कोकिल, श्यामा, कोकिला **(2018HF)**
20. **कृष्ण** – केशव, माधव, गोपाल, मोहन, मुरारि, घनश्याम, वासुदेव **(2016CB,19AD)**
21. **खल** – दुर्जन, नीच, अधम, कुटिल
22. **गणेश** – गजानन, लंबोदर, गणपति, गजवदन, एकदंत, विघ्नेश
23. **गंगा** – अलकनंदा, भागीरथी, सुरसरिता, मंदाकिनी, सुरसरि **(2017AA,20MB)**
24. **गृह** – घर, भवन, आलय, निकेत, सदन, निकेतन, धाम **(2016CA,20MA)**
25. **चतुर** – कुशल, योग्य, निपुण, दक्ष, प्रवीण, होशियार
26. **चंद्रमा** – हिमांशु, सुधांशु, इंदु, सोम, सुधाकर, रजनीश, शशि **(2016AF)**
27. **चाँदनी** – ज्योत्स्ना, चंद्रिका, कौमुदी
28. **जल** – पानी, तोय, नीर, पय, अंबु, सलिल, वारि **(2018HA,20MG)**
29. **जंगल** – कांतार, वन, कानन, अरण्य, विपिन **(2017AD,AG,19AC)**
30. **तलवार** – करवाल, खड्ग, शमशीर, चंद्रहास
31. **तारा** – तारक, नक्षत्र, उडु, नखत
32. **तालाब** – सर, पुष्कर, सरोवर, ताल, जलाशय, तडाग **(2017AE,19AF,20ME)**
33. **तीर** – बाण, शर, सायक, शिलीमुख **(2016CG, 20MC)**
34. **दिन** – वार, दिवस, वासर, दिवा **(2020MB)**
35. **दुःख** – व्यथा, पीड़ा, कष्ट, शोक, विषाद, क्षोभ
36. **देवता** – सुर, देव, अमर **(2017AF)**
37. **दूध** – पय, दुग्ध, क्षीर **(2017AF)**
38. **धन** – श्री, दौलत, अर्थ, संपत्ति, वित्त, मुद्रा
39. **धनुष** – चाप, कोदंड, धनु, शरासन
40. **नदी** – सलिला, सरिता, सरित, तटिनी, नद **(2016CB,CG,19AE,20MB,MG)**
41. **नारी** – महिला, स्त्री, अबला, रमणी, कामिनी
42. **नौकर** – भृत्य, अनुचर, सेवक, परिचारक, दास
43. **नौका** – नाव, बेड़ा, पोत, तरी, तरिणी
44. **पक्षी** – विहग, विहंग, पखेरू, खग, द्विज, अंडज **(2016CB,19AA)**
45. **पति** – बालम, साजन, भर्ता, वल्लभ, कांता, स्वामी
46. **पत्नी** – प्रिया, वामा, वधू, अर्द्धांगिनी, गृहिणी, दारा
47. **पताका** – ध्वजा, झंडा, निशान, ध्वज

48. **पत्थर** – पाहन, पाषाण, उपल, प्रस्तर, अश्म **(2016CA,20MC)**
49. **पवन** – वायु, अनिल, समीर, वात, मारुत
50. **पुष्प** – फूल, सुमन, प्रसून, कुसुम **(2016CF,17AD,AE,20MB)**
51. **पुत्र** – बेटा, सुत, आत्मज, तनय, नंदन, लाल **(2016CF,17AD,AE,20MG)**
52. **पुत्री** – बेटी, सुता, आत्मजा, तनया, कन्या, तनुजा
53. **पृथ्वी** – भू, भूमि, धरा, धरणी, धरित्री, वसुंधरा, धरती **(2017AA,18HA,20MF)**
54. **प्रकाश** – छवि, द्युति, ज्योति, प्रभा, रोशनी
55. **बंदर** – हरि, वानर, मर्कट, कपि, शाखामृग **(2018HF,20ME)**
56. **बालक** – शावक, शिशु, बाल, बच्चा, लड़का
57. **ब्राह्मण** – भूदेव, भूसुर, विप्र, द्विज
58. **बादल** – वारिद, पयोद, नीरद, जलद, जलधर, मेघ, पयोधर **(2016CG,17AD,18HA,20MA,MF)**
59. **बिजली (विद्युत)** – सौदामिनी, दामिनी, चपला, चंचला, तड़ित **(2019AD,AB,AG)**
60. **ब्रह्मा** – अज, विरंचि, प्रजापति, स्वयंभू, विधाता, पितामह **(2019AD,20MC,MD)**
61. **भौंरा** – भ्रमर, मधुकर, मधुप, अलि, भृंग, षट्पद **(2017AC)**
62. **महादेव** – शिव, शंकर, भूतनाथ, त्रिलोचन, रुद्र, गौरापति, भूतेश **(2017AE)**
63. **मछली** – मीन, मत्स्य, मकर, अंडज **(2020MA)**
64. **मृत्यु** – निधन, देहावसान, मौत, देहांत, मरण
65. **गाय** – धेनु, सुरभि, पयस्विनी **(2016CD,19AB,AF)**
66. **भाई** – भ्राता, तात, सहोदर, अनुज
67. **मातृ** – जननी, माँ, माता, अम्ब **(2019AA)**
68. **रात्रि** – रात, रजनी, निशा
69. **अमृत** – सुधा, पीयूष, सोम **(2016CD,CE)**
70. **वर्षा** – पावस, बरसात, चौमासा, वृष्टि, मेह
71. **लता** – बेल, वल्लरी, बल्ली, लतिका
72. **विष्णु** – गरुणध्वज, जनार्दन, अच्युत, चक्रपाणि, नारायण
73. **हाथी** – हस्ती, गज, करी, गजेन्द्र, दन्ती, नाग, कुंजर, द्विरद **(2020MA)**
74. **यमुना** – सूर्यसुता, कालिन्दी, तरणि-तनुजा, सूर्यतनया
75. **मोर** – मयूर, केकी, कलापी, सारंग, शिखी, हरि **(2020MD)**
76. **पर्वत** – पहाड़, अचल, गिरि, नग, भूधर, शैल
77. **सूर्य** – रवि, भानु, भास्कर, दिनेश, दिनकर, दिवाकर, आदित्य **(2017AA,AD,19AE,20MD)**
78. **हंस** – मुक्तभुक्, मराल, सरस्वती वाहन
79. **लक्ष्मी** – पद्म, रमा, कमला, श्री, चंचला
80. **वृक्ष** – पेड़, तरु, द्रुम **(2020ME)**
81. **सर्प** – साँप, भुजंग, नाग, विषधर
82. **आम** – आम्र, रसाल
83. **हवा** – वायु, समीर **(2018HA,19AB,AD,AE,AO)**
84. **सरिता** – नदी, तरिनी, सलिला

●●

॥ हिन्दी काव्य ॥

भूमिका

काव्य उस छन्दोबद्ध एवं लयात्मक साहित्यिक रचना को कहते हैं, जो श्रोता या पाठक के मन में भावात्मक आनन्द की सृष्टि करती है। कविता में कुछ बाह्य तत्त्व हैं तो कुछ आन्तरिक। बाह्य तत्त्व हैं—शब्दों की लय, तुक, छन्द, शब्दों की योजना, भाषा एवं अलङ्कार तथा आन्तरिक तत्त्व हैं—व्यापकता, कल्पनाशीलता, रसात्मकता, सौन्दर्यबोध एवं भावों का प्रकटीकरण। आनुषंगिक रूप से कविता भाषा को भी समृद्ध करती है, किन्तु मूलतः वह आनन्द का साधन है। तर्क, युक्ति एवं चमत्कार मात्र का आश्रय न लेकर कवि रसानुभूति का समवेत प्रभाव उत्पन्न करता है। अतः कविता में यथार्थ का यथारूप चित्रण नहीं मिलता, वरन् यथार्थ को कवि जिस रूप में देखता है तथा जिस रूप में उससे प्रभावित होता है, उसी का चित्रण करता है। कवि का सत्य सामान्य सत्य से भिन्न प्रतीत होता है। वह इसी प्रभाव को दिखाने के लिए अतिशयोक्ति का सहारा भी लेता है। अतः काव्य में अतिशयोक्ति दोष न होकर अलङ्कार बन जाता है।

➨ कविता के विषय

मूलतः मानव ही काव्य का विषय है। जब कवि पशु-पक्षी अथवा निसर्ग का वर्णन करता है, तब भी वह मानव-भावनाओं का ही चित्रण करता है। व्यक्ति और समाज के जीवन का कोई भी पक्ष काव्य का विषय बन सकता है। आज के कवि का ध्यान जीवन के सामान्य एवं उपेक्षित पक्ष की ओर भी गया है। उसके विषय महापुरुषों तक ही सीमित नहीं हैं, अपितु वह छिपकली, केचुआ आदि पर भी काव्य-रचना करने लगा है। कवि के उन्नत विषय, भाव, विचार, आदर्श जीवन और उसका सन्देश कविता को स्थायी, महत्त्वपूर्ण और प्रभावकारी बनाने में अधिक समर्थ होते हैं।

➨ कविता और संगीत

कविता छन्द-बद्ध रचना है। छन्द उसे संगीत प्रदान करता है। छन्द की लय यति-गति, वर्णों की आवृत्ति, तुकान्त पदावली इस संगीत के प्रमुख तत्त्व हैं। किन्तु संगीत और काव्य के क्षेत्र अलग-अलग हैं। संगीत का आनन्द मूलतः नाद का आनन्द है, जबकि काव्य में मूल आनन्द अर्थ का है। कविता में नाद का सौन्दर्य अर्थ का ही अनुगामी होता है। कलात्मक एवं आनन्दानुभूतिमयी छन्द-मुक्त रचनाओं को भी काव्य में स्थान मिलने लगा है।

➨ सादृश्य-विधान

कविता भाव-प्रधान होती है। अपने भावों को पाठक के हृदय तक पहुँचाने के लिए कवि वर्ण्य-विषयों के सदृश अन्य वस्तु-व्यापार प्रस्तुत करता है। जैसे–कमल के सदृश नेत्र, चन्द्र-सा मुख, सिंह के समान वीर। इसी को सादृश्य-विधान या अप्रस्तुत-योजना कहते हैं।

➨ शब्द-शक्ति

शब्द का अर्थ-बोध करानेवाली शक्ति ही शब्द-शक्ति है। शब्द और अर्थ का सम्बन्ध ही शब्द-शक्ति है। शब्द-शक्तियाँ तीन हैं—अभिधा, लक्षणा और व्यञ्जना। अभिधा से मुख्यार्थ का बोध होता है तथा मुख्यार्थ में बाधा होने पर लक्षणा का आश्रय लेना पड़ता है। अन्त में व्यञ्जना में अर्थ मिलता है। कवि का अभिप्रेत अर्थ मुख्यार्थ तक ही सीमित नहीं रहता। काव्यानन्द लेने हेतु शब्दों के लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ तक पहुँचना आवश्यक होता है। कवि फूलों को हँसता हुआ और मुख को मुरझाया हुआ कहना पसन्द करते हैं, जबकि सामान्यतः हँसना मनुष्य के लिए प्रयुक्त होता है और मुरझाना फूल के लिए। परन्तु मुख्यार्थ जाने बिना हम लक्ष्यार्थ तथा व्यंग्यार्थ तक नहीं पहुँच सकते। कवि विवेकपूर्ण सावधानी से शब्द-चयन करता है। कविता के शब्दों का आग्रह जिधर सहज रूप में बढ़े, पाठक अथवा श्रोता को उधर ही अभिमुख होना चाहिए। शब्दों के संयोजन द्वारा ही कविता में नाद-सौन्दर्य भी उत्पन्न होता है।

कविता के सौन्दर्य-तत्त्व

कविता के सौन्दर्य-तत्त्व हैं—
भाव-सौन्दर्य, विचार-सौन्दर्य, नाद-सौन्दर्य और अप्रस्तुत-योजना का सौन्दर्य।

➨ भाव-सौन्दर्य

प्रेम, करुणा, क्रोध, हर्ष, उत्साह आदि का विभिन्न परिस्थितियों में मर्मस्पर्शी चित्रण ही भाव-सौन्दर्य है। भाव-सौन्दर्य को ही साहित्यशास्त्रियों ने रस कहा है। प्राचीन आचार्यों ने रस को काव्य की आत्मा माना है—'रसो हि आत्मा काव्यस्य'।

शृङ्गार, वीर, हास्य, करुण, रौद्र, शान्त, भयानक, अद्‌भुत और वीभत्स—नौ रस कविता में माने जाते हैं। परवर्ती आचार्यों ने वात्सल्य और भक्ति को भी अलग रस माना है। सूर के 'बाल-वर्णन' में वात्सल्य का, 'गोपी-प्रेम' में शृङ्गार का, भूषण की 'शिवा बावनी' में वीर रस का चित्रण है। भाव, विभाव और अनुभाव के योग से रस की निष्पत्ति होती है।

➨ विचार-सौन्दर्य

विचारों की उच्चता से काव्य में गरिमा आती है। गरिमापूर्ण कविताएँ प्रेरणादायक भी सिद्ध होती हैं। उत्तम विचारों एवं नैतिक मूल्यों के कारण ही कबीर, रहीम और तुलसी के नीतिपरक दोहे और गिरधर की कुण्डलियाँ अमर हैं। इनमें जीवन की व्यावहारिक शिक्षा, अनुभव तथा प्रेरणा छिपी है।

आज की कविता में विचार-सौन्दर्य के प्रचुर उदाहरण मिलते हैं। मैथिलीशरण गुप्त की कविता में राष्ट्रीयता और देश-प्रेम आदि का विचार-सौन्दर्य है। 'दिनकर' के काव्य में सत्य, अहिंसा एवं मानवीय मूल्य है। जयशंकर प्रसाद की कविता में राष्ट्रीयता, संस्कृति और गौरवपूर्ण अतीत के रूप में वैचारिक सौन्दर्य देखा जा सकता है। आधुनिक प्रगतिवादी एवं प्रयोगवादी कवि जन-साधारण का चित्रण, शोषितों एवं दीन-हीनों के प्रति सहानुभूति तथा शोषकों के प्रति विरोध आदि प्रगतिवादी विचारों का ही वर्णन करते हुए देखे जाते हैं।

➨ नाद-सौन्दर्य

कविता में छन्द नाद-सौन्दर्य की सृष्टि करता है। छन्द से लय, तुक, गति और प्रवाह का समावेश सही है। वर्ण और शब्द के सार्थक और समुचित विन्यास से कविता में नाद-सौन्दर्य और संगीतात्मकता अनायास ही आ जाती है एवं कविता का सौन्दर्य बढ़ जाता है। यह सौन्दर्य श्रोता और पाठक के हृदय में आकर्षण पैदा करता है। वर्णों की बार-बार आवृत्ति (अनुप्रास), विभिन्न अर्थवाले एक ही शब्द के बार-बार प्रयोग (यमक) से कविता में नाद-सौन्दर्य का समावेश होता है, जैसे—

खग-कुल कुल कुल सा बोल रहा।
किसलय का अंचल डोल रहा॥

यहाँ पक्षियों के कलरव में नाद-सौन्दर्य देखा जा सकता है। कवि ने शब्दों के माध्यम से नाद-सौन्दर्य के साथ पक्षियों के समुदाय और हिलते हुए पत्तों का चित्र प्रस्तुत किया है। '**घन घमण्ड नभ गरजत घोरा**' अथवा '**कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि**' में मेघों का गर्जन-तर्जन तथा नूपुर की ध्वनि का क्रमशः सुमधुर स्वर है। इन दोनों ही स्थलों पर नाद-सौन्दर्य ने भाव भी स्पष्ट किया है और नाद-बिम्ब को साकार कर भाव को गरिमा प्रदान किया है।

बिहारी के निम्नलिखित दोहे में वायुरूपी कुंजर की चाल का वर्णन है। शब्दों की ध्वनि में हाथी के घण्टे की ध्वनि भी सुनायी पड़ती है। कवि की शब्द-योजना में चित्र साकार हो उठा है—

रनित भृंग घण्टावली झरित दान मधु नीर।
मंद-मंद आवतु चल्यो, कुंजर कुंज समीर॥

इसी प्रकार '**घनन घनन बज उठी गरज तत्क्षण रणभेरी**' में मानो रणभेरी प्रत्यक्ष ही बज उठी है। आदि, मध्य अथवा अन्त में तुकान्त शब्दों के प्रयोग से भी नाद-सौन्दर्य उत्पन्न होता है, जैसे—

ढलमल ढलमल चंचल अंचल झलमल झलमल तारा।

इन पंक्तियों में नदी का कल-कल निनाद मुखरित हो उठा है। पदों की आवृत्ति से भी नाद-सौन्दर्य में वृद्धि होती है, जैसे—

माई री वा मुख की मुस्कान सँभारि न जैहै, न जैहै, न जैहै।

अथवा

हमकौं लिख्यौ है कहा, हमकौं लिख्यौ है कहा।
हमकौं लिख्यौ है कहा, कहन सबै लगीं॥

➨ अप्रस्तुत-योजना का सौन्दर्य

कवि विभिन्न दृश्यों, रूपों तथा तथ्यों को मर्मस्पर्शी और हृदयग्राही बनाने के लिए अप्रस्तुतों का सहारा लेता है। अप्रस्तुत-योजना में यह आवश्यक है कि उपमेय हेतु जिस उपमान की, प्रकृत हेतु जिस अप्रकृत की और प्रस्तुत हेतु जिस अप्रस्तुत की योजना की जाय, उसमें सादृश्य अवश्य होना चाहिए। सादृश्य के साथ-साथ यह भी आवश्यक है कि उसमें जिस वस्तु, व्यापार एवं गुण के सदृश जो वस्तु, व्यापार और गुण लाया जाय, वह उसके भाव के अनुकूल हो। इन अप्रस्तुतों के सहयोग से कवि भाव-सौन्दर्य की अनुभूति को सहज एवं सुलभ बनाता है। कवि कभी रूप-साम्य, कभी धर्म-साम्य और कभी भाव-साम्य के आधार पर दृश्य-बिम्ब उभारकर सौन्दर्य व्यञ्जित करता है।

➨ रूप-साम्य

करतल परस्पर शोक से, उनके स्वयं घर्षित हुए,
तब विस्फुरित होते हुए, भुजदण्ड यों दर्शित हुए,
दो पद्म शुण्डों में लिये, दो शुण्डवाला गज कहीं,
मर्दन करे उनको परस्पर, तो मिले उपमा कहीं।

शुण्ड के समान ही भुजदण्ड भी प्रचण्ड है और करतल अरुण तथा कोमल है। यह प्रभाव आकार-साम्य से ही उत्पन्न हुआ है।

➨ धर्म-साम्य

नवप्रभा परमोज्ज्वल लीक सी गतिमती कुटिला फणिनी समा।
दमकती दुरती घन अंक में विपुल केलि कला खनि दामिनी॥

फणिनी (सर्पिणी) और दामिनी दोनों का धर्म कुटिल गति है, दोनों ही आतंक का प्रभाव उत्पन्न करती हैं।

➨ भाव-साम्य

प्रिय पति, वह मेरा प्राण प्यारा कहाँ है?
दुख जलनिधि डूबी का सहारा कहाँ है?
लख मुख जिसका मैं आज लौं जी सकी हूँ,
वह हृदय हमारा नेत्र तारा कहाँ है?

यशोदा की विकलता को व्यक्त करने के लिए कवि ने कृष्ण को दुःख जलनिधि डूबी का सहारा, प्राण-प्यारा, नेत्र-तारा, हृदय हमारा कहा है।

निम्नलिखित पंक्तियों में सादृश्य से श्रद्धा के सहज सौन्दर्य का चित्रण हुआ है। मेघों के बीच जैसे बिजली तड़पकर चमक पैदा कर देती है, वैसे ही नीले वस्त्रों से घिरी श्रद्धा का सौन्दर्य देखनेवाले के मन को प्रभावित करता है—

नील परिधान बीच सुकुमार खुल रहा मृदुल अधखुला अंग।
खिला हो ज्यों बिजली का फूल, मेघ बन बीच गुलाबी रंग॥

इसी प्रकार—

लता भवन ते प्रगट भे तेहि अवसर दोउ भाइ।
निकसे जनु जुग बिमल बिधु जलद पटल बिलगाइ॥

लता-भवन से प्रकट होते हुए दोनों भाइयों की समुचित उत्प्रेक्षा मेघ-पटल से निकलते हुए दो चन्द्रमाओं से की गयी है।

काव्यास्वादन

कविता का आस्वादन उसके अर्थ-ग्रहण में है। अतः पहले शब्दों का मुख्यार्थ समझना आवश्यक है। मुख्यार्थ समझने के लिए अन्वय करना भी आवश्यक है, क्योंकि कविता की वाक्य-संरचना में प्रायः शब्दों का वह क्रम नहीं रहता, जो गद्य में होता है। अतः अन्वय से शब्दों का परस्पर सम्बन्ध स्पष्ट हो जाता है और अर्थ खुल जाता है। इस प्रक्रिया में शब्द के वाच्यार्थ के साथ-साथ उसमें निहित लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ भी स्पष्ट हो जाते हैं। कभी-कभी कवि कविता में ऐसे शब्दों का साभिप्राय प्रयोग करता है, जिनके स्थान पर उनके पर्याय नहीं रखे जा सकते। कभी-कभी एक शब्द के एकाधिक अर्थ होते हैं तथा सभी उस प्रसंग में लागू होते हैं, कभी एक ही शब्द अलग-अलग अर्थों में एकाधिक बार प्रयुक्त होता है, कभी विरोधी शब्दों का प्रयोग भाव-वृद्धि के लिए किया जाता है और कभी एक ही प्रसंग के कई शब्द एक साथ आते हैं। ऐसे शब्दों की ओर ध्यान देकर अपेक्षित अर्थ जानना चाहिए।

कविता के जिन तत्त्वों का उल्लेख किया गया है उनके सन्दर्भ में काव्यास्वादन का प्रयास करना चाहिए। काव्यास्वादन के लिए कविता को बार-बार सस्वर पढ़ना आवश्यक है। इसके लिए निम्नलिखित बातें सहायक हैं—

1. कविता के मूलभाव को समझकर अपने शब्दों में लिखना।
2. रस, अलङ्कार, गुण और छन्द आदि को समझकर कविता में इनकी उपयोगिता को हृदयंगम करना।
3. अच्छे भाववाले पदों को कण्ठस्थ करना तथा उनका सस्वर पाठ करना।

➨ काव्य के भेद

काव्य दो प्रकार के होते हैं—श्रव्य काव्य और दृश्य काव्य। श्रव्य काव्य वह काव्य है जो कानों से सुना जाता है। दृश्य काव्य वह है जो अभिनय के माध्यम से देखा-सुना जाता है, जैसे– एकांकी, नाटक।

श्रव्य काव्य के दो भेद हैं—**प्रबन्ध काव्य** और **मुक्तक काव्य**। प्रबन्ध काव्य के अन्तर्गत महाकाव्य, खण्डकाव्य तथा आख्यानक गीतियाँ आती हैं।

मुक्तक काव्य के भी दो भेद हैं—पाठ्य मुक्तक तथा गेय मुक्तक।

प्रबन्ध काव्य

➨ महाकाव्य

प्राचीन आचार्यों के अनुसार महाकाव्य में जीवन का व्यापक रूप में चित्रण होता है। इसकी कथा इतिहास-प्रसिद्ध होती है। इसका नायक उदात्त और महान् चरित्रवाला होता है। इसमें वीर, शृङ्गार तथा शान्त रस में से कोई एक रस प्रधान तथा शेष रस गौण होते हैं। महाकाव्य सर्गबद्ध होता है तथा इसमें कम-से-कम आठ सर्ग होने चाहिए। महाकाव्य की कथा में धारावाहिकता तथा हृदय को भाव-विभोर करनेवाले मार्मिक प्रसंगों का समावेश भी होना चाहिए।

आधुनिक युग में महाकाव्य के प्राचीन प्रतिमानों में परिवर्तन हुआ है। इतिहास के स्थान पर मानव-जीवन की कोई भी घटना, कोई भी समस्या, इसका विषय हो सकती है। महान् पुरुष के स्थान पर समाज का कोई भी व्यक्ति इसका नायक हो सकता है। परन्तु उस पात्र में विशेष क्षमताओं का होना अनिवार्य है। हिन्दी के कुछ प्रसिद्ध महाकाव्य हैं—**पद्मावत, रामचरितमानस, साकेत, प्रियप्रवास, कामायनी, उर्वशी, लोकायतन।**

➨ खण्डकाव्य

खण्डकाव्य में नायक के जीवन के व्यापक चित्रण के स्थान पर उसके किसी एक पक्ष, अंश अथवा रूप का चित्रण होता है। लेकिन खण्डकाव्य महाकाव्य का संक्षिप्त रूप अथवा एक सर्ग नहीं है। खण्डकाव्य में अपनी पूर्णता होती है। समस्त खण्डकाव्य में एक ही छन्द प्रयुक्त होता है।

पंचवटी, जयद्रथ-वध, नहुष, सुदामा-चरित, पथिक, गंगावतरण, हल्दी घाटी आदि हिन्दी के कुछ प्रसिद्ध खण्डकाव्य हैं।

➨ आख्यानक गीतियाँ

महाकाव्य और खण्डकाव्य से भिन्न पद्यबद्ध कहानी का नाम आख्यानक गीति है। इसमें वीरता, साहस, पराक्रम, बलिदान,

प्रेम और करुणा आदि के प्रेरक घटना-चित्रों से कथा कही जाती है। इसकी भाषा सरल, स्पष्ट और रोचक होती है। गीतात्मकता और नाटकीयता इसकी विशेषताएँ हैं। **झाँसी की रानी, रंग में भंग, विकट भट** आदि रचनाएँ आख्यानक गीतियाँ ही हैं।

मुक्तक काव्य

मुक्तक काव्य महाकाव्य और खण्डकाव्य से भिन्न प्रकार का होता है। इसमें एक अनुभूति, एक भाव या कल्पना का चित्रण होता है। इसमें महाकाव्य या खण्डकाव्य-जैसी धारावाहिकता न होने पर भी वर्ण्य-विषय अपने में पूर्ण होता है। प्रत्येक छन्द स्वतन्त्र होता है। जैसे–कबीर, बिहारी, रहीम के दोहे तथा सूर और मीरा के पद।

➨ पाठ्य मुक्तक

इसमें विषय की प्रधानता रहती है। किसी में किसी प्रसंग को लेकर भावानुभूति का चित्रण होता है और किसी में किसी विचार अथवा रीति का वर्णन किया जाता है। कबीर, तुलसी, रहीम के भक्ति एवं नीति के दोहे तथा बिहारी, मतिराम, देव आदि की रचनाएँ इसी कोटि में आती हैं।

➨ गेय मुक्तक

इसे गीति या प्रगीति काव्य भी कहते हैं। यह अंग्रेजी के लिरिक का समानार्थी है। इसमें भावप्रवणता, आत्माभिव्यक्ति, सौन्दर्यमयी कल्पना, संक्षिप्तता, संगीतात्मकता की प्रधानता होती है।

हिन्दी पद्य-साहित्य का इतिहास

हिन्दी साहित्य का आविर्भाव सर्वप्रथम पद्य से हुआ था। विद्वानों ने हिन्दी पद्य के इतिहास को युग की विशेष प्रवृत्तियों के आधार पर चार कालों में विभाजित किया है—

1. आदिकाल (वीरगाथा काल)	800 विक्रमी सं० से 1400 वि० सं० तक (सन् 743 ई० से 1343 ई० तक)
2. पूर्व-मध्य काल (भक्तिकाल)	1400 वि० सं० से 1700 वि० सं० तक (सन् 1343 ई० से 1643 ई० तक)
3. उत्तर-मध्य काल (रीतिकाल)	1700 वि० सं० से 1900 वि० सं० तक (सन् 1643 ई० से 1843 ई० तक)
4. आधुनिक काल	1900 वि० सं० से अब तक (सन् 1843 ई० से आज तक)

हिन्दी पद्य साहित्य के विभिन्न कालों से सम्बन्धित शाखाएँ

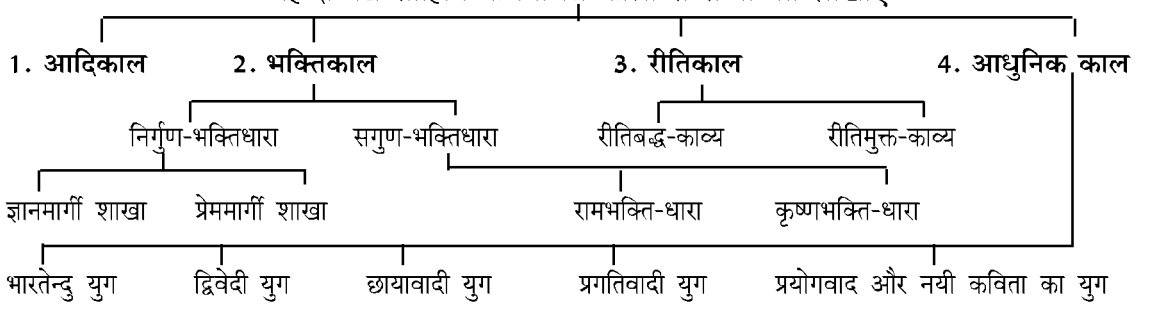

➨ आदिकाल (सन् 743 ई0 से 1343 ई0 तक)

हिन्दी के प्रथम उत्थान काल को वीरगाथा काल, चारण काल आदि नाम दिये गये हैं। उस समय देश अनेक छोटे-छोटे राज्यों में बँटा हुआ था। इन राज्यों के राजपूत राजा आपस में लड़ते थे। स्वभाव से वे वीर, साहसी एवं विलासप्रिय थे। छोटी-छोटी बातों पर मन-मुटाव, ईर्ष्या तथा एक-दूसरे को नीचा दिखाने की प्रवृत्ति के कारण प्रायः इनमें लड़ाइयाँ होती रहती थीं। मुसलमानों के आक्रमण इसी समय आरम्भ हो गये थे। इस समय वीर पुरुषों के यशोगान तथा वीरता का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन ही कविता का मुख्य विषय था। इस काल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ संक्षेप में इस प्रकार हैं—

1. आश्रयदाता राजाओं की प्रशंसा।
2. सामूहिक राष्ट्रीयता की भावना का अभाव।
3. युद्धों के सुन्दर और सजीव वर्णन।
4. वीर रस के साथ शृङ्गार का भी वर्णन।
5. ऐतिहासिक वृत्तों में कल्पना का प्राचुर्य।

इस काल की रचनाएँ दो रूपों में मिलती हैं—

1. प्रबन्ध काव्य के रूप में। 2. वीर गीतों के रूप में।

वीर गीत काव्यों में सर्वाधिक प्रसिद्ध और लोकप्रिय काव्य 'आल्हा खण्ड' है। जगनिक नामक भाट कवि द्वारा रचित इस काव्य में महोबे के दो प्रसिद्ध वीरों—आल्हा तथा ऊदल (उदय सिंह) के वीर चरितों का विस्तृत वर्णन है। यह बहुत ही लोकप्रिय है तथा इसके गीत आज भी वर्षा ऋतु में उत्तर भारत के प्रत्येक गाँव में ढोलक की थाप के साथ गाये जाते हैं।

इस काल में कुछ शृङ्गार रस की तथा भक्ति की रचनाएँ भी हुईं। किन्तु प्रमुखता वीर रस के काव्यों की ही रही। विद्यापति तथा अब्दुलरहमान इस युग के अन्य प्रसिद्ध रचनाकार हैं। वीरगाथाकालीन ग्रन्थों में विविध छन्दों का प्रयोग मिलता है। दोहा, सोरठा, त्रोटक, तोमर, चौपाई, गाथा, आर्या, रोला, छप्पय, कुण्डलिया आदि छन्दों का कलात्मक प्रयोग हुआ है।

➨ भक्तिकाल (सन् 1343 ई0 से 1643 ई0 तक)

आदिकाल के समाप्त होते-होते देश में राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियाँ बदल गयीं। मुसलमानों का राज्य प्रतिष्ठित हो जाने पर परस्पर लड़ते रहनेवाले छोटे-छोटे राजा भी अब न रहे। इसी परिवर्तित परिस्थिति में भक्ति-भावना का उदय हुआ। 14वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इस भक्ति-भावना ने हिन्दी काव्य को विशेष रूप से प्रभावित किया। इसी काल में भक्ति की कई शाखाओं का विकास हुआ। अध्ययन-सुविधा हेतु इस काल के काव्य को दो शाखाओं में विभाजित किया जाता है—निर्गुण शाखा तथा सगुण शाखा। प्रथम की ज्ञानाश्रयी और प्रेमाश्रयी तथा द्वितीय की रामाश्रयी और कृष्णाश्रयी दो-दो उपशाखाएँ हैं।

निर्गुण भक्ति शाखा—इसमें ब्रह्म (ईश्वर) के निराकार स्वरूप की उपासना की विधि अपनायी गयी। इसकी ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि कबीरदास हैं। अन्य प्रसिद्ध कवियों में सन्त रैदास (रविदास), नानक, दादू, मलूकदास, धर्मदास तथा सुन्दरदास हैं। इन भक्तों ने साधना के सहज मार्ग को अपनाया; साथ ही जाति-पाँति, तीर्थ-व्रत आदि बाह्याडम्बरों का विरोध किया। इनकी रचनाओं में साहित्यिक सौन्दर्य चाहे अधिक न हो, किन्तु भाव की दृष्टि से वे अत्यन्त समृद्ध तथा प्रभावोत्पादक हैं। इनकी भाषा पंचमेल सधुक्कड़ी है।

निर्गुण शाखा की दूसरी उपशाखा प्रेमाश्रयी के नाम से प्रसिद्ध है। इसे पल्लवित करने का श्रेय सूफी मुसलमान कवियों को है। इन कवियों ने लोक-प्रचलित हिन्दू राजकुमारों तथा राजकुमारियों की प्रेम-गाथाओं को फारसी की मसनवी शैली के माध्यम से अति आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया है। इनकी कविताएँ दोहा और चौपाई छन्दों में हैं। प्रेम की पीर, विरह-वेदना की तीव्रता, कथा की रोचकता और कल्पना तथा इतिहास का समन्वय इन सूफी कवियों की प्रमुख विशेषताएँ हैं। इस शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि मलिक मुहम्मद जायसी हैं, जिनका पद्मावत (आख्यान काव्य) हिन्दी साहित्य का एक अनमोल ग्रन्थ-रत्न है। इसकी कहानी में इतिहास तथा कल्पना का योग है। चित्तौड़ की महारानी पद्मिनी या पद्मावती तथा राजा रत्नसेन की कहानी इसमें प्रस्तुत की गयी है। इसमें लौकिक आख्यान द्वारा पारलौकिक प्रेम की व्यञ्जना है। जायसी कृत पद्मावत की भाषा अवधी है। **आचार्य शुक्ल** के शब्दों में 'अवधी की खालिस, बेमेल मिठास' के लिए पद्मावत बराबर याद किया जायगा।

कुतबन कृत **'मृगावती'**, मंझन कृत **'मधुमालती'**, उस्मान कृत **'चित्रावली'**, शेखनबी कृत **'ज्ञानदीप'**, कासिमशाह कृत **'हंस-जवाहिर'** तथा नूर मुहम्मद कृत **'इन्द्रावती'** अन्य प्रमुख प्रेमाख्यानक काव्य हैं।

सगुण भक्ति-शाखा—11वीं शताब्दी में स्वामी रामानुजाचार्य भक्ति के क्षेत्र में अवतार-भावना को प्रतिष्ठित कर चुके थे। उन्हीं की शिष्य-परम्परा में 15वीं शताब्दी में स्वामी रामानन्द जी हुए, जिन्होंने जनता की चित्तवृत्तियों को समझने का सत्प्रयास किया तथा जनता के बीच राम-भक्ति का प्रचार किया। रामानन्द जी की शिष्य-परम्परा में गोस्वामी तुलसीदास जी हुए, जिन्होंने दशरथ-पुत्र, मर्यादा-पुरुषोत्तम श्रीराम का शक्ति-शील-सौन्दर्य रूप 'रामचरितमानस' महाकाव्य में प्रस्तुत किया। राम-भक्ति की यह पावन मन्दाकिनी न जाने कितनों के मन का कल्मष बहा ले गयी। तुलसीदास जी द्वारा स्थापित लोक-आदर्श और राम-राज की महान् कल्पना भारतीय समाज को ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व को एक बड़ी देन है।

यह महाकाव्य अवधी भाषा में लिखा गया है तथा इसमें जायसी द्वारा अपनायी गयी दोहा-चौपाई शैली का परिष्कृत साहित्यिक रूप मिलता है। रामचरितमानस की कथा का मूलस्रोत वाल्मीकि 'रामायण' है। इस महाकाव्य में जीवन की सर्वाङ्गीणता है। रचना-कौशल, प्रबन्ध-पटुता, भाव-प्रवणता, रस, रीति, अलङ्कार, छन्द आदि सभी दृष्टियों से यह उत्कृष्ट काव्य-कृति कही जा सकती है। तुलसीदास की रचना का उद्देश्य लोकमङ्गल की साधना है। उन्होंने मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीरामचन्द्र के लोक-संग्रही चरित्र को काव्य का विषय बनाकर भारतीय संस्कृति, समाज और साहित्य को शक्ति प्रदान की है।

सगुणोपासना की दूसरी शाखा कृष्णाश्रयी शाखा कहलाती है। इसके अन्तर्गत श्रीकृष्ण की पूर्ण ब्रह्म के रूप में प्रतिष्ठा हुई। कृष्ण भक्ति के प्रवर्तन का श्रेय श्री वल्लभाचार्य को है। वे अपने आराध्य श्रीकृष्ण की जन्म-भूमि में रहे और उन्होंने गोवर्धन पर्वत पर श्रीनाथ जी का एक बड़ा मन्दिर बनवाया। कृष्ण भक्ति शाखा के सर्वोत्कृष्ट कवि सूरदास हैं, जिन्होंने कृष्ण-लीला के मधुर पद गाकर प्रेम और संगीत की ऐसी मन्दाकिनी बहायी, जिसमें डुबकी लगाकर जनता का हृदय आनन्दमग्न हो गया। सूरदास कृत 'सूर-सागर' हिन्दी साहित्य की अक्षय निधि है। 'साहित्य-लहरी' और 'सूर-सारावली' भी उन्हीं की रचनाएँ मानी जाती हैं। सूर-सागर के अन्तर्गत सवा लाख पद रचने की बात कही गयी है, पर लगभग दस हजार पद ही मिलते हैं। इसमें विनय, बाल-लीला, गोचारण, गोपी-प्रेम, भ्रमर-गीत आदि से सम्बन्धित बड़े ही सूक्ष्म भाव-चित्र पाये जाते हैं। कृष्ण-भक्त कवियों में **सूरदास** के अतिरिक्त **नन्ददास, परमानन्ददास, कृष्णदास, कुम्भनदास, चतुर्भुजदास, छीतस्वामी तथा गोविन्दस्वामी हैं।** आठ कवियों के इस समुदाय को **अष्टछाप** कहते हैं। अन्य कृष्णभक्त कवियों में मीराबाई और रसखान विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

➨ रीतिकाल (सन् 1643 ई0 से 1843 ई0 तक)

काव्यशास्त्र में रीति का तात्पर्य काव्यशास्त्र के विभिन्न अंगों–रस, ध्वनि, अलङ्कार, गुण-दोष, नायिका-भेद कथन के विवेचन से है। जिस ग्रन्थ में काव्य के इन अंगों-उपांगों का निरूपण किया जाता है, उसे रीति ग्रन्थ कहते हैं। 16वीं-17वीं शताब्दी तक इस देश में मुगल साम्राज्य पूर्णतः प्रतिष्ठित होकर वैभव के शिखर पर था। जन-जीवन भी सुख-शान्तिपूर्ण था। साहित्य पर इस परिस्थिति का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। पहले कृष्ण तथा राधा भक्ति के आलम्बन थे, वे अब शृङ्गार के आलम्बन बन गये। इसके अतिरिक्त एक अन्य परिवर्तन भी आया। कवियों का ध्यान साहित्य-शास्त्र की ओर गया और उन्होंने रस, अलङ्कार, छन्द, नायक-नायिका आदि के उदाहरण रूप में काव्य-रचना की। इस प्रकार की रचनाओं को रीति ग्रन्थ या लक्षण ग्रन्थ कहा जाता है। इस काल में ऐसी रीतिपरक रचनाएँ अधिक हुईं और इसी कारण इसे रीतिकाल कहा जाता है।

रीति ग्रन्थ दो रूपों में मिलते हैं। एक वे जो अलङ्कार पर आधृत हैं और दूसरे वे जो रस पर। यहाँ संस्कृत की ही परम्परा का पालन दिखायी पड़ता है। केशव, भूषण और राजा यशवन्त सिंह अलङ्कारवादी आचार्य कवि थे। मतिराम, देव और पद्माकर रसवादी थे। रसवादी कवियों ने शृङ्गार रस के अन्तर्गत नायक-नायिकाओं की मनोदशाओं का विशद् वर्णन किया है। कुछ ऐसे भी उत्कृष्ट कवि हुए हैं जिनकी रचनाएँ रीतिबद्ध नहीं हैं। बिहारी और घनानन्द का नाम इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय है। शृङ्गार के अतिरिक्त इस काल में कुछ भक्ति, नीति तथा वीर काव्य भी रचे गये। भूषण, गोरेलाल और सूदन वीर रस के कवि थे। वृन्द, गिरधर और दीनदयाल गिरि नीतिपरक रचनाओं के लिए प्रसिद्ध हैं।

प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ

केशव	:	रामचन्द्रिका, कविप्रिया;
भूषण	:	शिवराज भूषण, शिवाबावनी, छत्रसाल दशक;
मतिराम	:	रसराज, ललित-ललाम;
बिहारी	:	सतसई;
पद्माकर	:	पद्माभरण, जगद्विनोद, गंगा लहरी।

रीतिकाल के कवि प्रायःराजाश्रय में रहते थे। इसलिए इनकी रचनाओं में अपने आश्रयदाताओं की प्रशस्तियाँ भी मिलती हैं।

रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ—रीतिग्रन्थों का निर्माण, श्रृंगार रस की प्रमुखता, काव्य-भाषा के रूप में ब्रजभाषा की प्रतिष्ठा और व्यापक प्रसार; सवैया और दोहा छन्दों का प्रचुर प्रयोग; प्रकृति का उद्दीपन रूप में चित्रण; आश्रयदाताओं की प्रशंसा, कला-पक्ष की प्रधानता आदि इस काल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं।

रीतिकाल की देन—इस युग की प्रमुख देन यह है कि ब्रजभाषा, काव्य भाषा के रूप में व्यापक रूप से प्रतिष्ठित हुई। अर्थ-गौरव, चमत्कार, लाक्षणिकता, सूक्ष्म भावाभिव्यञ्जन आदि की दृष्टि से वह पूर्ण समर्थ भाषा बन गयी। घनानन्द की लाक्षणिकता तो अद्वितीय है। कविता, सवैया और दोहा मुक्तक काव्य-रचना के लिए सिद्ध छन्द बन गये।

➨ आधुनिक काल (सन् 1843 ई0 से आज तक)

आधुनिक युग में देश में राष्ट्रीय आन्दोलनों के प्रारम्भ होने से लोगों के आत्म-गौरव का प्रभाव हिन्दी कविता पर पड़ना स्वाभाविक था। अतः देश-हित, समाज-सुधार, धर्म-सुधार आदि नवीन विषयों पर कविताएँ लिखी जाने लगीं। पद्य में नवीन वादों और नवीन शैलियों का प्रचलन हुआ और उन नवीन शैलियों में कविता रची जाने लगी। आधुनिक काल, गद्य काल, नवीन विकास का काल, पुनर्जागरण काल आदि इस काल के कुछ प्रमुख नाम हैं।

हिन्दी काव्य के आधुनिक काल को भारतेन्दु, द्विवेदी, छायावादी धारा तथा नयी कविता के युगों में क्रमशः विभाजित किया गया है—

➨ भारतेन्दु-युग

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र आधुनिक साहित्य के जन्मदाता माने जाते हैं। रीतिकाल में कवियों का नाता जन-जीवन से टूट चुका था। भारतेन्दु-युग के कवियों ने इस सम्पर्क को फिर स्थापित किया और जन-भावना को वाणी दी। इस युग में खड़ीबोली गद्य की भाषा तो बन चुकी थी, किन्तु काव्य के क्षेत्र में ब्रजभाषा की ही प्रधानता रही। काव्य-विषय की दृष्टि से भी नवीनता आयी। गद्य के क्षेत्र में जहाँ नाटक, उपन्यास, कहानी, निबन्ध और आलोचना आदि का विकास हुआ, वहाँ काव्य के क्षेत्र में भारतीय संस्कृति-प्रेम, स्वदेश-प्रेम, समाज-सुधार, प्रकृति-चित्रण आदि विषयों का समावेश हुआ।

➨ द्विवेदी-युग

—द्विवेदी जी के अवतरित होते ही खड़ीबोली का आन्दोलन बड़े जोरों से चला। द्विवेदी जी से प्रेरणा पाकर अनेक तरुण कवियों ने खड़ीबोली में काव्य-रचना आरम्भ की। श्रीधर पाठक, मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', मुकुटधर पाण्डेय, लोचनप्रसाद पाण्डेय, रामनरेश त्रिपाठी, रामचरित उपाध्याय आदि कवियों ने खड़ीबोली में काव्य-रचना की। मैथिलीशरण गुप्त ने 'साकेत' तथा हरिऔध ने 'प्रिय प्रवास' नामक महाकाव्य की रचना इसी युग में की। गुप्त जी ने अनेक खण्डकाव्यों की भी रचना की। इस युग की कविता इतिवृत्तात्मकता एवं वर्णन-प्रधान थी। खड़ीबोली को समृद्ध और गतिशील बनाने का बहुत-कुछ श्रेय आचार्य द्विवेदी को ही जाता है और इसी कारण इस युग का नाम द्विवेदी-युग पड़ा।

➨ छायावादी युग

द्विवेदी-युग के बाद छायावाद युग का आगमन हुआ। ऐसा लगता है मानो विदेशी शासन के अत्याचारों, नैतिकता की कठोरता से जकड़े हुए नियमों तथा आर्थिक कष्टों से उत्पन्न कवियों का विक्षोभ और असन्तोष वर्तमान से दूर किसी काल्पनिक संसार में जाने के लिए मचल उठा। वास्तव में छायावादी काव्य द्विवेदी-युग की इतिवृत्तात्मकता की प्रतिक्रिया थी। **प्रसाद, पन्त, निराला** और **महादेवी** छायावाद के प्रमुख स्तम्भ कवि हैं।

वैयक्तिक अनुभूति की प्रबलता (आत्मपरक रचनाएँ), सौन्दर्य-भावना, शृङ्गार और प्रेम, वेदना, करुणा तथा नैराश्य की भावना, प्रकृति का मानवीकरण, रहस्य भावना इस युग की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं। छायावादी काव्य में अनुभूति एवं भावुकता के साथ चिन्तन की भी प्रधानता है। जीवन की चिरन्तन समस्याओं पर भी इस युग के कवियों ने अपने विचार व्यक्त किये हैं। मानवतावाद तथा देश-प्रेम की भावना भी इस काल के काव्य में मिलती है।

छायावादी युग प्रधानतः मुक्तक गीतों का युग है। ये मुक्तक गीत गेय तथा संगीतात्मक हैं। निराला और महादेवी के काव्यों में गीति का सुन्दर विधान है। रामकुमार वर्मा के गीत भी लोकप्रिय हुए हैं। चित्रमयी कल्पना तथा लाक्षणिक प्रतीकात्मक शैलियों को अपनाकर छायावादी कवियों ने कविता को सजीव और सरस बना दिया। प्रभावानुकूल छन्द चयन करने में भी इन्होंने अपनी मौलिकता का प्रदर्शन किया। अलङ्कारों के प्रयोग में भी नवीनता है। मानवीकरण तथा विशेषण-विपर्यय-जैसे नये अलङ्कारों का

उदय एवं प्रचुर प्रयोग हुआ। भाषा (खड़ीबोली) को सँवारने, उसमें ब्रजभाषा-जैसा लोच और सरसता लाने, उसकी अभिव्यञ्जना शक्ति बढ़ाने का समस्त श्रेय इस युग को ही दिया गया है।

➨ प्रगतिवादी युग

द्विवेदी-युग की इतिवृत्तात्मकता, आदर्शवादिता और नैतिकता के विरुद्ध विद्रोह छायावादी काव्य में हुआ था, किन्तु छायावादी काव्य में सूक्ष्म और वायवीय कल्पनाओं की इतनी अतिशयता हो गयी कि स्थूल जगत् की कठोर वास्तविकता से उसका कोई सम्बन्ध ही न रह गया था।

परिणामतः प्रगतिवादी कविता में छायावादी कविता की सूक्ष्मता और अतिकाल्पनिकता के प्रति विद्रोह हुआ। प्रगतिवादी कवि स्थूल जगत् की वास्तविकता की ओर लौटा। कार्ल मार्क्स के साम्यवाद को आधार बनाकर रोटी-कपड़ा-मकान की समस्या और मजदूरों-किसानों की दयनीय दशा को कविता का विषय बनाया गया। इन कवियों ने पूँजीवाद के विरुद्ध आवाज उठायी। सीधी-सादी अनलंकृत भाषा में अपनी बात कह देना (सपाटबयानी) इनकी विशेषता है। प्रगतिवादी कवियों में **पन्त, निराला, दिनकर, भगवतीचरण वर्मा, नरेन्द्र शर्मा, रामविलास शर्मा, शिवमंगल सिंह 'सुमन', नागार्जुन** और **केदारनाथ अग्रवाल** आदि मुख्य हैं। इनमें से कुछ कवियों की कविताओं में सामाजिक क्रान्ति का स्वर अधिक प्रखर है। प्रगतिवादी कवियों ने छन्द के बन्धन की अनिवार्यता को नहीं माना।

प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ

भारतेन्दु-युग	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र श्रीधर पाठक	प्रेम-माधुरी कश्मीर-सुषमा
द्विवेदी-युग	मैथिलीशरण गुप्त अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	साकेत प्रियप्रवास
छायावादी युग	जयशंकर 'प्रसाद' महादेवी वर्मा	कामायनी यामा
प्रगतिवादी युग	शिवमंगल सिंह 'सुमन' रामधारीसिंह 'दिनकर'	प्रलय सृजन उर्वशी
प्रयोगवादी युग	'अज्ञेय' नागार्जुन	आँगन के पार द्वार प्यासी-पथरायी आँखें
नयी कविता युग	गिरिजाकुमार माथुर भवानीप्रसाद मिश्र	धूप के धान खुशबू के शिलालेख

प्राचीन रूढ़ियों और मान्यताओं का विरोध, मानवतावादी प्रवृत्ति, शोषक वर्ग के प्रति घृणा तथा शोषितों के प्रति सहानुभूति, विद्रोह एवं क्रान्ति की भावना, समाज का यथार्थवादी चित्रण, नारी के प्रति परिवर्तित दृष्टिकोण आदि इस प्रगतिवादी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं।

प्रयोगवादी धारा एवं नयी कविता युग

प्रयोगवाद का आरम्भ, अज्ञेय द्वारा सम्पादित तथा सन् 1943 ई० में प्रकाशित 'तारसप्तक' संकलन से माना जाता है। **प्रथम 'तारसप्तक'** में सात कवियों की रचनाएँ हैं। इन्हें सम्पादक अज्ञेय ने 'राहों का अन्वेषी' कहा था। ये सात कवि थे—अज्ञेय, गजानन माधव 'मुक्तिबोध', नेमिचन्द्र, भारतभूषण, प्रभाकर माचवे, गिरिजाकुमार माथुर तथा रामविलास शर्मा। सन् 1951 ई० में **दूसरा सप्तक** प्रकाशित हुआ, जिसके सात कवि थे—भवानीप्रसाद मिश्र, शकुन्तला माथुर, हरिनारायण व्यास, शमशेर बहादुर, नरेश मेहता, रघुवीर सहाय तथा धर्मवीर भारती। सन् 1959 ई० में **तीसरा सप्तक** भी प्रकाशित हुआ। प्रयोगवाद

के समर्थन में कुछ पत्र-पत्रिकाएँ भी निकलीं। कुछ प्रयोगवादी कवियों के कविता-संग्रह भी प्रकाशित हुए। अज्ञेय रचित 'हरी घास पर क्षण भर', 'सुनहरे शैवाल', 'इन्द्र धनु रौंदे हुए थे', 'आँगन के पार द्वार', भवानीप्रसाद मिश्र कृत 'गीत फरोश', 'खुशबू के शिलालेख', गिरिजाकुमार माथुर कृत 'धूप के धान', 'शिलापंख चमकीले', धर्मवीर भारती कृत 'ठण्डा लोहा', 'कनुप्रिया' आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

घोर वैयक्तिकता, अतियथार्थवादी दृष्टिकोण, कुण्ठा और निराशा के स्वर, गहन बौद्धिकता, भदेस (अनगढ़, विरूप) का चित्रण, विद्रोह का स्वर, व्यंग्य तथा कटूक्ति प्रयोगवादी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं।

भाषा और शिल्प के क्षेत्र में इन कवियों ने नये प्रयोग किये हैं। साहित्यिक हिन्दी के साथ अंग्रेजी, उर्दू, बँगला तथा अन्य आंचलिक शब्दों का प्रयोग भी इन्होंने किया है। यह कविता मुक्तक शैली में रची गयी है। नवीन बिम्ब-योजना तथा नवीन उपमानों का प्रयोग (लालटेन से नयन-दीप, हड्डी के रंगवाला बादल, मजदूरिनी-सी रात आदि) भी इसकी विशेषता है। प्रयोगवादी कविता ने हिन्दी काव्य को नयी सशक्त भाषा दी है तथा इसकी अभिव्यञ्जना शक्ति में वृद्धि की है।

प्रयोगवादी धारा विकसित होकर नयी कविता के रूप में आयी। सन् 1960 ई० के बाद नयी कविता का युग आया। इन वर्षों में ऐसी वाद-मुक्त कविता रची गयी है जो किसी विशेष प्रवृत्ति 'स्कूल' या 'वाद' से बँधकर नहीं चली। इसमें 'लघुमानव' के महत्त्व की प्रतिष्ठा की गयी। इस प्रवृत्ति से यह आशय हुआ कि व्यक्ति की सामान्य मनःस्थितियों को अभिव्यक्त करनेवाली कुछ ऐसी कविताएँ लिखी गयीं जो सचमुच नयी थीं। वे मध्यवर्गीय व्यक्ति के मन की जटिलाओं को अधिक अपनेपन से प्रकट करती हैं—यद्यपि उन्हें समझने का उतना प्रयास नहीं करतीं।

नयी कविता के अनन्तर अकविता का दौर आया, उसमें अस्वीकृति के तेवर चरम सीमा पर पहुँच गये। अकविता का आशय ऐसी काव्य-प्रवृत्ति से था, जैसी कविता अब तक नहीं हुई है। इसमें उसके नाम की ही परम्परा का पूर्णरूपेण नकारने का भाव रहा है। इस प्रवृत्ति का निराकरण अथवा निवारण मुक्तिबोध तथा धूमिल आदि की कविताओं के प्रकाशन-प्रचारोपरान्त हुआ।

●●

हिन्दी पद्य-साहित्य के इतिहास से सम्बन्धित प्रश्न

1. रीतिकाल की किन्हीं चार प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए। **(2017AC,AB,AD,AG,19AC,AE,20MB)**

अथवा रीतिकाल की दो विशेषताएँ लिखिए। **(2020MG,ME)**

2. सगुण भक्ति-शाखा के दो प्रसिद्ध कवियों के नाम लिखिए तथा उनकी एक-एक रचना का उल्लेख कीजिए।

3. हिन्दी पद्य-साहित्य के आधुनिक काल की चार शाखाओं के नाम लिखिए।

4. निम्नलिखित रचनाओं में से किसी एक रचना के कवि का नाम लिखिए–

(i) साहित्य लहरी (ii) लोकायतन

(iii) रश्मि (iv) त्रिधारा

(v) जमीन पक रही है।

5. साकेत, गीतावली, स्वप्न, ग्रन्थि में से दो के रचनाकारों के नाम लिखिए।

6. कबीर और जायसी की एक-एक रचना का उल्लेख कीजिए।

7. मैथिलीशरण गुप्त और अयोध्यासिंह उपाध्याय की एक-एक प्रमुख रचना का नाम लिखिए।

8. हिन्दी खड़ीबोली में काव्य-रचना करनेवाले किन्हीं दो प्रमुख कवियों का नाम बताइए तथा उनकी रचना का भी उल्लेख कीजिए।

9. प्रगतिवादी कविता की दो प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। **(2017AG,19AC,AE,20MA)**

अथवा 'प्रगतिवादी युग' की दो प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए। **(2016CB,17AD,20MG,MF)**

10. हिन्दी पद्य-साहित्य के इतिहास का काल-विभाजन कीजिए।

11. आदिकाल की किन्हीं दो प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।

12. प्रगतिवादी कविता की दो प्रमुख प्रवृत्तियों का उल्लेख करते हुए दो प्रमुख कवियों का नामोल्लेख कीजिए।

13. रीतिकाल की दो प्रमुख रचनाओं तथा इस काल के दो रचनाकारों के नाम लिखिए।

14. छायावाद की विशेषताओं (प्रवृत्तियों) पर प्रकाश डालिए तथा दो प्रमुख छायावादी कवियों का नामोल्लख कीजिए।

15. आधुनिक काल की प्रयोगवादी धारा पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

16. दूसरे तारसप्तक के कवियों के नाम लिखिए।

17. आधुनिक काल के चार प्रमुख कवियों के नाम लिखिए।

18. प्रयोगवादी कविता की दो प्रमुख विशेषताएँ लिखिए। **(2020MB)**

19. प्रथम तारसप्तक के कवियों के नाम लिखिए।

20. हिन्दी साहित्य में आधुनिक काल के नामकरण पर विचार कीजिए।

21. रीतिकाल में वीर रस की कविता किस कवि ने लिखी?

22. रीतिकाल की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए तथा दो प्रमुख कवियों के नाम लिखिए। **(2020MA)**

23. छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद में से किसी एक की दो प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

24. महादेवी वर्मा के किसी एक रेखाचित्र विधा की रचना का नाम लिखिए।

25. रीतिकाल को शृंगार काल किसने कहा?

26. रीतिकाल के दो प्रमुख कवियों के नाम लिखिए। **(2016CA,20MA)**

27. रीतिकाल को अन्य किन नामों से जाना जाता?

28. 'अनामिका' तथा 'धूप के धान' के रचयिताओं के नाम लिखिए।

29. धर्मवीर भारती की किसी एक काव्य-कृति का नाम लिखिए।

30. जयशंकर प्रसाद के दो प्रमुख काव्य ग्रन्थों के नाम लिखिए।
31. छायावादी युग के दो प्रमुख कवियों के नाम लिखिए। **(2017AC,AG)**
अथवा किसी एक छायावादी कवि का नाम लिखिए।
32. द्विवेदी युग के किन्हीं दो प्रमुख कवियों का नामोल्लेख कीजिए। **(2019AG)**
33. 'लोकायतन' के रचयिता का नाम लिखिए।
34. रामनरेश त्रिपाठी की किसी एक काव्यकृति का नाम लिखिए।
35. छायावाद की किन्हीं दो रचनाओं का उल्लेख करते हुए उनके रचनाकारों का नाम लिखिए। **(2016CC)**
36. 'रामचन्द्रिका' तथा 'ललितललाम' के रचयिताओं के नाम लिखिए।
37. भारतेन्दु-युग के दो प्रमुख कवियों तथा उनकी रचनाओं के नाम लिखिए।
38. भक्तिकाल की दो प्रमुख प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।
39. आधुनिक काल की प्रमुख प्रवृत्तियों (विशेषताओं) का उल्लेख कीजिए।
40. 'भारत भारती' के रचनाकार कौन हैं?
41. छायावाद के चार स्तम्भ कवि किन्हें माना जाता है?
42. रीतिकाल के दरबारी कवियों का मुख्य लक्ष्य क्या था?
43. रीतिकाल का समय-निर्धारण कीजिए।
44. आधुनिक काल कब से कब तक माना जाता है?
45. रीतिकाल की मुख्य धाराओं के नाम लिखिए।
46. भारतेन्दु-युग की समय-सीमा बताइए।
47. द्विवेदी-युग की समय-सीमा बताइए।
48. प्रगतिवादी युग के किन्हीं दो कवियों के नाम लिखिए। उनकी एक-एक रचना का भी उल्लेख कीजिए।
49. द्विवेदी-युग के किन्हीं दो प्रमुख कवियों के नाम बताइए।
50. हिन्दी साहित्य में सर्वप्रथम राष्ट्रीय भावना के दर्शन किसकी रचनाओं में होते हैं?
51. 'तारसप्तक' का प्रकाशन कब हुआ था? उसके किन्हीं दो कवियों का नामोल्लेख कीजिए।
52. दूसरे 'तारसप्तक' के सम्पादक का नाम लिखकर उसके प्रकाशन-वर्ष का उल्लेख कीजिए।
53. 'तीसरा सप्तक' का प्रकाशन कब हुआ?
54. हिन्दी के दो महाकाव्यों के नाम लिखिए।
55. नयी कविता के चार कवियों के नाम लिखिए। **(2017AE)**
56. नयी कविता के दो प्रमुख कवियों तथा उनकी रचनाओं के नाम लिखिए।
57. रीतिबद्ध और रीतिमुक्त काव्यधारा के दो-दो कवियों के नाम लिखिए।
अथवा रीतिबद्ध कवियों में से किन्हीं दो का नामोल्लेख कीजिए।
58. निम्नलिखित रचनाओं के रचनाकारों के नाम लिखिए—
(i) रसिकप्रिया (ii) छत्रसाल दशक
(iii) मधुकलश (iv) साकेत।
59. पृथ्वीराज रासो, प्रियप्रवास, पल्लव एवं कामायनी में से दो रचनाओं के रचनाकारों का नामोल्लेख कीजिए।
60. 'कविता-कौमुदी' किसके द्वारा सम्पादित कृति है?
61. हिम तरंगिणी, भस्मांकुर, यामा, निशा-निमन्त्रण काव्य-कृतियों में से किन्हीं दो के कवियों के नाम लिखिए।
62. जयशंकर प्रसाद एवं महादेवी वर्मा किस युग से सम्बन्धित हैं?
63. रीतिमुक्त किन्हीं दो कवियों के नाम लिखिए। **(2020MF)**

64. भक्तिकाल के किसी एक कवि का नाम लिखिए। **(2017AB)**

65. निम्नलिखित में से किन्हीं दो रचनाओं के रचनाकारों के नाम लिखिए–

(i) साकेत (ii) गीतावली (iii) लोकायतन (iv) युगधारा

66. भक्तिकाल के दो प्रमुख कवियों एवं उनकी एक-एक रचना का नामोल्लेख कीजिए।

67. भक्तिकाल की दो प्रमुख धाराओं का नाम लिखिए तथा उनके एक-एक प्रतिनिधि कवि का नाम लिखिए।

68. माखनलाल चतुर्वेदी की किसी एक रचना का नामोल्लेख कीजिए।

69. रीतिमुक्त धारा के दो कवियों के नाम लिखिए।

70. निम्नलिखित रचनाओं में से किसी एक रचना के रचनाकार का नाम लीखिए–

(i) कविप्रिया (ii) पंचवटी (iii) उत्तरायण (iv) रेणुका

71. नयी कविता के किसी एक कवि का नामोल्लेख कीजिए।

72. द्विवेदी युग की किन्हीं दो प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।

73. अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' किस युग के कवि हैं? उनकी किसी एक रचना का नाम लिखिए।

74. 'कर्णफूल' तथा 'रसवन्ती' के रचयिताओं के नाम लिखिए।

75. प्रयोगवादी धारा के प्रमुख दो कवियों के नाम लिखिए। **(2017AA)**

76. केशवदास किस काल के कवि हैं? उनकी किसी एक रचना का नाम लिखिए।

77. 'साकेत' तथा 'उर्वशी' के रचयिताओं के नाम लिखिए।

78. 'भारत-भारती' किसकी रचना है?

79. 'मुकुल' और 'युगान्त' के रचयिताओं के नाम लिखिए।

80. महादेवी वर्मा की किसी एक काव्यकृति का नामोल्लेख कीजिए।

81. छायावादी युग की दो प्रमुख विशेषताएँ लिखिए। **(2017AA,AB,19AB,20MC,MD,MB)**

अथवा छायावाद की दो प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।

82. प्रयोगवादी काव्यधारा के दो कवियों की एक-एक रचना का नामोल्लेख कीजिए। **(2020MC,MD,MF)**

83. निम्नलिखित रचनाओं में से किसी एक रचना के कवि का नाम लिखिए–

(i) शृंगार मंजरी (ii) प्रिय-प्रवास (iii) रसवन्ती।

84. 'हारे को हरिनाम' और 'लोकायतन' के रचयिताओं के नाम लिखिए।

85. रीतिबद्ध शाखा के किसी एक कवि का नाम लिखिए तथा उसकी एक रचना का नामोल्लेख कीजिए।

86. प्रगतिवाद से सम्बन्धित किसी एक प्रसिद्ध कवि और उनकी एक रचना का नाम लिखिए।

87. मैथिलीशरण गुप्त किस युग के कवि हैं? उनकी एक रचना का नाम लिखिए।

88. 'गीत फरोश' किस कवि की रचना है?

89. निम्नलिखित रचनाओं में से किसी एक रचना के कवि का नाम लिखिए–

(i) जगद् विनोद (ii) रसिकप्रिया (iii) शिवा बावनी

90. 'प्रिय प्रवास' और 'मधुशाला' के रचयिताओं के नाम लिखिए।

91. 'परशुराम की प्रतीक्षा' तथा 'हुंकार' के रचयिता के नाम लिखिए।

92. सुभद्रा कुमारी चौहान के दो प्रसिद्ध काव्य संग्रहों के नाम लिखिए।

93. 'भारत-भारती' तथा 'पथिक' के रचयिताओं के नाम लिखिए।

94. प्रयोगवादी काव्यधारा की दो प्रमुख प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।

95. छायावादी युग के किन्हीं दो कवियों के नाम और उनकी एक-एक रचना का नाम लिखिए।

96. प्रगतिवादी युग की दो प्रमुख प्रवृत्तियाँ लिखिए। **(2020MD)**

अथवा प्रगतिवादी काव्य की किसी एक प्रवृत्ति का उल्लेख कीजिए।

97. 'आँगन के पार द्वार' के रचनाकार का नाम लिखिए।

98. 'नीरजा' तथा 'आकाश गंगा' के रचयिता के नाम लिखिए।

99. त्रिलोचन के दो प्रसिद्ध काव्यों के नाम लिखिए।

100. निम्नलिखित रचनाओं में से किसी एक रचना के कवि का नाम लिखिए–

(i) पथिक (ii) उर्वशी (iii) कामायनी (iv) युगधारा

101. 'रसिकप्रिया' तथा 'दीपशिखा' के रचयिताओं के नाम लिखिए।

102. 'उत्तरायण' कृति के रचनाकार का नामोल्लेख कीजिए।

103. निम्नलिखित रचनाओं में से किसी एक रचना के लेखक का नाम लिखिए–

(i) वैराग्य संदीपनी (ii) प्रेम वाटिका (iii) ग्राम्य गीत (iv) मुकुल

104. किसी एक प्रगतिवादी कवि का नाम लिखिए।

105. 'छायावादी युग' के किसी एक कवि या एक कवयित्री का नाम लिखिए। **(2020ME)**

106. घनानन्द किस युग के कवि हैं? उनकी किसी एक रचना का नाम लिखिए।

107. निम्नलिखित रचनाओं में से किसी एक रचना के रचनाकार का नाम लिखिए–

(i) चिदम्बरा (ii) पलाशवन (iii) हिमतरंगिणी (iv) झरना

108. निम्नलिखित में से किसी एक काव्य-ग्रन्थ के कवि का नाम बताइए–

(i) एक पतंग अनन्त में (ii) पंचवटी (iii) समर्पण (iv) अनामिका

109. निम्नलिखित रचनाओं में से किन्हीं दो रचनाओं के रचनाकार के नाम लिखिए–

(i) पलाशवन (ii) पल्लव (iii) पंचवटी (iv) परशुराम की प्रतीक्षा

110. घनानन्द किस युग के कवि हैं? उनकी एक रचना का नाम लिखिए। **(2017AE)**

111. निम्नलिखित रचनाओं में से किसी एक के रचनाकार का नाम लिखिए– **(2020MC)**

(i) पिघलते पत्थर (ii) पद्माभरण (iii) प्रियप्रवास (iv) द्वापर

112. 'गीतावली' के कवि का नाम लिखिए। **(2020MG)**

113. निम्नलिखित रचनाओं में किन्हीं दो रचनाओं के रचनाकारों के नाम लिखिए– **(2020ME)**

(i) हिम किरीटिनी (ii) चिदम्बरा (iii) पथिक (iv) यशोधरा

114. 'तीसरा सप्तक' काव्य संग्रह का प्रकाशन किस वर्ष हुआ? **(2020MA)**

●●

॥ अध्ययन-अध्यापन ॥

कविता का मुख्य उद्देश्य काव्य-सौन्दर्य की रसानुभूति द्वारा आनन्द प्रदान करना है। कविता का अध्ययन-अध्यापन इस प्रकार होना चाहिए कि इस उद्देश्य की पूर्ति हो सके। जिस प्रकार मातृभाषा के गद्य साहित्य का सम्बन्ध मानसिक विकास से है, उसी प्रकार उसके काव्य साहित्य का सम्बन्ध छात्रों के भावात्मक विकास से है। काव्य मनुष्य को सुख-दुःख से ऊपर उठाकर, आनन्द की स्थिति तक पहुँचाता है। उसके अध्ययन से हृदय का कलुष धुल जाता है, कुत्सित भाव नष्ट हो जाते हैं और कल्याणकारी भाव पुष्ट होते हैं।

कविता के पठन-पाठन से परोक्ष रूप में छात्रों का भाषा-ज्ञान भी बढ़ता है। परन्तु कविता-शिक्षण का मुख्य लक्ष्य भाषा सीखना नहीं है। उसका लक्ष्य आनन्द की अनुभूति कराना है। शिक्षक और छात्र मिलकर इसी आनन्द की खोज करें। शब्दार्थ, व्याख्या, घटना-व्यापार, वैज्ञानिक सत्य, पशु-पक्षी-स्वभाव तथा कथा-कहानी से सम्बन्धित ज्ञान से आगे बढ़ने पर ही वास्तविक कविता-शिक्षण का कार्य आरम्भ होता है। शिक्षण की सुविधा की दृष्टि से काव्य-सौन्दर्य को तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है—अभिव्यक्ति का सौन्दर्य, भाव-सौन्दर्य और विचार-सौन्दर्य। अभिव्यक्ति के अन्तर्गत नाद और चित्रात्मकता का सौन्दर्य है। अनुप्रास, उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक आदि के सहारे वस्तु-व्यापारों के चित्र प्रस्तुत किये जाते हैं। लज्जा, शोक, नीति सम्बन्धी रचनाओं में विचारों की प्रमुखता रहती है। सूर के बाल-लीला के पद भाव-प्रधान रचनाओं के उदाहरण हैं।

रसास्वादन की शिक्षा देना कठिन कार्य है। यदि शिक्षक का मन किसी कविता में नहीं रम सका, तो वह छात्रों में उस कविता के प्रति राग उत्पन्न करने में कभी सफल नहीं होगा। परन्तु जिस शिक्षक को काव्य से प्रेम है उसके लिए काव्य-शिक्षण का कोई सिद्ध सूत्र निर्धारित करना कठिन होगा। कुछ सामान्य सिद्धान्तों की ओर यहाँ संकेत दिया जा रहा है—

(1) रसास्वादन की क्षमता प्रत्येक बालक में अलग-अलग मात्रा में होती है। अतः प्रत्येक छात्र से एक ही प्रकार की प्रतिक्रिया की आशा न करनी चाहिए।

(2) उचित शिक्षण और अभ्यास से यह क्षमता बढ़ायी जा सकती है।

(3) कविता का सुपाठ कठिन कार्य है। अतः छात्रों द्वारा कविता-पाठ कराते समय विवेक से काम लेना चाहिए।

(4) कविता का प्रथम परिचय प्रभावोत्पादक हो। शिक्षक के सुपाठ से भी मार्ग बहुत-कुछ प्रशस्त हो जाता है। सुपाठ में व्यञ्जनों तथा स्वर वर्णों का उच्चारण पूर्ण स्पष्ट तथा शुद्ध हो। ब्रज और अवधी की रचना में भाषाओं की प्रकृति के अनुरूप ही उच्चारण हो। संगीत-तत्त्व को उभर आना चाहिए। शिक्षक की वाणी तथा भावभंगी रसानुकूल हो—जैसे वीर रस में उत्साह, राष्ट्र-प्रेम में ओज और शान्त रस की रचना के पाठ में गाम्भीर्य अपेक्षित है। वाणी से छन्द की गति और अर्थ की अभिव्यक्ति स्पष्ट होनी चाहिए।

(5) कविता का सौन्दर्य उसके अर्थ में निहित रहता है और शब्द उस अर्थ को व्यक्त करते हैं। शब्दों के अर्थ, प्रसंगानुकूल अर्थ, वाक्य के शब्द-क्रम आदि से परिचित होना रसास्वादन का प्रथम सोपान है। अतः शिक्षक को कविता की पृष्ठभूमि तथा शब्दार्थ आदि से अपने छात्रों को परिचित कराना चाहिए। आवश्यकतानुसार पदान्वय भी करा देना चाहिए, क्योंकि बाहर से अर्थ का आरोपण करना उचित नहीं होगा। तदुपरान्त व्याख्या, प्रश्न, तुलना आदि से विचारों, भावों और कल्पनाओं को व्यवस्थित करना वांछनीय है। जहाँ कहीं रिक्तियाँ होंगी, उनकी पूर्ति भी शिक्षक को ही करनी होगी। कविता के शब्दों से लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ तक पहुँचना है, छात्र को इसकी प्रतीति निरन्तर कराते रहना चाहिए।

(6) कक्षा का वातावरण आनन्दमय हो। बातचीत के ढंग में अकृत्रिमता और साहचर्य का भाव हो, जिससे छात्र सहभागिता का अनुभव करें।

(7) सुपाठ, व्याख्या, प्रश्नोत्तर आदि द्वारा छात्रों से रसानुभूति की अभिव्यक्ति करायी जाय। कण्ठाग्र करने और सुपाठ करने से कविता के पठन-पाठन के लिए अनुकूल संस्कार बनते हैं।

पाठ-संचालन के निम्न सोपान प्रस्तावित किये जा सकते हैं—

(1) शिक्षक द्वारा सुपाठ।

(2) केन्द्रीय भाव-ग्रहण।

(3) शब्दार्थ एवं सूक्ष्म भाव तथा विचार-विश्लेषण। यह कार्य जितना सहयुक्त एवं सम्बद्ध रूप से चल सके, उतना ही उपयोगी होगा।

(4) व्याख्या एवं आस्वादन।

(5) विद्यार्थियों द्वारा सुपाठ।

(6) कण्ठाग्र करना एवं अन्य साधनों द्वारा अभिव्यक्ति।

मुक्तक रचनाओं में प्रायः एक ही अन्विति रहती है। अतः सम्पूर्ण कविता को लेकर ही शिक्षण-कार्य करना चाहिए। पन्त, महादेवी तथा दिनकर आदि आधुनिक कवियों की संकलित रचनाएँ इसी कोटि की हैं। दोहे, पद तथा मुक्तक छन्द भी इसी कोटि में आते हैं। लम्बी कविताओं को अन्वितियों में बाँटने की आवश्यकता भी होगी।

छात्रों के रसास्वादन में सहायता प्रदान करने और उसकी अभिव्यक्ति के लिए प्रत्येक पाठ के अन्त में प्रश्न-अभ्यास दिये गये हैं। शिक्षकों को उनसे सहायता लेनी चाहिए और आवश्यकतानुसार प्रश्न तथा अभ्यास बना लेने चाहिए। ललित अंशों का चयन और लालित्य के कारण बताना, भावार्थ लिखना, अप्रस्तुतों पर विचार करना, विशेषण-विपर्यय, लाक्षणिक एवं प्रतीकात्मक प्रयोगों की विशेषता बताना अभिव्यक्ति के विविध रूप हैं। समन्वयात्मक पंक्तियाँ ढूँढ़ना, कण्ठस्थ करना, अन्त्याक्षरी करना एवं कवियों की वेश-भूषा में सुपाठ करना भी सहायक होता है।

कवि की शैली की ओर भी छात्रों का ध्यान आकृष्ट किया जाय। कवि के सामान्य परिचय में कवि की भाषा-शैली तथा अन्य विशेषताएँ भी उदाहरण देकर बतायी जायँ और छात्रों को उसकी रचनाओं का परिचय देकर उन्हें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाय।

रस, अलङ्कार एवं छन्दों की सामान्य जानकारी होना भी हाईस्कूल स्तर के लिए निर्धारित है। इसके लिए परिभाषा और उदाहरण कण्ठस्थ कर लेना मात्र पर्याप्त नहीं है। उदाहरण द्वारा यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि काव्य-सौन्दर्य के बोध में इनका क्या योगदान है। शिक्षण-क्रम में भी इन सौन्दर्य तत्त्वों की ओर निरन्तर ध्यान आकृष्ट करते रहना चाहिए।

हिन्दी पद्य साहित्य के इतिहास का सामान्य परिचय भी छात्रों को देना है। इसके अन्तर्गत विभिन्न काव्यों की सामान्य प्रवृत्तियों का ज्ञान, प्रमुख कवियों और उनकी प्रमुख रचनाओं से परिचय कराना अपेक्षित है। प्रमुख काव्य-रूपों और विधाओं के विकास का सामान्य ज्ञान भी अपेक्षित होगा। इस परिप्रेक्ष्य में पाठ्य-पुस्तक के कवियों के योगदान और उनके स्थान का भी संक्षिप्त विवेचन हो जाना चाहिए और उनके जीवन तथा उनकी रचनाओं का कुछ विस्तार के साथ अध्ययन आवश्यक है।

शिक्षण से सम्बन्धित सामान्य बातों का ही यहाँ संकेत किया गया है। स्थानीय परिस्थितियों और कार्य की सीमाओं को देखते हुए शिक्षकों को अपने विवेक का सहारा सदैव लेना पड़ेगा।

●●

1 सूरदास

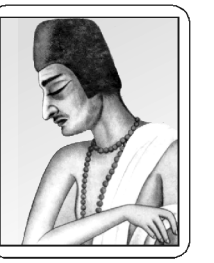

अष्टछाप के सर्वश्रेष्ठ कवि सूरदास का जन्म वैशाख सुदी पञ्चमी, सन् 1478 ई० में आगरा से मथुरा जानेवाली सड़क के पास रुनकता नामक गाँव में हुआ था। कुछ विद्वान् इनका जन्म दिल्ली के निकट सीही गाँव में मानते हैं। सूरदास जन्मान्ध थे या नहीं, इस सम्बन्ध में अनेक मत हैं। ये बचपन से ही विरक्त हो गये थे और गऊघाट में रहकर विनय के पद गाया करते थे। एक बार वल्लभाचार्य गऊघाट पर रुके। सूरदास ने उन्हें स्वरचित एक पद गाकर सुनाया। वल्लभाचार्य ने इनको कृष्ण की लीला का गान करने का सुझाव दिया। ये वल्लभाचार्य के शिष्य बन गये और कृष्ण की लीला का गान करने लगे। वल्लभाचार्य ने इनको गोवर्धन पर बने श्रीनाथ जी के मन्दिर में कीर्त्तन करने के लिए रख दिया। वल्लभाचार्य के पुत्र विट्ठलनाथ ने अष्टछाप के नाम से सूरदास सहित आठ कृष्ण-भक्त कवियों का संगठन किया। इनकी मृत्यु गोवर्धन के पास पारसौली ग्राम में सन् 1583 ई० के लगभग हुई।

कवि-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म–**सन् 1478 ई०।
- **जन्म-स्थान—**रुनकता।
- **पिता-**रामदास सारस्वत।
- **मृत्यु–**सन् 1583 ई०।
- **भाषा–**ब्रज।
- **शैली–**मुक्तक शैली के गेयपद।
- अष्टछाप एवं भक्तिकाल के कवि।
- **रचनाएँ-** सूरसागर, साहित्य लहरी, सूर सारावली।
- **साहित्य में स्थान-**कृष्णभक्त कवियों में सर्वोच्च स्थान तथा वात्सल्य रस के पुरोधा।

सूरदास के पदों का संकलन **सूरसागर** है। **सूर सारावली** तथा **साहित्य लहरी** इनकी अन्य रचनाएँ हैं। यह प्रसिद्ध है कि 'सूरसागर' में सवा लाख पद हैं, पर अभी तक केवल दस हजार पद ही प्राप्त हुए हैं। 'सूर सारावली' कथावस्तु, भाव, भाषा, शैली और रचना की दृष्टि से निःसन्देह सूरदास की प्रामाणिक रचना है। इसमें 1,107 छन्द हैं। 'साहित्य लहरी' सूरदास के 118 दृष्टकूट पदों का संग्रह है। सूरदास की रचनाओं के सम्बन्ध में इस प्रकार कहा जा सकता है—

''साहित्य लहरी, सूरसागर, सूर की सारावली।
श्रीकृष्ण जी की बाल-छवि पर लेखनी अनुपम चली।''

सूरदास ने कृष्ण की बाल-लीलाओं का बड़ा ही विशद् तथा मनोरम वर्णन किया है। बाल-जीवन का कोई पक्ष ऐसा नहीं, जिस पर इस कवि की दृष्टि न पड़ी हो। इसीलिए इनका बाल-वर्णन विश्व-साहित्य की अमर निधि बन गया है। गोपियों के प्रेम और विरह का वर्णन भी बहुत आकर्षक है। संयोग और वियोग दोनों का मर्मस्पर्शी चित्रण सूरदास ने किया है। **सूरसागर** का एक प्रसंग **भ्रमरगीत** कहलाता है। इस प्रसंग में गोपियों के प्रेमावेश ने ज्ञानी उद्धव को भी प्रेमी एवं भक्त बना दिया। सूर के काव्य की सबसे बड़ी विशेषता है इनकी तन्मयता। ये जिस प्रसंग का वर्णन करते हैं उनमें आत्म-विभोर कर देते हैं। इनके विरह-वर्णन में गोपियों के साथ ब्रज की प्रकृति भी विषादमग्न दिखायी देती है। सूर की भक्ति मुख्यतः सखा भाव की है। उसमें विनय, दाम्पत्य और माधुर्य भाव का भी मिश्रण है। सूरदास ने ब्रज के लीला-पुरुषोत्तम कृष्ण की लीलाओं का ही विशद् वर्णन किया है।

सूरदास का सम्पूर्ण काव्य संगीत की राग-रागिनियों में बँधा हुआ पद-शैली का गीतिकाव्य है। उसमें भाव-साम्य पर आधारित उपमाओं, उत्प्रेक्षाओं और रूपकों की छटा देखने को मिलती है। इनकी कविता ब्रजभाषा में है। माधुर्य की प्रधानता के कारण इनकी भाषा बड़ी प्रभावोत्पादक हो गयी है। व्यंग्य, वक्रता और वाग्विदग्धता सूर की भाषा की प्रमुख विशेषताएँ हैं। सूर ने मुक्तक काव्य-शैली को अपनाया है। कथा-वर्णन में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग हुआ है। समग्रतः इनकी शैली सरस एवं प्रभावशाली है। सूर का प्रत्येक पद सरसता, मधुरता, कोमलता और प्रेम के पवित्र भावों से पूर्ण है।

सूरदास जी ने अपनी उत्कृष्ट रचनाओं से हिन्दी साहित्य को जो गरिमा प्रदान की है, वह अद्वितीय-अतुलनीय है। सूरदास जी हिन्दी साहित्याकाश के देदीप्यमान सूर्य हैं। जिनके समक्ष कवि साधारण नक्षत्र से आभासित होते हैं। इसीलिए कहा गया है–

सूर-सूर तुलसी ससी, उडुगन केसवदास।
अव के कवि खद्योत सम, जहँ तहँ करत प्रकास॥

सूरदास जी हिन्दी साहित्य के प्रतिभासम्पन्न कवि थे। सूरदास जी जहाँ वात्सल्य रस के सम्राट हैं, वहीं श्रृंगार रस को सौन्दर्य प्रदान करने में भी समर्थ हैं। आपने विरह का भी अपनी रचनाओं में बड़ा ही मनोरम चित्रण किया है। सूरदास जी का हिन्दी साहित्य के कृष्ण भक्त कवियों में सर्वोच्च स्थान है।

●●

पद

चरन-कमल बंदौं हरि राइ।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधे को सब कछु दरसाइ।
बहिरौ सुने, गूँग पुनि बोलै, रंक चलै सिर छत्र धराइ।
सूरदास स्वामी करुनामय, बार-बार बंदौं तिहिं पाइ।।1।।

अबिगत-गति कछु कहत न आवै।
ज्यौं गूँगे मीठे फल कौ रस, अंतरगत ही भावै।
परम स्वाद सबही सु निरंतर, अमित तोष उपजावै।
मन-बानी कौ अगम-अगोचर, सो जानै जो पावै।
रूप-रेख-गुन-जाति-जुगति-बिनु, निरालंब कित धावै।
सब विधि अगम विचारहिं तातै, सूर सगुन-पद गावै।।2।

किलकत कान्ह घुटुरुवनि आवत।
मनिमय कनक नंद कै आँगन, बिम्ब पकरिबै धावत।
कबहुँ निरखि हरि आपु छाँह कौ, करि सौं पकरन चाहत।
किलकि हँसत राजत द्वै दतियाँ, पुनि-पुनि तिहिं अवगाहत।
कनक-भूमि पर कर-पग छाया, यह उपमा इक राजति।
करि-करि प्रतिपद प्रतिमनि बसुधा, कमल बैठकी साजति।
बाल-दसा-सुख निरखि जसोदा, पुनि-पुनि नंद बुलावति।
अँचरा तर लै ढाँकि, सूर के प्रभु कौ दूध पियावति।।3।।

मैं अपनी सब गाइ चरैहौं।
प्रात होत बल कै संग जैहौं, तेरे कहें न रैहौं।
ग्वाल बाल गाइनि के भीतर नैकहुँ डर नहिं लागत।
आज न सोवौं नंद-दुहाई, रैनि रहौंगो जागत।
और ग्वाल सब गाइ चरैहैं, मैं घर बैठो रैहौं?
सूर स्याम तुम सोइ रहौ अब, प्रात जान मैं दैहौं।।4।।

मैया हौं न चरैहौं गाइ।
सिगरे ग्वाल घिरावत मोसो, मेरे पाइ पिराइ।
जौं न पत्याहि पूछि बलदाउहिं, अपनी सौंहँ दिवाइ।
यह सुनि माई जसोदा ग्वालिन, गारी देति रिसाइ।
मैं पठवति अपने लरिका कौं, आवै मन बहराइ।
सूर स्याम मेरौ अति बालक, मारत ताहि रिंगाइ।।5।।

सखी री, मुरली लीजै चोरि।
जिनि गुपाल कीन्हे अपनैं बस, प्रीति सबनि की तोरि।।
छिन इक घर-भीतर, निसि-बासर, धरत न कबहूँ छोरि।
कबहूँ कर, कबहूँ अधरनि, कटि कबहूँ खोंसत जोरि।।

ना जानौं कछु मेलि मोहिनी, राखे अँग-अँग भोरि।
सूरदास, प्रभु कौ मन सजनी, बँध्यौ राग की डोरि।।6।।

ऊधौ मोहिं ब्रज बिसरत नाहीं।
वृन्दाबन गोकुल बन उपवन, सघन कुँज की छाहीं।।
प्रात समय माता जसुमति अरु नंद देखि सुख पावत।
माखन रोटी दह्यौ सजायौ, अति हित साथ खवावत।।
गोपी ग्वाल बाल सँग खेलत, सब दिन हँसत सिरात।
सूरदास धनि-धनि ब्रजवासी, जिनसौं हित जदु-तात।।7।।

ऊधौ मन न भए दस बीस।
एक हुतौ सो गयौ स्याम सँग, को अवराधै ईस।।
इंद्री सिथिल भई केसव बिनु, ज्यौं देही बिनु सीस।
आसा लागि रहति तन स्वासा, जीवहिं कोटि बरीस।।
तुम तौ सखा स्याम सुन्दर के, सकल जोग के ईस।
सूर हमारै नंदनंदन बिनु, और नहीं जगदीस।।8।।

ऊधौ जाहु तुमहिं हम जाने।
स्याम तुमहिं ह्याँ कौ नहिं पठयौ, तुम हौ बीच भुलाने।।
ब्रज नारिनि सौं जोग कहत हौं, बात कहत न लजाने।
बड़े लोग न विवेक तुम्हारे, ऐसे भए अयाने।।
हमसौं कही लई हम सहि कै, जिय गुनि लेहु सयाने।
कहँ अबला कहँ दसा दिगंबर, मष्ट करौ पहिचाने।।
साँच कहौ तुमकौ अपनी सौं, बूझति बात निदाने।
सूर स्याम जब तुमहिं पठायौ, तब नैकहुँ मुसकाने।।9।।

निरगुन कौन देस कौ बासी?
मधुकर कहि समुझाइ सौंह दै, बूझति साँच न हाँसी।।
को है जनक, कौन है जननी, कौन नारि, को दासी?
कैसे बरन, भेष है कैसो, किहिं रस मैं अभिलाषी?
पावैगौ पुनि कियौ आपनौ, जौ रे करैगौ गाँसी।
सुनत मौन ह्वै रह्यौ बावरौ, सूर सबै मति नासी।।10।।

संदेसौं देवकी सौं कहियौ।
हौं तो धाइ तिहारे सुत की, मया करत ही रहियौ।।
जदपि टेव तुम जानतिं उनकी, तऊ मोहिं कहि आवै।
प्रात होत मेरे लाल लड़ैतैं, माखन रोटी भावै।।
तेल उबटनौ अरु तातो जल, ताहि देखि भजि जाते।
जोइ-जोइ माँगत सोइ-सोइ देती, क्रम क्रम करि कै न्हाते।।
सूर पथिक सुन मोहिं रैनि दिन, बढ्यौ रहत उर सोच।
मेरौ अलक लड़ैतो मोहन, ह्वैहै करत सँकोच।।11।।

('सूरसागर' से)

|| अभ्यास प्रश्न ||

1. निम्नलिखित पदों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—
   (क) चरन-कमल·····तिहिं पाइ। **(2017AA,19AD)**
   (ख) अबिगत-गति·····सगुन-पद गावै।
   (ग) किलकत कान्ह ····· दूध पियावति।
   (घ) मैया हौं न·····ताहि रिंगाइ।
   (ङ) सखी री, मुरली·····राग की डोरि।
   (च) ऊधौ मन न भए ·····नहीं जगदीस। **(2017AC)**
   (छ) निरगुन कौन ····· मति नासी। **(2017AD,19AB)**
   (ज) ऊधौ मोहिं ·····जदु-तात। **(2017AE, 20MF)**
   (झ) संदेसौ देवकी सौं ·····करत संकोच।
2. सूरदास का जीवन-परिचय एवं उनके साहित्यिक योगदान का उल्लेख कीजिए।
3. सूरदास की जीवनी का उल्लेख करते हुए उनकी भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।
4. सूरदास का जीवन-परिचय दीजिए एवं उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए। **(2016CC,CD,17AB,AF,AG, 19AA,AC,AE,AF,AG,20MB,ME)**
5. सूरदास की जीवनी लिखिए तथा उनके काव्यगत सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।
6. सूरदास का जीवन-परिचय लिखिए तथा उनकी काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
7. 'चरन कमल बंदौं हरि राइ'—पद में सूरदास ईश्वर के कैसे रूप की वन्दना करते हैं?
8. सूरदास जी के वात्सल्य सम्बन्धी पदों के आधार पर सूर के वात्सल्य-वर्णन की विवेचना कीजिए।
9. सूरसागर में वर्णित उद्धव-गोपी-संवाद प्रसंग 'भ्रमरगीत' के नाम से प्रसिद्ध है, क्यों? स्पष्ट करें।
10. गोपियाँ कृष्ण की मुरली चुरा लेना चाहती हैं, क्यों? (पद 6)
11. ग्यारहवाँ पद किस अवसर का है? कौन किससे कह रहा है?
12. उद्धव को गोपियाँ क्या उत्तर देती हैं? (पद 8 के आधार पर उत्तर लिखिए)
13. उद्धव की बात सुनकर कृष्ण को ब्रज की क्या-क्या चीजें याद आती हैं?
14. गोपियों ने निराकार ब्रह्म का खण्डन जिन तर्कों के आधार पर किया है, उनका संक्षेप में उल्लेख कीजिए।
15. निम्नलिखित सूक्तियों का अर्थ बताइए–
   (क) जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधे को सब कुछ दरसाइ।
   (ख) अबिगत-गति कछु कहत न आवै।
   (ग) ज्यों गूँगे मीठे फल कौ रस, अन्तरगत ही भावै।

➥ आन्तरिक मूल्यांकन

इस पाठ के माध्यम से सूरदास के व्यक्तित्व की जो झलक मिलती है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

टिप्पणी

1. **राइ** = राजा। **पाइ** = पैर। **पंगु** = लँगड़ा। **करुनामय** = दयालु। **लंघै** = पार करता है।

2. **रूप-रेख गुन-जाति-जुगति-बिनु** = ईश्वर का न कोई रूप है, न आकृति, न गुण, न जाति और न वह किसी व्यक्ति से प्राप्त किया जा सकता है। **निरालंब** = बिना किसी सहारे के। **अगम** = अगम्य। **अगोचर** = इन्द्रियों से परे। **अंतरगत** = हृदय में।

3. **पुनि-पुनि तिहिं अवगाहत** = बार-बार उसी को पकड़ते हैं। **करि-करि प्रतिपद प्रतिमनि बसुधा कमल बैठकी साजति** = पृथ्वी श्रीकृष्ण के प्रत्येक पद पर, प्रत्येक मणि में उनके लिए बैठने को कमल का आसन सजाती है। श्रीकृष्ण के पद कमल-सम हैं। अतः उनके प्रतिबिम्ब भी कमल के समान ही हैं। **द्वै दतियाँ** = दो दाँत। **निरखि** = देखकर। **अँचरा** = आँचल। **तर** = नीचे।

4. **बल** = बलराम। **गाइनि** = गायों के। **रहौंगो** = रहूँगा। **दैहौं** = दूँगी, दूँगा।

5. **आवै मन बहराइ** = मन बहला आवे। **मारत ताहि रिंगाइ** = उसको चलाकर थका डालते हैं क्योंकि वह छोटा होने से धीरे-धीरे चल पाता है। **न पत्याहि** = विश्वास नहीं करती हो। **सौहँ** = शपथ। **दिवाइ** = दिलाकर।

6. **राखे अँग-अँग भोरि** = अंग-अंग को मोहित कर लिया है। **बँध्यौ राग की डोरि** = (प्रेम-रज्जु) (संगीत) में बँधा है।

7. इस पद में उद्धव के वापस लौटने पर श्रीकृष्ण ब्रज-जीवन का स्मरण करके दुःखी हो रहे हैं। **सिरात** = व्यतीत होते थे। **जदु-तात** = श्रीकृष्ण। **दह्यौ** = दही (दधि)।

8. **आसा लागि.....स्वासा** = जब तक शरीर में साँस है तब तक हम आशा करती रहेंगी। **सकल जोग के ईस** = सब प्रकार की योग-साधना में निपुण। **अवराधै** = आराधना करे। **कोटि बरीस** = करोड़ों वर्ष। **हुतौ** = था। **सखा** = मित्र।

9. **अयाने** = अनजान, अज्ञानी। **मष्ट करौ** = मौन धारण करो। **बूझति बात निदाने** = अन्तिम बात पूछती है। **अबला** = नारी (जन)। **दिगम्बर** = (दिक् + अम्बर) नग्न रहना (दिगम्बरत्व) दिशाएँ ही वस्त्र हैं जिसके ऐसा।

10. **करैगौ गाँसी** = छल करोगे। **सबै मति नासी** = सारी बुद्धि नष्ट हो गयी। **अभिलाषी** = अभिलाषा करनेवाला, इच्छुक।

11. **क्रम क्रम करि कै** = धीरे-धीरे। **अलक लड़ैतो** = अति प्यारा, बहुत दुलारा। **धाइ** = धात्री, पालन-पोषण करनेवाली। **टेव** = आदत। **मया** = दया। **तातो जल** = तप्त जल, गर्म पानी।

●●

2 तुलसीदास

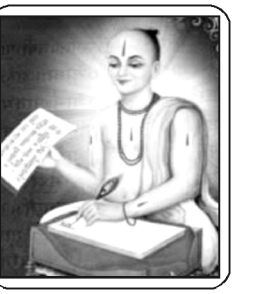

कवि-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**–संवत् 1554 वि0 (सन् 1532 ई.)
- **जन्म-स्थान**–राजापुर गाँव (चित्रकूट), उ0प्र0।
- **बचपन का नाम**–रामबोला।
- **माता-पिता**-हुलसी एवं आत्माराम दुबे।
- **मृत्यु**–संवत् 1680 वि0 (1623 ई0)।
- **गुरु-शिक्षक**–नरहरिदास।
- **लेखन विधा**–काव्य।
- **शिक्षा**–सन्त बाबा नरहरिदास ने भक्ति के साथ-साथ वेद-वेदांग, दर्शन, इतिहास, पुराण आदि की शिक्षा दी।
- **भाषा**–अवधी तथा ब्रज।
- **शैली**–छप्पय, दोहा, चौपाई, गीत, कवित्त-सवैया।
- **प्रमुख रचनाएँ**–रामचरितमानस, जानकी मंगल, दोहावली, गीतावली, पार्वती-मंगल, रामलला-नहछू, रामाज्ञा प्रश्न आदि।
- **साहित्य में स्थान**–श्रेष्ठ भक्त, ज्ञानी, विचारक, लोकनायक, दार्शनिक व मानव जीवन के सफल पारखी के रूप में सर्वश्रेष्ठ कवि।

गोस्वामी तुलसीदास के जन्म के सम्बन्ध में विद्वानों में बहुत मतभेद है। गोस्वामी तुलसीदास के जन्म-स्थान के सन्दर्भ में तीन मत प्रचलित हैं– 'मूल गोसाईं चरित' और 'तुलसी चरित' में इनका जन्म-स्थान राजापुर बताया गया है। शिवसिंह सेंगर और राम गुलाम द्विवेदी भी राजापुर को गोस्वामी जी का जन्म-स्थान मानते हैं। लाला सीताराम, गौरीशंकर द्विवेदी, रामनरेश त्रिपाठी तथा डॉ0 रामदत्त भारद्वाज सोरों को तुलसीदास जी का जन्म-स्थान मानते हैं। ''मैं पुनि निज गुरु सन सुनी, कथा सो सूकरखेत'' –गोस्वामी जी की इस उक्ति को ये विद्वान प्रामाणिक मानते हुए सूकर खेत का अभिप्राय सोरों मानते हैं। आचार्य शुक्ल का अभिमत है कि 'सूकर खेत' को भ्रम से सोरों समझ लिया गया। लेकिन प्रचलित रूप में तुलसीदास का जन्म संवत् 1554 वि0 की श्रावण शुक्लपक्ष सप्तमी को चित्रकूट जिले के अन्तर्गत राजापुर ग्राम में माना जाता है। इनके पिता का नाम आत्माराम दुबे तथा माता का नाम हुलसी था। इनके जन्म के सम्बन्ध में निम्न दोहा प्रसिद्ध है—

''पन्द्रह सौ चौवन बिसे, कालिन्दी के तीर।
श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी धर्‌यो शरीर॥''

इनका जब जन्म हुआ तब ये पाँच वर्ष के बालक मालूम होते थे। दाँत भी सब मौजूद थे। जन्मते ही इनके मुख से 'राम' का शब्द निकला और लोग इन्हें 'रामबोला' कहने लगे। आश्चर्यचकित होकर इन्हें राक्षस समझकर माता-पिता द्वारा त्याग दिये जाने के कारण इनका पालन-पोषण एक दासी ने तथा ज्ञान एवं भक्ति की शिक्षा प्रसिद्ध सन्त बाबा नरहरिदास ने प्रदान की। इनका विवाह रत्नावली के साथ हुआ था। ऐसा प्रसिद्ध है कि रत्नावली की फटकार से ही इनके मन में वैराग्य उत्पन्न हुआ। कहा जाता है कि एक बार पत्नी द्वारा बिना बताये ही मायके चले जाने पर प्रेमातुर तुलसी अर्द्धरात्रि में आँधी-तूफान का सामना करते हुए अपनी ससुराल जा पहुँचे। पत्नी ने इसके लिए उन्हें बहुत फटकारा। फटकार से इन्हें वैराग्य हो गया। इसके बाद काशी के विद्वान् शेष सनातन से तुलसी ने वेद-वेदांग का ज्ञान प्राप्त किया और अनेक तीर्थों का भ्रमण करते हुए राम के पवित्र चरित्र का गान करने लगे। इनका समय काशी, अयोध्या और चित्रकूट में अधिक व्यतीत हुआ। संवत् 1680 श्रावण कृष्णपक्ष तृतीया शनिवार

को असीघाट पर तुलसीदास राम-राम कहते हुए परमात्मा में विलीन हो गये। इनकी मृत्यु के सम्बन्ध में निम्न दोहा प्रसिद्ध है—

''संवत् सोलह सौ असी, असी गंग के तीर।
श्रावण कृष्णा तीज शनि, तुलसी तज्यो शरीर॥''

ये राम के भक्त थे। इनकी भक्ति दास्य-भाव की थी। संवत् 1631 में इन्होंने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ **'रामचरितमानस'** की रचना आरम्भ की। इनके इस ग्रन्थ में विस्तार के साथ राम के चरित्र का वर्णन है। तुलसी के राम में शक्ति, शील और सौन्दर्य तीनों गुणों का अपूर्व सामञ्जस्य है। मानव-जीवन के सभी उच्चादर्शों का समावेश करके इन्होंने राम को मर्यादा पुरुषोत्तम बना दिया। रामचरितमानस बड़ा ही लोकप्रिय ग्रन्थ है। विश्व-साहित्य के प्रमुख ग्रन्थों में इसकी गणना की जाती है। 'रामचरितमानस' के अतिरिक्त इन्होंने **'जानकी-मंगल', 'पार्वती-मंगल', 'रामलला-नहछू', 'रामाज्ञा प्रश्न', 'बरवै रामायण', 'दोहावली', 'कवितावली', 'गीतावली'** तथा **'विनय-पत्रिका'** आदि ग्रन्थों की रचना की। इनकी रचनाओं में भारतीय सभ्यता और संस्कृति का पूर्ण चित्रण देखने को मिलता है।

अपने समय तक प्रचलित दोहा, चौपाई, कवित्त, सवैया, पद आदि काव्य-शैलियों में तुलसी ने पूर्ण सफलता के साथ काव्य-रचना की है। इनके काव्य में भाव-पक्ष के साथ कला-पक्ष की भी पूर्णता है। उसमें सभी रसों का आनन्द प्राप्त होता है। स्वाभाविक रूप में सभी प्रकार के अलंकारों का प्रयोग करके तुलसी ने अपनी रचनाओं को प्रभावोत्पादक बना दिया है। इनका ब्रजभाषा तथा अवधी भाषा पर समान अधिकार था। कवितावली, गीतावली, विनय-पत्रिका आदि रचनाएँ ब्रजभाषा में हैं और रामचरितमानस अवधी में। अवधी को साहित्यिक रूप प्रदान करने के लिए इन्होंने संस्कृत शब्द का भी प्रयोग किया है, पर इससे कहीं भी दुरूहता नहीं आने पायी है।

तुलसीदास जी ने अपनी भक्ति भावना की अविरल धारा से हिन्दी पाठकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। उनके काव्य के समान जनता के हृदय पर किसी अन्य कवि का प्रभाव नहीं है। हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ और अमर कवि तुलसीदास जी श्रेष्ठ भक्त, ज्ञानी, विचारक, लोकनायक, दार्शनिक और मानव-मन के कुशल पारखी हैं। तुलसीदास जी हिन्दी काव्य-जगत की अमूल्य धरोहर हैं, उन्होंने 'रामचरितमानस' महाकाव्य में श्रीराम के मर्यादा-पुरुषोत्तम चरित्र के अंकन के साथ-साथ श्रीराम को शिवजी का तथा शिवजी को श्रीराम का भक्त प्रदर्शित करके अद्वितीय समन्वय की भावना स्थापित की। हिन्दी साहित्य में इनका योगदान अतुलनीय है।

धनुष-भंग

दो0– उदित उदयगिरि मंच पर रघुवर बालपतंग।
बिकसे संत सरोज सब हरषे लोचन भृंग॥1॥

नृपन्ह केरि आसा निसि नासी। बचन नखत अवली न प्रकासी।।
मानी महिप कुमुद सकुचाने। कपटी भूप उलूक लुकाने।।
भए बिसोक कोक मुनि देवा। बरसहिं सुमन जनावहिं सेवा।।
गुर पद बंदि सहित अनुरागा। राम मुनिन्ह सन आयसु मागा।।
सहजहिं चले सकल जग स्वामी। मत्त मंजु बर कुंजर गामी।।
चलत राम सब पुर नर नारी। पुलक पूरि तन भए सुखारी।।
बंदि पितर सुर सुकृत सँभारे। जौं कछु पुन्य प्रभाउ हमारे।।
तौ सिवधनु मृनाल की नाईं। तोरहु रामु गनेस गोसाईं।।

दो0– रामहि प्रेम समेत लखि सखिन्ह समीप बोलाइ।
सीता मातु सनेह बस बचन कहइ बिलखाइ॥2॥

सखि सब कौतुकु देखनि हारे। जेउ कहावत हितू हमारे।।
कोउ न बुझाइ कहइ गुर पाहीं। ए बालक असि हठ भलि नाहीं।।
रावन बान छुआ नहिं चापा। हारे सकल भूप करि दापा।।
सो धनु राजकुअँर कर देहीं। बाल मराल कि मंदर लेहीं।।
भूप सयानप सकल सिरानी। सखि बिधि गति कछु जाति न जानी।।
बोली चतुर सखी मृदु बानी। तेजवंत लघु गनिअ न रानी।।
कहँ कुंभज कहँ सिंधु अपारा। सोषेउ सुजसु सकल संसारा।।
रबि मंडल देखत लघु लागा। उदयँ तासु त्रिभुवन तम भागा।।

दो0– मंत्र परम लघु जासु बस बिधि हरि हर सुर सर्ब।
महामत्त गजराज कहुँ बस कर अंकुस खर्ब॥3॥

काम कुसुम धनु सायक लीन्हे। सकल भुवन अपने बस कीन्हे।।
देबि तजिअ संसउ अस जानी। भंजब धनुषु राम सुनु रानी।।
सखी बचन सुनि भै परतीती। मिटा बिषादु बढ़ी अति प्रीती।।
तब रामहि बिलोकि बैदेही। सभय हृदयँ बिनवति जेहि तेही।।
मनहीं मन मनाव अकुलानी। होहु प्रसन्न महेस भवानी।।
करहु सफल आपनि सेवकाई। करि हितु हरहु चाप गरुआई।।
गननायक बरदायक देवा। आजु लगें कीन्हिउँ तुअ सेवा।।
बार बार बिनती सुनि मोरी। करहु चाप गुरुता अति थोरी।।

दो0– देखि देखि रघुबीर तन सुर मनाव धरि धीर।
भरे बिलोचन प्रेम जल पुलकावली सरीर॥4॥

नीके निरखि नयन भरि सोभा। पितु पनु सुमिरि बहुरि मनु छोभा।।
अहह तात दारुनि हठ ठानी। समुझत नहिं कछु लाभु न हानी।।
सचिव सभय सिख देइ न कोई। बुध समाज बड़ अनुचित होई।।
कहँ धनु कुलिसहु चाहि कठोरा। कहँ स्यामल मृदुगात किसोरा।।
बिधि केहि भाँति धरौं उर धीरा। सिरस सुमन कन बेधिअ हीरा।।
सकल सभा कै मति भै भोरी। अब मोहि संभुचाप गति तोरी।।
निज जड़ता लोगन्ह पर डारी। होहि हरुअ रघुपतिहि निहारी।।
अति परिताप सीय मन माहीं। लव निमेष जुग सय सम जाहीं।।

दो0– प्रभुहि चितइ पुनि चितव महि राजत लोचन लोल।
खेलत मनसिज मीन जुग जनु बिधु मंडल डोल॥5॥

गिरा अनिलि मुख पंकज रोकी। प्रगट न लाज निसा अवलोकी।।
लोचन जल रह लोचन कोना। जैसें परम कृपन कर सोना।।
सकुची ब्याकुलता बड़ि जानी। धरि धीरजु प्रतीति उर आनी।।
तन मन बचन मोर पनु साचा। रघुपति पद सरोज चितु राचा।।
तौ भगवानु सकल उर बासी। करिहि मोहि रघुबर कै दासी।।
जेहि के जेहि पर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलइ न कछु संदेहू।।
प्रभु तन चितइ प्रेम तन ठाना। कृपानिधान राम सबु जाना।।
सियहि बिलोकि तकेउ धनु कैसें। चितव गरुड़ लघु ब्यालहि जैसें।।

दो0– लखन लखेउ रघुबंसमनि ताकेउ हर कोदंडु।
पुलकि गात बोले बचन चरन चापि ब्रह्मंडु॥6॥

दिसिकुंजरहु कमठ अहि कोला। धरहु धरनि धरि धीर न डोला।।
राम चहहिं संकर धनु तोरा। होहु सजग सुनि आयसु मोरा।।
चाप समीप रामु जब आए। नर नारिन्ह सुर सुकृत मनाए।
सब कर संसउ अरु अग्यानू। मंद महीपन्ह कर अभिमानू।।
भृगुपति केरि गरब गरुआई। सुर मुनिबरन्ह केरि कदराई।।
सिय कर सोचु जनक पछितावा। रानिन्ह कर दारुन दुख दावा।।
संभुचाप बड़ बोहितु पाई। चढ़े जाइ सब संगु बनाई।।
राम बाहुबल सिंधु अपारू। चहत पारु नहिं कोऊ कड़हारू।।

दो0– राम बिलोके लोग सब चित्र लिखे से देखि।
चितई सीय कृपायतन जानी बिकल बिसेषि॥7॥

देखी बिपुल बिकल बैदेही। निमिष बिहात कलप सम तेही।।
तृषित बारि बिन जो तनु त्यागा। मुएँ करइ का सुधा तड़ागा।।
का बरषा सब कृषी सुखानें। समय चुकें पुनि का पछितानें।।
अस जियँ जानि जानकी देखी। प्रभु पुलके लखि प्रीति बिसेषी।।
गुरहि प्रनामु मनहिं मन कीन्हा। अति लाघवँ उठाइ धनु लीन्हा।।
दमकेउ दामिनि जिमि जब लयऊ। पुनि नभ धनु मंडल सम भयऊ।।
लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़ें। काहुँ न लखा देख सबु ठाढ़ें।।
तेहि छन राम मध्य धनु तोरा। भरे भुवन धुनि घोर कठोरा।।

छन्द– भरे भुवन घोर कठोर रव रबि बाजि तजि मारगु चले।
चिक्करहिं दिग्गज डोल महि अहि कोल कूरूम कलमले।।
सुर असुर मुनि कर कान दीन्हें सकल बिकल बिचारहीं।
कोदंड खंडेउ राम तुलसी जयति बचन उचारहीं।।

('रामचरितमानस : बालकाण्ड' से)

वन-पथ पर

पुर तें निकसी रघुबीर-बधू, धरि धीर दये मग में डग द्वै।
झलकी भरि भाल कनी जल की, पुट सूखि गये मधुराधर वै।।
फिर बूझति हैं- 'चलनो अब केतिक, पर्णकुटी करिहौं कित ह्वै?'
तिय की लखि आतुरता पिय की अँखियाँ अति चारु चलीं जल च्वै।।1।।

"जल को गये लक्खन हैं लरिका, परिखौ, पिय! छाँह घरीक ह्वै ठाढ़े।
पोंछि पसेउ बयारि करौं, अरु पायँ पखारिहौं भूभुरि डाढ़े।।"
तुलसी रघुवीर प्रिया स्रम जानि कै बैठि बिलंब लौं कंटक काढ़े।
जानकी नाह को नेह लख्यौ, पुलको तनु, बारि बिलोचन बाढ़े।।2।।

रानी मैं जानी अजानी महा, पबि पाहन हूँ ते कठोर हियो है।
राजहु काज अकाज न जान्यो, कह्यो तिय को जिन कान कियो है।।
ऐसी मनोहर मूरति ये, बिछुरे कैसे प्रीतम लोग जियो है?
आँखिन में, सखि! राखिबे जोग, इन्हें किमि कै बनबास दियो है?।।3।।

सीस जटा, उर बाहु बिसाल, बिलोचन लाल, तिरीछी सी भौंहें।
तून सरासन बान धरे, तुलसी बन-मारग में सुठि सोहैं।
सादर बारहिं बार सुभाय चितै तुम त्यों हमरो मन मोहैं।
पूछति ग्राम बधू सिय सों 'कहौ साँवरे से, सखि रावरे को है?'।।4।।

सुनि सुन्दर बैन सुधारस-साने, सयानी हैं जानकी जानी भली।
तिरछे करि नैन दै सैन तिन्है समुझाइ कछू मुसकाइ चली।।
तुलसी तेहि औसर सोहैं सबै अवलोकति लोचन-लाहु अली।
अनुराग-तड़ाग में भानु उदै बिगसीं मनो मंजुल कंज-कली।।5।।

('कवितावली : अयोध्याकाण्ड' से)

|| अभ्यास प्रश्न ||

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—

(क) गुरुपद बंदि सहित ..... रामु गनेस गोसाईं। **(2019AE)**
अथवा नृपन्ह केरि आसा ..... गनेस गोसाईं।
(ख) सखि सब ..... मंदर लेहीं।
(ग) बोली चतुर सखी .....अंकुस खर्ब।
(घ) तन मन बचन ..... ब्यालहिं जैसें।
अथवा गिरा अनिलि मुख ..... न कछु संदेहू।
(ङ) गुरहि प्रनामु ..... घोर कठोरा।
(च) पुर ते निकसी .....चलीं जल च्वै। **(2016CB,CE,20ME)**
(छ) सीस जटा ..... रावरे को है? **(2018HF)**
(ज) सुनि सुन्दर ..... कंज-कली। **(2017AG,19AC)**
(झ) रानी मैं जानी .....बनवास दियो है? **(2019AA,AG)**
(ञ) मंत्र परम लघु .....बढ़ी अति प्रीती। **(2016CD)**
(ट) जल को गए ..... बिलोचन बाढ़े। **(2016CB)**
(ठ) उदित उदयगिरि मंच पर ..... बर कुँजर गामी। **(2017AB)**
(ड) दिसिकुंजरहु कमठ ..... कोऊ कड़हारन। **(2020MB)**

2. तुलसीदास का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए। **(2016CA,CB,CF,CG,17AA 18HA,19AB,20MC,MA,MF)**

अथवा तुलसीदास का जीवन-परिचय दीजिए तथा उनकी किसी एक रचना का नाम लिखिए।

3. गोस्वामी तुलसीदास के साहित्यिक अवदान एवं भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

4. तुलसीदास का जीवन-वृत्त लिखकर उनके साहित्यिक योगदान का उल्लेख कीजिए।

5. तुलसीदास का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए तथा उनके काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

6. तुलसीदास का जीवन-वृत्त लिखकर उनकी काव्यगत विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

➨ धनुष-भंग

7. राम को देखकर नगरवासी नर-नारियों को कैसा अनुभव हुआ?

8. धनुष-भंग के प्रसंग में सीता की सखियों से हुए वार्त्तालाप का वर्णन कीजिए।

9. सखी का वचन सुनकर सीता जी मन-ही-मन क्या-क्या सोचने लगी थीं?

10. जब राम धनुष के निकट पहुँचते हैं तो जनक क्यों चिन्तित हो जाते हैं?

➨ कवितावली

11. किस बात से पता लगता है कि वन-मार्ग में थोड़ी दूर चलने के बाद ही सीताजी थक गयी हैं?

12. वन-मार्ग में राम और लक्ष्मण के मध्य सीता को देख गाँव की स्त्रियों में जो वार्त्तालाप हुआ, उसका वर्णन पाठ के आधार पर कीजिए।

13. सीता ने ग्रामीण स्त्री के प्रश्न के उत्तर में जिस तरह अपने पति और देवर का परिचय दिया, उससे उनके स्वभाव की किस विशेषता का पता चलता है?

14. 'वन-पथ पर' शीर्षक कविता का सारांश लिखिए।

अथवा 'वन-पथ पर'–तुलसीदास जी द्वारा रचित 'कवितावली' के इस अंश का सार संक्षेप में लिखिए।

15. 'धनुष-भंग' और 'कवितावली' में प्रयुक्त छन्दों के नाम बताइए।

➨ आन्तरिक मूल्यांकन

(i) 'धनुष-भंग' पढ़ने के बाद आप पर उसका क्या प्रभाव हुआ? स्पष्ट कीजिए।

(ii) तुलसीदास की रचनाओं की एक सूची तैयार कीजिए।

टिप्पणी

➨ धनुष-भंग

उदित = प्रकट। **बिकसे** = प्रसन्नता से खिल उठे। **लोचन** = नेत्र। **भृंग** = भौंरे। **नखत** = नक्षत्र। **उलूक** = उल्लू। **लुकाने** = छिप गये। **बिसोक** = शोकरहित। **बंदि** = वन्दना। **अनुरागा** = प्रेमपूर्वक। **आयसु** = आज्ञा। **सहजहिं** = स्वाभाविक रूप से। **कुंजर** = हाथी। **पुलक** = प्रसन्नता, विभोर होकर। **सुकृत** = पुण्य। **सिवधनु** = भगवान् शंकर का धनुष। **भूप** = राजा। **मराल** = मयूर। **मृदु** = मधुर। **तेजवंत** = तेजस्वी। **सोषेउ** = सुखा देना। **रबि मंडल** = सूर्य की आभा। **त्रिभुवन** = तीनों लोकों का। **तम** = अँधेरा। **कुसुम** = फूल। **विषादु** = दुःख। **बिलोकि** = देखकर। **बैदेही** = सीता जी। **बिनवति** = प्रार्थना करती हैं। **अकुलानी** = व्याकुल होकर। **निरखि** = देखकर। **सुमिरि** = स्मरण करके। **मृदुगात** = कोमल शरीरवाले। **भोरी** = भ्रमित। **निहारी** = देखकर। **परिताप** = कष्ट। **लोचन** = नेत्र। **सरोज** = कमल। **कृपानिधान** = करुणा के सागर। **तकेउ** = देखा। **महीपन्ह** = राजाओं के। **दारुन** = कठोर। **दामिनि** = विद्युत। **तजि** = छोड़कर। **मारगु** = पथ। **बाल पतंग** = बालसूर्य। **संत** = सज्जन। **सरोज** = कमल। **निसि** = निशा, रात्रि। **नासी** = नष्ट हो गयी। **अवली** = पंक्ति। **महिप** = राजा। **लुकाने** = छिप गये। **कोक** = चकवे। **जनावहि** = प्रकट कर रहे। **पुर** = नगर। **चापा** = धनुष। **दापा** = दर्प, घमंड। **बाल मराल** = हंस का बच्चा। **मंदर** = मंदराचल। **सनायप** = समझदार। **सिरानी** = ज्ञानी। **विधि गति** = भाग्य की गति। **गनिअ** = गिनना। **कुंभज** = घड़े से उत्पन्न होने वाले। **तम भागा** = अंधकार भाग जाता है। **विधि हरिहर सुर** = ब्रह्मा, विष्णु, शिव, देवता। **खर्ब** = छोटा। **सायक** = बाण। **संसउ** = संशय, संदेह। **भंजब** = तोड़ेंगे। **सभय** = भय के साथ, डरा हुआ। **मनाव** = मना रही। **भवानी** = पार्वती। **गरुआई** = भारीपन। **गननायक** = गणों के नायक (गणेशजी)। **थोरी** = थोड़ी। **पुलकावलि** = रोमांच होना। **नीकें** = अच्छी तरह। **पनु** = प्राण। **मनु छोभा** = मन क्षुब्ध हुआ। **अहह** = अहो। **सिख** = सीख। **बुध** = ज्ञानी, पंडित। **कुलिसहु** = वज्र के समान। **परिताप** = बड़ा संताप। **लव** = क्षण। **चितई** = देखकर। **मनसिज** = कामदेव। **गिरा अलिनि** = वाणी रूपी भ्रमरी। **कृपन** = कृपण, कंजूस। **तकेउ** = ताका, कठोर दृष्टि से देखा। **गरुड़** = गरुड़। **व्यालहि** = साँप को। **हरि कोदंडु** = शिव का धनुष। **चापि** = दबाकर। **दिसिकुंजरहु** = दिशारूपी हाथी। **कमठ** = कच्छप। **अहि** = शेषनाग। **कोला** = वराह। **भृगुपति** = परशुराम। **मुनिबरन्ह** = श्रेष्ठ मुनियों की। **कदराई** = कायरता। **दावा** = दावानल। **अपारू** = अपार। **चाहत पारु** = पार जाना चाहते हैं। **कड़हारू** = कवट। **चित्र लिखे** = चित्र में लिखे हुए, जड़। **निमिष** = क्षण, पलक झपकने में लगा समय। **बिहात** = बीत रहा था। **कलप** = कल्प। **तृषित** = प्यासा। **मुएँ करइ** = मर जाने पर। **लाघव** = कौशलपूर्वक। **लखा** = देखा। **धुनि** = ध्वनि। **रव** = शब्द। **रबि बाजि** = सूर्य के घोड़े। **कलमले** = कलमला (व्याकुल हो) उठे। **कर कान्ह दीन्हें** = कानों पर हाथ रखकर। **कोदंड** = धनुष। **पुरतें** = शृंगवेरपुर से। **निकसी** = निकली। **रघुबीर-बधू** = श्रीराम की पत्नी-सीता जी। **पुट** = सम्पुट। **केतिक** = कितना। **परिखौं**= प्रतीक्षा करो। **घरीक** = एक घड़ी के लिए। **पसेउ** = पसीना। **बयारि** = हवा। **भूभुरि** = धूल, बालू। **डाढ़े** = तपे हुए। **स्रम जानि कै** = थकी हुई समझदार। **बिलंब लौं** = देर तक। **कंटक** = काँटे। **काढ़े** = निकाले। **नाह** = स्वामी। **विलोचन** = नेत्र। **अजानी** = अज्ञानी। **पवि** = वज्र। **काज-अकाज** = उचित और अनुचित। **कान कियो है** = कहना मान लिया है। **जोग** = योग्य। **किमि** = क्यों। **सीस** = शीर्ष, सिर। **उर** = वक्षस्थल। **तून** = तरकस। **सरासन** = धनुष। **सुठि** = अच्छी तरह। **रावरे** = तुम्हारे। **बैन** = वचन। **साने** = सिक्त। **सयानी** = चतुर। **सैन** = संकेत। **औसर** = अवसर। **लाहु** = लाभ। **अली** = सखी। **तड़ाग** = तालाब। **अनुराग-तड़ाग में** = प्रेम के सरोवर में। **बिगसी** = विकसित।

➨ वन-पथ-पर

1. **पुरतें** = शृंगवेरपुर में। **पुट सूखि गये मधुराधर वै** = दोनों मधुर होंठ सूख गये। **धरि धीर** = धैर्य धारण कर। **केतिक** = कितनी। **पर्णकुटी** = पत्तों की कुटिया। **आतुरता** = बेचैनी, व्याकुलता।

2. **परिखौ** = प्रतीक्षा करो। **घरीक** = एक घड़ी। **भूभुरि डाढ़े** = गरम धूल से जले हुए। **स्रम जानि कै** = थकी समझ कर। **कण्टक** = काँटा (टे)। **काढ़े** = निकाले।

3. **अजानी** = अज्ञानी। **पबि** = वज्र। **तिय** = पत्नी।

4. **तून** = तरकस।

5. **अनुराग-तड़ाग** = प्रेम का सरोवर।

●●

3 रसखान

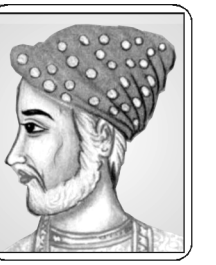

कवि-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म–**सन् 1533 ई0।
- **जन्म-स्थान–**दिल्ली।
- **अन्य जन्म-स्थान–**पिहानी, हरदोई (उ.प्र.)
- **गुरु–**गुसाईं विट्ठलनाथ।
- **रस–**भक्ति, शृंगार।
- **वास्तविक नाम-**सैयद इब्राहीम।
- **मृत्यु–**सन् 1618 ई0।
- **प्रमुख रचनाएँ-**'सुजान रसखान', 'प्रेमवाटिका', 'बाल लीला', 'अष्टयाम'।
- **भाषा-**ब्रज।
- **शैली-**मुक्तक, सरल एवं परिमार्जित।

रसखान सगुण काव्य-धारा की कृष्ण-भक्ति शाखा के कवि थे। इनका वास्तविक नाम सैयद इब्राहीम था। ये दिल्ली के पठान सरदार कहे जाते हैं। कुछ विद्वान् इन्हें पिहानी का निवासी मानते हैं। किन्तु इस विषय में कोई प्रबल प्रमाण उपलब्ध नहीं है। वैसे रसखान किसी बादशाह के वंशज थे, ऐसा 'प्रेमवाटिका' की अधोलिखित पंक्तियों से स्पष्ट है—

''देखि गदर हित साहिबी, दिल्ली नगर मसान।
छिनहिं बादसा-वंश की, ठसक छोरि रसखान॥''

इनके जन्म के सम्बन्ध में मतभेद है। कुछ विद्वान इनका जन्म 1533 ई0 मानते हैं। किन्तु मिश्रबन्धु ने 1548 ई0 माना है। इनका जन्म दिल्ली में हुआ था। ये गुसाईं विट्ठलनाथ के शिष्य हो गये थे। इनका उपनाम रसखान 'यथा नामः तथा गुणः' पर आधारित था, क्योंकि इनके एक-एक सवैये वास्तव में रस के खान हैं। सन् 1618 ई0 के लगभग इनकी मृत्यु हुई।

रसखान आरम्भ से ही बड़े प्रेमी व्यक्ति थे। इनका लौकिक प्रेम भगवान् कृष्ण के प्रति अलौकिक प्रेम-भाव में परिवर्तित हो गया था। ये जितना कृष्ण के रूप-सौन्दर्य पर मुग्ध थे, उतना ही उनकी लीला-भूमि ब्रज के प्राकृतिक सौन्दर्य पर भी। कृष्ण के प्रति इनके प्रेम-भाव में बड़ी तीव्रता, गहनता और आवेशपूर्ण तन्मयता मिलती है। इसी कारण इनकी रचनाएँ हृदय पर मार्मिक प्रभाव डालती हैं। अपनी भाव-प्रबलता तथा सरलता के कारण इनकी रचनाएँ बड़ी लोकप्रिय हो गयी हैं।

रसखान की चार पुस्तकें प्रसिद्ध हैं, **'सुजान रसखान'**, **'प्रेमवाटिका'**, **'बाल लीला'**, **'अष्टयाम'**। 'सुजान रसखान' की रचना कवित्त और सवैया छन्दों में हुई है तथा 'प्रेमवाटिका' की दोहा छन्द में। 'सुजान रसखान' भक्ति और प्रेम-विषयक मुक्तक काव्य है तथा इसमें 139 भावपूर्ण छन्द हैं। 'प्रेमवाटिका' में 25 दोहों में प्रेम के स्वरूप का काव्यात्मक वर्णन है। अन्य कृष्ण भक्त कवियों की भाँति इन्होंने परम्परागत पद-शैली का अनुसरण नहीं किया। इनकी मुक्तक छन्द-शैली की परम्परा रीतिकाल तक चलती रही।

भाषा–रसखान ने ब्रज भाषा में काव्य-रचना की। इनकी भाषा मधुर एवं सरस है। उसका स्वाभाविक प्रवाह ही इनके काव्य को आकर्षक बना देता है। इन्होंने कहीं-कहीं पर यमक तथा अनुप्रास आदि अलङ्कारों का प्रयोग किया है जिससे भाषा-सौन्दर्य के साथ भाव-सौन्दर्य की भी वृद्धि हुई है। भाषा में प्रसाद गुण की अधिकता है और सर्वत्र ही सरल, सुमधुर, सरस, प्रवाहमय व भाव गांभीर्ययुक्त भाषा के दर्शन होते हैं।

शैली–इनकी शैली अत्यन्त सरल और प्रभावोत्पादक है। रसखान के समय में गीत पद्धति का प्रचलन था। गीत छन्दशास्त्र के बन्धनों से मुक्त होता है, इस कारण रसखान ने अपने भाव प्रकट करने के लिए कवित्त, सवैया और दोहा छन्दों का प्रयोग किया। रसखान ने मत्तगयन्द सवैये और मनहरण कवित्त लिखे हैं। उन्होंने कवित्त और सवैये शैली को पुनः जीवित किया।

सवैये

मानुष हौं तो वही रसखानि, बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जौ पसु हौं तो कहा बस मेरो, चरौं नित नंद की धेनु मँझारन।।
पाहन हौं तो वही गिरि को, जो धर्‌यौ कर छत्र पुरंदर-धारन।
जो खग हौं तो बसेरो करौं, मिलि कालिंदी-कूल कदंब की डारन।।1।।

आजु गई हुती भोर ही हौं, रसखानि रई वहि नंद के भौनहिं।
वाको जियौ जुग लाख करोर, जसोमति को सुख जात कह्यो नहिं।।
तेल लगाइ लगाइ कै अँजन, भौंहैं बनाइ बनाइ डिठौनहिं।
डारि हमेलनि हार निहारत वारत ज्यौ चुचकारत छौनहिं।।2।।

धूरि भरे अति सोभित स्यामजू, तैसी बनी सिर सुंदर चोटी।
खेलत खात फिरैं अँगना, पग पैजनी बाजति पीरी कछोटी।।
वा छबि कों रसखानि बिलोकत, वारत काम कला निधि कोटी।
काग के भाग बड़े सजनी हरि-हाथ सों लै गयौ माखन-रोटी।।3।।

जा दिन तें वह नंद को छोहरा, या बन धेनु चराइ गयौ है।
मोहिनि तानि गोधन गावत, बेनु बजाइ रिझाइ गयौ है।।
वा दिन सो कछु टोना सो कै, रसखानि हियै मैं समाइ गयौ है।
कोऊ न काहू की कानि करै, सिगरो ब्रज बीर, बिकाइ गयौ है।।4।।

कान्ह भए बस बाँसुरी के, अब कौन सखी, हमकों चहिहै।
निसद्यौस रहै सँग-साथ लगी, यह सौतिन तापन क्यौं सहिहै।
जिन मोहि लियौ मनमोहन कौं, रसखानि सदा हमकौं दहिहै।
मिलि आऔ सबै सखी, भागि चलैं अब तो ब्रज में बँसुरी रहिहै।।5।।

मोर-पखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माल गरें पहिरौंगी।
ओढ़ि पितम्बर लै लकुटी, बन गोधन ग्वारन संग फिरौंगी।
भावतो वोहि मेरो रसखानि, सो तेरे कहें सब स्वाँग करौंगी।
या मुरली मुरलीधर की, अधरान धरी अधरा न धरौंगी।।6।।

कवित्त

गोरज बिराजै भाल लहलही बनमाल
आगे गैयाँ पाछें ग्वाल गावै मृदु बानि री।
तैसी धुनि बाँसुरी की मधुर मधुर, जैसी
बंक चितवनि मंद-मंद मुसकानि री।
कदम बिटप के निकट तटिनी के तट
अटा चढ़ि चाहि पीत पट फहरानि री।
रस बरसावै तन-तपनि बुझावै नैन
प्राननि रिझावै वह आवै रसखानि री।।7।।

('रसखानि-ग्रन्थावली' से)

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—
   (क) मानुष हौं ·····की डारन।
   (ख) धूरि भरे ·····माखन-रोटी। **(2020MD)**
   (ग) जा दिन तें ·····बिकाइ गयौ है।
   (घ) कान्ह भए ·····बँसुरी रहिहै।
   (ङ) मोर-पखा ····· न धरौंगी। **(2020MA, MA)**
   (च) गोरज बिराजै·····मुसकानि री।
2. रसखान का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए। **(2017AB,AC,AE 19AD)**
3. रसखान की रचनाओं का उल्लेख करते हुए उनकी भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।
4. रसखान की प्रमुख रचनाओं का उल्लेख करते हुए उनके काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।
5. रसखान की जीवनी का उल्लेख करते हुए उनकी रचनाओं और शैली पर प्रकाश डालिए।
6. रसखान का जीवन-परिचय लिखिए तथा उनकी काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
7. रसखान ऐसी कामना क्यों करते हैं कि यदि भगवान् उनको पक्षी बनाये तो ऐसा पक्षी बनाये जो यमुना के किनारे कदम्ब की डाल पर बसेरा करता हो?
8. कृष्ण के हाथ से रोटी छीन कर उड़ जानेवाला कौआ कवि को भाग्यशाली क्यों लगा?
9. जब से श्रीकृष्ण वन में गाय चराने गये, तब से वहाँ के लोगों की क्या दशा हो गयी?
10. गोपियाँ कृष्ण की मुरली को अपनी सौत क्यों समझती हैं?
11. गोपियाँ ब्रज से क्यों भाग जाना चाहती हैं?
12. गोपी अपनी सखी के कहने पर कौन-कौन से स्वाँग करने को तैयार है? वह कौन-सा कार्य करने को मना करती है?
13. 'जो खग हौं तो बसेरो करौं, मिलि कालिंदी-कूल कदंब की डारन' में प्रयुक्त अलंकार का नाम परिभाषा सहित बताइए।
14. 'सवैया' छन्द की सोदाहरण परिभाषा लिखिए।

➥ आन्तरिक मूल्यांकन

रसखान के 'सवैये' एवं 'कवित्त' पढ़ने के बाद आप पर क्या प्रभाव हुआ, स्पष्ट कीजिए।

टिप्पणी

1. **मानुष** = मनुष्य। **हौं** = होऊँ। **धेनु** = गाय। **मँझारन** = बीच में। **पाहन** = पत्थर। **डारन** = डाल। **खग** = पक्षी। **जो धर्‌यौ कर छत्र पुरन्दर धारन** = इन्द्र की मूसलधार वृष्टि से ब्रज को बचाने के लिए श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत छत्र की भाँति हाथ पर उठा लिया था। **कालिन्दी कूल** = यमुना तट (पर)।

2. **रई** = प्रेम में डूब गयी। **वाको** = उसका (पुत्र) यशोदा का पुत्र, श्रीकृष्ण। **हमेलनि हार** = गले में पहनने का भूषण। **जियौ** = जिय, प्राण। **डिठौनहिं** = नजर लगने के भय से शिशु के मस्तक पर लगाया गया काजल का टीका। **छौनहिं** = पुत्र को। **गई हुती** = गई थी। **भोर** = प्रातःकाल।

3. **कोटी** = कोटि, करोड़। **कछोटी** = कच्छा, काछनी। **अँगना** = आँगन। **पैजनी** = पायल। **छबि** = सौन्दर्य। **बिलोकत** = देखते हैं।

4. **गोधन** = ब्रज में गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत। **बीर** = हे मित्र, सखा। **धेनु** = गाय। **बेनु** = बंशी। **हियै** = हृदय।

5. **दहिहै** = जलायेगी। **निसद्यौस** = रात-दिन। **तापन** = सन्तापों को।

6. **भावतो वोहि मेरो रसखानि** = मेरे कृष्ण को जो प्रिय है, जो कुछ भी उन्हें रुचिकर है। **स्वाँग करौंगी** = रूप धारण करूँगी, अभिनय करूँगी। **अधरान धरी-अधरा न धरौंगी** = (i) अधरों पर रखी हुई मुरली को मैं अपने अधरों पर नहीं रखूँगी। (ii) (तेरे कहने से) मैं कृष्ण के होंठों पर रखी हुई मुरली को अपने होंठों पर रख लूँगी। **मोर–पखा** = मोर पंख। **पितंबर** = पीला वस्त्र। **भावतो** = अच्छा लगता है।

7. **गोरज** = गायों के पैरों से उड़ी हुई धूल। **बानि** = वाणी। **बंक** = टेढ़ी। **तटिनी** = नदी, यमुना। **लहलही** = शोभायमान हो रही है। **चितवन** = दृष्टि। **विटप** = वृक्ष। **पीतपट** = पीला वस्त्र।

4 बिहारीलाल

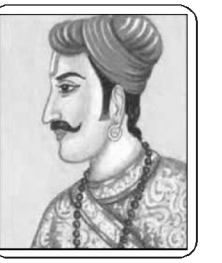

रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि बिहारीलाल का जन्म सन् 1603 ई० के लगभग ग्वालियर के पास बसुआ गोविन्दपुर गाँव में हुआ था। ये माथुर चौबे कहे जाते हैं। इनका बचपन बुन्देलखण्ड में व्यतीत हुआ। युवावस्था में ये अपनी ससुराल मथुरा में जाकर रहने लगे—

''जन्म ग्वालियर जानिए, खण्ड बुंदेले बाल।
तरुनाई आई सुघर, मथुरा बसि ससुराल।।''

जयपुर के मिर्जाराजा जयसिंह के आप आश्रित कवि थे। जयपुर में रहकर ही इन्होंने अपने एकमात्र ग्रन्थ **'बिहारी सतसई'** की रचना की, जिसमें सात सौ उन्नीस दोहे हैं। राजा जयसिंह बिहारी का बड़ा सम्मान करते थे। वे इनको प्रत्येक दोहे पर एक स्वर्ण-मुद्रा पुरस्कार रूप में देते थे। कहा जाता है कि महाराजा जयसिंह अपनी नवोढ़ा पत्नी के साथ प्रेम-पाश में लिप्त थे और राज-काज का पूर्णतः परित्याग कर चुके थे। यह दशा देखकर बिहारी ने एक ऐसा दोहा लिखकर भेजा कि जयसिंह पुनः कर्त्तव्य-पथ पर अग्रसर हो गये। बिहारी की मृत्यु सन् 1663 ई० में हुई थी।

कवि-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म–**सन् 1603 ई०।
- **जन्म-स्थान–**बसुआ गोविन्दपुर (ग्वालियर)।
- **पिता–**पं. केशवराय चौबे।
- **मृत्यु–**सन् 1663 ई०।
- **रचना-**बिहारी सतसई।
- **भाषा-**प्रौढ़ एवं परिमार्जित ब्रज।
- **शैली-**मुक्तक।

बिहारी ने किसी लक्षण-ग्रन्थ की रचना नहीं की, फिर भी काव्य-रचना करते समय इनका ध्यान काव्यांगों पर रहा। सतसई के अनेक दोहे रसों और अलङ्कारों के उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किये जा सकते हैं। ये रीतिकाल के श्रेष्ठ कवियों में गिने जाते हैं। भक्ति, नीति तथा ऋतु वर्णन भी इनके काव्य के विषय रहे पर प्रधानता प्रेम और शृंगार की है। 'बिहारी सतसई' मुक्तक काव्य रचना है जिसमें मुक्तक काव्य की सारी विशेषताएँ विद्यमान हैं। बिहारी ने लगभग 750 दोहों की रचना की। बिहारी ने दोहा जैसे छोटे छन्द का प्रयोग कर विस्तृत अर्थ की सफल अभिव्यञ्जना की है। किसी-किसी दोहे में भी अभीष्ट अर्थ ग्रहण करने के लिए काव्य-परम्परा की समूची पृष्ठभूमि के ज्ञान की आवश्यकता होती है।

बिहारी ने साहित्यिक ब्रज भाषा तथा मुक्तक शैली का प्रयोग किया है। भाषा में शब्द-योजना तथा वाक्य-रचना बड़ी अव्यवस्थित है। कहीं-कहीं उस समय के प्रचलित अरबी-फारसी के शब्दों का भी इन्होंने प्रयोग किया है।

केवल एक छोटे-से ग्रन्थ की रचना करके बिहारी साहित्य-जगत् में अमर हो गये। इनकी सतसई बड़ी लोकप्रिय हुई। इसकी अनेक टीकाएँ लिखी गयीं। कई कवियों ने इनके दोहों पर आधारित अन्य छन्दों की रचना की है। निस्सन्देह बिहारी ने 'गागर में सागर' भर दिया है। इनके दोहे सीधे हृदय पर प्रहार करते हैं। इनके दोहों के विषय में निम्नलिखित उक्ति प्रसिद्ध है—

''सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर।
देखन में छोटे लगैं, घाव करैं गम्भीर।।''

भक्ति

मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाँईं परै स्यामु हरित-दुति होइ।।1।।
मोर-मुकुट की चंद्रिकनु यौं राजत नँदनंद।
मनु ससि सेखर की अकस किय सेखर सत चंद।।2।।
सोहत ओढ़ै पीतु पटु, स्याम सलौनै गात।
मनौ नीलमनि सैल पर, आतपु पर्‌यौ प्रभात।।3।।
अधर धरत हरि कै परत, ओठ-डीठि-पट-जोति।
हरित बाँस की बाँसुरी, इन्द्रधनुष रंग होति।।4।।
या अनुरागी चित्त की गति समुझै नहिं कोइ।
ज्यौं ज्यौं बूड़े स्याम रंग त्यौं-त्यौं उज्जलु होइ।।5।।
तौ लगु या मन-सदन मैं हरि आवैं किहिं बाट।
विकट जटे जौ लगु निपट खुटैं न कपट-कपाट।।6।।
जगतु जनायौ जिहिं सकलु, सो हरि जान्यौ नाँहि।
ज्यौं आँखिनु सबु देखियै, आँखि न देखी जाँहि।।7।।
जप, माला, छापा, तिलक, सरै न एकौ कामु।
मन-काँचै नाचे वृथा, साँचे राँचै रामु।।8।।

नीति

दुसह दुराज प्रजानु कौं, क्यों न बढ़ै दुख-दंदु।
अधिक अँधेरौ जग करत, मिलि मावस, रबि चंदु।।9।।

बसै बुराई जासु तन, ताही कौ सनमानु।
भलौ भलौ कहि छोड़ियै, खोटैं ग्रह जपु दानु।।10।।

नर की अरु नल-नीर की, गति एकै करि जोइ।
जेतौ नीचो ह्वै चलै, तेतौ ऊँचौ होइ।।11।।

बढ़त-बढ़त संपति-सलिलु, मन सरोजु बढ़ि जाइ।
घटत-घटत सु न फिरि घटै, बरु समूल कुम्हिलाइ।।12।।
जौ चाहत, चटक न घटै, मैलौ होइ न मित्त।
रज राजसु न छुवाइ तौ, नेह-चीकनो चित्त।।13।।

बुरौ बुराई जौ तजै, तौ चितु खरौ डरातु।
ज्यौं निकलंकु मयंकु लखि गनैं लोग उतपातु।।14।।

स्वारथु सुकृतु, न श्रमु बृथा, देखि, बिहंग बिचारि।
बाज, पराऐं पानि परि, तूँ पच्छीनु न मारि।।15।।

('बिहारी-सतसई' से)

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

1. निम्नलिखित दोहों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—

(क) मेरी भव-बाधा ..... दुति होइ।

(ख) अधर-धरत ..... रंग होति।

(ग) जप माला ..... राँचै रामु। **(2019AE)**

(घ) जौ चाहत, चटक ..... नेह-चीकनो चित्र। **(2017AD)**

(ङ) बढ़त-बढ़त ..... कुम्हिलाइ। **(2017AD)**

(च) स्वारथु सुकृतु ..... पच्छीनु न मारि।

(छ) या अनुरागी चित्त की ..... कपट-कपाट।

(ज) बसै बुराई जासु ..... तेतौ ऊँचौ होइ। **(2016CB,CC)**

(झ) दुसह दुराज ..... ग्रह जपु-दानु। **(2016CC)**

(ञ) जगतु जनायौ जिहिं ..... न देखी जाँहि। **(2019AE)**

(ट) नर की ..... ऊँची होइ। **(2016CB)**

(ठ) बुरौ बुराई .....उतपातु। **(2018HA,20MG)**

2. बिहारीलाल का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा बिहारी लाल का जीवन-परिचय दीजिए तथा उनकी किसी एक रचना का नाम लिखिए। **(2016CA,CB,CE,CG, 17AA,AF,18HF,19AE,20MD,MB,MF)**

3. बिहारी की रचनाओं एवं साहित्यिक परिचय का उल्लेख कीजिए।

4. बिहारी का जीवनवृत्त लिखकर उनके साहित्यिक योगदान का उल्लेख कीजिए।

5. बिहारीलाल की जीवनी का उल्लेख करते हुए उनकी रचनाओं एवं काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

6. श्रीकृष्ण की 'हरित बाँस की बाँसुरी' इन्द्रधनुष के रंगोंवाली क्यों हो जाती है?

7. 'श्याम रंग में डूबने से चित्त उज्ज्वल हो जाता है।' विरोधाभास को स्पष्ट कीजिए।

8. किसी राज्य की प्रजा का दुःख कब बढ़ जाता है? बिहारी ने अपने कथन की पुष्टि में जो दृष्टान्त दिया है, उसको स्पष्ट कीजिए।

9. बिहारी ने मनुष्य की और पानी के नल की दशा को समान क्यों कहा है?

10. 'बुरा व्यक्ति जब बुराई छोड़ देता है, तब हम शंकित हो जाते हैं'—इस भाव की पुष्टि में कवि ने क्या दृष्टान्त दिया है?

11. कविवर बिहारी के काव्य-कौशल पर एक लेख लिखिए।

अथवा बिहारी ने 'गागर में सागर' भर दिया है–इस कथन पर प्रकाश डालिए।

12. निम्नलिखित दोहों में प्रयुक्त अलंकार एवं रस की पहचान कीजिए एवं उनकी परिभाषा दीजिए–

(क) मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागर सोइ।
जा तन की झाईं परै, स्यामु हरित-द्युति होइ।।

(ख) अधर धरत हरि कै परत, ओठ-डीठि-पट-ज्योति।
हरित बाँस की बाँसुरी, इन्द्र धनुष रंग होति।।

➥ आन्तरिक मूल्यांकन

(i) बिहारी की नीति सम्बन्धी दोहों से आप कितना प्रभावित हुए हैं, स्पष्ट कीजिए।

(ii) बिहारी का संक्षिप्त जीवन-परिचय तालिका के माध्यम से दर्शाइए।

टिप्पणी

1. भव-बाधा = सांसारिक बाधाएँ, जो मनुष्य को जीवन-लक्ष्य प्राप्त नहीं करने देतीं। **झाँईं** = प्रतिबिम्ब, झलक। **स्याम** = श्याम वर्ण के श्रीकृष्ण, काला रंग। **हरित दुति** = हरी कान्ति। प्रसन्नवदन राधा के स्वर्णिम (गौर-वर्ण) की झाँईं पड़ने से (i) श्रीकृष्ण प्रसन्न हो जाते हैं, (ii) नीला रंग हरा हो जाता है।

2. चंद्रिकनु = चंद्रिकाओं से, मोर पंख पर चमकते रंगों का जो चन्द्राकार चिह्न होता है उसे चन्द्रिका कहते हैं। **ससि-सेखर** = महादेव जी। **अकस** = ईर्ष्या से। श्रीकृष्ण कामदेव के समान सुन्दर हैं। कामदेव अपने जलानेवाले महादेव को अपना शत्रु समझता है। महादेव के मस्तक पर चन्द्रमा शोभित है, उनसे वैर के कारण मानो कामदेव (श्रीकृष्ण) ने सौ चन्द्रमा अपने मस्तक पर सजा लिये हैं।

3. आतपु = धूप। **सैल** = शैल (पहाड़ी, पर्वत)।

4. पट = पीताम्बर, होंठ की ज्योति लाल, दृष्टि की ज्योति नीली तथा पीताम्बर की ज्योति पीली है। जब हरे रंग की वंशी पर ये सब रंग प्रतिबिम्बित होते हैं तब वह इन्द्रधनुष के समान रंग-बिरंगी हो जाती है।

5. बूड़े स्याम रंग = श्रीकृष्ण के प्रेम में डूबता है। **उज्जलु होइ** = सफेद हो जाता है, पवित्र हो जाता है। इस दोहे में कवि ने यह चमत्कार दिखलाया है कि प्रेम करनेवाले चिह्न को श्याम रंग में डूबकर श्याम वर्ण का ही हो जाना चाहिए, पर वह उज्ज्वल हो जाता है। जब रचना में विरोध के द्वारा इस प्रकार चमत्कार उत्पन्न किया जाता है तो उसे विरोधाभास अलङ्कार कहते हैं। **गति** = दशा।

6. विकट जटे = दृढ़ता से बन्द। **जौ लगु** = जब तक। **निपट** = अत्यन्त। **खुटै** = खुलै। **कपट-कपाट** = कपाटरूपी किवाड़।

7. जगतु जनायौ जिहि सकलु = जिसने समस्त विश्व को पैदा किया है।

8. सरै = सिद्ध होता है। **मन काँचै** = कच्चे मन वाला, जिसके मन में सच्ची भक्ति नहीं। **नाचै** = भटकता है। **साँचे राँचै रामु** = राम तो सच्ची भक्ति वाले से ही प्रसन्न होते हैं।

9. दुःख दंदु = दुःखातिशयता। **मिलि** = एक राशि में आकर। **मावस** = अमावस्या की रात में। **द्वन्द्व** = संघर्ष।

10. खोटैं = खराब। **ग्रह** = नक्षत्र (सूर्य, चन्द्रमा, राहु, केतु आदि)। **सनमानु** = सम्मान।

11. जेतौ नीचो ह्वै चलै = जितना विनम्र होकर चलेगा, जितनी नल की स्थिति नीची होगी उससे जल की धार चलेगी। **तेतौ** = उतना।

12. सम्पति-सलिलु = सम्पत्तिरूपी जल। **मन-सरोजु** = मनरूपी कमल। **समूल** = जड़ सहित।

13. चटक = चमक, चटकीलापन। **रज-राजसु** = रजोगुण रूपी धूल, बड़प्पन की धूल। **नेह चीकनो** = स्नेह से चिकने, तेल से चिकने।

14. गनैं = सम्भावना करते हैं, आशंका करते हैं। **उतपातु** = अमंगल। **मयंकु** = चन्द्रमा।

15. यह अन्योक्ति है। बाज का प्रयोग मिर्जा राजा जयसिंह के लिए किया गया है तथा पच्छीनु का प्रयोग उन राजाओं के लिए किया गया है जिन पर राजा जयसिंह आक्रमण करते थे। **सुकृतु** = पुण्य कार्य। **पानि** = हाथ। **पच्छीनु** = पक्षियों को।

●●

5 सुमित्रानन्दन पन्त

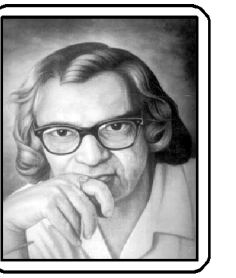

कवि-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म–** 20 मई, 1900 ई0।
- **जन्म-स्थान–**कौसानी (अल्मोड़ा-उत्तराखण्ड)
- **शिक्षा–**इण्टरमीडिएट।
- **पिता–** पं0 गंगादत्त पन्त।
- **माता–** सरस्वती देवी।
- **वास्तविक नाम–** गुसाईंदत्त।
- **लेखन विधा–** काव्य और गद्य।
- **भाषा–** सरल, सरस तथा सुकोमल, खड़ीबोली।
- **शैली–** चित्रमय, संगीतात्मक, मुक्तक।
- **मृत्यु–** 28 दिसम्बर, 1977 ई0।

सुमित्रानन्दन पन्त का जन्म 20 मई, 1900 ई0 में कौसानी ग्राम, जिला अल्मोड़ा (उत्तरांचल) में हुआ था। जन्म के छह घण्टे बाद ही इनकी माता का शरीरान्त हो गया। इनका लालन-पालन प्रकृति की गोद में हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा ग्राम की पाठशाला में हुई। हाईस्कूल की परीक्षा वाराणसी से पास करके ये प्रयाग के म्योर सेन्ट्रल कॉलेज में प्रविष्ट हुए, किन्तु सन् 1921 ई० में असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ होने पर कॉलेज छोड़कर साहित्य-साधना में प्रवृत्त हुए। इन्होंने संस्कृत, अंग्रेजी तथा बँगला का गम्भीर अध्ययन किया। उपनिषद्, दर्शन तथा आध्यात्मिक

साहित्य की ओर भी इनकी रुचि रही। संगीत से भी इन्हें प्रेम था। सन् 1950 ई० में पन्त जी 'ऑल इण्डिया रेडियो' के परामर्शदाता के पद पर नियुक्त हुए और सन् 1957 ई० में प्रत्यक्ष रूप से रेडियो से सम्बद्ध रहे। दीर्घकाल तक हिन्दी साहित्य की निरन्तर सेवा की। साहित्य अकादमी ने 'कला और बूढ़ा चाँद' के लिए इन्हें पुरस्कृत किया तथा भारत-सरकार ने इन्हें 'पद्मभूषण' अलंकरण से सम्मानित किया। इनकी कृति **'चिदम्बरा'** पर भारतीय ज्ञानपीठ का एक लाख रुपये का पुरस्कार प्रदान किया गया। आपको 'लोकायतन' पर सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार दिया गया। सरस्वती के इस पुजारी ने 28 दिसम्बर, 1977 ई० में इस भौतिक संसार से सदैव के लिये विदा ले ली।

इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं—**वीणा, ग्रन्थि, पल्लव, पल्लविनी, अतिमा, गुंजन, युगान्त, युगवाणी, ग्राम्या, स्वर्णकिरण, स्वर्णधूलि, उत्तरा, कला और बूढ़ा चाँद, युगपथ, शिल्पी, चिदम्बरा, ऋता, लोकायतन, रश्मिबन्ध, रजत शिखर** आदि।

'प्रसाद' तथा 'निराला' की भाँति पन्त भी छायावाद के आधार-स्तम्भ हैं। छायावाद अपने पूरे सौन्दर्य और समृद्धि के साथ पन्त के काव्य में प्रकट हुआ है। ये प्रकृति के सुन्दर, सजीव, मनोरम दृश्य अंकित करने में सिद्धहस्त हैं, अतः इन्हें 'प्रकृति का सुकुमार कवि' कहा जाता है। पन्त के काव्य-जीवन की यात्रा के स्पष्टतः तीन सोपान माने जा सकते हैं—

1. छायावादी काव्य रचनाएँ, 2. प्रगतिवादी काव्य तथा 3. श्री अरविन्द के दर्शन से प्रभावित होने के पश्चात् की अन्तश्चेतनावादी, आध्यात्मिक कविताएँ, जहाँ ये मानवतावाद के सच्चे समर्थक के रूप में प्रकट हुए हैं।

पन्त के काव्य में मानवता के प्रति सहज आस्था है। ये एक नवीन, सुन्दर, सुखी समाज की सृष्टि के प्रति आशावान हैं। विश्व-बन्धुत्व और भ्रातृत्व के प्रति यह आशावादी स्तर ही इनके काव्य को उदात्त बनाता है। पन्तजी सात वर्ष की अल्पायु से ही कविताओं की रचना करने लगे थे। इनकी प्रथम रचना सन् 1916 ई0 में सामने आयी। 'गिरजे का घण्टा' नामक इस रचना के पश्चात् ये निरन्तर काव्य-साधना में तल्लीन रहे।

इनकी भाषा चित्रमयी एवं अलंकृत है तथा स्पष्ट, सशक्त बिम्ब-योजना ने उसे अत्यन्त प्रभावमयी बना दिया है। संक्षेप में सुन्दर, सुकुमार भावों के चतुर-चितेरे पन्त ने खड़ीबोली को ब्रजभाषा जैसा माधुर्य एवं सरसता प्रदान करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। पन्त गम्भीर विचारक, उत्कृष्ट कवि और मानवता के सहज आस्थावान कुशल शिल्पी थे, जिन्होंने नवीन सृष्टि के अभ्युदय की कल्पना की। पन्तजी की शैली गीतात्मक मुक्तक शैली है, जिसमें सरलता, संगीतात्मकता और अभिव्यञ्जना-शक्ति की प्रधानता है।

●●

चींटी

चींटी को देखा?
वह सरल, विरल, काली रेखा
तम के तागे सी जो हिल-डुल
चलती लघुपद पल-पल मिल-जुल
वह है पिपीलिका पाँति!
देखो ना, किस भाँति
काम करती वह संतत!
कन-कन कनके चुनती अविरत!

गाय चराती,
धूप खिलाती,
बच्चों की निगरानी करती,
लड़ती, अरि से तनिक न डरती,
दल के दल सेना सँवारती,
घर आँगन, जनपथ बुहारती!

चींटी है प्राणी सामाजिक,
वह श्रमजीवी, वह सुनागरिक!

देखा चींटी को?
उसके जी को?
भूरे बालों की सी कतरन,
छिपा नहीं उसका छोटापन,
वह समस्त पृथ्वी पर निर्भय
विचरण करती, श्रम में तन्मय,
वह जीवन की चिनगी अक्षय!

वह भी क्या देही है, तिल-सी?
प्राणों की रिलमिल झिलमिल सी!
दिन भर में वह मीलों चलती,
अथक, कार्य से कभी न टलती।।

('युगवाणी' से)

चन्द्रलोक में प्रथम बार

चन्द्रलोक में प्रथम बार,
मानव ने किया पदार्पण,
छिन्न हुए लो, देश काल के,
दुर्जय बाधा बंधन!
दिग्विजयी मनु-सुत, निश्चय
यह महत् ऐतिहासिक क्षण,
भू-विरोध हो शांत,
निकट आएँ सब देशों के जन।

युग-युग का पौराणिक स्वप्न
हुआ मानव का संभव,
समारंभ शुभ नये चन्द्रयुग का
भू को दे गौरव!

फहराए ग्रह उपग्रह में
धरती का श्यामल अंचल,
सुख संपद् सम्पन्न जगत् में
बरसे जीवन-मंगल!

अमरीका सोवियत बनें
नव दिक् रचना के वाहन
जीवन पद्धतियों के भेद
समन्वित हों, विस्तृत मन!

अणु-युग बने धरा जीवन हित
स्वर्ग सृजन का साधन,
मानवता ही विश्व सत्य
भू-राष्ट्र करें आत्मार्पण।

धरा चन्द्र की प्रीति परस्पर
जगत प्रसिद्ध, पुरातन,
हृदय-सिंधु में उठता
स्वर्गिक ज्वार देख चन्द्रानन!

('ऋता' से)

|| अभ्यास प्रश्न ||

1. निम्नलिखित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—

(क) चींटी को ..... पिपीलिका पाँति!

(ख) चन्द्रलोक में ..... देशों के जन।

(ग) अमरीका सोवियत ..... विस्तृत मन!

(घ) अणु-युग ..... आत्मार्पण! **(2016CF)**

अथवा अणु-युग ..... चन्द्रानन। **(2020MC)**

2. सुमित्रानन्दन पन्त का जीवन-परिचय दीजिए तथा उनकी रचनाओं पर प्रकाश डालिए। **(2016CB,CC,CD,CG, 17AD,18HF,19AA,AB,AG,20MB)**

3. सुमित्रानन्दन पन्त का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

4. सुमित्रानन्दन पन्त का जीवन-वृत्त लिखकर उनके साहित्यिक योगदान का उल्लेख कीजिए।

5. सुमित्रानन्दन पन्त की जीवनी तथा उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए और काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

➨ चींटी

6. 'चींटी' कविता का सारांश लिखिए।

7. सुमित्रानन्दन पन्त द्वारा रचित 'चींटी' शीर्षक कविता का भावार्थ लिखिए।

8. पन्तजी ने चींटी को किसका प्रतीक माना है?

9. चींटी को कवि सामाजिक प्राणी और सुनागरिक क्यों कहता है?

10. 'प्राणों की रिलमिल-झिलमिल सी' पंक्ति में काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

➨ चन्द्रलोक में प्रथम बार

11. चन्द्रलोक में मानव के प्रथम पदार्पण को कवि ने महत् ऐतिहासिक क्षण क्यों कहा है?

12. मनुष्य का युग-युग का पौराणिक स्वप्न क्या रहा है?

13. कवि की दृष्टि अमेरिका-सोवियत तक सीमित क्यों है?

14. 'हृदय सिन्धु में उठता, स्वर्गिक ज्वार देख चन्द्रानन' का भाव स्पष्ट कीजिए।

15. मानव के चन्द्रलोक पर पहुँच जाने के बाद 'चन्द्रानन' की कल्पना कहाँ तक सार्थक है?

16. 'चन्द्रलोक में प्रथम बार' कविता का सारांश लिखिए।

17. चन्द्रलोक में मानव के प्रथम पदार्पण से भावी मानव-समृद्धि की कैसी कल्पना कवि के मन में आती है? पाठ के आधार पर उत्तर लिखिए।

18. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त रस, छन्द और अलंकार की पहचान कीजिए–

अणु-युग बने धरा जीवन हित
स्वर्ग सृजन का साधन,
मानवता ही विश्व सत्य
भू-राष्ट्र करें आत्मार्पण।

➨ आन्तरिक मूल्यांकन

(i) सुमित्रानन्दन पंत की प्रमुख रचनाओं की एक सूची तैयार कीजिए।

(ii) सुमित्रानन्दन पंत का जीवन-परिचय तालिका के माध्यम से दर्शाइए।

टिप्पणी

➨ चींटी

विरल = पतली, जो घनी न हो। **तम** = अँधेरा, अंधकार। **लघु पद** = छोटे-छोटे कदम। **पाँति** = पंक्ति। **सतत** = निरंतर, लगातार। **पिपीलिका** = चींटी। **गाय चराती धूप खिलाती** = प्राणिशास्त्र के विद्वानों का कथन है कि चींटियों में भी गायें होती हैं तथा चीटियाँ ही उनको चराने जाती हैं। **श्रमजीवी** = परिश्रम से जीनेवाले। **भूरे बालों की सी कतरन** = चींटी के लिए सर्वथा एक नवीन उपमान, उपमा। **चिनगी** = चिनगारी, अग्निकण। **प्राणों की रिलमिल झिलमिल सी** = चींटी छोटी है परन्तु अति जीवनपूर्ण, शक्ति से भरी हुई-सी इधर-उधर घूमती-फिरती रहती है। **अक्षय** = कभी क्षीण न होने वाली। **अथक** = बिना थके।

➨ चन्द्रलोक में प्रथम बार

अणु युग बने धरा जीवन हित = विज्ञान का सम्पूर्ण विकास मानव के कल्याण के लिए प्रयुक्त हो। **धरा चन्द्र की.....पुरातन** = पृथ्वी तथा चन्द्रमा का प्रेम बहुत पुराना है। एक विश्वास के अनुसार चन्द्रमा पृथ्वी का ही एक टुकड़ा था, जो टूट कर अलग छिटक कर जा गिरा। आज भी पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा को देखकर सागर में ज्वार आ जाना मानो इस प्रेम का प्रमाण है। **पौराणिक स्वप्न** = पुराण काल से चला आ रहा स्वप्न। **समारम्भ** = भलीभाँति प्रारम्भ। **ज्वार** = पूर्णिमा के दिन, रात को चन्द्रमा को देखकर समुद्र की जलतरंगों का ऊपर उठना ज्वार कहलाता है तथा उसका उतार भाटा कहलाता है। **चन्द्रानन** = (चन्द्र + आनन) चन्द्रमा का मुख। **प्रथम** = पहला। **पदार्पण** = कदम रखना। **दुर्जय** = अजेय, जिसे जीता न जा सके। **बाधा** = अवरोध, आपत्ति। **मनु-सुत** = मनु के पुत्र अथवा मनुष्य। **महत्** = बड़ा। **भू** = पृथ्वी, धरती। **विरोध** = झगड़ा। **ग्रह** = सूर्य की परिक्रमा करने वाले ग्रह। **उपग्रह** = किसी बड़े ग्रह के चारों ओर घूमने वाले छोटे ग्रह। **श्यामल** = हरा-भरा। **नव दिक्** = नई दिशाएँ। **पद्धति** = रास्ता। **विस्तृत** = बड़ा। **समन्वित** = इकट्ठा। **धरा** = भूमि, पृथ्वी। **सृजन** = निर्माण। **आत्मार्पण** = आत्मसमर्पण।

●●

6 महादेवी वर्मा

आधुनिक मीरा के नाम से प्रसिद्ध महादेवी वर्मा का जन्म 24 मार्च, 1907 ई० में होली के दिन फर्रुखाबाद (उ० प्र०) में हुआ था। इनके पिता श्री गोविन्द सहाय इन्दौर के एक कॉलेज में अध्यापक थे तथा माता सरल हृदया, धर्म-परायणा महिला थीं। महादेवी बड़ी कुशाग्रबुद्धि बालिका थीं और बचपन से ही माँ से रामायण-महाभारत की कथाएँ सुनते रहने के कारण इनके मन में साहित्य के प्रति आकर्षण उत्पन्न हो गया था। फलतः मौलिक काव्य-रचना इन्होंने बहुत छोटी आयु से आरम्भ कर दी थी। प्रयाग विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम० ए० करने के बाद ये प्रयाग महिला विद्यापीठ में प्राचार्या हो गयीं। नौ वर्ष की छोटी उम्र में ही इनका विवाह रूपनारायण वर्मा के साथ हो गया था, किन्तु इन्हीं दिनों इनकी माता का स्वर्गवास हो गया। इनके पति डॉक्टर थे, परन्तु दाम्पत्य जीवन में इनकी रुचि नहीं थी। इनके जीवन पर महात्मा गाँधी का और कला-साहित्य साधना पर कवीन्द्र-रवीन्द्र का प्रभाव पड़ा। इन्होंने नारी स्वातन्त्र्य के लिए संघर्ष किया और अपने अधिकारों की रक्षा के लिये नारियों का शिक्षित होना आवश्यक बताया। कुछ वर्षों तक महादेवी जी उत्तर प्रदेश विधान परिषद् की मनोनीत सदस्या रहीं। दर्शन, संगीत तथा चित्रकला में इनकी विशेष अभिरुचि थी। भारत-सरकार ने इन्हें 'पद्मभूषण' अलङ्कार से सम्मानित किया। सन् 1983 ई. में महादेवी जी को इनके काव्य ग्रंथ 'यामा' पर 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ और इसी वर्ष उत्तर प्रदेश सरकार ने इनको एक लाख रुपए का 'भारत भारती पुरस्कार' देकर इनकी साहित्यिक सेवाओं का सम्मान किया। ये प्रयाग महिला विद्यापीठ की उपकुलपति पद पर भी आसीन रहीं। इनका देहावसान 11 सितम्बर, 1987 ई० को हुआ।

कवयित्री-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म–**24 मार्च, 1907 ई०।
- **जन्म-स्थान–**फर्रुखाबाद (उ०प्र०)।
- **पिता–**श्री गोविन्द सहाय वर्मा।
- **माता–**श्रीमती हेमरानी।
- **शिक्षा–**एम.ए. (संस्कृत)।
- **संपादन–**चाँद (पत्र)।
- **भाषा–**ब्रजभाषा व खड़ीबोली।
- **शैली–**मुक्तक, चित्र, प्रगीत, ध्वन्यात्मक, सम्बोधन, प्रश्न।
- **प्रमुख रचनाएँ–**हिमालय, मेरा परिवार, यामा, अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, सप्तपर्णा, नीहार, रश्मि, नीरजा, सान्ध्य गीत, दीपशिखा, शृंखला की कड़ियाँ, अग्निरेखा, संधिनी, परिक्रमा, प्रथम आयाम, पथ के साथी, क्षणदा, संकल्पिता, चिन्तन के क्षण।
- उ०प्र० विधान परिषद् की सदस्यता रहीं।
- **मृत्यु–**11 सितम्बर, 1987 ई०।

महादेवी जी आधुनिक हिन्दी साहित्य के निर्माताओं में महत्त्वपूर्ण स्थान की अधिकारिणी हैं। **प्रसाद, पन्त, निराला** तथा **महादेवी वर्मा–'छायावाद-युग'** के इन चार महान् कवियों को बृहत् चतुष्टय के नाम से जाना जाता है। महादेवी जी ने मैट्रिक उत्तीर्ण करने के पश्चात् ही काव्य-रचना प्रारम्भ कर दी थी। करुणा एवं भावुकता उनके व्यक्तित्व के अभिन्न अंग थे। जहाँ एक ओर इनके काव्य में इन भावनाओं की अभिव्यक्ति हुई, वहीं दूसरी ओर इनकी ये भावनाएँ सम्पर्क में आनेवाले पीड़ित एवं दुःखी व्यक्तियों को भी प्रेम एवं सहानुभूति से प्रभावित करती रहीं। इनके द्वारा रचित काव्य में रहस्यवाद, वेदना एवं सूक्ष्म अनुभूतियों के कोमल तथा मर्मस्पर्शी भाव मुखरित हुए हैं।

इनकी रचनाएँ सर्वप्रथम 'चाँद' पत्रिका में प्रकाशित हुईं। इनकी काव्यात्मक प्रतिभा के लिए 'सेकसरिया' एवं 'मंगलाप्रसाद' पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इन्हें 'ज्ञानपीठ' एवं 'भारत-भारती' पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

इनकी प्रमुख काव्य-रचनाएँ हैं—**नीहार, रश्मि, नीरजा, सान्ध्य गीत, दीपशिखा, सप्तपर्णा**, **यामा** तथा **हिमालय।** नीहार महादेवी का प्रथम काव्य-संग्रह है। इसमें 47 गीत संकलित हैं। साहित्य को इनकी देन मुख्यतया एक कवि के रूप में है किन्तु इन्होंने प्रौढ़ गद्य-लेखन द्वारा हिन्दी भाषा को सजाने-सँवारने तथा अर्थ-गाम्भीर्य प्रदान करने में जो योगदान किया है, वह भी प्रशंसनीय है।

भाषा-शैली—महादेवी जी की प्रारंभिक काव्य रचनाएँ ब्रजभाषा में हैं, किन्तु बाद में खड़ीबोली पर इन्होंने साहित्य-सृजन केन्द्रित किया। इनकी खड़ीबोली शुद्ध, मधुर और कोमल है। इसमें संस्कृत के तत्सम शब्दों की अधिकता है। भाषा को मधुर और कोमल बनाने के लिए कहीं-कहीं शब्दों को परिवर्तित कर दिया गया है। सूक्ष्म भावनाओं का चित्रण होने के कारण इनकी भाषा में सांकेतिकता और संवेदनात्मकता है।

महादेवी जी ने गीतात्मक शैली में सरस गीतों की रचना की है, जिनमें वेदना की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। अपने गीतों में इन्होंने असीम, अगोचर, परोक्ष प्रिय (ईश्वर, ब्रह्म) के प्रति प्रेम का निवेदन किया है। बौद्धों के दुःखवाद तथा करुणावाद का इन पर बहुत प्रभाव था। इन्होंने अपने गीतों में स्निग्ध और सरल, तत्सम-प्रधान खड़ीबोली का प्रयोग किया है। साहित्य तथा संगीत के मणि-कांचन संयोग द्वारा 'गीत' की विधा को विकास की चरम सीमा तक पहुँचा देने का श्रेय महादेवी को ही है। कवि-हृदय लेकर और कल्पना के सप्तरंगी आकाश में बैठकर इन्होंने जिस काव्य का सृजन किया, वह स्मरणीय रहेगा।

●●

हिमालय से

हे चिर महान्!
यह स्वर्णरश्मि छू श्वेत भाल,
बरसा जाती रंगीन हास;
सेली बनता है इन्द्रधनुष,
परिमल मल मल जाता बतास!
पर रागहीन तू हिमनिधान!
नभ में गर्वित झुकता न शीश
पर अंक लिये है दीन क्षार;
मन गल जाता नत विश्व देख,
तन सह लेता है कुलिश भार!
कितने मृदु कितने कठिन प्राण!
टूटी है तेरी कब समाधि,
झंझा लौटे शत हार-हार;
बह चला दृगों से किन्तु नीर
सुनकर जलते कण की पुकार!
सुख से विरक्त दुःख में समान!
मेरे जीवन का आज मूक,
तेरी छाया से हो मिलाप;
तन तेरी साधकता छू ले,
मन ले करुणा की थाह नाप!
उर में पावस दृग में विहान!

('सान्ध्य गीत' से)

वर्षा सुन्दरी के प्रति

रूपसि तेरा घन-केश-पाश!
श्यामल श्यामल कोमल कोमल,
लहराता सुरभित केश-पाश!
नभ गंगा की रजतधार में,
धो आई क्या इन्हें रात?
कम्पित हैं तेरे सजल अंग,
सिहरा सा तन हे सद्यस्नात!

भीगी अलकों के छोरों से
चूतीं बूँदें कर विविध लास!
रूपसि तेरा घन-केश-पाश!

सौरभ भीना झीना गीला
लिपटा मृदु अंजन सा दुकूल;
चल अंचल में झर-झर झरते
पथ में जुगनू के स्वर्ण फूल;
दीपक से देता बार-बार
तेरा उज्ज्वल चितवन-विलास!
रूपसि तेरा घन-केश-पाश!

उच्छ्वसित वक्ष पर चंचल हे
बक-पाँतों का अरविन्द हार,
तेरी निश्वासें छू भू को
बन बन जातीं मलयज बयार;
केकी-रव की नूपुर-ध्वनि सुन
जगती जगती की मूक प्यास!
रूपसि तेरा घन-केश-पाश।

इन स्निग्ध लटों से छा दे तन
पुलकित अंकों में भर विशाल;
झुक सस्मित शीतल चुम्बन से
अंकित कर इसका मृदुल भाल;
दुलरा दे ना, बहला दे ना
यह तेरा शिशु जग है उदास!
रूपसि तेरा घन-केश-पाश।

('नीरजा' से)

|| अभ्यास प्रश्न ||

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—

(क) नभ में गर्वित झुकता ..... मृदु कितने कठिन प्राण! **(2019AF)**

(ख) टूटी है तेरी ..... दुःख में समान। **(2020MB)**

(ग) मेरे जीवन ..... दृग में विहान! **(2019AE,20MB)**

(घ) रूपसि तेरा ..... घन-केश-पाश! **(2016CA)**

(ङ) सौरभ भीना ..... घन-केश-पाश!

(च) उच्छ्वसित वक्ष ..... मलयज बयार।

(छ) इन स्निग्ध लटों ..... तेरा घन-केश-पाश। **(2017AF)**

2. महादेवी वर्मा का जीवन-परिचय देते हुए उनकी काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
3. महादेवी वर्मा का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए। **(2016CE,CF,17AC,AG, 18HA,19AC,20ME)**
4. महादेवी वर्मा का जीवनवृत्त लिखकर उनके साहित्यिक योगदान का उल्लेख कीजिए।
5. महादेवी वर्मा की जीवनी का उल्लेख करते हुए उनकी रचनाओं और भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।
6. 'हे चिर महान्' कविता में हिमालय के लिए कौन-कौन से विशेषण कवयित्री ने प्रयुक्त किये हैं? उनसे हिमालय के किन गुणों पर प्रकाश पड़ता है?
7. 'वर्षा-सुन्दरी के प्रति' कविता के आधार पर वर्षा का वर्णन कीजिए।
8. 'बक-पाँतों का अरविन्द हार' से कवयित्री का क्या आशय है? स्पष्ट कीजिए।
9. 'हिमालय से' शीर्षक कविता का क्या उद्देश्य है?
10. 'हिमालय से' कविता का मूल भाव अपने शब्दों में लिखिए।
11. 'हिमालय से' कविता से आपको क्या प्रेरणा मिलती है? सोदाहरण लिखिए।
12. 'हिमालय से' कविता के आधार पर हिमालय के व्यक्तित्व का वर्णन कीजिए।
13. 'जगती जगती की मूक प्यास' में कौन-सा अलङ्कार है? उसकी परिभाषा तथा दो अन्य उदाहरण दीजिए।

➥ आन्तरिक मूल्यांकन

(i) महादेवी वर्मा के गद्य एवं पद्य के क्षेत्र में किये गये योगदान का उल्लेख कीजिए।
(ii) महादेवी वर्मा की रचनाओं की एक सूची तैयार कीजिए।

टिप्पणी

स्वर्ण रश्मि = सुनहरी किरण। **हास** = हँसी। **सेली** = एक प्रकार की माला, छोटा दुपट्टा। **परिमल** = सुवास, खुशबू। **बतास** = (वातास) वायु। **रागहीन** = आसक्तिरहित। **क्षार** = राख, धूल। **कुलिश** = वज्र। **झंझा** = तूफानी हवा। **दृग** = नेत्र। **पावस** = वर्षा। **थाह** = गहराई। **विरक्त** = वैरागी। **मूक** = मौन। **विहान** = सवेरा। **घन-केश-पाश** = बादलरूपी बालों का समूह, बादल में केश-राशि का आरोप होने से रूपक अलङ्कार है। **नभ गंगा** = आकाश गंगा। **रजत धार** = चाँदी जैसे शुभ्र जल की धारा। **सद्यस्नात** = तुरन्त का नहाया हुआ। **लास** = नृत्य। **अंजन** = काजल। **दुकूल** = दुपट्टा। **चल** = थरथराते हुए। **जुगनू के स्वर्ण फूल** = जुगनूरूपी सुनहरे रंग के फूल। यहाँ रूपक अलङ्कार है। **देता बार-बार** = जला देता है। **चितवन विलास** = दृष्टि की भंगिमा। **उच्छ्वसित** = जोर से खींची साँस के कारण हिलता हुआ, प्रसन्न, गद्गद। **अरविन्द** = कमल। **बक पाँतों का अरविन्द हार** = बगुलों की पंक्तिरूपी सफेद कमलों की माला है। **केकी रव** = मयूरों का शब्द। **जगती जगती की मूक प्यास** = 'जगती' के दो अर्थ हैं—(1) जाग्रत होती है, (2) संसार। यहाँ यमक अलङ्कार है। **सस्मित** = मुस्कानयुक्त। **शिशु जग** = संसार को वर्षा का शिशु माना है। यहाँ रूपक अलङ्कार है। **मृदुल** = कोमल। **भाल** = माथा, मस्तक।

●●

7 रामनरेश त्रिपाठी

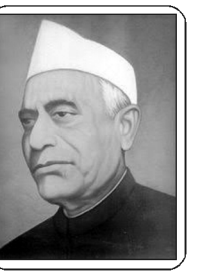

रामनरेश त्रिपाठी का जन्म 4 मार्च, 1889 ई० में जिला जौनपुर (उ० प्र०) के अन्तर्गत कोइरीपुर ग्राम में एक साधारण कृषक परिवार में हुआ था। घर के धार्मिक वातावरण तथा पिता की परमेश्वर भक्ति का पूरा प्रभाव बालक रामनरेश पर प्रारम्भ से ही पड़ा। केवल नवीं कक्षा तक स्कूल में पढ़ने के पश्चात् इनकी पढ़ाई छूट गयी। बाद में इन्होंने स्वाध्याय से हिन्दी, अंग्रेजी, बँगला, संस्कृत, गुजराती का गम्भीर अध्ययन किया और साहित्य-साधना को ही अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। 16 जनवरी, 1962 ई० में इनका स्वर्गवास हो गया।

कवि-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**–सन् 1889 ई०।
- **जन्म-स्थान**–कोइरीपुर (जौनपुर)।
- **मृत्यु**–सन् 1962 ई० (प्रयागराज में)।
- **प्रमुख रचनाएँ**–मिलन, पथिक, स्वप्न, मानसी, हे प्रभो आनन्ददाता, कविता कौमुदी, ग्राम्यगीत (संपादित), गोस्वामी तुलसीदास और उनकी कविता, (आलोचना), वीरांगना, प्रेमलोक (नाटक) महात्मा बुद्ध तथा अशोक, (जीवन चरित), फूलरानी, आकाश की बातें, बुद्धि विनोद (बाल साहित्य), सुभद्रा, स्वजनों के चित्र (कहानी संग्रह)।
- **पुरस्कार**-हिन्दुस्तान अकादमी पुरस्कार।
- **भाषा**-खड़ीबोली, हिन्दी, उर्दू।
- **शैली**-वर्णनात्मक, उपदेशात्मक।

त्रिपाठीजी मननशील, विद्वान् तथा परिश्रमी थे। ये द्विवेदी युग के उन साहित्यकारों में हैं, जिन्होंने द्विवेदी मण्डल के प्रभाव से पृथक् रहकर अपनी मौलिक प्रतिभा से साहित्य के क्षेत्र में कई कार्य किये। त्रिपाठीजी स्वच्छन्दतावादी कवि थे, ये लोकगीतों के सर्वप्रथम संकलनकर्त्ता थे। काव्य, कहानी, नाटक, निबन्ध, आलोचना तथा लोक-साहित्य आदि विषयों पर इनका पूर्ण अधिकार था। त्रिपाठीजी आदर्शवादी थे। इनकी रचनाओं में नवीन आदर्श और नवयुग का संकेत है। इनके द्वारा रचित **'पथिक'** और **'मिलन'** नामक खण्डकाव्य अत्यन्त लोकप्रिय हुए। इनकी रचनाओं की विशेषता यह है कि उनमें राष्ट्र-प्रेम तथा मानव-सेवा की उत्कृष्ट भावनाएँ बड़े सुन्दर ढंग से चित्रित हुई हैं। इसके अतिरिक्त भारतवर्ष की प्राकृतिक सुषमा और पवित्र-प्रेम के सुन्दर चित्र भी इन्होंने अपनी कविताओं में चित्रित किये हैं।

प्रकृति-वर्णन के क्षेत्र में त्रिपाठीजी का योगदान उल्लेखनीय है। इन्होंने प्रकृति को आलम्बन और उद्दीपन दोनों रूपों में ग्रहण किया है। इनके प्रकृति-चित्रण की विशेषता यह है कि जिन दृश्यों का वर्णन इन्होंने किया है, वे इनके स्वयं देखे हुए अनुभूत दृश्य हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं—**'पथिक'**, **'मिलन'** और **'स्वप्न'** (खण्ड काव्य), **'मानसी'** (स्फुट कविता संग्रह), **'कविता-कौमुदी'**, **'ग्राम्य गीत'** (सम्पादित), **'गोस्वामी तुलसीदास और उनकी कविता'** (आलोचना)।

त्रिपाठीजी की भाषा खड़ीबोली है। उसमें माधुर्य और ओज है। कहीं-कहीं उर्दू के प्रचलित शब्दों का प्रयोग किया है। शैली सरस, स्वाभाविक और प्रवाहपूर्ण है। इनकी शैली के दो रूप प्राप्त होते हैं—वर्णनात्मक एवं उपदेशात्मक।

स्वदेश-प्रेम

अतुलनीय जिनके प्रताप का,
साक्षी है प्रत्यक्ष दिवाकर।
घूम-घूम कर देख चुका है,
जिनकी निर्मल कीर्ति निशाकर।।
देख चुके हैं जिनका वैभव,
ये नभ के अनन्त तारागण।
अगणित बार सुन चुका है नभ,
जिनका विजय-घोष रण-गर्जन।।1।।

शोभित है सर्वोच्च मुकुट से,
जिनके दिव्य देश का मस्तक,
गूँज रही हैं सकल दिशाएँ,
जिनके जय-गीतों से अब तक।।
जिनकी महिमा का है अविरल,
साक्षी सत्य-रूप हिम-गिरि-वर।
उतरा करते थे विमान-दल
जिसके विस्तृत वक्षःस्थल पर।।2।।

सागर निज छाती पर जिनके,
अगणित अर्णव-पोत उठाकर।
पहुँचाया करता था प्रमुदित,
भूमंडल के सकल तटों पर।।
नदियाँ जिसकी यश-धारा-सी
बहती हैं अब भी निशि-वासर।
ढूँढ़ो उनके चरण-चिह्न भी,
पाओगे तुम इनके तट पर।।3।।

विषुवत् रेखा का वासी जो,
जीता है नित हाँफ-हाँफ कर।
रखता है अनुराग अलौकिक,
यह भी अपनी मातृभूमि पर।।
ध्रुव-वासी, जो हिम में तम में,
जी लेता है काँप-काँप कर।
वह भी अपनी मातृभूमि पर,
कर देता है प्राण निछावर।।4।।

तुम तो, हे प्रिय बंधु, स्वर्ग-सी,
सुखद, सकल विभवों की आकर।
धरा-शिरोमणि मातृ-भूमि में,
धन्य हुए हो जीवन पाकर।।
तुम जिसका जल अन्न ग्रहण कर,
बड़े हुए लेकर जिसकी रज।
तन रहते कैसे तज दोगे,
उसको, हे वीरों के वंशज।।5।।

जब तक साथ एक भी दम हो,
हो अवशिष्ट एक भी धड़कन।
रखो आत्म-गौरव से ऊँची,
पलकें ऊँचा सिर, ऊँचा मन।।
एक बूँद भी रक्त शेष हो,
जब तक मन में हे शत्रुंजय!
दीन वचन मुख से न उचारो,
मानो नहीं मृत्यु का भी भय।।6।।
निर्भय स्वागत करो मृत्यु का,
मृत्यु एक है विश्राम-स्थल।
जीव जहाँ से फिर चलता है,
धारण कर नव जीवन-संबल।।
मृत्यु एक सरिता है, जिसमें,
श्रम से कातर जीव नहाकर।
फिर नूतन धारण करता है,
काया-रूपी वस्त्र बहाकर।।7।।

सच्चा प्रेम वही है जिसकी
तृप्ति आत्म-बलि पर हो निर्भर।
त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है,
करो प्रेम पर प्राण निछावर।।
देश-प्रेम वह पुण्य-क्षेत्र है,
अमल असीम त्याग से विलसित।
आत्मा के विकास से जिसमें,
मनुष्यता होती है विकसित।।8।।

('स्वप्न' से)

|| अभ्यास प्रश्न ||

1. निम्नलिखित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—

(क) अतुलनीय जिनके ..... रण-गर्जन। **(2020ME)**

(ख) विषुवत् रेखा ..... प्राण निछावर।

(ग) तुम तो ..... वीरों के वंशज।

(घ) निर्भय स्वागत ..... वस्त्र बहाकर। **(2018HA,HF)**

(ङ) सच्चा प्रेम वही ..... है विकसित। **(2016CC,20MF)**

(च) जब तक साथ एक ..... मृत्यु का भी भय। **(2017AB,AE)**

(छ) सागर निज छाती पर ..... तुम इनके तट पर। **(2019AA,AD,AE,AF)**

2. रामनरेश त्रिपाठी का जीवन-परिचय एवं रचनाओं का उल्लेख कीजिए। **(2016CD,17AB,AD,20MG)**

3. रामनरेश त्रिपाठी के साहित्यिक अवदान एवं भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

4. रामनरेश त्रिपाठी का जीवन-परिचय लिखिए तथा उनकी काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

5. रामनरेश त्रिपाठी की जीवनी का उल्लेख करते हुए उनकी भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

6. 'स्वदेश-प्रेम' कविता का सारांश लिखिए।

7. 'स्वदेश-प्रेम' कविता का केन्द्रीय-भाव लिखिए।

8. 'स्वदेश प्रेम' कविता का आशय लिखिए।

9. जन्म-भूमि को माता-तुल्य मानना ही हमारा धर्म है। क्यों?

10. मातृ-भूमि के प्रति हमारे क्या कर्त्तव्य हैं? 'स्वदेश प्रेम' कविता के आधार पर निश्चित कीजिए।

11. संसार को परीक्षास्थल मानने से कवि का क्या आशय है? स्पष्ट कीजिए।

12. स्वदेश-प्रेम कविता में कवि ने अतीत की किन गौरवपूर्ण घटनाओं का उल्लेख किया है?

13. मातृभूमि के प्रति मनुष्य में स्वाभाविक प्रेम होता है। 'स्वदेश-प्रेम' कविता से इसके पक्ष में प्रमाण प्रस्तुत कीजिए।

14. 'स्वदेश प्रेम' शीर्षक कविता की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

15. 'स्वदेश-प्रेम' कविता से रूपक अलङ्कार के तीन उदाहरण लिखिए।

16. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त रस एवं छन्द का उल्लेख कीजिए–

तुम जिसका जल अन्न ग्रहण कर, बड़े हुए लेकर जिसकी रज।
तन रहते कैसे तज दोगे, उसको, हे वीरों के वंशज।।

➥ आन्तरिक मूल्यांकन

(i) पाठ की काव्य-पंक्तियों के माध्यम से रामनरेश त्रिपाठी के व्यक्तित्व की जो झलक मिलती है, उसे अपने शब्दों में अभिव्यक्त कीजिए।

(ii) स्वदेश-प्रेम पर आधारित अन्य कविता आप कंठस्थ करके लिखें।

टिप्पणी

➥ स्वदेश-प्रेम

अतुलनीय = बेजोड़। **दिवाकर** = सूर्य। **सत्य-रूप-हिम-गिरि-वर** = सत्य स्वरूप वाला श्रेष्ठ हिमालय। **निशाकर** = चन्द्रमा। **तम** = अन्धकार। **अर्णव-पोत** = समुद्री जहाज। **रण-गर्जन** = युद्ध गर्जना। **साक्षी** = प्रत्यक्ष दृष्टा। **वक्षःस्थल** = छाती। **विभवों की आकर** = वैभवों (ऐश्वर्यों, सुखों) की खान। **अवशिष्ट** = शेष। **सम्बल** = सहारा। **कातर** = दुःखी। **शत्रुञ्जय** = शत्रुजयी। **निष्प्राण** = प्राणहीन, निर्जीव। **अमल** = स्वच्छ। **विलसित** = सुशोभित। **अर्णव** = समुद्र में चलने वाला जहाज। **प्रमुदित** = प्रसन्न होकर। **सकल** = समस्त। **निशि-वासर** = रात-दिन। **हिम** = बर्फ। **आकर** = खजाना। **दम** = सांस। **अवशिष्ट** = बाकी। **नूतन** = नवीन, नया। **तृप्ति** = संतोष। **सरिता** = नदी। **विषुवत रेखा** = भूमध्य रेखा।

●●

8 माखनलाल चतुर्वेदी

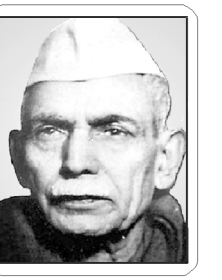

माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म 4 अप्रैल, सन् 1889 ई० में मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले में 'बावई' नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम पं० नन्दलाल चतुर्वेदी था। प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् इन्होंने घर पर ही संस्कृत, बँगला, गुजराती, अंग्रेजी आदि का अध्ययन किया। इन्होंने कुछ दिन अध्यापन-कार्य भी किया। सन् 1913 ई० में ये सुप्रसिद्ध मासिक पत्रिका 'प्रभा' के सम्पादक नियुक्त हुए। श्री गणेशशंकर विद्यार्थी की प्रेरणा तथा साहचर्य के कारण ये राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लेने लगे। इन्हें कई बार जेल-यात्रा करनी पड़ी। ये सन् 1943 ई० में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष हुए। सागर विश्वविद्यालय ने इन्हें डी० लिट् की उपाधि तथा भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' की उपाधि से अलंकृत किया। अपनी कविताओं द्वारा नवजागरण और क्रान्ति का शंख फूँकनेवाले कलम के इस सिपाही का 30 जनवरी, सन् 1968 ई० को स्वर्गवास हो गया।

कवि-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**–4 अप्रैल, सन् 1889 ई०।
- **जन्म-स्थान**–बावई (होशंगाबाद), म० प्र०।
- **पिता**–पं० नन्दलाल चतुर्वेदी।
- **मृत्यु**–30 जनवरी, सन् 1968 ई०।
- **सम्पादन**-प्रभा, कर्मवीर (पत्र)।
- **शिक्षा**-प्राथमिक शिक्षा के पश्चात् घर पर ही अंग्रेजी, संस्कृत, बांग्ला, गुजराती भाषा का अध्ययन।
- **प्रमुख रचनाएँ**-रामनवमी, समर्पण, माता, युगचरण, साहित्य-देवता, हिमतरंगिणी, वेणु लो गूंजे धरा।
- **भाषा**-सरल और प्रवाहपूर्ण खड़ीबोली।
- **शैली**-मुक्तक, ओजपूर्ण, भावात्मक।

चतुर्वेदीजी के रचना-संग्रह इस प्रकार हैं—**हिमकिरीटिनी, हिमतरंगिनी, माता, युगचरण, समर्पण, वेणु लो गूँजे धरा।** इनके अतिरिक्त चतुर्वेदीजी ने नाटक, कहानी, निबन्ध, संस्मरण भी लिखे हैं। इनके भाषणों के '**चिन्तक की लाचारी**' तथा '**आत्म-दीक्षा**' नामक संग्रह भी प्रकाशित हुए हैं। चतुर्वेदीजी की प्रसिद्धि कवि के रूप में ही अधिक है, किन्तु ये एक पत्रकार, समर्थ निबन्धकार और सिद्धहस्त सम्पादक भी थे। इनकी गद्य-काव्य की अमर कृति '**साहित्य देवता**' भावात्मक निबन्धों का संग्रह है। '**क्रान्तिक की लाचारी**' और '**आत्मदीक्षा**' में चतुर्वेदी जी के ओजस्वी और विचारशील भाषण संग्रहीत हैं। इन्होंने '**नागार्जुन**' नाटक की रचना की है, साथ ही '**कर्मवीर**' और '**कला का अनुवाद**' दो कहानी संग्रह भी इनके हैं।

इनके काव्य का मूल स्वर राष्ट्रीयतावादी है, जिसमें त्याग, बलिदान, कर्त्तव्य-भावना और समर्पण का भाव है। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को स्वर देनेवालों में इनका प्रमुख स्थान रहा है। इनकी कविता में यदि कहीं ज्वालामुखी की तरह धधकता हुआ अन्तर्मन है तो कहीं पौरुष की हुंकार और कहीं करुणा से भरी मनुहार है। इनकी रचनाओं की प्रवृत्तियाँ प्रायः स्पष्ट और निश्चित हैं। राष्ट्रीयता इनके काव्य का कलेवर है, तो भक्ति और रहस्यात्मक प्रेम इनकी रचनाओं की आत्मा। इनकी छन्द-योजना में भी नवीनता है। चतुर्वेदी जी की कविता में भाव-पक्ष की कमी को कला-पक्ष पूर्ण कर देता है। माखनलाल जी ने खण्डवा (म०प्र०) से 'कर्मवीर' साप्ताहिक पत्र भी निकाला था।

चतुर्वेदीजी की भाषा खड़ीबोली है। उसमें संस्कृत के सरल और तत्सम शब्दों के साथ फारसी के शब्दों का प्रयोग हुआ है। कहीं-कहीं भाषा भावों के साथ चलने में असमर्थ हो जाती है, जिससे भाव अस्पष्ट हो जाता है। इनकी शैली में ओज की मात्रा अधिक है। भावों की तीव्रता में कहीं-कहीं इनकी शैली दुरूह और अस्पष्ट हो गयी है।

पुष्प की अभिलाषा

चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं प्रेमी-माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ,
चाह नहीं सम्राटों के शव पर हे हरि डाला जाऊँ,
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ,

मुझे तोड़ लेना बनमाली,
उस पथ में देना तुम फेंक।
मातृ-भूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ जावें वीर अनेक। **('युगचरण' से)**

जवानी

प्राण अन्तर में लिये, पागल जवानी!
कौन कहता है कि तू
विधवा हुई, खो आज पानी?

चल रहीं घड़ियाँ,
चले नभ के सितारे,
चल रहीं नदियाँ,
चले हिम-खण्ड प्यारे;
चल रही है साँस,
फिर तू ठहर जाये?
दो सदी पीछे कि
तेरी लहर जाये?

पहन ले नर-मुंड-माला,
उठ, स्वमुंड सुमेरु कर ले;
भूमि-सा तू पहन बाना आज धानी
प्राण तेरे साथ हैं, उठ री जवानी!

द्वार बलि का खोल
चल, भूडोल कर दें,
एक हिमगिरि एक सिर
का मोल कर दें,
मसल कर, अपने
इरादों सी, उठा कर,
दो हथेली हैं कि
पृथ्वी गोल कर दें?

रक्त है? या है नसों में क्षुद्र पानी!
जाँच कर, तू सीस दे-देकर जवानी?

वह कली के गर्भ से फल
रूप में, अरमान आया!
देख तो मीठा इरादा, किस
तरह, सिर तान आया!
डालियों ने भूमि रुख लटका
दिये फल, देख आली!
मस्तकों को दे रही
संकेत कैसे, वृक्ष-डाली!

फल दिये? या सिर दिये? तरु की कहानी
गूँथकर युग में, बताती चल जवानी।

श्वान के सिर हो
चरण तो चाटता है!
भौंक ले—क्या सिंह
को वह डाँटता है?
रोटियाँ खायीं कि
साहस खो चुका है,
प्राणि हो, पर प्राण से
वह जा चुका है।

तुम न खेलो ग्राम-सिंहों में भवानी!
विश्व की अभिमान मस्तानी जवानी!

ये न मग हैं, तब
चरण की रेखियाँ हैं,
बलि दिशा की अमर
देखा-देखियाँ हैं।
विश्व पर, पद से लिखे
कृति लेख हैं ये,
धरा तीर्थों की दिशा
की मेख हैं ये।

प्राण रेखा खींच दे, उठ बोल रानी,
री मरण के मोल की चढ़ती जवानी।

टूटता-जुड़ता समय
'भूगोल' आया,
गोद में मणियाँ समेट
'खगोल' आया,
क्या जले बारूद?
हिम के प्राण पाये!
क्या मिला? जो प्रलय
के सपने न आये।
धरा? यह तरबूज
है, दो फाँक कर दे,

चढ़ा दे स्वातन्त्र्य-प्रभु पर अमर पानी!
विश्व माने—तू जवानी है, जवानी!

लाल चेहरा है नहीं
फिर लाल किसके?
लाल खून नहीं?
अरे, कंकाल किसके?
प्रेरणा सोयी कि
आटा-दाल किसके?
सिर न चढ़ पाया
कि छापा-माल किसके?

वेद की वाणी कि हो आकाशवाणी,
धूल है जो जग नहीं पायी जवानी।

विश्व है असि का?
नहीं संकल्प का है;
हर प्रलय का कोण,
काया-कल्प का है,
फूल गिरते, शूल
शिर ऊँचा लिये हैं;
रसों के अभिमान
को नीरस किये हैं!

खून हो जाये न तेरा देख, पानी!
मरण का त्योहार, जीवन की जवानी।

('हिमकिरीटिनी' से)

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—

(क) चाह नहीं .....वीर अनेक!

(ख) मुझे तोड़ .....वीर अनेक।

(ग) पहन ले .....उठ री जवानी!

(घ) लाल चेहरा .....छापा-माल किसके। **(2020MG)**

(ङ) विश्व है असि .....जीवन की जवानी। **(2016CG)**

(च) रक्त है? या है .....वृक्ष डाली। **(2016CD)**

2. माखनलाल चतुर्वेदी का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा माखनलाल चतुर्वेदी का जीवन-परिचय दीजिए तथा उनकी किसी एक रचना का नाम लिखिए। **(2017AA,AE,AF, 18HA, 20MC)**

3. माखनलाल चतुर्वेदी की रचनाओं का उल्लेख करते हुए उनकी भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

4. माखनलाल चतुर्वेदी की जीवनी का उल्लेख करते हुए उनकी रचनाओं और शैली पर प्रकाश डालिए।

5. 'जवानी' शीर्षक कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

6. 'पुष्प की अभिलाषा' कविता में फूल को किन बातों की चाह नहीं है और क्यों?

7. पुष्प को मातृभूमि के लिए शीश कटाने हेतु जानेवालों के पथ पर बिछने में क्यों आनन्द है?

8. 'पुष्प की अभिलाषा' कविता का सारांश लिखिए।

9. 'जवानी' कविता में कवि ने युवकों को क्या प्रेरणा दी है?
10. साहसहीन युवक को ग्राम-सिंह कहकर सम्बोधित करने में जो व्यंग्य है, उसे समझाइए।
11. 'पुष्प की अभिलाषा' शीर्षक कविता का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।
12. 'पुष्प की अभिलाषा' शीर्षक कविता के द्वारा कवि ने हमें क्या सन्देश देने का प्रयास किया है? स्पष्ट कीजिए।
13. हास्य रस की परिभाषा देते हुए प्रस्तुत पाठ से एक उदाहरण दीजिए।
14. उपमा अलंकार को परिभाषित करते हुए प्रस्तुत पाठ से उदाहरण दीजिए।
15. सोरठा छन्द को सोदाहरण परिभाषित कीजिए।

➥ आन्तरिक मूल्यांकन

(i) माखनलाल चतुर्वेदी की रचनाओं की एक सूची तैयार कीजिए।
(ii) राष्ट्रवादी कवियों की एक सूची तैयार कीजिए।

टिप्पणी

➨ पुष्प की अभिलाषा

सुरबाला = देवांगना, अप्सरा। **सम्राटों** = चक्रवर्ती राजाओं। **इठलाऊँ** = गर्व करूँ, इतराऊँ। **बनमाली** = माली, वनमाला धारण करनेवाला। **शव** = लाश। **चाह** = इच्छा।

➨ जवानी

विधवा = निस्तेज के लिए प्रयुक्त। **पानी** = तेज, स्वाभिमान हेतु प्रयुक्त। **चल रहीं घड़ियाँ.....लहर जाये** = सब में गति है तथा तेरी प्रगति रुक जाय, यह कैसे सम्भव है, दो शताब्दियों के बाद तेरी उमंग जागे, यह ठीक नहीं। **स्वमुण्ड सुमेरु कर ले** = अपने सिर को बलिदानी मुण्डमाला का सबसे बड़ा दाना बना ले, जीने की ममता त्याग दे। **भूमि-सा.....आज धानी** = जैसे लहलहाते हुए धानों की हरियाली में धरती का जीवन झलकता है, उसी भाँति अपनी निस्तेज उदास जवानी को जीवन दो। **एक हिमगिरि.....पृथ्वी गोल कर दें** = एक सिर के बदले में हिमालय को चूर्ण-चूर्ण कर दें। जैसे मन में इरादे उठते हैं, वैसे ही पृथ्वी को हाथों में उठा कर मसल दें। **वह कली.....सिर तान आया** = जिस प्रकार कली से फूल एवं फूल से फल बनता है, उसी प्रकार मन में उठनेवाली तेरी इच्छाएँ दृढ़ हों तथा शुभ संकल्पों का रूप धारण करके निकलें। **डालियों ने.....वृक्ष-डाली** = धरती की ओर झुके हुए वृक्षों के लटकते हुए फल जैसे किसी शुभ संकल्प हेतु सिर कटाने का संकेत दे रहे हों। **ये न मग हैं.....रेखियाँ हैं** = वीर युवक ही प्राणों की चिन्ता किये बिना नवीन पथ का निर्माण किया करते हैं। **बलि दिशा.....देखा-देखियाँ हैं** = वे दूसरे की देखा-देखी बलिदान-पथ हुआ करते हैं। **धरा तीर्थों.....मेख हैं ये** = युवकों के मार्ग धरा तीर्थ की भाँति वन्दनीय स्थान बन गये हैं। **री मरण के.....चढ़ती जवानी** = जिसका मूल्य मरण है, जो प्राणोत्सर्ग से मिलती है। **भूगोल =** भूमण्डल। **खगोल** = आकाशमण्डल। **आटा-दाल किसके** = निर्जीव होकर क्या दूसरों के द्वारा सरलता से निगल जाने योग्य खाद्य पदार्थ बन गये हो? **हर प्रलय का कोण कायाकल्प का है** = प्रत्येक प्रलय जीवन को नया मोड़ देता है। प्रत्येक क्रान्ति में नये परिवर्तन का मोड़ होता है। **मरण का त्योहार....जवानी** = जीवन रहने पर जो जोश से भरी रहती है तथा मरण जिसके लिए त्योहार जैसा प्रसन्नतादायक है। **असि** = तलवार। **कायाकल्प** = पूर्ण परिवर्तन, क्रान्ति। **अन्तर** = भीतर। **नभ** = आकाश। **हिमखण्ड** = बर्फ के टुकड़े। **नर-मुण्ड माला** = मनुष्यों के मुण्डों की माला। **सुमेरु** = माला का वह दाना जिसके पूर्व माला पूरी होती है। **भूडोल** = कम्पित। **इरादों** = संकल्प, इच्छा, विचार। **अरमान** = अभिलाषा। **अली** = सखी। **श्वान** = कुत्ता। **ग्राम सिंहों** = कुत्ता। **मग** = मार्ग। **कृति लेख** = कार्यरूपी लेख। **स्वातंत्र्य-प्रभु** = स्वतंत्रतारूपी ईश्वर। **लाल** = लाल रंग, पुत्र। **माल** = माला। **संकल्प** = दृढ़ निश्चय। **शूल** = काँटे।

●●

9 सुभद्राकुमारी चौहान

सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म संवत् 1961 (सन् 1904 ई0) में इलाहाबाद जिले में स्थित निहालपुर मोहल्ले के एक सम्पन्न परिवार में हुआ था। इनके पिता रामनाथ सिंह सुशिक्षित और प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। बहुत छोटी अवस्था से ही इन्हें हिन्दी काव्य से विशेष प्रेम था, जो बाद में जाकर पल्लवित हुआ। इनका विवाह खण्डवा (मध्य प्रदेश) निवासी ठाकुर लक्ष्मणसिंह चौहान के साथ हुआ। विवाह के साथ ही सुभद्राजी के जीवन में एक नवीन मोड़ आया। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के आन्दोलन का इन पर गहरा प्रभाव पड़ा और उससे प्रेरित होकर ये राष्ट्र-प्रेम पर कविताएँ लिखने लगीं। इनके पिता ब्रिटिश राज्य के विरुद्ध राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लेते रहे। सुभद्राजी ने असहयोग आन्दोलन में भाग लेने के कारण अपना अध्ययन छोड़ दिया था और पति के साथ राजनीतिक आन्दोलनों में भाग लेती रहीं, जिसके परिणामस्वरूप ये कई बार जेल भी गयीं। ये मध्य प्रदेश विधानसभा की सदस्या भी रहीं। सन् 1948 ई0 में एक मोटर-दुर्घटना में सिवनी में इनकी असामयिक मृत्यु हो गयी।

कवयित्री-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म–**16 अगस्त, 1904 ई0
- **जन्म-स्थान–**निहालपुर (प्रयागराज)।
- **पिता–**रामनाथ सिंह।
- **पति–**लक्ष्मण सिंह चौहान।
- **मृत्यु–**15 फरवरी, 1948 ई0 (सिवनी)।
- **प्रमुख रस–**वीर एवं वात्सल्य।
- **भाषा–**शुद्ध साहित्यिक खड़ीबोली।
- **शैली–**संगीतात्मक, ओजयुक्त, व्यावहारिक।
- **छन्द–**तुकांत-मुक्तक।
- **प्रमुख रचनाएँ–**सीधे-सादे चित्र, बिखरे मोती, उन्मादिनी, मुकुल और त्रिधारा।

सुभद्राजी की काव्य-साधना के पीछे उत्कट देश-प्रेम, अपूर्व साहस तथा आत्मोत्सर्ग की प्रबल कामना है। इनकी कविता में सच्ची वीरांगना का ओज और शौर्य प्रकट हुआ है। हिन्दी काव्य जगत् में ये अकेली ऐसी कवयित्री थीं जिन्होंने अपने कण्ठ की पुकार से, लाखों भारतीय युवक-युवतियों को युग-युग की अकर्मण्य उदासी को त्याग, स्वतन्त्रता-संग्राम में अपने को झोंक देने के लिए प्रेरित किया। वर्षों तक सुभद्राजी की '**झाँसी वाली रानी थी**' और '**वीरों का कैसा हो वसन्त**' शीर्षक कविताएँ लाखों तरुण-तरुणियों के हृदय में क्रान्ति की ज्वाला फूँकती रहीं।

'**मुकुल**' और '**त्रिधारा**' इनके प्रसिद्ध काव्य-संग्रह हैं, '**सीधे-सादे चित्र**', '**बिखरे मोती**' और '**उन्मादिनी**' इनकी कहानियों के संकलन हैं।

सुभद्राजी की भाषा सीधी, सरल तथा स्पष्ट एवं आडम्बरहीन खड़ीबोली है। मुख्यतः दो रस इन्होंने चित्रित किये हैं—वीर तथा वात्सल्य। अपने काव्य में पारिवारिक जीवन के मोहक चित्र भी इन्होंने अंकित किये हैं जिनमें वात्सल्य की मधुर व्यंजना हुई है। इनके काव्य में एक ओर नारी-सुलभ ममता तथा सुकुमारता है और दूसरी ओर पद्मिनी के जौहर की भीषण ज्वाला। अलङ्कारों अथवा कल्पित प्रतीकों के मोह में न पड़ कर सीधी-सादी स्पष्ट अनुभूति को इन्होंने प्रधानता दी है। शैलीकार के रूप में सुभद्राजी की शैली में सरलता विशेष गुण है। नारी-हृदय की कोमलता और उसके मार्मिक भाव पक्षों को नितान्त स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत करना इनकी शैली का मुख्य आधार है।

झाँसी की रानी की समाधि पर

इस समाधि में छिपी हुई है,
एक राख की ढेरी।
जल कर जिसने स्वतन्त्रता की,
दिव्य आरती फेरी।।

यह समाधि, यह लघु समाधि है,
झाँसी की रानी की।
अंतिम लीलास्थली यही है,
लक्ष्मी मरदानी की।।

यहीं कहीं पर बिखर गये वह,
भग्न विजय-माला-सी।
उसके फूल यहाँ संचित हैं,
है यह स्मृति-शाला सी।।

सहे वार पर वार अंत तक,
लड़ी वीर बाला-सी।
आहुति-सी गिर चढ़ी चिता पर,
चमक उठी ज्वाला-सी।।

बढ़ जाता है मान वीर का,
रण में बलि होने से।
मूल्यवती होती सोने की,
भस्म यथा सोने से।।

रानी से भी अधिक हमें अब,
यह समाधि है प्यारी।
यहाँ निहित है स्वतन्त्रता की,
आशा की चिनगारी।।
इससे भी सुन्दर समाधियाँ,
हम जग में हैं पाते।

उनकी गाथा पर निशीथ में,
क्षुद्र जंतु ही गाते।।
पर कवियों की अमर गिरा में,
इसकी अमिट कहानी।
स्नेह और श्रद्धा से गाती
है, वीरों की बानी।।

बुंदेले हरबोलों के मुख,
हमने सुनी कहानी।
खूब लड़ी मर्दानी वह थी,
झाँसी वाली रानी।।

यह समाधि, यह चिर समाधि,
है, झाँसी की रानी की।
अंतिम लीलास्थली यही है,
लक्ष्मी मरदानी की।। **('त्रिधारा' से)**

|| अभ्यास प्रश्न ||

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—
(क) यहीं कहीं पर ..... ज्वाला-सी। **(2017AG, 19AC)**
(ख) बढ़ जाता है ..... आशा की चिनगारी। **(2016CE)**
(ग) बुंदेले हरबोलों ..... वाली रानी।
(घ) पर कवियों की ..... झाँसी वाली रानी।
(ङ) स्नेह और श्रद्धा से ..... झाँसी की रानी की।
(च) यहाँ निहित है ..... इसकी अमिट कहानी। **(2017AF)**

2. सुभद्राकुमारी चौहान का जीवन-परिचय एवं रचनाओं का उल्लेख कीजिए। **(2016CA,CC,17AD,18HF, 19AA,AG,20MD,ME,MA)**

3. सुभद्राकुमारी चौहान के साहित्यिक अवदान एवं भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

4. सुभद्राकुमारी चौहान की जीवनी तथा उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए और उसके काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

5. सुभद्राकुमारी चौहान की जीवनी लिखिए तथा उनके काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

6. सुभद्राकुमारी चौहान का जीवन-परिचय तथा उनकी काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

7. झाँसी की रानी के लिए कवयित्री ने किन विशेषणों का प्रयोग किया है और वे कहाँ तक सार्थक हैं?

8. झाँसी की रानी की समाधि को कवयित्री ने रानी से भी अधिक प्यारी बतलाया है। क्यों?

9. 'झाँसी की रानी की समाधि पर' शीर्षक कविता द्वारा कवयित्री ने क्या संदेश दिया है? स्पष्ट कीजिए।

10. 'झाँसी की रानी की समाधि पर' शीर्षक कविता का सारांश लिखिए।

11. वीर रस का लक्षण बताते हुए प्रस्तुत पाठ से एक उदाहरण दीजिए।

➥ आन्तरिक मूल्यांकन

(i) झाँसी की रानी की वीरता पर एक निबन्ध लिखिए।

(ii) सुभद्रा कुमारी चौहान की रचनाओं का उल्लेख तालिका के माध्यम से कीजिए।

टिप्पणी

➨ झाँसी की रानी की समाधि पर

दिव्य = अलौकिक। **मरदानी** = पुरुषों के समान। **संचित** = एकत्र। **वार** = आघात, चोट। **मूल्यवती** = मूल्यवान। **निहित** = रखी हुई। **भग्न विजय-माला-सी** = टूटी हुई माला के फूलों की भाँति, झाँसी की रानी बलि हो गयी। उपमा अलङ्कार है। **फूल** = इसका एक अर्थ पुष्प और दूसरा अस्थियाँ हैं। अतः श्लेष अलङ्कार है। **आहुति-सी गिर चढ़ी चिता पर** = जिस प्रकार यज्ञ में पवित्र आहुतियाँ दी जाती हैं उसी प्रकार लक्ष्मीबाई ने स्वतन्त्रता के यज्ञ में स्वयं की बलि दे दी। उपमा अलङ्कार है। **क्षुद्र जंतु ही गाते** = झींगुर, छिपकली आदि तुच्छ जीव घूमा करते हैं। उपेक्षित होने का सूचक। **गिरा** = वाणी। **निशीथ** = रात्रि।

●●

10 मैथिलीशरण गुप्त

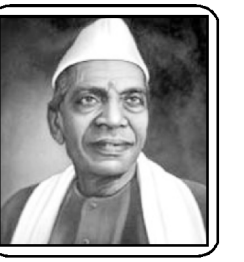

मैथिलीशरण गुप्त का जन्म चिरगाँव, जिला झाँसी में 3 अगस्त, सन् 1886 ई0 में हुआ था। काव्य-रचना की ओर बाल्यावस्था से ही इनका झुकाव था। आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा से इन्होंने हिन्दी काव्य की नवीन धारा को पुष्ट कर उसमें अपना विशेष स्थान बना लिया था। इनकी कविता में देश-भक्ति एवं राष्ट्र-प्रेम की व्यंजना प्रमुख होने के कारण इन्हें हिन्दी-संसार ने 'राष्ट्रकवि' का सम्मान दिया। राष्ट्रपति ने इन्हें संसद्-सदस्य मनोनीत किया। भारती का यह साधक 12 दिसम्बर, सन् 1964 ई0 में गोलोकवासी हो गया।

कवि-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—3 अगस्त, सन् 1886 ई0।
- **जन्म-स्थान**—चिरगाँव (झाँसी)।
- **पिता**—सेठ रामचरण गुप्त।
- **मृत्यु**—12 दिसम्बर, सन् 1964 ई0।
- **लेखन विधा**—काव्य।
- **भाषा**—शुद्ध साहित्यिक तथा परिमार्जित खड़ीबोली।
- **शैली**—प्रबन्धात्मक, अलंकृत उपदेशात्मक, विवरणात्मक, मिश्र।
- **प्रमुख रचनाएँ**—भारत-भारती, साकेत, यशोधरा, द्वापर, किसान, जयभारत, विष्णुप्रिया, पंचवटी, सिद्धराज, अनघ, रंग में भंग, झंकार, हिन्दू, वनवैभव, नहुष, मौर्य-विजय, कुणाल गीत, मेघनाद वध, विरहिणी, वज्रांगना, झंकार, पृथ्वीपुत्र, प्लासी का युद्ध आदि।
- **साहित्य में स्थान**—राष्ट्रकवि के रूप

गुप्तजी की रचना-सम्पदा विशाल है। इनकी विशेष ख्याति रामचरित पर आधारित महाकाव्य **'साकेत'** के कारण है। **'जयद्रथ वध', 'भारत-भारती', 'अनघ', 'पंचवटी', 'यशोधरा', 'द्वापर', 'सिद्धराज'** आदि गुप्तजी की अन्य प्रसिद्ध काव्य-कृतियाँ हैं। **'यशोधरा'** एक चम्पूकाव्य है जिसमें गुप्त जी ने महात्मा बुद्ध के चरित्र का वर्णन किया है।

गुप्त जी का पहला काव्य-संग्रह **'भारत-भारती'** है, जिसमें भारत की कुदशा का बयान हुआ है। माइकेल मधुसूदन की वीरांगना, विरहिणी ब्रजांगना, मेघनाद-वध और नवीन चन्द्र के पलाशीर युद्ध का इन्होंने अच्छे पद्यमय अनुवाद किये हैं। देश के कालानुसार बदलती भावनाओं तथा विचारों को भी अपनी रचना में स्थान देने की इनमें क्षमता है। छायावाद के आगमन के साथ गुप्तजी की कविता में भी लाक्षणिक वैचित्र्य और मनोभावों की सूक्ष्मता की मार्मिकता आयी। गुप्तजी का झुकाव भी गीति-काव्य की ओर हुआ। प्रबन्ध के भीतर ही गीति-काव्य का समावेश करके गुप्तजी ने भाव-सौन्दर्य के मार्मिक स्थलों से परिपूर्ण 'यशोधरा' और 'साकेत' जैसे उत्कृष्ट काव्य-कृतियों का सृजन किया। गुप्तजी के काव्य की यह प्रधान विशेषता है कि गीति-काव्य के तत्त्वों को अपनाने के कारण उसमें सरसता आयी है, पर प्रबन्ध की धारा की भी उपेक्षा नहीं हुई। गुप्तजी के कवित्व के विकास के साथ इनकी भाषा का बहुत परिमार्जन हुआ। उसमें धीरे-धीरे लाक्षणिकता, संगीत और लय के तत्त्वों का प्राधान्य हो गया।

राष्ट्र-प्रेम गुप्तजी की कविता का प्रमुख स्वर है। 'भारत-भारती' में प्राचीन भारतीय संस्कृति का प्रेरणाप्रद चित्रण हुआ है। इस रचना में व्यक्त स्वदेश-प्रेम ही इनकी परवर्ती रचनाओं में राष्ट्र-प्रेम और नवीन राष्ट्रीय भावनाओं में परिणत हो गया। इनकी कविता में आज की समस्याओं और विचारों के स्पष्ट दर्शन होते हैं। गाँधीवाद तथा कहीं-कहीं आर्य समाज का प्रभाव भी उन पर पड़ा है। अपने काव्यों की कथावस्तु गुप्तजी ने आज के जीवन से न लेकर प्राचीन इतिहास अथवा पुराणों से ली है। ये अतीत की गौरव-गाथाओं को वर्तमान जीवन के लिए मानवतावादी एवं नैतिक प्रेरणा देने के उद्देश्य से ही अपनाते हैं।

गुप्तजी की चरित्र कल्पना में कहीं भी अलौकिकता के लिए स्थान नहीं है। इनके सारे चरित्र मानव हैं, उनमें देव और दानव नहीं हैं। इनके राम, कृष्ण, गौतम आदि सभी प्राचीन और चिरकाल से हमारी श्रद्धा प्राप्त किये हुए पात्र हैं, इसीलिए वे जीवन-प्रेरणा और स्फूर्ति प्रदान करते हैं। 'साकेत' के राम 'ईश्वर' होते हुए भी तुलसी की भाँति 'आराध्य' नहीं, हमारे ही बीच के एक व्यक्ति हैं।

नारी के प्रति गुप्तजी का हृदय सहानुभूति और करुणा से आप्लावित है। 'यशोधरा', 'उर्मिला', 'कैकेयी', 'विधृता', 'रानकदे' आदि नारियाँ गुप्तजी की महत्त्वपूर्ण सृष्टि हैं। 'साकेत' में उर्मिला तथा 'यशोधरा' में गौतम-पत्नी यशोधरा को भारतीय नारी-जीवन के आदर्श की प्रतिमाएँ बताते हुए उनकी त्याग-भावना एवं करुणा को बड़े ही सरल एवं सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है। इनकी निम्न दो पंक्तियाँ हिन्दी काव्य की अमर निधि हैं—

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।

गुप्तजी की भाव-व्यंजना में सर्वत्र ही जीवन की गम्भीर अनुभूति के दर्शन होते हैं। इन्होंने कल्पना का आश्रय तो लिया है, पर इनके भाव कहीं भी मानव की स्वाभाविकता का अतिक्रमण नहीं करते। इनके काव्य में सीधी और सरल भाषा में इतनी सुन्दर भाव-व्यंजना हो जाने का एकमात्र कारण जीवन की गम्भीर अनुभूति ही है। गुप्तजी खड़ीबोली को हिन्दी कविता के क्षेत्र में प्रतिष्ठित करनेवाले समर्थ कवि के रूप में विशेष महत्त्व रखते हैं। सरल, शुद्ध, परिष्कृत खड़ीबोली में कविता करके इन्होंने ब्रजभाषा के स्थान पर उसे समर्थ काव्य-भाषा सिद्ध कर दिखाया। स्थान-स्थान पर लोकोक्तियों और मुहावरों के प्रयोगों से इनकी काव्य-भाषा और भी जीवन्त हो उठी है। प्राचीन एवं नवीन सभी प्रकार के अलंकारों का गुप्तजी के काव्य में भाव-सौन्दर्यवर्धक स्वाभाविक प्रयोग हुआ है। सभी प्रकार के प्रचलित छन्दों में इन्होंने काव्य-रचना की है।

गुप्तजी युगीन चेतना और इसके विकसित होते हुए रूप के प्रति सजग थे। इसकी स्पष्ट झलक इनके काव्य में मिलती है। राष्ट्र की आत्मा को वाणी देने के कारण ये राष्ट्र-कवि कहलाये और आधुनिक हिन्दी काव्य की धारा के साथ विकास-पथ पर चलते हुए युग-प्रतिनिधि कवि स्वीकार किये गये। इन्होंने राष्ट्र को जगाया और उसकी चेतना को वाणी दी। हिन्दी काव्य को शृंगार रस की दलदल से निकालकर उसमें राष्ट्रीय भावों की पुनीत गंगा बहाने का श्रेय गुप्त जी को ही है। ये सच्चे अर्थों में आधुनिक भारत के राष्ट्रकवि थे।

●●

भारत माता का मंदिर यह

भारत माता का मंदिर यह
समता का संवाद जहाँ,
सबका शिव कल्याण यहाँ है
पावें सभी प्रसाद यहाँ।

जाति-धर्म या संप्रदाय का,
नहीं भेद-व्यवधान यहाँ,
सबका स्वागत, सबका आदर
सबका सम सम्मान यहाँ।
राम, रहीम, बुद्ध, ईसा का,
सुलभ एक सा ध्यान यहाँ,
भिन्न-भिन्न भव संस्कृतियों के
गुण गौरव का ज्ञान यहाँ।

नहीं चाहिए बुद्धि बैर की
भला प्रेम का उन्माद यहाँ
सबका शिव कल्याण यहाँ है,
पावें सभी प्रसाद यहाँ।

सब तीर्थों का एक तीर्थ यह
हृदय पवित्र बना लें हम
आओ यहाँ अजातशत्रु बन,
सबको मित्र बना लें हम।

रेखाएँ प्रस्तुत हैं, अपने
मन के चित्र बना लें हम।
सौ-सौ आदर्शों को लेकर
एक चरित्र बना लें हम।

बैठो माता के आँगन में
नाता भाई-बहन का
समझे उसकी प्रसव वेदना
वही लाल है माई का
एक साथ मिल बाँट लो
अपना हर्ष विषाद यहाँ है,
सबका शिव कल्याण यहाँ है,
पावें सभी प्रसाद यहाँ।
मिला सेव्य का हमें पुजारी

सकल काम उस न्यायी का
मुक्ति लाभ कर्तव्य यहाँ है
एक एक अनुयायी का
कोटि-कोटि कंठों से मिलकर
उठे एक जयनाद यहाँ
सबका शिव कल्याण यहाँ है
पावें सभी प्रसाद यहाँ।

|| अभ्यास प्रश्न ||

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—
   (क) भारत माता का मन्दिर यह.....गुण गौरव का ज्ञान यहाँ।
   (ख) नहीं चाहिए बुद्धि बैर की.....सबको मित्र बना लें हम।
   (ग) रेखायें प्रस्तुत हैं अपने.....पावें सभी प्रसाद यहाँ।
   अथवा बैठो माता के आँगन में .....पावें सभी प्रसाद यहाँ। **(2019AB)**
   (घ) मिला सेव्य का हमें पुजारी.....पावें सभी प्रसाद यहाँ।
   (ङ) सब तीर्थों का.....चरित्र बना लें हम। **(2020MA)**
2. मैथिलीशरण गुप्त का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।
अथवा मैथिलीशरण गुप्त का जीवन-परिचय दीजिए तथा उनकी किसी एक रचना का नाम लिखिए। **(2019AC, 20MF)**
3. मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं का उल्लेख करते हुए उनकी भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।
4. मैथिलीशरण गुप्त की जीवनी का उल्लेख करते हुए उनकी रचनाओं और शैली पर प्रकाश डालिए।
5. 'भारतमाता का मन्दिर यह' कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।
6. 'भारतमाता का मन्दिर यह' शीर्षक कविता की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?
7. 'भारतमाता का मन्दिर यह' कविता का केन्द्रीय भाव क्या है?

➥ आन्तरिक मूल्यांकन

1. मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं की एक सूची तैयार कीजिए।
2. राष्ट्रप्रेम पर आधारित कवियों की एक सूची तैयार कीजिए।

टिप्पणी

➨ भारतमाता का मन्दिर यह

संवाद = चर्चा। **सुलभ** = सरल, सहज। **गौरव** = महत्त्व, बड़प्पन। **बैर** = शत्रुभाव, दुश्मनी। **समता** = समानता। **कल्याण** = भलाई। **शिव** = कल्याण। **प्रसाद** = कृपा। **व्यवधान** = बाधा। **आदर** = सम्मान। **सम सम्मान** = बराबर सम्मान। **भिन्न-भिन्न** = विविध। **बैर** = दुश्मनी। **हृदय** = दिल। **अजातशत्रु** = जिसका कोई शत्रु न पैदा हुआ हो। **मित्र** = दोस्त। **वेदना** = कष्ट। **हर्ष** = खुशी। **विषाद** = कष्ट। **कोटि-कोटि** = करोड़ों। **अनुयायी** = अनुसरण करने वाले। **जयनाद** = विजय स्वर। **संप्रदाय** = धार्मिक मत या सिद्धान्त। **स्वागत** = किसी के आगमन पर कुशल-प्रश्न आदि के द्वारा हर्ष प्रकाश अगवानी। **सुलभ** = जो सरलता से मिल जाए। **भव** = संसार। **बुद्ध** = विकास, उन्नति। **उन्माद** = अत्यधिक अनुराग। **लाल** = पुत्र। **सेव्य** = सेवा करने योग्य। **भला** = नेक, अच्छा। **प्रेम** = प्यार, स्नेह।

●●

11 केदारनाथ सिंह

केदारनाथ सिंह हिन्दी जगत् में आधुनिक कवि के रूप में चर्चित हैं। इनका जन्म 1934 ई0 में बलिया के चकिया गाँव में हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव के एक विद्यालय में हुई एवं उच्च शिक्षा बनारस में सम्पन्न हुई। ये अध्ययन काल से ही हिन्दी साहित्य में रुचि लेने लगे थे। ये डॉ0 नामवर सिंह, काशीनाथ सिंह, डॉ0 त्रिभुवन सिंह, कवि त्रिलोचन, डॉ0 शिवप्रसाद सिंह, डॉ0 शम्भुनाथ सिंह के सम्पर्क में निरन्तर रहते थे। कविता लिखने की प्रेरणा केदार जी को अपने ग्रामीण अंचल से प्राप्त हुई। इनका घर गंगा और घाघरा के बीच में पड़ता है। इनके मन में गंगा और घाघरा की लहरों की भाँति भावरूपी लहरें हिलोरें लेती रहती थीं। केदार जी आज भी अपनी धरती की माटी से अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं। केदार जी उदय प्रताप कॉलेज वाराणसी, सेंट एण्ड्रूज कॉलेज गोरखपुर, उदित नारायण कॉलेज पडरौना, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर में अध्यापक, प्राचार्य और रीडर रहे। ये जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली में भी कार्यरत रहे। इनका निधन 19 मार्च, 2018 को नई दिल्ली में हुआ।

केदारनाथ सिंह ने हिन्दी साहित्य में अनेक रचनाएँ कीं। 'अभी बिल्कुल अभी', 'जमीन पक रही है', 'यहाँ से देखो', 'अकाल में सारस', 'उत्तर कबीर' और अन्य कविताएँ 'मेरे समय के शब्द', 'बाघ' तथा 'कविता-दशक' और 'ताना-बाना' उनकी प्रसिद्ध और चर्चित कृतियाँ हैं। कल्पना और छायावाद, आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्बविधान समीक्षात्मक ग्रन्थ हैं।

कवि-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म–**7 जुलाई, 1934 ई0।
- **जन्म-स्थान–**चकिया गाँव, बलिया (उ.प्र.)।
- **मृत्यु–** 19 मार्च, 2018 ई0।
- **शिक्षा–**प्रारम्भिक शिक्षा गाँव में एवं उच्च शिक्षा बनारस में।
- **रचनाएँ–**अनेक काव्य ग्रन्थ एवं समीक्षात्मक ग्रन्थ।
- **भाषा–**साहित्यिक खड़ीबोली।
- **शैली–**मुक्तक।
- **संपादन–**हमारी पीढ़ी (पत्रिका), ताना–बाना।
- **प्रमुख रचनाएँ–**कल्पना और छायावाद, सृष्टि का पहरा, यहाँ से देखो, अकाल में सारस, सृष्टि का पहरा, उत्तर कबीर और अन्य कविताएं, टालस्टाय और साइकिल, मेरे समय के शब्द, कल्पना और छायावाद, हिन्दी कविता में बिम्ब-विधान, ताना-बाना (संपादन), समकालीन रूसी कविताएँ, कविता दशक, साखी (अनियतकालीन पत्रिका)।शब्द (अनियतकालीन पत्रिका), हमारी पीढ़ी।

काव्य-भाषा के रूप में केदारनाथ सिंह ने आम बोलचाल की शब्दावली का अधिक प्रयोग किया है, जिसमें यत्र-तत्र भोजपुरी का पुट है। उनकी मान्यता है कि कविता का सबसे सीधा सम्बन्ध भाषा से है। भाषा प्रेषणीयता का सर्वसुलभ माध्यम है। अतः 'शुद्ध कविता' जैसी किसी चीज की कल्पना बिल्कुल बेमानी है। समाज के प्रत्येक सदस्य की छोटी-से-छोटी चेतन-क्रिया किसी-न-किसी अंश में सामाजिक होती है। फिर कविता तो समाज के सबसे अधिक संवेदनशील व्यक्ति की चेतन क्रिया है। उसकी सामाजिकता असन्दिग्ध है। कविता अपने अनावृत्त रूप में केवल मात्र एक विचार, एक भावना, एक अनुभूति, एक हृदय इन सबका कलात्मक संगठन अथवा इन सबके अभाव की एक तीखी पकड़ होती है। यह पकड़ जितनी ही स्वाभाविक होगी, कवि का संवेद्य उतना ही गहरा और प्रभावशाली होगा। इसके लिए उसमें वास्तविकता के विभिन्न स्तरों की प्रत्यक्ष जानकारी होनी चाहिए और यह जानकारी सोलहों आने उसकी अपनी

होनी चाहिए। केदारनाथ की भाषा के सन्दर्भ में जहाँ तक सोलहों आने सच जानकारी होने का प्रश्न है, यह कहा जा सकता है कि केदारनाथ सिंह को ग्रामीण जीवन और उसके परिवेश की भरपूर जानकारी है। उनकी भाषा में ग्रामीण शब्द के प्रयोग की एक झलक देखिए–

पकते धानों से महकी मिट्टी, फसलों के घर पहली थाप पड़ी
शहर के उदास काँपते जल पर, हेमन्ती रातों की भाप पड़ी
सूइयाँ समय की सब ढार हुईं, छिन, घड़ियों, घण्टों का पहरा उठा।

केदारनाथ सिंह की अन्य अनेक ऐसी कविताएँ हैं जिनमें उन्होंने ग्रामीण शब्दों का प्रयोग किया है। इन ग्रामीण शब्दों में भोजपुरी के शब्दों का खुलकर प्रयोग भी हुआ है। कुल मिलाकर उनकी भाषा बोझिल नहीं प्रतीत होती है। वह भावों और विचारों की अभिव्यक्ति में पूर्णतया सक्षम है।

●●

नदी

अगर धीरे चलो
वह तुम्हें छू लेगी
दौड़ो तो छूट जायेगी नदी
अगर ले लो साथ
वह चलती चली जायेगी कहीं भी
यहाँ तक-कि कबाड़ी की दुकान तक भी
छोड़ दो
तो वहीं अँधेरे में
करोड़ों तारों की आँख बचाकर
वह चुपके से रच लेगी
एक समूची दुनिया
एक छोटे-से घोंघे में
सचाई यह है
कि तुम कहीं भी रहो
तुम्हें वर्ष के सबसे कठिन दिनों में भी
प्यार करती है एक नदी
नदी जो इस समय नहीं है इस घर में
पर होगी जरूर कहीं न कहीं
किसी चटाई
या फूलदान के नीचे
चुपचाप बहती हुई
कभी सुनना
जब सारा शहर सो जाय
तो किवाड़ों पर कान लगा
धीरे-धीरे सुनना
कहीं आसपास
एक मादा घड़ियाल की कराह की तरह
सुनाई देगी नदी।

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—
   (क) अगर धीरे ·····तक भी।
   (ख) छोड़ दो ·····घोंघे में।
   (ग) सचाई यह ·····के नीचे।
   (घ) चुपचाप ·····देगी नदी।
2. केदारनाथ सिंह का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए। **(2017AC,AE,19AD,20MD)**
3. केदारनाथ सिंह के साहित्यिक अवदान एवं भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।
4. केदारनाथ सिंह की जीवनी तथा उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए और काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।
5. केदारनाथ सिंह का जीवन-परिचय देते हुए उनकी काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
6. 'नदी' शीर्षक कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।
7. 'नदी' शीर्षक कविता में नदी की गतिशीलता की विशेषताएँ बताइए।
8. 'नदी' शीर्षक कविता से क्या शिक्षाएँ मिलती हैं?
9. 'वह चुपके से रच लेगी/एक समूची दुनिया/एक छोटे-से घोंघे में' का भावार्थ बताइए।

➥ आन्तरिक मूल्यांकन

केदारनाथ सिंह की रचनाओं को सूचीबद्ध कीजिए।

टिप्पणी

➨ नदी

छू = स्पर्श। **कबाड़ी** = रद्दी की दुकानवाला। **रच लेगी** = निर्माण कर लेगी। **समूची** = सम्पूर्ण। **किवाड़** = दरवाजा। **घड़ियाल** = मगरमच्छ जैसा जलीय जीव। **दुनिया** = संसार। **आँख बचाकर** = छिपकर। **चुपके से** = बिना आवाज किये। **फूलदान** = गमला। **चुपचाप** = मौन होकर। **कराह** = पीड़ा की आवाज, आह।

●●

12 अशोक वाजपेयी

अशोक वाजपेयी का जन्म 16 जनवरी, सन् 1941 को दुर्ग (मध्य प्रदेश) में हुआ था। इन्होंने सागर विश्वविद्यालय से बी0 ए0 तदन्तर सेंट स्टीवेंस कॉलेज, दिल्ली से अंग्रेजी साहित्य में एम0 ए0 उत्तीर्ण किया। लोक सेवक के रूप में इन्होंने कला के उत्थान में अभूतपूर्व योगदान दिया है। अशोक वाजपेयी समकालीन हिन्दी साहित्य के एक प्रमुख साहित्यकार हैं। इनकी रचनात्मक क्षमता बहुआयामी है। आधुनिक कवि, आलोचक, संपादक और संस्कृतिकर्मी के रूप में आपकी बड़ी ख्याति है। आपने 'समवेत', 'पहचान', 'पूर्वाग्रह', 'समास' और 'बहुवचन' आदि पत्रिकाओं का संपादन कार्य किया तथा कुमार गंधर्व, निर्मल वर्मा सृजनात्मक आलोचना आदि का संचयन, मुक्तिबोध और शमशेर बहादुर सिंह की चुनी हुई कविताओं का संपादन कार्य भी किया। 1994 ई0 में काव्य संग्रह 'कहीं नहीं वहीं' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। इसके अतिरिक्त इन्हें 'दयावती कवि शेखर सम्मान' और 'कबीर सम्मान' से भी सम्मानित किया गया है। इन्हें पोलैण्ड के राष्ट्रपति द्वारा 'द ऑफिसर्स क्रॉस ऑफ मेरिट ऑफ द रिपब्लिक ऑफ पोलैण्ड' तथा फ्रांसीसी सरकार द्वारा 'ऑफिसर डी.एल. आर्डर डेस आर्ट्स एट डेस लेटर्स' पुरस्कारों द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। वाजपेयी जी ने मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में 'भारत भवन' की स्थापना में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है।

कवि-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**–16 जनवरी, सन् 1941 ई0।
- **जन्म-स्थान**–दुर्ग (म0 प्र0)।
- **शिक्षा**–सागर विश्वविद्यालय से बी0ए0 एवं सेंट स्टीवेंस कॉलेज दिल्ली से अंग्रेजी में एम0ए0।
- **रचनाएँ**–शहर अब भी सम्भावना है, एक पतंग अनंत में, अगर इतने से, तत्पुरुष आदि।
- **सम्मान**–साहित्य अकादमी 1994 एवं दयावती मोदी कवि शिखर सम्मान।

अशोक वाजपेयी की अब तक स्वलिखित और सम्पादित 33 कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें शहर अब भी सम्भावना है (1966), एक पतंग अनन्त में (1984), अगर इतने से (1986), तत्पुरुष (1989), कहीं नहीं वहीं (1991), बहुरि अकेला (1992), थोड़ी-सी जगह (1994), घास में दुबका आकाश (1994), आविन्यो (1995), जो नहीं है (1996), अभी कुछ और (1998) और समग्र कविताओं का संचयन 'तिनका-तिनका' दो खण्डों में (1996) प्रकाशित कृतियाँ हैं। कविता के अलावा आलोचना की 'फिलहाल' (1979), कुछ पूर्वग्रह (1984), समय से बाहर (1994), सीढ़ियाँ शुरू हो गयी हैं (1996), कविता का गल्प (1996), कवि कह गया है (1998) कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं।

तीसरा साक्ष्य (1979), साहित्य विनोद (1984), कला विनोद (1986), पुनर्वसु (1989), कविता का जनपद (1993) के अलावा गजानन माधव मुक्तिबोध, शमशेर और अज्ञेय की चुनी हुई कविताओं का सम्पादन इन्होंने किया। उन्होंने कुमार गन्धर्व, निर्मल वर्मा, जैनेन्द्र कुमार, हजारीप्रसाद द्विवेदी और अज्ञेय पर भी पुस्तकें सम्पादित किया हैं।

साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में भी अशोक वाजपेयी का उल्लेखनीय योगदान है। समवेत (1958-59), पहचान (1970-74), पूर्वग्रह (1974-1990), बहुवचन (1990), कविता एशिया (1990), समास (1992) आदि इनके साहित्यिक पत्रकारिता की पहचान के स्तम्भ हैं। इसके अतिरिक्त 'द बुक रिव्यू' समेत अनेक पत्रिकाओं के सलाहकार सम्पादक रहे।

अशोक वाजपेयी समग्र जीवन की उच्छल अनुगूंजों के कवि हैं। उन्हें समय-बिद्ध कवि कहने के बजाय कालबिद्ध कवि कहना ज्यादा उपयुक्त है। उनका समग्रबोध भौतिक, सामाजिक और साधारण जीवन की ही कथा है। अशोक वाजपेयी की काव्यानुभूति की बनावट में सच्ची, खरी और एक सजग आधुनिक भारतीय मनुष्य की संवेदना का योग है, जिसमें परम्परा का पुनरीक्षण और आधुनिकता की खोज दोनों साथ-साथ है। वशिष्ठ मुनि ओझा के अनुसार, ''आजादी के इन साठ वर्षों की कविता का इतिहास जब लिखा जायगा तो अशोक वाजपेयी उन थोड़े से हिन्दी कवियों में एक होंगे जिनकी कविता की रूह में भारतीयता की एक गहरी छाप मौजूद होगी, जहाँ आपको कविता की परम्परा का सूक्ष्म पुनरीक्षण, काव्यभाषा की परम्परा का अपने समय में अचूक प्रयोग, अपनी संस्कृति, कला और सभ्यता के प्रति एक सजग अनुराग और समर्पण की आस्था मौजूद मिलेगी।''

अशोक वाजपेयी अपनी कविता में हमेशा विनम्र, प्रेम-पिपासु, उत्सुक, अन्वेषी मनुष्य लगते हैं, जिसे इस जीवन जगत् से गहरा प्रेम है। वे समकालीन काव्यशास्त्र की बनी-बनायी रूढ़ियों के प्रचलित रास्तों को छोड़कर अपनी राह पर चलनेवाले निर्भय कवि हैं।

●●

(1) युवा जंगल

एक युवा जंगल मुझे,
अपनी हरी उँगलियों से बुलाता है।
मेरी शिराओं में हरा रक्त बहने लगा है।
आँखों में हरी परछाइयाँ फिसलती हैं
कन्धों पर एक हरा आकाश ठहरा है
होंठ मेरे एक हरे गान में काँपते हैं–

मैं नहीं हूँ और कुछ
बस एक हरा पेड़ हूँ
–हरी पत्तियों की एक दीप्त रचना।

ओ जंगल युवा,
बुलाते हो
आता हूँ
एक हरे वसन्त में डूबा हुआ
आऽताऽ हूँ....।

(2) भाषा एकमात्र अनन्त है

फूल झरता है
फूल शब्द नहीं!

बच्चा गेंद उछालता है,
सदियों के पार
लोकती है उसे एक बच्ची!

बूढ़ा गाता है एक पद्य,
दुहराता है दूसरा बूढ़ा,
भूगोल और इतिहास से परे
किसी दालान में बैठा हुआ!

न बच्चा रहेगा,
न बूढ़ा,
न गेंद, न फूल, न दालान
रहेंगे फिर भी शब्द
भाषा एकमात्र अनन्त है।

|| अभ्यास प्रश्न ||

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—

(क) एक युवा ..... काँपते हैं।

(ख) मैं नहीं ..... रचना।

(ग) ओ जंगल .....आऽताऽ हूँ...।

(घ) फूल झरता .....बच्ची!।

(ङ) बूढ़ा .....बैठा हुआ।

(च) न बच्चा ..... अनन्त है।

2. अशोक वाजपेयी का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए। **(2016CE,20MC,MG)**

3. अशोक वाजपेयी की भाषा-शैली एवं साहित्यिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

4. अशोक वाजपेयी की जीवनी एवं रचनाएँ लिखिए तथा उनका काव्यगत सौन्दर्य भी लिखिए।

5. अशोक वाजपेयी के साहित्यिक अवदान एवं भाषागत विशिष्टताओं पर प्रकाश डालिए।

6. अशोक वाजपेयी का जीवन-परिचय एवं काव्यगत विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

7. 'युवा जंगल' कविता में कवि ने पाठक के मन में किस भाव को जागृत करना चाहा है?

8. 'युवा जंगल' कविता का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।

9. 'भाषा एकमात्र अनन्त है' कविता का सारांश लिखिए।

10. 'भाषा एकमात्र अनन्त है' शीर्षक कविता में कवि ने क्या सन्देश दिया है?

➥ आन्तरिक मूल्यांकन

अशोक वाजपेयी का जीवन-परिचय तालिका के माध्यम से दर्शाइए।

टिप्पणी

➨ युवा जंगल

युवा = जवान। **शिराओं** = नाड़ियों। **हरा रक्त** = हरे रंग का खून। **परछाइयाँ** = छाया। **सदियों** = शताब्दियों। **ठहरा** = रुका हुआ। **काँपते** = हिलते। **दीप्त** = प्रकाशवान, आलोकित, उत्तेजित।

➨ भाषा एकमात्र अनन्त है

झरता = गिरता। **उछालता** = ऊपर फेंकता। **सदियों** = शताब्दियों। **लोकती** = पकड़ लेती। **पद्य** = कविता, गीत। **परे** = दूर। **अनन्त** = जिसका कोई अन्त न हो।

●●

13 श्याम नारायण पाण्डेय

श्याम नारायण पाण्डेय का जन्म श्रावण कृष्ण पक्ष पंचमी को संवत् 1964 (सन् 1907 ई0) में डुमराँव गाँव, आजमगढ़, उत्तर प्रदेश में हुआ था। आरम्भिक शिक्षा के बाद श्याम नारायण पाण्डेय संस्कृत अध्ययन के लिए काशी (वर्तमान बनारस) गये। काशी से इन्होंने साहित्याचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की। स्वभाव से सात्त्विक, हृदय से विनोदी और आत्मा से परम निर्भीक स्वभाव वाले पाण्डेय जी के स्वस्थ-पुष्ट व्यक्तित्व में शौर्य, सत्त्व और सरलता का अनूठा मिश्रण था। संस्कार द्विवेदीयुगीन, दृष्टिकोण उपयोगितावादी और भाव-विस्तार मर्यादावादी थे। लगभग दो दशकों से ऊपर वे हिन्दी कवि-सम्मेलनों के मंच पर अत्यंत लोकप्रिय एवं समादृत रहे। इन्होंने आधुनिक युग में वीर काव्य की परम्परा को खड़ी बोली में प्रतिष्ठित किया। इनकी मृत्यु 1991 ई0 में हुई थी।

कवि-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म** –1907 ई.
- **जन्म भूमि**– डुमराँव गाँव, आजमगढ़, उत्तर प्रदेश
- **मृत्यु** –1991 ई.
- **कर्म-क्षेत्र** –काव्य रचना
- **मुख्य रचनाएँ**–'हल्दी घाटी', 'जौहर', 'तुमुल', 'रूपान्तर', 'आरती' तथा 'जय हनुमान' आदि।
- **पुरस्कार** –'देव पुरस्कार'
- **प्रसिद्धि** –वीर रस के कवि
- **अन्य** –'जौहर' द्वितीय महाकाव्य
- **भाषा** – शुद्ध साहित्यिक खड़ीबोली।
- **शैली** –मुक्तक और प्रबन्ध
- **साहित्य में स्थान**–राष्ट्रकवि के रूप में स्थान प्राप्त है।

श्याम नारायण पाण्डेय द्वारा रचित प्रमुख रचनाएँ निम्न प्रकार हैं–

1. 'हल्दी घाटी' (1937-39 ई0)
2. 'जौहर' (1939-44 ई0)
3. 'तुमुल' (1948 ई0) – यह पुस्तक 'त्रेता के दो वीर' नामक खण्ड-काव्य का ही परिवर्धित संस्करण है।
4. 'रूपांतर' (1948 ई0)
5. 'आरती' (1945-46 ई0)
6. 'जय हनुमान' (1956 ई0) उनकी प्रमुख प्रकाशित काव्य पुस्तकें हैं।
7. 'माधव', 'रिमझिम', 'आँसू के कण' और 'गोरा वध' उनकी प्रारम्भिक लघु कृतियाँ हैं।
8. 'परशुराम' अप्रकाशित काव्य है तथा 'वीर सुभाष' रचनाधीन ग्रंथ है।

भाषा-नाद से आगे बढ़कर भावोत्साह की दृष्टि से कवि ने रचना को रसमय बनाया है। यहाँ भाषा-नाद और आंतर भाव का सामंजस्य कवि-कला की नूतनता का प्रमाण है। बीच-बीच में सुन्दर प्रकृति-वर्णनों की उत्फुल्ल योजना हुई है। भाषा तत्सम प्रधान होकर भी प्रवाहमय और बोलचाल में उर्दू शब्दों को अपनाती चली है। तलवार, घोड़ा, बर्छे आदि के फड़का देने वाले वर्णन अत्यंत लोकप्रिय हुए हैं। ग्रंथ में कुल 17 सर्ग हैं। इस रचना पर पाण्डेय जी को 'देव पुरस्कार' भी मिला था।

'हल्दी घाटी' महाकाव्य महाराणा प्रताप और अकबर के बीच हुए प्रसिद्ध ऐतिहासिक युद्ध पर लिखा गया इनका प्रथम महाकाव्य है। प्रताप के इतिहास प्रसिद्ध शौर्य, त्याग, आत्म-बलिदान, स्वातंत्र्य-प्रेम एवं जातीय-गौरव भाव को प्रेरक आधार बनाते हुए कवि ने मध्यकालीन राजपूती मूल्यों को अत्यंत श्रद्धा, सम्मान, सहानुभूति और पूजा के छन्दपुष्प अर्पित किये हैं। वीर-पूजा इस काव्य की सत्प्रेरणा और जातीय गौरव का उद्बोधन इसका लक्ष्य है।

हल्दीघाटी

मेवाड़-केसरी देख रहा,
केवल रण का न तमाशा था।
वह दौड़-दौड़ करता था रण,
वह मान-रक्त का प्यासा था।।
चढ़ कर चेतक पर घूम-घूम,
करता सेना रखवाली था।
ले महामृत्यु को साथ-साथ
मानो प्रत्यक्ष कपाली था।।
चढ़ चेतक पर तलवार उठा,
रखता था भूतल पानी को।
राणा प्रताप सिर काट-काट,
करता था सफल जवानी को।।

सेना-नायक राणा के भी,
रण देख देखकर चाह भरे।
मेवाड़ सिपाही लड़ते थे
दूने तिगुने उत्साह भरे।।
क्षण मार दिया कर कोड़े से,
रण किया उतर कर घोड़े से।
राणा रण कौशल दिखा-दिखा,
चढ़ गया उतर कर घोड़े से।।

क्षण भीषण हलचल मचा-मचा,
राणा-कर की तलवार बढ़ी।
था शोर रक्त पीने का यह
रण चण्डी जीभ पसार बढ़ी।।
वह हाथी दल पर टूट पड़ा,
मानो उस पर पवि छूट पड़ा।
कट गई वेग से भू, ऐसा
शोणित का नाला फूट पड़ा।।
जो साहस कर बढ़ता उसको,
केवल कटाक्ष से टोक दिया।
जो वीर बना नभ-बीच फेंक,
बरछे पर उसको रोक दिया।।
क्षण उछल गया अरि घोड़े पर
क्षण लड़ा सो गया घोड़े पर।
बैरी दल से लड़ते-लड़ते,
क्षण खड़ा हो गया घोड़े पर।।
क्षण भर में गिरते रुण्डों से,
मदमस्त गजों के शुण्डों से।
घोड़ों के विकल वितुण्डों से,
पट गई भूमि नरमुण्डों से।।

ऐसा रण राणा करता था,
पर उसको था सन्तोष नहीं।
क्षण-क्षण आगे बढ़ता था वह,
पर कम होता था रोष नहीं।।

कहता था लड़ता मान कहाँ,
मैं कर लूँ रक्त-स्नान कहाँ?
जिस पर तय विजय हमारी है,
वह मुगलों का अभिमान कहाँ?

|| अभ्यास प्रश्न ||

1. निम्नलिखित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—
   (क) मेवाड़-केसरी देख रहा ..... मानो प्रत्यक्ष कपाली था।
   (ख) चढ़ चेतक पर तलवार उठा ..... दूने तिगुने उत्साह भरे। **(2019AG)**
   (ग) क्षण मार दिया कर कोड़े से ..... रणचण्डी जीभ पसार बढ़ी। **(2019AG)**
   (घ) वह हाथी दल पर टूट पड़ा ..... बरछे पर उसको रोक दिया।
   (ङ) क्षण उछल गया.....पट गयी भूमि नरमुण्डों से।
   (च) ऐसा रण, राणा करता था.....मुगलों का अभिमान कहाँ?
   (छ) जो साहस कर बढ़ता उसको .....हो गया घोड़े पर। **(2020MD)**
2. श्याम नारायण पाण्डेय का जीवन-परिचय एवं रचनाओं का उल्लेख कीजिए। **(2019AB,AF,20MG,MA)**
3. श्याम नारायण पाण्डेय के साहित्यिक अवदान एवं भाषा पर प्रकाश डालिए।
4. 'हल्दी घाटी' कविता का सारांश लिखिए।
5. 'हल्दी घाटी' कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए।
6. 'हल्दी घाटी' शीर्षक कविता की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
7. 'हल्दी घाटी' कविता में वीर रस से युक्त पंक्तियों को उद्धृत कीजिए।
8. निम्नलिखित पंक्तियों में रस का उल्लेख कीजिए—
   क्षण में गिरते रुण्डों से, मदमस्त गजों के शुण्डों से।
   घोड़ों के विकल वितुण्डों से, पट गयी भूमि नरमुण्डों से।।

➥ आन्तरिक मूल्यांकन

(i) पाठ की काव्य-पंक्तियों के माध्यम से श्याम नारायण पाण्डेय के व्यक्तित्व की जो झलक मिलती है, उसे अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।
(ii) वीर रस पर आधारित अन्य कविता को कंठस्थ करके लिखें।

टिप्पणी

➥ हल्दी घाटी

मेवाड़ केसरी = राणा प्रताप। **रण** = युद्ध। **मान-रक्त** = अकबर के प्रधान सेनापति मानसिंह का रक्त। **रक्त का प्यासा** = जान का दुश्मन। **प्रत्यक्ष** = साक्षात्। **कपाली** = शिव का संहारक रूप जिनके बाएँ हाथ में कपाल है। **चेतक** = राणा प्रताप का घोड़ा। **भूतल** = धरती। **जवानी** = युवावस्था। **उत्साह** = साहस, धैर्य। **कौशल** = पराक्रम। **रक्त** = खून। **वेग** = तेज। **नभ** = आकाश। **बरछे** = भाला। **बैरी** = दुश्मन। **रुण्डों** = धड़ों। **मुण्ड** = सिर। **शुण्ड** = सूँड़। **रोष** = क्रोध। **मान** = मानसिंह। **रक्त-स्नान** = खून में नहाना। **कर** = हाथ। **राणाकर** = राणा के हाथ। **पवि** = वज्र, भाले की नोक। **शोणित** = रक्त। **कटाक्ष** = टेढ़ी नजर। **अरि घोड़े पर** = शत्रु के घोड़े पर। **विकल** = व्याकुल, बेचैन। **वितुण्ड** = हाथी। **नरमुण्ड** = मनुष्यों के कटे सिर। **मान** = अकबर का सेनापति मानसिंह।

●●

परिशिष्ट

॥ काव्य-सौन्दर्य के तत्त्व ॥

(क) रस

आचार्यों ने रस को काव्य की आत्मा कहा है। कविता पढ़ने अथवा नाटक देखने से पाठक या दर्शक को जो आनन्द प्राप्त होता है, वह रस कहलाता है।

रस के चार अंग माने गये हैं—स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव और संचारी भाव।

➨ (i) स्थायी भाव

सहृदय के हृदय में जो भाव स्थायी रूप से विद्यमान रहते हैं, उन्हें स्थायी भाव कहते हैं। यही भाव रसत्व को प्राप्त होते हैं।

प्राचीन भारतीय आचार्यों ने स्थायी भाव नौ माने हैं। उन्हीं के आधार पर नौ रस माने जाते हैं—

स्थायी भाव	रस	स्थायी भाव	रस
1. रति	शृंगार	6. भय	भयानक
2. हास	हास्य	7. जुगुप्सा	वीभत्स
3. शोक	करुण	8. विस्मय	अद्‌भुत
4. क्रोध	रौद्र	9. निर्वेद	शान्त
5. उत्साह	वीर		

बाद में 'वात्सल्य' नाम का दसवाँ रस भी स्वीकार किया गया। इसका भी स्थायी भाव रति ही है। जब रति बालक के प्रति होती है तो वात्सल्य और जब भगवान् के प्रति होती है तो 'भक्ति' रस की निष्पत्ति होती है।

➨ (ii) विभाव

जिसके कारण सहृदय को रस प्राप्त होता है, वह विभाव कहलाता है अर्थात् स्थायी भाव का कारण विभाव है।

विभाव दो प्रकार के होते हैं—(क) आलम्बन विभाव, (ख) उद्दीपन विभाव।

➨ (क) आलम्बन विभाव

वह कारण है जिस पर भाव अवलम्बित रहता है अर्थात् जिस व्यक्ति या वस्तु के प्रति मन में रति आदि स्थायी भाव उत्पन्न होते हैं, उसे आलम्बन कहते हैं और जिस व्यक्ति के मन में स्थायी भाव उत्पन्न होते हैं उसे आश्रय कहते हैं। पुत्र रोहिताश्व की मृत्यु पर विलाप करती हुई शैव्या आश्रय है और रोहिताश्व आलम्बन है। यहाँ शोक स्थायी भाव है।

➨ (ख) उद्दीपन विभाव

जो आलम्बन द्वारा उत्पन्न भावों को उद्दीप्त करते हैं, उन्हें उद्दीपन विभाव कहते हैं, जैसे भय स्थायी भाव को उद्दीप्त करने के लिए सिंह का गर्जन, उसका खुला मुँह, जंगल की भयानकता आदि उद्दीपन विभाव हैं।

➨ (iii) अनुभाव

स्थायी भाव के जागरित होने पर आश्रय की बाह्य चेष्टाओं को अनुभाव कहते हैं, जैसे भय उत्पन्न होने पर हक्का-बक्का हो जाना, रोंगटे खड़े होना, काँपना, पसीने से तर हो जाना आदि।

यहाँ यह ध्यान देने की बात है कि बिना किसी भावोद्रेक के केवल भौतिक परिस्थिति के कारण यदि ये चेष्टाएँ दिखलायी पड़ती हैं तो उन्हें अनुभाव नहीं कहेंगे। जैसे जाड़े के कारण काँपना, गर्मी से पसीना निकलना आदि।

➡ (iv) संचारी भाव

आश्रय के मन में उठनेवाले अस्थिर मनोविकारों को संचारी भाव कहते हैं। ये मनोविकार पानी के बुलबुलों की भाँति बनते-मिटते रहते हैं, जबकि स्थायी भाव अन्त तक बने रहते हैं।

प्रत्येक रस का स्थायी भाव तो निश्चित है पर एक ही संचारी अनेक रसों में हो सकता है, जैसे शंका श्रृंगार में भी हो सकती है और भयानक में भी, स्थायी भाव भी दूसरे रस में संचारी भाव हो जाते हैं। जैसे हास्य रस का स्थायी भाव 'हास' श्रृंगार रस में संचारी भाव बन जाता है। संचारी भाव को 'व्यभिचारी भाव' भी कहा जाता है।

हास्य और करुण रस

ऊपर दस रसों के नाम बताये जा चुके हैं, किन्तु पाठ्यक्रम में हास्य और करुण रस ही हैं, अतः इनका उल्लेख यहाँ किया जा रहा है—

➡ (i) हास्य रस

(2016CA,CB,CD,CE,CF,CG,17AA,AB,AC,AD,AE,18HA,HF, 19AA,AB,AC,AE,AF,AG,20MC,MD,MB,MG,MF,MA)

''विभाव, अनुभाव तथा संचारी भाव के संयोग से पूर्णता को प्राप्त हास नामक मनोविकार हास्य रस उत्पन्न करता है।'' विकृत रूप, आकार, वेश, वाणी और चेष्टाओं को देखकर 'हास' नामक मनोविकार के परिपुष्ट होने पर 'हास्य रस' की उत्पत्ति होती है।

उदाहरण—

हँसि-हँसि भाजैं देखि दूलह दिगम्बर को,
पाहुनी जे आवैं हिमाचल के उछाह मैं।
कहै 'पदमाकर' सुकाहु सों कहै को कहा,
जोई जहाँ देखै सो हँसेई तहाँ राह मैं।
मगन भयेई हँसैं नगन महेस ठाढ़े,
और हँसैं ऐऊ हँसि हँसी के उमाह मैं।
सीस पर गंगा हँसैं, भुजनि भुजंगा हँसैं,
हास ही को दंगा भयो नंगा के विवाह मैं।

इस छन्द में महादेव जी आलम्बन हैं क्योंकि उन्हीं को देखकर हँसी आती है। उनकी विलक्षण वेशभूषा उद्दीपन है। अतिथि स्त्रियों का हँसना, भागना, खड़ा रह जाना आदि अनुभाव हैं। भय, हर्ष और चपलता, संचारी भाव हैं। इनके संयोग से हास्य रस की निष्पत्ति हुई है।

अन्य उदाहरण—

बिंध्य के बासी उदासी तपोब्रतधारी महा बिनु नारि दुखारे।
गोतमतीय तरी, तुलसी, सो कथा सुनि भे मुनिबृन्द सुखारे॥
ह्वैहैं सिला सब चन्द्रमुखी परसे पद-मंजुल-कंज तिहारे।
कीन्हीं भली रघुनायकजू करुना करि कानन को पगु धारे॥

➡ (ii) करुण रस

(2016CA,CB,CC,CD,CF,CG,17AA,AB,AC,AD,18HA,HF, 19AA,AC,AD,AE,AG,20MD,MB,MG,MF,MA)

'शोक' नामक स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव तथा संचारी भाव के संयोग से करुण रस की निष्पत्ति होती है अर्थात् ''प्रिय वस्तु तथा व्यक्ति के नाश या अनिष्ट से हृदय में उत्पन्न क्षोभ को करुण रस कहते हैं।''

उदाहरण—श्रवण की मृत्यु पर उनकी माता की यह दशा करुण रस की निष्पत्ति करती है—

''मणि खोये भुजंग-सी जननी,
फन-सा पटक रही थी शीश,
अन्धी आज बनाकर मुझको,
किया न्याय तुमने जगदीश?''

इसमें **स्थायी भाव**—शोक, **विभाव (आलम्बन)**—श्रवण, **आश्रय**—पाठक, **उद्दीपन**—दशरथ की उपस्थिति, **अनुभाव**—सिर पटकना, **संचारी भाव**—स्मृति, विषाद, प्रलाप आदि। इनके संयोग से करुण रस की निष्पत्ति हुई है।

अन्य उदाहरण– शोक विकल सब रोवहिं रानी।
रूप राशि बल तेज बखानी ।।

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

प्रश्न 1. निम्नलिखित पक्तियों में कौन-सा रस है? उस रस का स्थायी भाव लिखिए–
'चहुँ दिसि कान्ह-कान्ह कहि टेरत, अँसुवन बहत पनारे।'

प्रश्न 2. निम्नलिखित पंक्तियों में कौन-सा रस है–
जेहि दिसि बैठे नारद फूली। सो दिसि तेही न बिलोकी भूली।।
पुनि-पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीं। देखि दसा हर-गन मुसकाहीं।।

प्रश्न 3. निम्नलिखित में कौन-सा रस है? उसका स्थायी भाव लिखिए–
''हा! वृद्धा के अतुल धन, हा! वृद्धता के सहारे!
हा! प्राणों के परमप्रिय, हा! एक मेरे दुलारे।''
हे जीवितेश! उठो, उठो यह नींद कैसी घोर है,
है क्या तुम्हारे योग्य, यह तो भूमि-सेज कठोर है।

प्रश्न 4. निम्नलिखित पंक्तियों में कौन-सा रस है–
पूछति ग्राम बधू सिय सों 'कहौ साँवरे से, सखि रावरे को हैं?'

प्रश्न 5. निम्नलिखित कविता में कौन-सा रस है? उस रस का स्थायी भाव बताइए–
ह्वै हैं सिला सब चंद्रमुखी परसे पद-मंजुल-कंज तिहारे।
कीन्हीं भली रघुनायक जू करुनाकरि कानन को पग धारे।।

प्रश्न 6. निम्नलिखित पंक्तियों में कौन-सा रस है तथा उसका स्थायी भाव क्या है?
जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फन करिबर कर हीना।।
अस मम जिवन बन्धु बिन तोही। जौ जड़ दैव जियावह मोही।।

प्रश्न 7. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त रस का उल्लेख कीजिए–
हँसि-हँसि भाजैं देखि दूलह दिगम्बर कों,
पाहुनी जे आवै हिमाचल के उछाह में।

प्रश्न 8. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त रस का उल्लेख कीजिए–
हरि जननी मैं बालिक तेरा, काहे न अवगुण बकसहु मेरा।।
सुत अपराध करै दिन केते, जननी कै चित रहैं न तेते।।
कर गहि केस करैं जो घाता, तऊ न हेत उतारै माता।
कहैं कबीर एक बुधि विचारी, बालक दुखी दुखी महतारी।।

प्रश्न 9. निम्नलिखित पंक्तियों में कौन-सा रस है? उस रस का स्थायी भाव लिखिए–
'ब्रज के बिरही लोग दुखारे'

प्रश्न 10. निम्नलिखित पंक्तियों में कौन-सा रस है तथा उसका स्थायी भाव क्या है?
अभी तो मुकुट बँधा था माथ, हुए कल ही हल्दी के हाथ,
खुले भी न थे लाज के बोल, खिले भी न चुम्बन शून्य कपोल,
हाय रुक गया यहाँ संसार, बना सिंदूर अंगार,
वातहत लतिका यह सुकुमार, पड़ी है छिन्नाधार।

प्रश्न 11. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त रस का नाम तथा स्थायी भाव लिखिए–

पतिसिर देखत मन्दोदरी। मुरछित बिकल धरनि खसि परी।
जुबति वृंद रोवत उठि धाईं, तेहि उठाई रावन पहिं आईं।।

(ख) छन्द

छन्द काव्य के प्रवाह को लययुक्त, संगीतात्मक, सुव्यवस्थित और नियोजित करता है। छन्दबद्ध होकर भाव अधिक प्रभावशाली, अधिक हृदयग्राही और स्थायी हो जाता है। छन्द काव्य को स्मरण योग्य बना देता है।

छन्द के प्रत्येक चरण में वर्णों का क्रम अथवा मात्राओं की संख्या निश्चित होती है।

➨ मात्रा

मात्रा भेद से वर्ण दो प्रकार के होते हैं—ह्रस्व एवं दीर्घ। वर्ण के उच्चारण काल में जो समय लगता है उसे 'मात्रा' कहा जाता है। अ, इ, उ, ऋ के उच्चारण में जो समय लगता है, उसकी एक मात्रा होती है। आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ तथा इनके संयुक्त व्यञ्जनों के उच्चारण में जो समय लगता है, उसकी दो मात्राएँ मानी गयी हैं। व्यंजन स्वतः उच्चरित नहीं हो सकते हैं। अतः मात्रा की गणना स्वरों के आधार पर होती है। ह्रस्व और दीर्घ को पिंगलशास्त्र में क्रमशः लघु और गुरु कहते हैं। लघु का चिह्न '।' है तथा गुरु का चिह्न 'ऽ' है।

➨ यति (विराम)

छन्द की एक लय होती है, उसे गति या प्रवाह भी कहते हैं। लय का ज्ञान अभ्यास पर निर्भर है। छन्दों में विराम के नियम का पालन भी किया जाता है—छन्द के प्रत्येक चरणों में उच्चारण करते समय मध्य या अन्त में जो विराम होता है उसे 'यति' कहा जाता है।

➨ पाद या चरण

छन्द में प्रायः चार पंक्तियाँ होती हैं, छन्द की एक पंक्ति का नाम 'पाद' है, इसी पाद को उस छन्द का चरण कहा जाता है। पहले और तीसरे चरण को विषम तथा दूसरे और चौथे चरण को सम चरण कहते हैं–

ककुभ शोभित गोरज बीच से।
निकलते ब्रज बल्लभ यों लसे।
कदन ज्यों करके दिशि कालिमा।
विलसता नभ में नलिनीश है।

इस छन्द में चार पंक्तियाँ (चरण) हैं। एक-एक पंक्ति चरण या पाद है। कुछ चार चरणवाले छन्दों को दो पंक्तियों में भी लिख देने की प्रथा चल पड़ी है।

➨ गुरु-लघु

(1) अनुस्वारयुक्त (ं) वर्ण गुरु माना जाता है। उदाहरण के लिए—'संत' और 'हंस' शब्द के सं और हं वर्ण गुरु हैं। **(2)** विसर्ग (:) से युक्त वर्ण गुरु माना जाता है। उदाहरण के लिए अतः शब्द में 'तः' गुरु वर्ण है। **(3)** संयुक्ताक्षर से पूर्व का लघु वर्ण गुरु माना जाता है, जैसे 'गन्ध' शब्द में 'न्ध' संयुक्ताक्षर है, अतः 'ग' लघु होते हुए भी गुरु (दो मात्रा का) है। परन्तु जब संयुक्ताक्षर से पूर्व वर्ण पर अधिक बल नहीं रहता, तब वह लघु ही माना जाता है। जैसे 'तुम्हारे' में 'तु' लघु है। **(4)** चन्द्रबिन्दु से युक्त लघु वर्ण लघु ही रहता है जैसे—'हँसना' का 'हँ' लघु है। **(5)** कभी-कभी दीर्घ वर्ण भी आवश्यकतानुसार ह्रस्व पढ़ा जाता है, जैसे—**'करत जो वन सुर नर मुनि भावन'** में 'जो' दीर्घ ही पढ़ा जायगा। इसी प्रकार **'अवधेश के द्वारे सकारे गयी'** में 'के' दीर्घ होते हुए भी लघु ही पढ़ा जायगा। तात्पर्य यह है कि किसी ध्वनि का लघु अथवा गुरु होना उसके उच्चारण में लिए गये समय पर निर्भर है।

छन्द के प्रकार

1. वर्णिक, 2. मात्रिक, 3. मुक्त

1. वर्णिक छन्द—वर्णिक वृत्तों के प्रत्येक चरण का निर्माण वर्णों की एक निश्चित संख्या एवं लघु गुरु के क्रम के अनुसार होता है। वर्णिक वृत्तों में अनुष्टुप्, द्रुतविलम्बित, मालिनी, शिखरिणी आदि छन्द प्रसिद्ध हैं।

2. मात्रिक छन्द—मात्रिक छन्द वे हैं, जिनकी रचना में चरण की मात्राओं की गणना होती है। दोहा, सोरठा, रोला, चौपाई आदि मात्रिक छन्द हैं।

3. मुक्त छन्द—हिन्दी में स्वतन्त्र रूप से आज लिखे जा रहे छन्द मुक्त छन्द हैं, जिनमें वर्ण मात्रा का कोई बन्धन नहीं है।

मात्रिक छन्दों में पाठ्यक्रमानुसार दोहा और सोरठा का लक्षण एवं उदाहरण निम्नलिखित है—

➨ (1) सोरठा

(2016CA,CB,CD,CF,CG,17AA,AB,AC,AD,18HA,HF, 19AA,AC,AE,AG,20MD,MB,MG,MF,MA)

यह दोहे का उल्टा होता है। इसके प्रथम एवं तृतीय चरण में ग्यारह-ग्यारह मात्राएँ तथा द्वितीय एवं चतुर्थ चरण में तेरह-तेरह मात्राएँ होती हैं।

उदाहरण—

ऽ ।।।। ।। ऽ।
जो सुमिरत सिधि होइ, 11 मात्राएँ
।। ऽ।। ।।।। ।।।
गननायक करिवर बदन। 13 मात्राएँ
।।। ।ऽ।। ऽ।
करहु अनुग्रह सोय, 11 मात्राएँ
ऽ । ऽ । । । ।। ।।।
बुद्धि-रासि सुभ-गुन-सदन।। 13 मात्राएँ

अन्य उदाहरण—

लिखकर लोहित लेख, डूब गया दिनमणि अहा।
व्योम सिन्धु सखि देख, तारक बुदबुद दे रहा।।

अथवा *बंदऊँ मुनि पद कंजु, रामायन जेहिं निरमयउ।*
सरवर सुकोमल मंजु, दोष रहित दूषन सहित।।

➨ (2) रोला

(2016CA,CB,CD,CE,CF,CG,17AA,AB,AE,18HA,HF, 19AA,AB,AD,AE,20MC,MD,MB,MG,MF,MA)

यह सम मात्रिक छन्द है। इसमें चार चरण होते हैं और प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं। 11 और 13 मात्राओं पर यति होती है।

उदाहरण—

।। ऽ।। ऽऽ। ऽ। ।। ।।।। ऽ।।
कोउ पापिह पंचत्व प्राप्त सुनि जमगन धावत।
बनि बनि बावन वीर बढ़त चौचंद मचावत।
पै तकि ताकी लोथ त्रिपथगा के तट लावत।
नौ द्वै, ग्यारह होत तीन पाँचहिं बिसरावत।।

भारतेन्दु : गंगावतरण

इसके प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ हैं। 11-13 पर यति है, अतः यह छंद रोला है।

|| अभ्यास प्रश्न ||

प्रश्न 1. निम्नलिखित पंक्तियों में निहित छन्दों के नाम लिखिए–

मैं समुझ्यौ निरधार, यह जगु काँचो काँच सौ।
एकै रूप अपार, प्रतिबिम्बित लखियत जहाँ।।

उपर्युक्त कविता में छन्द बताइए।

प्रश्न 2. भरत चरित करि नेम, तुलसी जे सादर सुनहिं।
सियाराम पद प्रेम, अवसि होइ मन रस विरति।।
उपर्युक्त कविता में छन्द बताइए।

प्रश्न 3. जो सुमरित सिधि होई गननायक करिवर बदन।
करहु अनुग्रह सोई, बुद्धिरासि सुभ-गुन-सदन।।
उपर्युक्त कविता में छन्द बताइए।

प्रश्न 4. निम्नलिखित में प्रयुक्त छन्द को पहचानकर लिखिए–

बंदहुँ मुनि पद कंज, रामायन जेहि निरमयउ।
सरवर सुकोमल मंजु, दोस रहित दूसन सहित।।

(ग) अलंकार

काव्य की शोभा बढ़ानेवाले उपकरणों को अलङ्कार कहते हैं। इसके प्रयोग से शब्द और अर्थ में चमत्कार उत्पन्न होता है। अतः अलङ्कार को काव्य का आवश्यक अंग माना गया है।

अलङ्कार के दो भेद किये गये हैं—1. शब्दालङ्कार, 2. अर्थालङ्कार।

जब केवल शब्दों में चमत्कार पाया जाता है तब शब्दालङ्कार और जब अर्थ में चमत्कार होता है तब अर्थालङ्कार कहलाता है। नीचे कुछ प्रमुख अलङ्कारों का वर्णन किया जा रहा है। उपमा, रूपक तथा उत्प्रेक्षा अलङ्कार ही पाठ्यक्रम में निर्धारित हैं—

(i) उपमा

(2016CA,CF,CG,17AB,AC,AE,AG,18HA,HF,19AA,AB,AD,AG, 20MB,MG,MF,MA)

"जहाँ दो भिन्न पदार्थों अथवा व्यक्तियों में समान गुण आदि के कारण सादृश्य या साधर्म्य की स्थापना की जाती है, वहाँ उपमा अलङ्कार होता है।" उपमा अलङ्कार के चार अंग होते हैं—

➨ (क) उपमेय या प्रस्तुत

वह वस्तु अथवा व्यक्ति जिसकी किसी दूसरी वस्तु अथवा व्यक्ति से तुलना की जाती है। दूसरे शब्दों में वर्णन के विषय को 'उपमेय' कहते हैं।

➨ (ख) उपमान या अप्रस्तुत

जिस वस्तु अथवा व्यक्ति से उपमेय की समता की जाती है उसे 'उपमान' कहते हैं।

➨ (ग) साधारण धर्म

वह गुण जिसके कारण उपमेय तथा उपमान में साम्य दिखाया जाये; 'साधारण धर्म' कहलाता है।

➨ (घ) वाचक

वह पद या शब्द जिसके द्वारा उपमेय तथा उपमान की समता प्रकट हो, उसे 'वाचक' कहते हैं।

उदाहरण—

'करि कर सरिस सुभग भुजदण्डा'। यहाँ 'भुजदण्डा' **उपमेय**, 'करि कर' (सूँड़) **उपमान**, 'सरिस' **वाचक** तथा 'सुभग' **साधारण धर्म** है। इस उदाहरण में उपमा के चारों अंग विद्यमान हैं। अतः यह पूर्णोपमा है।

'पीपर पात सरिस मन डोला' भी पूर्णोपमा का उदाहरण है। यदि उपमा का कोई अंग नहीं होता तो वह लुप्तोपमा कहलाती है।

(ii) रूपक (2016CA,CB,CC,CD,CE,CG,17AA,AD,AF,18HA,HF,19AA,AC,AE,AG,20MD,MB,MA)

जहाँ उपमेय में उपमान का भेदरहित आरोप हो, वहाँ रूपक अलङ्कार होता है। रूपक अलङ्कार में उपमेय और उपमान में कोई भेद नहीं रहता।

उदाहरण—

'चरण कमल बन्दौं हरि राइ।''

इस उदाहरण में 'चरण' प्रस्तुत और 'कमल' अप्रस्तुत है। चरण में कमल का आरोप है।

अन्य उदाहरण—

उदित उदय गिरि मंच पर रघुवर बाल पतंग।
विकसे सन्त सरोज सब, हरषे लोचन भृंग।।

(iii) उत्प्रेक्षा (2016CB,CC,CD,CF,17AB,AC,AD,AE,AF,AG,19AA,AC,AD,AE,20MC,MD,MB,MF)

जहाँ उपमेय में उपमान की सम्भावना की जाये वहाँ उत्प्रेक्षा अलङ्कार होता है। जनु, जानो, मानो आदि इसके वाचक शब्द हैं।

उदाहरण—

सोहत ओढ़ैं पीतु पटु, स्याम सलौनै गात।
मनौ नीलमनि सैल पर, आतपु पर्‌यौ प्रभात।।

इस दोहे में 'पीतु पटु' में आतपु तथा 'स्याम सलौनै गात' में नीलमनि सैल की सम्भावना प्रकट की गयी है और 'मनौ' शब्द का प्रयोग भी है। अतः यहाँ उत्प्रेक्षा अलङ्कार है।

अन्य उदाहरण—

1. *उभय बीच सिय सोहति कैसी, ब्रह्म जीव बिच माया जैसी।*
   बहुरि कहउँ छबि जस मन बसई, जनु मधु मदन मध्य रति लसई।
2. *लता भवन तें प्रगट भे तेहि अवसर दोउ भाइ।*
   निकसे जनु-जुग बिमल बिधु जलद पटल बिलगाइ।।
3. *चमचमात चंचल नयन बिच घूँघट-पट झीन।*
   मानहु सुरसरिता बिमल जल उछरत जुग मीन।।

|| अभ्यास प्रश्न ||

प्रश्न 1. निम्न पद्यांशों में से अलंकार छाँटिए–
(क) चरन कमल बन्दौं हरि राई।
(ख) चितवनि चारु भृकुटि बर बांकी। तिलक रेख सोभा जनु चांकी।।
(ग) पीपर पात सरिस मन डोला।

प्रश्न 2. निम्नलिखित में अलंकार बताइए तथा उनके लक्षण भी लिखिए–
(क) धाये धाम काम सब त्यागी। मनहुं रंक निधि लूटन लागी।।
(ख) मुनि पद कमल बंदि दोउ भ्राता।

प्रश्न 3. निम्न पंक्तियों में अलंकार बताइए–
(क) पुनि पुनि बन्दौं गुरु के पद जलजात।
(ख) सोहत ओढ़े पीत पटु स्याम सलोने गात।
मनो नीलमनि सैल पर, आतपु पर्‌यौ प्रभात।।

प्रश्न 4. निम्न पंक्तियों में अलंकार बताइए–
(क) अरुन सरोरुह कर-चरन, दृग खंजन मुख चन्द।
(ख) मनो रासि महातम तारक में।
(ग) जौ चाहत चटक न घटै मैलो होइ न मित्त।
(घ) बन्द नहीं अब भी चलते हैं,
नियति-नटी के कार्य-कलाप।

प्रश्न 5. निम्न में 'उपमेय' तथा 'उपमान' बताइए। अलंकार भी लिखिए–
(क) अनुराग तड़ाग में भानु उदै।
बिगसी मनो मंजुल कंज-कली।
(ख) स्रम-सीकर सांवरि देह लसै।
मनो रासि महातम तारक में।

प्रश्न 6. पीपर-पात सरिस मन डोला।
उपर्युक्त में कौन-सा अलंकार है? उसकी परिभाषा भी लिखिए।

प्रश्न 7. 'मुख मयंक सम मंजु मनोहर'
उपर्युक्त में कौन-सा अलंकार है? उसकी परिभाषा भी लिखिए।

प्रश्न 8. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार का नाम तथा उसका लक्षण लिखिए–
"लोल कपोल झलक कुंडल की, यह उपमा कछु लागत।
मानहुँ मकर सुधारस क्रीड़त, आपु-आपु अनुरागत।।"

प्रश्न 9. निम्नलिखित पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार का नाम तथा उसका लक्षण लिखिए–
"माया दीपक नर पतंग, भ्रमि-भ्रमि इवैं पड़ंत।"

प्रश्न 10. निम्नलिखित कविता में कौन-सा अलंकार है? उसकी परिभाषा लिखिए।
'बढ़त-बढ़त संपति सलिलु, मन सरोजु बढ़ि जाए।'

प्रश्न 11. बीती विभावरी जाग री।
अम्बर-पनघट में डुबो रही तारा घट ऊषा नागरी।
उपर्युक्त कविता में बताइए कौन-सा अलंकार है?

प्रश्न 12. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार का नाम बताइए तथा उसका लक्षण भी लिखिए–
"धाए धाम काम सब त्यागी।
मनहुँ रंक निधि लूटन लागी।।"

प्रश्न 13. "सोहत ओढ़े पीत पटु, स्याम सलोने गात।
मनौ नील-मणि सैल पर, आतपु पर्‌यौ प्रभात।।"
उपर्युक्त पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है? उसकी परिभाषा लिखिए।

प्रश्न 14. निम्नलिखित पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार का नाम तथा उसका लक्षण लिखिए–
"लाल चेहरा है नहीं, फिर लाल किसके।"

प्रश्न 15. निम्नलिखित दोहों के सामने उन दोहों में आये हुए अलंकारों के नाम लिखिए। यदि किसी दोहे में एक से अधिक अलंकार हैं तो सभी अलंकारों के नाम लिखिए–
(क) मनौ नीलमणि-सैल पर, आतपु पर्‌यौ प्रभात।।
(ख) जौ चाहत, चटक न घटै, मैलौ होई न मित्त।

प्रश्न 16. निम्नलिखित दोहे में कौन-सा अलंकार है? इसका लक्षण भी लिखिए।
चमचमात चंचल नयन, बिच घूँघट पट झीन।
मानहु सुरसरिता बिमल, जल उछरत जुग मीन।।

॥ संस्कृत ॥

प्रथमः पाठः

वाराणसी

(बनारस)

वाराणसी सुविख्याता प्राचीना नगरी। इयं विमलसलिलतरङ्गायाः गङ्गायाः कूले स्थिता। अस्याः घट्टानां वलयाकृतिः पंक्तिः धवलायां चन्द्रिकायां बहु राजते। अगणिताः पर्यटकाः सुदूरेभ्यः देशेभ्यः नित्यम् अत्र आयान्ति, अस्याः घट्टानाञ्च शोभां विलोक्य इमां बहु प्रशंसन्ति।

वाराणस्यां प्राचीनकालादेव गेहे गेहे विद्यायाः दिव्यं ज्योतिः द्योतते। अधुनाऽपि अत्र संस्कृतवाग्धारा सततं प्रवहति, जनानां ज्ञानञ्च वर्द्धयति। अत्र अनेके आचार्याः मूर्धन्याः विद्वांसः वैदिकवाङ्मयस्य अध्ययने अध्यापने च इदानीं निरताः। न केवलं भारतीयाः अपितु वैदेशिकाः गीर्वाणवाण्याः अध्ययनाय अत्र आगच्छन्ति, निःशुल्कं च विद्यां गृह्णन्ति। अत्र हिन्दूविश्वविद्यालयः, संस्कृतविश्वविद्यालयः, काशीविद्यापीठम् इत्येते त्रयः विश्वविद्यालयाः सन्ति, येषु नवीनानां प्राचीनानाञ्च ज्ञानविज्ञानविषयाणाम् अध्ययनं प्रचलितः।

एषा नगरी भारतीयसंस्कृतेः संस्कृतभाषायाश्च केन्द्रस्थलम् अस्ति। इत एव संस्कृतवाङ्मयस्य संस्कृतेश्च आलोकः सर्वत्र प्रसृतः। मुगलयुवराजः दाराशिकोहः अत्रागत्य भारतीय-दर्शन-शास्त्राणाम् अध्ययनम् अकरोत्। स तेषां ज्ञानेन तथा प्रभावितः अभवत्, यत् तेन उपनिषदाम् अनुवादः पारसीभाषायां कारितः।

इयं नगरी विविधधर्माणां संगमस्थली। महात्मा बुद्धः, तीर्थङ्करः पार्श्वनाथः, शङ्कराचार्यः, कबीरः, गोस्वामी तुलसीदासः, अन्ये च बहवः महात्मानः अत्रागत्य स्वीयान् विचारान् प्रासारयन्। न केवलं दर्शने, साहित्ये, धर्मे, अपितु कलाक्षेत्रेऽपि इयं नगरी विविधानां कलानां, शिल्पानाञ्च कृते लोके विश्रुता। अत्रत्याः कौशेयशाटिकाः देशे देशे सर्वत्र स्पृह्यन्ते।

अत्रत्याः प्रस्तरमूर्तयः प्रथिताः। इयं निजां प्राचीनपरम्पराम् इदानीमपि परिपालयति—तथैव गीयते कविभिः—

मङ्गलं मरणं यत्र विभूतिर्यत्र भूषणम्।
कौपीनं यत्र कौशेयं काशी केनोपमायते॥

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

➨ लघु उत्तरीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए—

1. वाराणसी नगरी कस्याः नद्याः कूले स्थिता? **(2016CF,19AB,AD)**

अथवा

वाराणसी नगरी कस्य कूले स्थिता?

2. वाराणसी कस्याः भाषायाः केन्द्रम् अस्ति? **(2019AG)**
3. कुत्र मरणं मङ्गलं भवति? **(2016CC,17AC,18HF,20MC)**
4. वाराणसी किमर्थं प्रसिद्धा? **(2019AA)**

अथवा

वाराणसी नगरी केषां कृते लोके विश्रुता अस्ति?

5. वाराणसी कस्याः केन्द्रस्थली अस्ति?
6. वैदेशिकाः किमर्थं वाराणसीम् आगच्छन्ति?
7. वाराणस्यां कति विश्वविद्यालयाः सन्ति? **(2017AA)**
8. दाराशिकोहः अत्रागत्य केषाम् अध्ययनं अकरोत्?
9. दाराशिकोहः कस्यां भाषायाम् उपनिषदाम् अनुवादम् अकारयत्?
10. वाराणसी कस्य संगमस्थली अस्ति? **(2018HA,20MB,ME,MF)**
11. वाराणस्याः कानि वस्तूनि प्रसिद्धानि सन्ति?
12. वाराणसी नगरी कुत्र स्थिता अस्ति?
13. विविध धर्माणां संगमस्थली कः नगरी अस्ति?
14. कस्याः शोभां विलोक्य पर्यटकाः बहु प्रशंसन्ति?
15. सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालयः कस्यां नगर्यां विद्यते? **(2017AF)**
16. वाराणसी नगरी केषां संगमस्थली अस्ति? **(2020ME)**
17. वैदेशिकाः पर्यटकाः कस्याः शोभाम् अवलोक्य वाराणसीं प्रशंसति?

➨ अनुवादात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित संस्कृत गद्यांशों का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) वाराणसी सुविख्याता..... इमां बहु प्रशंसन्ति। **(2016CA,19AA,AE)**

अथवा

वाराणस्यां प्राचीनकालादेव..... प्रचलितः। **(2020MB,MF)**

(ख) अधुनाऽपि..... विश्वविद्यालयाः सन्ति। **(2016CG)**

अथवा

अधुनाऽपि .....विद्यां ग्रहणन्ति।

अथवा

अत्र अनेके.....अध्ययनं प्रचलितः।

(ग) एषा नगरी..... भाषायां कारितः। **(2016CD,CE,19AC,20ME)**

(घ) इयं नगरी..... सर्वत्र स्पृह्यन्ते। **(2017AF)**

(ङ) महात्मा बुद्धः ..... . लोके विश्रुता।

(च) अत्रत्याः.....केनोप मायते।

(छ) मङ्गलम् मरणं ..... . केनोपमायते।

2. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) अगणित पर्यटक दूर देशों से वाराणसी आते हैं।

(ख) वे यहाँ निःशुल्क विद्या ग्रहण करते हैं।

(ग) यह नगरी विविध कलाओं के लिए प्रसिद्ध है।

(घ) वाराणसी की पत्थर की मूर्तियाँ प्रसिद्ध हैं।

(ङ) वाराणसी में मरना मङ्गलमय होता है।

➨ व्याकरणात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित शब्दों में कारण सहित विभक्ति बताइए—

देशेभ्यः, अध्ययनाय, स्वीयान्, गङ्गायाः, कूले।

2. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि-नियम भी लिखिए—

अत्रागत्य, वलयाकृतिः, वाग्धारा।

➨ आन्तरिक मूल्यांकन

वाराणसी की विशेषताओं की एक सूची तैयार कीजिए।

शब्दार्थ

सुविख्याता = सुप्रसिद्ध। **विमलसलिलतरङ्गायाः** = निर्मल जल की लहरों की। **घट्टानां** = घाटों की। **कूले** = किनारे पर। **वलयाकृतिः** = घुमावदार आकृतिवाली। **वाग्धारा** = वाणी का प्रवाह। **गीर्वाणवाण्याः** = देववाणी संस्कृत का। **लोके विश्रुता** = जग प्रसिद्ध। **कौशेयशाटिकाः** = रेशमी साड़ियाँ। **कौपीनम्** = लँगोट। **उपमायते** = उपमा दी जा सकती है, तुलना की जा सकती है। **घट्टानां** = घाटों की। **निरताः** = लगे हुए हैं। **अध्ययनं प्रचलितः** = अध्ययन चलता रहता है। **संस्कृतेश्च** = संस्कृति का। **प्रसृतः** = फैला है। **कारितः** = कराया। **स्वीयान् विचारान् प्रासारयन्** = अपने विचारों का प्रसार किया। **शिल्पानाम्** = शिल्पों के। **कृते** = लिए। **स्पृह्यन्ते** = चाही जाती है। **अत्रात्याः** = यहाँ की। **प्रस्तरमूर्तयः** = पत्थर की मूर्तियाँ। **प्रथिताः** = प्रसिद्ध है।

●●

द्वितीयः पाठः

अन्योक्तिविलासः

(अन्योक्तियों का सौन्दर्य)

नितरां नीचोऽस्मीति त्वं खेदं कूप! कदापि मा कृथाः।
अत्यन्तसरसहृदयो यतः परेषां गुणग्रहीताऽसि।।1।।

नीर-क्षीर-विवेके हंसालस्यं त्वमेव तनुषे चेत्।
विश्वमिस्मन्नधुनान्यः कुलव्रतं पालयिष्यति कः।।2।।

कोकिल! यापय दिवसान् तावद् विरसान् करीलविटपेषु।
यावन्मिलदलिमालः कोऽपि रसालः समुल्लसति।।3।।

रे रे चातक! सावधानमनसा मित्र! क्षणं श्रूयताम्।
अम्भोदा बहवो हि सन्ति गगने सर्वेऽपि नैतादृशाः।।
केचिद् वृष्टिभिरार्द्रयन्ति वसुधां गर्जन्ति केचिद् वृथा।
यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः।।4।।

न वै ताडनात् तापनाद् वह्निमध्ये
न वै विक्रयात् क्लिश्यमानोऽहमस्मि।
सुवर्णस्य मे मुख्यदुःखं तदेकं
यतो मां जना गुञ्जया तोलयन्ति।।5।।

रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातं,
भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पंकजालिः।
इत्थं विचिन्तयति कोशगते द्विरेफे,
हा हन्त! हन्त! नलिनीं गज उज्जहार।।6।।

|| अभ्यास प्रश्न ||

➨ लघु उत्तरीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए :

1. कूपस्य कः खेदः?

   अथवा

   कूपः किमर्थं दुःखम् अनुभवति। **(2020MD)**
2. नीर-क्षीर विषये हंसस्य का विशेषता अस्ति? **(2019AE,AF,20MA)**
3. कविः कोकिलां किं कथयति?
4. कविः चातकं किम् उपदिशति? **(2019AE,AF)**
5. 'एकमेव मुख्यदुःखं गुञ्जया सह तोलनम्' इति कः चिन्तयति?
6. गजः काम् उज्जहार?
7. सुवर्णस्य किं मुख्यदुःखं अस्ति? **(2016CB,19AG,20MG,ME)**

   अथवा

   सुवर्णस्य मुख्यं दुःखं किम् अस्ति?
8. कविः हंसं किं बोधयति?
9. कोशगतः भ्रमरः (द्विरेफ) किम् अचिन्तयत्?
10. कस्याः कोशगते (भ्रमरः) आसीत्?
11. भ्रमरे चिन्तयति गजः किम् अकरोत्?

➨ अनुवादात्मक प्रश्न

1. निम्नांकित श्लोकों का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) नितरां·····गुणग्रहीताऽसि। **(2016CD,19AA)**

(ख) नीर-क्षीर·····पालयिष्यति कः। **(2020MB)**

(ग) कोकिल!·····समुल्लसति। **(2019AE)**

(घ) रे रे चातक!·····दीनं वचः। **(2017AC,20MF)**

(ङ) न वै ताडनात्·····तोलयन्ति। **(2017AD,19AB)**

(च) रात्रिर्गमिष्यति·····उज्जहार। **(2016CB)**

(छ) इत्थं विचिन्तयति ····· उज्जहार।

2. निम्नांकित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) कुआँ सोचता है कि मैं अत्यन्त नीच हूँ।

(ख) हंस नीर-क्षीर-विवेक में प्रख्यात है।

(ग) कोकिल! दुर्दिन सदैव नहीं रहते हैं।

(घ) भिक्षुक! प्रत्येक व्यक्ति के सामने दीन वचन मत कहो।
(ङ) सूर्य उदित होगा और कमल खिलेंगे।
(च) ताड़ना से सोना दुःखी नहीं है।
(छ) रात बीतेगी और सवेरा होगा।

➨ व्याकरणात्मक प्रश्न

(1) 'गुणग्रहीता', 'करीलविटपेषु', 'कोशगते' पदों में समास-विग्रह कीजिए तथा समास का नाम बताइए।
(2) 'नैतादृशाः' एवं 'अन्योक्ति' में सन्धि-विच्छेद करके सन्धि का नाम लिखिए।
(3) 'अस्मि', 'असि', 'गमिष्यति' में पुरुष, वचन, लकार बताइए।
(4) 'अन्योक्तिविलासः' पाठ में लृट् (भविष्यत्) लकार में आये क्रियापदों को लिखकर उनके अर्थ बताइए।

➨ पर्यायवाची शब्द

कोकिल—पिक, परभृत। **बादल**—वारिद, जलद (जल के पर्यायवाची शब्दों में 'द' जोड़कर बादल, 'ज' जोड़कर कमल और 'धि' जोड़कर सागर के पर्यायवाची शब्द बनते हैं)। **पृथ्वी**—वसुधा, रसा, मही, अवनि, गो, सुरभि, धरा। **भँवरा**—भ्रमर, द्विरेफ, अलि। **कमल**—पंकज, जलज। **हाथी**—करिन, हस्ति। **हंस**—मराल।

शब्दार्थ

नितरां = बहुत। **मा** = नहीं। **कृथाः** = करो। **तनुषे** = करते हो। **कुलव्रतम्** = कुल की मर्यादा को। **यापय** = बिताओ। **अलिमालः** = भ्रमर-समूह (वाला)। **समुल्लसति** = सामने आता है। **अम्भोदा** = बादल। **वृष्टिभिरार्द्रयन्ति** = (वृष्टिभिः + आर्द्रयन्ति) वर्षा से भिगोते हैं। **वह्नि** = अग्नि। **विक्रयात्** = बेचने से। **क्लिश्यमानो** = दुःखी। **गुञ्जया** = रत्ती से (घुँघुची से)। **भास्वान्** = सूर्य। **इत्थम्** = इस प्रकार। **कोशगते द्विरेफे** = फूल के अन्दर बन्द भ्रमर को। **उज्जहार** = हरण कर लिया। **परेषां** = दूसरों के। **चेत्** = यदि। **कुलव्रतम्** = अपनी मर्यादा का। **पुरतो** = सामने। **ताडनात्** = पीटने से। **तापनाद्** = जलाने से। **अलिमालः** = भौंरों वाला। **रसालः** = आम का वृक्ष। **विरसान्** = नीरस। **नैतादृशाः** = ऐसे नहीं है। **आर्द्रयन्ति** = गीला कर देते हैं। **उदेष्यति** = उदय होगा। **पङ्कजालिः** = कमलों की पंक्ति। **विचिन्तयति** = विचार करने पर, विचारमग्न होने पर। **हा हन्त हन्त** = दुःख का विषय है।

●●

तृतीयः पाठः

वीरः वीरेण पूज्यते

(वीर के द्वारा वीर पूजा जाता है)

*(**स्थानम्**–अलक्षेन्द्रस्य सैन्य शिविरम्। अलक्षेन्द्रः आम्भीकः च आसीनौ वर्तेते।*
वन्दिनं पुरुराजम् अग्रेकृत्वा एकतः प्रविशति यवन-सेनापतिः।)

सेनापतिः : विजयतां सम्राट्।

पुरुराजः : एष भारतवीरोऽपि यवनराजम् अभिवादयते।

अलक्षेन्द्रः : (साक्षेपम्) अहो! बन्धनगतः अपि आत्मानं वीर इति मन्यसे पुरुराज?

पुरुराजः : यवनराज! सिंहस्तु सिंह एव, वने वा भवतु पञ्जरे वा।

अलक्षेन्द्रः : किन्तु पञ्जरस्थः सिंहः न किमपि पराक्रमते।

पुरुराजः : पराक्रमते, यदि अवसरं लभते। अपि च यवनराज!

बन्धनं मरणं वापि जयो वापि पराजयः।
उभयत्र समो वीरः वीर भावो हि वीरता॥

अम्भिराजः सम्राट्! वाचाल एष हन्तव्यः।

सेनापतिः : आदिशतु सम्राट्।

अलक्षेन्द्रः : अथ मम मैत्रीसन्धे अस्वीकरणे तव किम् अभिमतम् आसीत् पुरुराज!

पुरुराजः : स्वराज्यस्य रक्षा, राष्ट्रद्रोहाच्च मुक्तिः।

अलक्षेन्द्रः : मैत्रीकरणेऽपि राष्ट्रद्रोहः?

पुरुराजः : आम् राष्ट्रद्रोहः यवनराज! एकम् इदं भारतं राष्ट्रम्, बहूनि चात्र राज्यान्, बहवश्च शासकाः। त्वं मैत्रीसन्धिना तान् विभज्य भारतं जेतुम् इच्छसि। आम्भीकः चास्य प्रत्यक्षं प्रमाणम्।

अलक्षेन्द्रः : भारतम् एकं राष्ट्रम् इति तव वचनं विरुद्धम्। इह तावत् राजानः जनाः च परस्परं द्रुह्यन्ति।

पुरुराजः : तत् सर्वम् अस्माकम् आन्तरिकः विषयः। बाह्यशक्तेः तत्र हस्तक्षेपः असह्यः यवनराज! पृथग्धर्माः, पृथग्भाषाभूषा अपि वयं सर्वे भारतीयाः। विशालम् अस्माकं राष्ट्रम्। तथाहि—

उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।
वर्षं तद् भारतं नाम भारती तत्र सन्ततिः॥

अलक्षेन्द्रः : अथ मे भारतविजयः दुष्करः।

पुरुराजः : न केवलं दुष्करः असम्भवोऽपि।

अलक्षेन्द्रः : (सरोषम्) दुर्विनीत, किं न जानासि, इदानीं विश्वविजयिनः अलक्षेन्द्रस्य अग्रे वर्तसे?

पुरुराजः : जानामि, किन्तु सत्यं तु सत्यम् एव यवनराज! भारतीयाः वयं गीतायाः सन्देशं न विस्मरामः।

अलक्षेन्द्रः : कस्तावत् गीतायाः सन्देशः?

पुरुराजः : श्रूयताम्।

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः॥

अलक्षेन्द्रः : (किमपि विचिन्त्य) अलं तव गीतया। पुरुराज! त्वम् अस्माकं बन्दी वर्तसे। ब्रूहि कथं त्वयि वर्तितव्यम्।

पुरुराजः : यथैकेन वीरेण वीरं प्रति।

अलक्षेन्द्रः : (पुरोः वीरभावेन हर्षितः) साधु वीर! साधु! नूनं वीर असि। धन्यः त्वं, धन्या ते मातृभूमिः। (सेनापतिम् उद्दिश्य) सेनापते!

सेनापतिः : सम्राट्!

अलक्षेन्द्रः : वीरस्य पुरुराजस्य बन्धनानि मोचय।

सेनापतिः : यत् सम्राट् आज्ञापयति।

अलक्षेन्द्रः : (एकेन हस्तेन पुरोः द्वितीयेन च आम्भीकस्य हस्तं गृहीत्वा) वीर पुरुराज! सखे आम्भीक! इतः परं वयं सर्वे समानमित्राणि, इदानीं मैत्रीमहोत्सवं सम्पादयामः।

(सर्वे निर्गच्छन्ति)

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

➨ लघु उत्तरीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए–

1. अलक्षेन्द्रः कः आसीत्? **(2016CB,19AC)**
2. पुरुराजः कः आसीत्? **(2017AC,19AG)**
3. पुरुराजः केन सह युद्धम् अकरोत्? **(2017AD,19AB,20MF)**
4. वीरः केन पूज्यते? **(2016CD,17AA,AB,19AA,AD,20ME,MA,MF)**
5. आम्भीकः अलक्षेन्द्रस्य कः आसीत्?
6. 'सिंहस्तु सिंह एव, वने वा भवतु पञ्जरे वा' इति कः प्रत्युत्तरम् अददात्?
7. केन कारणेन पुरुराजः अलक्षेन्द्रस्य मैत्रीसन्धिम् अस्वीकारयत्?
8. पुरुराजः अलक्षेन्द्रं कस्याः सन्देशम् अकथयत्?
9. अलक्षेन्द्रः सेनापतिं किम् आदिशत्?
10. गीतायाः कः सन्देशः? **अथवा** पुरुराजः गीतायाः कः सन्देशम् अकथयत्? **(2016CG)**
11. अलक्षेन्द्रः पुरुं किम् अपृच्छत्?
12. भारत विजयः न केवलं दुष्करः असम्भवोऽपि, कस्य उक्तिः?
13. भारतम् एकं राष्ट्रम् इति विरुद्धम् कस्य उक्तिः? **(2018HF,20MD)**
14. अलक्षेन्द्रः पुरुराजस्य केन भावेन हर्षितः अभवत्?
15. किं जित्वा भोक्ष्यसे महीम्? **(2016CG)**

➨ अनुवादात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित अवतरणों का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

(क) सेनापतिः –विजयतां सम्राट् ·····अवसरं लभते।

(ख) बन्धनं ·····भावो हि वीरता। **(2017AE,19AF)**

(ग) पुरुराजः-आम्·····परस्परं द्रुह्यन्ति।
(घ) सेनापति! आदिशतु सम्राट् ·····असह्यः यवनराज!
(ङ) उत्तरं यत् ·····तत्र सन्ततिः।
(च) अलक्षेन्द्रः—भारतम्·····अस्माकं राष्ट्रम्।
(छ) दुर्विनीत, किं न·····वीरेण वीरं प्रति।
(ज) अलक्षेन्द्रः अथ मे·····गीतायाः संदेशः।
(झ) हतो वा·····विगतज्वरः। **(2016CF,17AB,20MC)**

2. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) यवन सेनापति बन्दी पुरुराज को लाता है।
(ख) वीरभाव ही वीरता होती है।
(ग) वीर के द्वारा वीर पूजा जाता है।
(घ) तुम भारत को जीतना चाहते हो।
(ङ) यह हमारा आन्तरिक विषय है।
(च) सागर के उत्तर में भारतवर्ष है।
(छ) भारत-विजय क्या मेरे लिये दुष्कर है?

➨ व्याकरणात्मक प्रश्न

(1) राष्ट्रद्रोहः, हिमाद्रिः, विश्वविजयी में समास-विग्रह कर समास का नाम लिखिए।
(2) महोत्सव, चास्य, द्रोहाच्च, वीरोऽपि में सन्धि-विच्छेद कीजिए।
(3) पूर्वकालिक क्रिया में 'क्त्वा' और ल्यप् (य) प्रत्यय जोड़कर जो शब्द पाठ में आये हों उन्हें लिखिए और उनका अर्थ भी बताइए।
(4) प्राप्स्यसि, भोक्ष्यसे, अस्माकम्, तव इन क्रिया-पदों और शब्दों में क्रमशः पुरुष, वचन, लकार और विभक्ति लिखिए।

➨ पर्यायवाची शब्द

पर्वत—अद्रि, अचल। **समुद्र**—वारिधि, जलधि, सिन्धु, रत्नाकर।

➨ आन्तरिक मूल्यांकन

(1) पुरुराज का कौन-सा गुण आपको प्रभावित करता है, उसे तालिका द्वारा व्यक्त कीजिए।
(2) देश में पुरुराज जैसे अनेक देश-प्रेमी राजा पैदा हुए हैं, उनकी एक सूची बनाइए।

शब्दार्थ

वर्तेते = हैं। **अलक्षेन्द्रः** = सिकन्दर। **अभिवादयते** = अभिवादन करता है। **साक्षेपम्** = आक्षेप, उलाहने के साथ। **मन्यसे** = मानते हो (मध्यम पु0 एकवचन, लट् लकार - आत्मनेपदी क्रिया)। **वाचाल** = बकनेवाला। **हन्तव्यः** = मारने योग्य। **मैत्री-सन्धे** = मित्रता की सन्धि (के प्रस्ताव का)। **आम्** = हाँ। **विभज्य** = बाँटकर। **जेतुम्** = जीतने के लिए। **हिमाद्रेश्चैव** = (हिम् + अद्रेः + च + एव) और हिमालय पर्वत के ही। **हतो** = मरकर। **जित्वा** = जीतकर। **अलं** = व्यर्थ (निषेधार्थ में)। **ब्रूहि** = कहो। **वर्तितव्यम्** = व्यवहार करना चाहिए। **नूनं** = निश्चय ही, अवश्य। **उद्दिश्य** = लक्ष्य करके। **मोचय** = छोड़ दो, खोल दो। **गृहीत्वा** = पकड़ करके। **पराक्रमते** = पराक्रम करता है। **आम्** = हाँ। **द्रुह्यन्ति** = द्रोह। **उद्दिश्य** = लक्ष्य करके। **सम्पादयामः** = करते हैं। **विषयः** = मामला। **दुष्करः** = कठिन। **विगत ज्वरः** = सन्तापरहित होकर। **इतः परम्** = अब से। **विरसान्** = नीरस। **गुञ्जया** = रत्ती से। **भास्वान्** = सूर्य।

●●

चतुर्थः पाठः

प्रबुद्धो ग्रामीणः

(बुद्धिमान् ग्रामीण)

एकदा बहवः जनाः धूमयानम् (रेल) आरुह्य नगरं प्रति गच्छन्ति स्म। तेषु केचित् ग्रामीणाः केचिच्च नागरिकाः आसन्। मौनं स्थितेषु तेषु एकः नागरिकः ग्रामीणान् उपहसन् अकथयत् ''ग्रामीणाः अद्यापि पूर्ववत् अशिक्षिताः अज्ञाश्च सन्ति। न तेषां विकासः अभवत् न च भवितुं शक्नोति।'' तस्य तादृशं जल्पनं श्रुत्वा कोऽपि चतुरः ग्रामीणः अब्रवीत्, ''भद्र नागरिक! भवान् एव किञ्चित् ब्रवीतु यतो हि भवान् शिक्षितः बहुज्ञः च अस्ति।'' इदम् आकर्ण्य स नागरिकः सदर्पं ग्रीवाम् उन्नमय्य अकथयत्, ''कथयिष्यामि, परं पूर्वं समयः विधातव्यः।'' तस्य तां वार्त्तां श्रुत्वा स चतुरः ग्रामीण अकथयत्, ''भोः वयम् अशिक्षिताः भवान् च शिक्षितः, वयम् अल्पज्ञा भवान् च बहुज्ञः, इत्येवं विज्ञाय अस्माभिः समयः कर्त्तव्यः, वयं परस्परं प्रहेलिकां प्रक्ष्यामः। यदि भवान् उत्तरं दातुं समर्थः न भविष्यति तदा भवान् दशरूप्यकाणि दास्यति। यदि वयम् उत्तरं दातुं समर्थाः न भविष्यामः तदा दशरूप्यकाणाम् अर्धं पञ्चरूप्यकाणि दास्यामः।''

''आं, स्वीकृतः समयः'', इति कथिते तस्मिन् नागरिके स ग्रामीणः नागरिकम् अवदत्, ''प्रथमं भवान् एव पृच्छतु।'' नागरिकश्च तं ग्रामीणम् अकथयत्, ''त्वमेव प्रथमं पृच्छ'' इति। इदं श्रुत्वा स ग्रामीणः अवदत् ''युक्तम्, अहमेव प्रथमं पृच्छामि।''

अपदो दूरगामी च साक्षरो न च पण्डितः।
अमुखः स्फुटवक्ता च यो जानाति स पण्डितः॥

अस्या उत्तरं ब्रवीतु भवान्।

नागरिकः बहुकालं यावत् अचिन्तयत्, परं प्रहेलिकायाः उत्तर दातुं समर्थः न अभवत्, अतः ग्रामीणम् अवदत्, अहम् अस्याः प्रहेलिकायाः उत्तरं न जानामि। इदं श्रुत्वा ग्रामीणः अकथयत्, यदि भवान् उत्तरं न जानाति, तर्हि ददातु दशरूप्यकाणि। अतः म्लानमुखेन नागरिकेण समयानुसारं दशरूप्यकाणि दत्तानि।

पुनः ग्रामीणोऽब्रवीत्, ''इदानीं भवान् पृच्छतु प्रहेलिकाम्।'' दण्डदानेन खिन्नः नागरिकः बहुकालं विचार्य न काञ्चित् प्रहेलिकाम् अस्मरत्, अतः अधिकं लज्जमानः अब्रवीत्, ''स्वकीयायाः प्रहेलिकायाः त्वमेव उत्तरं ब्रूहि।'' तदा स ग्रामीणः विहस्य स्वप्रहेलिकायाः सम्यक् उत्तरम् अवदत् 'पत्रम्' इति यतो हि इदं पदेन विनापि दूरं याति, अक्षरैः युक्तमपि न पण्डितः भवति। एतस्मिन्नेव काले तस्य ग्रामीणस्य ग्रामः आगतः। स विहसन् रेलयानात् अवतीर्य स्वग्रामं प्रति अचलत्। नागरिकः लज्जितः भूत्वा पूर्ववत् तूष्णीम् अतिष्ठत्। सर्वे यात्रिणः वाचालं तं नागरिकं दृष्ट्वा अहसन्। तदा स नागरिकः अन्वभवत् यत् ज्ञानं सर्वत्र सम्भवति। ग्रामीणाः अपि कदाचित् नागरिकेभ्यः प्रबुद्धतराः भवन्ति।

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

➨ लघु उत्तरीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए :

1. धूमयानमारुह्य के गच्छन्ति स्म?
2. ग्रामीणान् कः उपाहसत्? **(2016CD, 20MA)**
3. 'कथयिष्यामि, परं पूर्वं समयः विधातव्य' इति केन उक्तम्?
4. प्रथमं प्रश्नं कः अपृच्छत्? **(2017AD)**

अथवा ग्रामीणः नागरिकम् किम् अपृच्छत्?

5. कः कम् अवदत् यत् ''अहम् अस्याः प्रहेलिकायाः उत्तरं न जानामि'' इति?
6. प्रहेलिका का आसीत्?
7. 'ज्ञानं सर्वत्र सम्भवति' इति कः अन्वभवत्?
8. नागरिकः किमर्थं लज्जितः अभवत्?
9. नागरिकः ग्रामीणान् किम् अकथयत्?
10. पदेन विना किं दूरं याति? **(2016CC,17AC,AF,20MG)**
11. अन्ते नागरिकः किम् अनुभवम् अकरोत्?
12. ग्रामीणस्य प्रहेलिकायाः किम् उत्तरम् आसीत्? **(2018HA)**
13. नागरिकः किम् अर्थेन खिन्नः अभवत्?
14. नागरिकः किं दातुं समर्थः न अभवत्?
15. अमुखोऽपि कः स्फुटवक्ता भवति?
16. ज्ञानं कुत्र सम्भवति? **(2016CA,CE,17AG,19AC,20MB,MF)**
17. धूमयाने समयः केन जितः?

➨ अनुवादात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित संस्कृत-गद्यांशों का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) एकदा बहवः ·····विधातव्यः।

अथवा

एकदा बहवः ·····भवितुं शक्नोति। **(2020MC)**

अथवा

एकदा बहवः जनाः ····· शिक्षितः बहुज्ञश्च अस्ति। **(2017AA)**

(ख) इदम् आकर्ण्य ····· दास्यामः।

अथवा

तस्य तां वार्त्तां ····· दास्यामः।

(ग) आम्, स्वीकृतः·····ब्रवीतु भवान्।

अथवा

आम् स्वीकृतः समयः ·····अहमेव प्रथमं पृच्छामि। **(2020MG)**

अपदो दूरगामी····· स पण्डितः। **(2017AF)**

(घ) नागरिकः बहुकालं····· दत्तानि। **(2017AE,AG,20MA)**

(ङ) पुनः ग्रामीणोऽब्रवीत्·····अचलत्।

अथवा

तदा स ग्रामीणः ····· तूष्णीम् अतिष्ठत्।

अथवा

दण्डदानेन खिन्नः ·····न पण्डितः भवति।

(च) एतस्मिन्नेव·····प्रबुद्धतराः भवन्ति।

(छ) तदा स ग्रामीणः·····प्रबुद्धतराः भवन्ति।

(ज) यतो हि इदं·····दृष्ट्वा अहसन्।

2. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) ग्रामीण आज भी अशिक्षित हैं।

(ख) ऐसा सुनकर वृद्ध बोला।

(ग) आप दस रुपये देंगे।

(घ) मैं इस पहेली का उत्तर नहीं जानता हूँ।

(ङ) क्या आप उत्तर दे सकते हैं?

(च) अब आप प्रश्न पूछिये।

(छ) ग्रामीण चतुर नहीं होते हैं।

➨ व्याकरणात्मक प्रश्न

(1) अद्यापि, अन्वभवत्, इत्येवं में सन्धि-विच्छेद कर सन्धि का नाम लिखें।

(2) निम्न धातुओं में 'तव्य' प्रत्यय लगाकर शब्द बनाइए—
गम्, कृ, मन, दृश्, पठ्, स्था।

(3) निम्नलिखित शब्दों के तृतीया एवं सप्तमी विभक्ति के रूप लिखिए—
अस्मद्, तद्।

शब्दार्थ

धूमयानम् = रेलगाड़ी। **आरुह्य** = सवार होकर। **मौनं स्थितेषु तेषु** = उन लोगों के मौन रहने पर। **अद्यापि** = आज भी। **आम्** = हाँ। **विज्ञाय** = जानकर। **कथिते तस्मिन् नागरिके** = उस नागरिक के कहने पर। **एतस्मिन्नेव काले** = इसी समय में ही। **विहसन्** = मुस्कराकर। **अवतीर्य** = उतरकर। **तूष्णीम्** = चुप। **भोः** = अरे। **धूमयानम् (रेल)** = लौहपथगामिनी। **दर्प** = घमण्ड, अहंकार। **वाचालं** = बड़बोला, अधिक बोलनेवाला। **अज्ञाः** = मूर्ख। **जल्पनम्** = कथन। **आकर्ण्य** = सुनकर। **उन्नमय्य** = उठाकर। **समयः** = शर्त। **विधातव्यः** = बदलना चाहिए। **अल्पज्ञाः** = कम जानने वाले। **बहुज्ञः** = बहुत जानने वाला। **कर्तव्यः** = लगानी चाहिए। **प्रहेलिकाम्** = पहेली को। **आपदः** = बिना पैरों का। **साक्षरः** = अक्षरयुक्त। **अमुखः** = बिना मुख का, मुखविहीन। **स्फुटवक्ता** = स्पष्ट बोलने वाला। **विचार्य** = विचार करके, सोच-समझकर। **लज्जमानः** = लज्जित होता हुआ। **सम्यक्** = सही-सही। **याति** = जाता है। **विहस्य** = हँसकर। **अन्वभवत्** = अनुभव किया। **कदाचित** = कभी। **प्रबुद्धतराः** = अधिक बुद्धिमान।

●●

पञ्चमः पाठः

देशभक्तः चन्द्रशेखरः

(देशभक्त चन्द्रशेखर)

(प्रथमं दृश्यम्)

*(**स्थानम्**–वाराणसीन्यायालयः, न्यायाधीशस्य पीठे एकः दुर्धर्षः पारसीकः तिष्ठति, आरक्षकाः चन्द्रशेखरं तस्य सम्मुखम् आनयन्ति। अभियोगः प्रारभते। चन्द्रशेखरः पुष्टाङ्गः, गौरवर्णः, षोडशवर्षीयः किशोरः।)*

आरक्षकः : श्रीमन्! अयम् अस्ति चन्द्रशेखरः। अयं राजद्रोही। गतदिने अनेनैव असहयोगिनां सभायाम् एकस्य आरक्षकस्य दुर्जयसिंहस्य मस्तके प्रस्तरखण्डेन प्रहारः कृतः येन दुर्जयसिंहः आहतः।

न्यायाधीशः : (तं बालकं विस्मयेन विलोकयन्) रे बालक! तव किं नाम?

चन्द्रशेखरः : आजादः (स्थिरीभूय)।

न्यायाधीशः : तव पितुः किं नाम?

चन्द्रशेखरः : स्वतन्त्रः।

न्यायाधीशः : त्वं कुत्र निवससि? तव गृहं कुत्रास्ति?

चन्द्रशेखरः : कारागार एव मम गृहम्।

न्यायाधीशः : (स्वगतम्) कीदृशः प्रमत्तः स्वतन्त्रतायै अयम्? (प्रकाशम्) अतीव धृष्टः, उद्दण्डश्चायं नवयुवकः। अहम् इमं पञ्चदश कशाघातान् दण्डयामि।

चन्द्रशेखरः : नास्ति चिन्ता।

(द्वितीयं दृश्यम्)

(ततः दृष्टिगोचरो भवतः कौपीनमात्रावशेषः, फलकेन दृढं बद्धः चन्द्रशेखरः, कशाहस्तेन चाण्डालेन अनुगम्यमानः, कारावासाधिकारी गण्डासिंहश्च।)

गण्डासिंहः : (चाण्डालं प्रति) दुर्मुख! मम आदेशसमकालमेव कशाघातः कर्त्तव्यः। (चन्द्रशेखरं प्रति) रे दुर्विनीत युवक! लभस्व इदानीं स्वाविनयस्य फलम्। कुरु राजद्रोहम्। दुर्मुख! कशाघातः एकः (दुर्मुखः चन्द्रशेखरं कशया ताडयति)।

चन्द्रशेखरः : जयतु भारतम्।

गण्डासिंहः : दुर्मुख! द्वितीयः कशाघातः। (दुर्मुखः पुनः ताडयति।) ताडितः चन्द्रशेखरः पुनः पुनः 'भारतं जयतु' इति वदति। (एवं स पञ्चदशकशाघातैः ताडितः) यदा चन्द्रशेखरः कारागारात् मुक्तः बहिः आगच्छति, तदैव सर्वे जनाः तं परितः वेष्टयन्ति, बहवः बालकाः तस्य पादयोः पतन्ति, तं मालाभिः अभिनन्दयन्ति च।

चन्द्रशेखरः : किमिदं क्रियते भवद्भिः? वयं सर्वे भारतमातुः अनन्यभक्ताः। तस्याः शत्रूणां कृते मदीयाः इमे रक्तबिन्दवः अग्निस्फुलिङ्गाः भविष्यन्ति।

('जयतु भारतम्' इति उच्चैः कथयन्तः सर्वे गच्छन्ति)

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

➨ लघु उत्तरीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए–

(1) चन्द्रशेखरः कः आसीत्? **(2016CD,CG,17AD,19AG,20MB)**

(2) चन्द्रशेखरस्य रक्तबिन्दवः अग्निस्फुलिङ्गाः केषां कृते भविष्यन्ति?

(3) कस्य आरक्षकस्य मस्तकं प्रस्तरखण्डेन प्रहारेण आहतम् अभवत्?

(4) न्यायाधीशः कः आसीत्?

(5) न्यायाधीशः चन्द्रशेखरं कथम् अदण्डयत्?

(6) कारावासाधिकारिणः किं नाम आसीत्?

(7) दुर्मुखः कः आसीत्?

(8) चन्द्रशेखरः कथं बन्दीकृतः?

(9) चन्द्रशेखरः स्वनाम किम् अकथयत्?

(10) चन्द्रशेखरः स्वपितुः नाम किम् अकथयत्? **(2020MC,MD)**

(11) चन्द्रशेखरः स्वगृहं किम् अवदत्?

अथवा चन्द्रशेखरः स्वगृहं कुत्र किम् अवदत्? **(2016CA)**

(12) कशया ताडितः चन्द्रशेखरः पुनः पुनः किम् अवदत्? **(2017AG)**

अथवा प्रतिकशाघात पश्चात् चन्द्रशेखरः किम् अकथयत्? **(2017AE,19AB,AF)**

(13) 'स्वतन्त्रः' कस्य पितुः नाम?

(14) 'कारागार एव मम् गृहम्' कस्य वचनम् अस्ति?

(15) 'जयतु भारतम्' इति कथनम् कस्य कं प्रति च अस्ति?

➨ अनुवादात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित संस्कृत गद्यांशों का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) न्यायाधीशः —(तं बालकं ·····नवयुवकः।

अथवा आरक्षकः·····नास्ति चिन्ता। **(2017AB)**

(ख) दुर्मुख! मम्·····इति वदति।

(ग) ताडितः चन्द्रशेखरः ·····अभिनन्दयन्ति च।

(घ) यदा चन्द्रशेखरः·····भविष्यन्ति।

(ङ) आरक्षकः श्रीमन्! ·····स्वतन्त्रः।

(च) गण्डासिंहः ·····अभिनन्दयन्ति च।

(छ) ततः दृष्टिगोचरो·····कुरु राजद्रोहम्।

2. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) हमें देशभक्त होना चाहिए।
(ख) देशभक्त निर्भीक होते हैं।
(ग) भगतसिंह भी चतुर व निर्भीक राष्ट्रभक्त थे।
(घ) देशभक्तों का बलिदान प्रेरणाप्रद होता है।
(ङ) आजाद को बच्चों ने घेर लिया।
(च) हमें अपना कर्त्तव्य करना चाहिए।
(छ) सदा सत्य की जीत होती है।

➨ व्याकरणात्मक प्रश्न

(1) निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए—
पुष्टाङ्गः, कुत्रास्ति, मात्रावशेषः, नास्ति।
(2) निम्न धातुओं में लकार, पुरुष एवं वचन बताइए—
तिष्ठति, दण्डयामि, जयतु, भविष्यन्ति।

➨ आन्तरिक मूल्यांकन

(1) 'देशभक्तः चन्द्रशेखरः' पाठ को पढ़ने के बाद आपको क्या शिक्षा मिलती है, अभिव्यक्त कीजिए।
(2) देश के स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों की एक सूची तैयार कीजिए।

शब्दार्थ

दुर्धर्षः = कठिनाई से दबाये जाने योग्य (अदम्य)। **अभियोगः** = मुकदमा। **आरक्षक** = सिपाही। **प्रस्तर** = पत्थर। **स्थिरीभूय** = स्थिर, दृढ़ होकर। **कशा** = चाबुक, कोड़ा। **कौपीन** = लँगोटी। **पुनः-पुनः** = बार-बार। **तं परितः** = उसके चारों ओर। (परितः शब्द के साथ सदैव द्वितीया विभक्ति लगती है।) **वेष्टयन्ति** = घेर लेते हैं, चारों ओर एकत्र हो जाते हैं। **स्फुलिङ्गाः** = चिनगारियाँ। **लभस्व** = प्राप्त करो। (लभ् आत्मनेपदी धातु, लोट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन)। **प्रमत्त** = मतवाला। **कारावासाधिकारी** = जेलर। **रक्तबिन्दवः** = रक्त की बूँद। **फलकेन** = हथकड़ियों से। **सम्मुखम्** = सामने। **खण्डेन** = पत्थर के टुकड़े से। **आहतः** = घायल हुआ। **कारागारः** = जेल। **धृष्टः** = ढीठ। **कशाघातान्** = कोड़े मारने की। **कशाघात कर्तव्यः** = (तुम) कोड़े मारना। **अभिनन्दयन्ति** = अभिनन्दन करते हैं। **अग्निस्फुलिङ्गा** = आग की चिनगारियाँ। **उच्चैः** = जोर से। **कशा** = कोड़ा। **पारसीक** = पारसी। **आनयन्ति** = ले आते हैं। **लभस्व** = प्राप्त करो। **आदेश-समकालमेव** = आज्ञा देते हैं।

●●

षष्ठः पाठः

केन किं वर्धते?

(किससे क्या बढ़ता है?)

सुवचनेन मैत्री,	इन्दुदर्शनेन समुद्रः।
शृङ्गारेण रागः,	विनयेन गुणः।
दानेन कीर्तिः,	उद्यमेन श्रीः।
सत्येन धर्मः,	पालनेन उद्यानम्।
सदाचारेण विश्वासः,	अभ्यासेन विद्या।
न्यायेन राज्यम्,	औचित्येन महत्त्वम्।
औदार्येण प्रभुत्वम्,	क्षमया तपः।
पूर्ववायुना जलदः,	लाभेन लोभः।
पुत्रदर्शनेन हर्षः,	मित्रदर्शनेन आह्लादः।
दुर्वचनेन कलहः,	तृणैः वैश्वानरः।
नीचसङ्गेन दुश्शीलता,	उपेक्षया रिपुः।
कुटुम्बकलहेन दुःखम्,	दुष्टहृदयेन दुर्गतिः।
अशौचेन दारिद्र्यम्,	अपथ्येन रोगः।
असन्तोषेण तृष्णा,	व्यसनेन विषयः।

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

➨ लघु उत्तरीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर लिखिए :

(1) इन्दुदर्शनेन कः वर्धते? **(2016CD,CF)**

(2) श्रीः केन वर्धते? **(2016CC,19AE,AF)**

(3) राज्यं केन वर्धते?

(4) तृणैः कः वर्धते? **(2019AB)**

(5) नीचसङ्गेन का वर्धते? **(2019AD)**

(6) रोगः केन वर्धते? **(2020MC)**

(7) विषयः केन वर्धते?

(8) मैत्री केन वर्धते?

(9) विद्या केन वर्धते? **(2016CA,20MA)**
(10) जलदः केन वर्धते?
(11) रिपुः केन वर्धते?
(12) गुणः केन वर्धते?
(13) कुटुम्बकलहेन कः वर्धते?
(14) दानेन का वर्धते? **(2017AF,AG,19AC)**
(15) सत्येन कः वर्धते?
(16) धर्मः केन वर्धते? **(2016CE)**
(17) तृष्णा केन वर्धते? **(2020MG)**
(18) उपेक्षया किं वर्धते?
(19) तपः केन वर्धते?
(20) औदार्येण कः वर्धते?
(21) न्यायेन कः वर्धते? **(2020MB)**
(22) कीर्तिः केन वर्धते?
(23) सुवचनेन किं वर्धते?
(24) वैश्वानर केन वर्धते?
(25) दुर्वचनेन किं वर्धते?
(26) लोभः केन वर्धते? **(2017AE,20MD)**
(27) पुत्र दर्शनेन किम् भवति?
अथवा पुत्र दर्शनेन कः वर्धते?
(28) मित्र दर्शनेन किं भवति? **(2017AA)**
(29) अपथ्येन किं भवति? **(2017AB)**
(30) लाभेन किं वर्धते?

➨ अनुवादात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित पंक्तियों का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) सुवचनेन मैत्री,.....लाभेन लोभः।
(ख) सुवचनेन मैत्री, ... अभ्यासेन विद्या।
(ग) पुत्रदर्शनेन हर्षः,.....व्यसनेन विषयः।

2. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) अपवित्रता से दरिद्रता बढ़ती है।
(ख) अभ्यास से निपुणता बढ़ती है।
(ग) सत्य से आत्मशक्ति बढ़ती है।
(घ) उपेक्षा से शत्रुता बढ़ती है।
(ङ) उदारता से अधिकार बढ़ते हैं।

➨ व्याकरणात्मक प्रश्न

(1) निम्न शब्दों में विभक्ति एवं वचन बताइए—
व्यसनेन, क्षमया, उपेक्षया, पूर्ववायुना, दानेन।

(2) विनय, रिपु और रोग के चतुर्थी, पञ्चमी एवं सप्तमी विभक्तियों में रूप लिखिये।

➨ पर्यायवाची शब्द

इन्दु—चन्द्रः, शीतांशुः, मयङ्कः, शशिः, रजनीशः। **शृङ्गार**—रसराजः। **वायुः**—अनिलः, पवनः, मरुत्। **वैश्वानरः**—अग्निः, अनलः, पावकः, कृशानुः।

शब्दार्थ

सुवचनेन = सुन्दर वचनों से। **मैत्री** = मित्रता (भाववाचक संज्ञा)। **इन्दु** = चन्द्रमा। **उद्यम** = पुरुषार्थ। **औचित्येन** = उचित की भाववाचक संज्ञा 'औचित्य' उसके द्वारा। **औदार्येण** = उदारता द्वारा। **क्षमया** = क्षमा से। **आह्लाद** = प्रसन्नता। **वैश्वानरः** = अग्नि। **अशौचेन** = अपवित्रता से। **रागः** = प्रेम। **सुवचनेन** = सुन्दर वचनों से। **शृङ्गारेण** = शृंगार से। **दानेन** = दान से। **सदाचारेण** = सदाचार से। **दुर्वचनेन** = कटु वचन से। **जलदः** = बादल। **अपथ्येन** = गलत भोजन करने से। **वर्धते** = बढ़ता है। **श्री** = लक्ष्मी। **उद्यमेन** = परिश्रम से। **पूर्ववायुना** = पुरवैया। **तृष्णा** = कामना, प्यास।

●●

सप्तमः पाठः

आरुणि श्वेतकेतु संवाद

स ह द्वादशवर्ष उपेत्य चतु ँ विंशतिवर्षः सर्वान् वेदानधीत्य महामना अनूचानमानी स्तब्ध एयाय। त ँ ह पितोवाच श्वेतकेतो यन्नु सोम्येदं महामना अनूचानमानी स्तब्धोऽस्युत तमादेशमप्राक्ष्यः।

श्वेतकेतुर्हारुणेय आस त ँ ह पितोवाच श्वेतकेतो वस ब्रह्मचर्यम्। न वै सोम्यास्मत्कुलीनोऽननूच्य ब्रह्मबन्धुरिव भवतीति।।

येनाश्रुत ँ श्रुतं भवत्यमतं मतमविज्ञातं विज्ञातमिति। कथं नु भगवः स आदेशो भवतीति।।

न वै नूनं भगवन्तस्त एतदवेदिषुर्यद्ध्येतदवेदिष्यन् कथं मे नावक्ष्यन्निति भगवा ँ स्त्वेव मे तद्ब्रवीत्विति तथा सोम्येति होवाच।।

यथा सोम्यैकेन नखनिकृन्तनेन सर्वं काष्णायसं विज्ञात ँ स्याद्वाचारम्भणं विकारो नामधेयं कृष्णायसमित्येव सत्यमेव ँ सोम्य स आदेशो भवतीति।।

यथा सोम्यैकेन लोहमणिना सर्वं लोहमयं विज्ञात ँ स्याद्वाचारम्भणं विकारो नामधेयं लोहमित्येव सत्यम् ।।

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

➨ लघु उत्तरीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए :

1. श्वेतकेतुः कः? **(2020MC)**
2. आरुणि श्वेतकेतुं किम् अकथयत्?
3. कः ब्रह्मचर्यवासम् अकरोत्?
4. श्वेतकेतुः ब्रह्मचर्यवासाय कुत्र अगच्छत्?
5. आदेशः किम् अस्ति?
6. आरुणि कः?

➨ अनुवादात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित संस्कृत गद्यांशों का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

(क) श्वेतकेतुर्हारुणेय आस----------ब्रह्मबन्धुरिव भवतीति।
(ख) स ह द्वादशवर्ष उपेत्य----------तमादेशमप्राक्ष्यः।
(ग) येनाश्रुतँश्रुतं भवत्यमतं----------आदेशो भवतीति।
(घ) यथा सोम्यैकेन लोहमणिना----------लोहमित्येव सत्यम्।
(ङ) यथा सोम्यैकेन नखनिकृन्तनेन ----------आदेशो भवतीति। **(2020MD)**
(च) न वै नूनं भगवन्तस्त----------तथा सोम्येति होवाच।

2. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) ऋग्वेद सबसे प्राचीन ग्रन्थ है।
(ख) उपनिषद् ज्ञान के लिये महत्त्वपूर्ण है।
(ग) आरुणि ने श्वेतकेतु को आत्मतत्त्व का उपदेश दिया है।
(घ) औपनिषद् दर्शन ही सम्यग्दर्शन है।

➨ व्याकरणात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए—
पितोवाच, ब्रह्मबन्धुरिव, वेदानधीत्य, कार्ष्णायसं, सोम्येति, होवाच।
2. निम्नलिखित धातुओं में लकार, पुरुष एवं वचन बताइए—
वसति, भवन्तु, कथयन्ति, गच्छतु, पठतु, हसताम्।

➨ आन्तरिक मूल्यांकन

छान्दोग्योपनिषद् से कोई अन्य शीर्षक पढ़कर उसका भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।

शब्दार्थ

अवेदिष्यन = जानते होते। **नावक्ष्यने** = नहीं बताते। **तथा** = ऐसा ही। **मृत्पिण्डेन** = मिट्टी के पिण्ड से। **मृण्मयम्** = मिट्टी से युक्त, मिट्टी से बनी। **वाचारम्भणम्** = वाणी का सहारा। **लोह** = सोना। **कार्ष्णायसम्** = काले लोहे को। **वस ब्रह्मचर्यम्** = ब्रह्मचर्य में वास करो। **भवतीति** = होता। **उपेत्य** = उपनयन कराकर। **अधीत्य** = अध्ययन करके। **प्राक्ष्यः** = पूछा है। **भगवः** = भगवन्। **लोहमणिना** = लोह मणि का। **नामधेयं** = नाममात्र। **नखनिकृन्तनेन** = नहन्ना। **नूनं** = निश्चय ही। **तद्ब्रवीत्विति** = वह बतलाइए। **महामना** = बड़े मन वाला। **आरुणेय** = आरुणि का पुत्र। **तम्** = उस (श्वेतकेतु) को। **उवाच** = कहा। **वस** = वास करो। **नः** = हमारे। **अननूच्य** = वेद को न पढ़कर। **ब्रह्मबन्धु** = अयोग्य ब्राह्मण। **द्वादश वर्ष** = बारह वर्ष। **उपेत्य** = पास जाकर। **चतुर्विंशति** = चौबीस। **वेदानधीत्य** = वेदों को पढ़कर। **अनूचान मानी** = वेदों का ज्ञानी मानता हुआ। **एमाय** = लौट आया। **आदेशम्** = आदेश, उपदेश को। **अप्राक्ष्यं** = पूछा है, जाना है। **अश्रुतम** = न सुना हुआ। **श्रुतम्** = सुना हुआ। **भवति** = होता है। **अमतम्** = न समझा हुआ। **अवितम्** = न जाना हुआ। **अविज्ञातम्** = न जाना हुआ। **कथम्** = कैसा, किस प्रकार।

●●

अष्टमः पाठः

भारतीया संस्कृतिः

(भारत की संस्कृति)

मानव-जीवनस्य संस्करणं संस्कृतिः। अस्माकं पूर्वजाः मानवजीवन संस्कर्तुं महान्तं प्रयत्नम् अकुर्वन्। ते अस्माकं जीवनस्य संस्करणाय यान् आचारान् विचारान् च अदर्शयन् तत् सर्वम् अस्माकं संस्कृतिः।

'विश्वस्य स्रष्टा ईश्वरः एक एव' इति भारतीय-संस्कृतेः मूलम्। विभिन्नमतावलम्बिनः विविधैः नामभिः एकम् एव ईश्वरं भजन्ते। अग्निः, इन्द्रः, कृष्णः, करीमः, रामः, रहीमः, जिनः, बुद्धः, ख्रिस्तः, अल्लाहः इत्यादीनि नामानि एकस्य एव परमात्मनः सन्ति। तम् एव ईश्वरं जनाः गुरुः इत्यपि मन्यन्ते। अतः सर्वेषां मतानां समभावः सम्मानश्च अस्माकं संस्कृतेः सन्देशः।

भारतीया संस्कृतिः तु सर्वेषां मतावलम्बिनां संगमस्थली। काले काले विविधाः विचाराः भारतीय-संस्कृतौ समाहिताः। एषा संस्कृतिः सामासिकी संस्कृतिः यस्याः विकासे विविधानां जातीनां सम्प्रदायानां विश्वासानांच योगदानं दृश्यते। अतएव अस्माकं भारतीयानाम् एका संस्कृतिः एका च राष्ट्रीयता। सर्वेऽपि वयं एकस्याः संस्कृतेः समुपासकाः, एकस्य राष्ट्रस्य च राष्ट्रियाः। यथा भ्रातरः परस्परं मिलित्वा सहयोगेन सौहार्देन च परिवारस्य उन्नतिं कुर्वन्ति, तथैव अस्माभिः अपि सहयोगेन सौहार्देन च राष्ट्रस्य उन्नतिः कर्त्तव्या।

अस्माकं संस्कृतिः सदा गतिशीला वर्तते। मानवजीवनं संस्कर्तुम् एषा यथासमयं नवां नवां विचारधारां स्वीकरोति, नवां शक्तिं च प्राप्नोति। अत्र दुराग्रहः नास्ति, यत् युक्तियुक्तं कल्याणकारि च तदत्र सहर्षं गृहीतं भवति। एतस्याः गतिशीलतायाः रहस्यं मानव-जीवनस्य शाश्वतमूल्येषु निहितम्, तद् यथा सत्यस्य प्रतिष्ठा, सर्वभूतेषु समभावः विचारेषु औदार्यम्, आचारे दृढ़ता चेति।

एषा कर्मवीराणां संस्कृतिः। 'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः' इति अस्याः उद्घोषः। पूर्व कर्म, तदनन्तरं फलम् इति अस्माकं संस्कृते नियमः। इदानीं यदा वयं राष्ट्रस्य नवनिर्माणे संलग्नाः स्मः निरन्तरं कर्मकरणम् अस्माकं मुख्यं कर्त्तव्यम्। निजस्य श्रमस्य फलं भोग्यं, अन्यस्य श्रमस्य शोषणं सर्वथा वर्जनीयम्। यदि वयं विपरीतम् आचरामः तदा न वयं सत्यं भारतीय-संस्कृतेः उपासकाः। वयं तदैव यथार्थं भारतीयाः यदा अस्माकम् आचारे विचारे च अस्माकं संस्कृतिः लक्षिता भवेत्। अभिलाषामः वयं यत् विश्वस्य अभ्युदयाय भारतीय संस्कृतेः एषः दिव्यः सन्देशः लोके सर्वत्र प्रसरेत्।

''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्॥''

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

➨ लघु उत्तरीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए–

(1) 'संस्कृति' शब्दस्य किं तात्पर्यम् अस्ति? **(2020MG)**

(2) भारतीय संस्कृतेः मूलं किम् अस्ति? **(2016CD,17AA,20ME)**

(3) भारतीया संस्कृतिः कीदृशी वर्तते? **(2017AB,AE,19AE)**

(4) भारतीय संस्कृतेः कः नियमः?

(5) किम् फलम् भोग्यं किं च वर्जनीयम्?

(6) भारतीय संस्कृतेः कः दिव्यः सन्देशः अस्ति?

(7) भारतीय संस्कृतिः का संगमस्थली?

(8) भारतीय संस्कृतौ कः विशेषः गुणः?

(9) अस्माकम् मुख्य कर्त्तव्यं किम् अस्ति?

(10) 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' एषः दिव्यः सन्देशः कस्य अस्ति?

(11) भारतीय संस्कृतिः कस्य अभ्युदयाय इति।

(12) अस्माकं संस्कृतेः कः नियमः? **(2016CE,17AG,18HF,19AC)**

(13) विश्वस्य स्रष्टा कः?

➨ अनुवादात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित गद्यांशों का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) विश्वस्य स्रष्टा·····संस्कृतेः सन्देशः।

अथवा

मानव-जीवनस्य····· संस्कृतेः सन्देशः।

अथवा

मानव-जीवनस्य संस्करणं·····ईश्वरं भजन्ते।

(ख) एषा संस्कृतिः·····कर्त्तव्या।

(ग) भारतीया संस्कृतिः·····राष्ट्रियाः। **(2019AB,AF)**

अथवा

एषा संस्कृतिः·····राष्ट्रस्य उन्नतिः कर्त्तव्याः।

(घ) अस्माकं संस्कृतिः····· चेति। **(2017AD,19AD,AG)**

(ङ) एषा कर्मवीराणां·····लक्षिता भवेत्।

अथवा

एषा कर्मवीराणां····· संस्कृतेः उपासकाः।

अथवा

निजस्य श्रमस्य फलं·····संस्कृतिः लक्षिता भवेत्। **(2016CC)**

(च) सर्वे भवन्तु·····भवेत्। **(2016CA,18HA,20MA)**

(छ) इदानीं यदा वयं·····लक्षिता भवेत्।

(ज) पूर्वं कर्म·····संस्कृतेः उपासकाः।

अथवा

पूर्वं कर्म·····संस्कृतिः लक्षिता भवेत्।

2. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) मानव-जीवन को संस्कारित करना ही संस्कृति है।

(ख) हमारे पूर्वज धन्य थे।

(ग) भारतीय संस्कृति सामासिकी एवं गतिशीला है।

(घ) हम सब एक ही संस्कृति के उपासक हैं।

(ङ) भारतीय संस्कृति सर्वश्रेष्ठ है।

(च) काम करके ही फल मिलता है।

(छ) सभी नीरोग रहें और कल्याण प्राप्त करें।

➨ व्याकरणात्मक प्रश्न

(1) निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए—
इत्यादि, मतावलम्बी, यथार्थम्, अभ्युदय।

(2) निम्नलिखित शब्दों के विभक्ति एवं वचन बताइये—
संस्कृतेः, अस्माभिः, कर्माणि, नवनिर्माणे।

➨ आन्तरिक मूल्यांकन

भारतीय संस्कृति की विशेषताओं को बिन्दुओं में दर्शाइए।

शब्दार्थ

यान् = जिनको। **अदर्शयन्** = दिखलाये। **मूलम्** = जड़। **ख्रिस्तः** = ईसा। **शाश्वतम्** = सदा रहनेवाला। **दृश्यते** = दिखता है। **मिलित्वा** = मिलकर (क्त्वा प्रत्यय)। **वर्तते** = विद्यमान है। **उद्घोषः** = नारा। **अभ्युदयः** = उन्नति (अभि+ उदय—यण् सन्धि)। **निरामयाः** = रोगरहित। **दुराग्रहः** = अनुचित आग्रह। **भद्राणि** = कल्याण। **संस्करणम्** = संस्कार, सँवारना। **संस्कर्तुम्** = संवारने के लिए। **संस्करणाम** = संस्कार के लिए। **विभिन्नमतावलम्बिनः** = विविध मतों के अनुयायी। **सङ्गमस्थली** = मिलाने का स्थान। **समाहिताः** = आ मिले। **सामासिकी** = समुच्चयात्मक, समन्वयात्मक। **सौहार्देन** = प्रेम से। **शाश्वतमूल्येषु** = सदा रहने वाले आदर्शों में। **निहितम्** = रखा हुआ है। **जिजीविषेद** = जीने की इच्छा करे। **समाः** = वर्ष। **संलग्नाः** = लगे हुए हैं। **वर्जनीयम्** = छोड़ने योग्य। **अभिलाषामः** = (हम) चाहते हैं। **दुःखभाग्** = दुःख का भागी।

●●

नवमः पाठः

जीवन-सूत्राणि

(जीवन के सूत्र)

किंस्विद् गुरुतरं भूमेः किंस्विदुच्चतरं च खात्?
किंस्वित् शीघ्रतरं वातात् किंस्विद् बहुतरं तृणात्?।।1।।

माता गुरुतरा भूमेः खात् पितोच्चतरस्तथा।
मनः शीघ्रतरं वातात् चिन्ता बहुतरी तृणात्।।2।।

किंस्वित् प्रवसतो मित्रं किंस्विन् मित्रं गृहे सतः?
आतुरस्य च किं मित्रं किंस्विन् मित्रं मरिष्यतः?।।3।।

सार्थः प्रवसतो मित्रं भार्या मित्रं गृहे सतः।
आतुरस्य भिषक् मित्रं दानं मित्रं मरिष्यतः।।4।।

किंस्विदेकपदं धर्म्यम् किंस्विदेकपदं यशः?
किंस्विदेकपदं स्वर्ग्यम् किंस्विदेकपदं सुखम्?।।5।।

दाक्ष्यमेकपदं धर्म्यम् दानमेकपदं यशः।
सत्यमेकपदं स्वर्ग्यं शीलमेकपदं सुखम्।।6।।

धान्यानामुत्तमं किंस्विद् धनानां स्यात् किमुत्तमम्?
लाभानामुत्तमं किं स्यात् सुखानां स्यात् किमुत्तमम्?।।7।।

धान्यानामुत्तमं दाक्ष्यं धनानामुत्तमं श्रुतम्।
लाभानां श्रेय आरोग्यं सुखानां तुष्टिरुत्तमा।।8।।

किं नु हित्वा प्रियो भवति? किन्नु हित्वा न शोचति।
किं नु हित्वार्थवान् भवति? किन्नु हित्वा सुखी भवेत्।।9।।

मानं हित्वा प्रियो भवति क्रोधं हित्वा न शोचति।
कामं हित्वार्थवान् भवति लोभं हित्वा सुखी भवेत्।।10।।

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

➨ लघु उत्तरीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए :

(1) पिता कस्मात् उच्चतरः अस्ति?

(2) तृणात् बहुतरं किम् अस्ति? **(2018HA)**

(3) प्रवसतो किं मित्रम् अस्ति?

(4) भिषक् कस्य मित्रम् अस्ति?

(5) सुखानां किमुत्तमं स्यात्?

(6) नरः किम् हित्वा न शोचति?

(7) मनुष्यः किम् नु हित्वा सुखी भवेत्?

(8) भूमेः गुरुतरा किम् अस्ति? **(2019AB)**

(9) सर्वेषु उत्तमं धनं किम् अस्ति?

(10) गृहे सतः मित्रम् किम् अस्ति?

(11) वातात् शीघ्रतरं किम् अस्ति? **(2016CG)**

(12) लाभानाम् उत्तमं किम् अस्ति?

(13) मरिष्यतः मित्रं किम् अस्ति?

(14) दानं कस्य मित्रं भवति?

(15) आतुरस्य मित्रं किम् अस्ति? **(2016CF)**

(16) खात उच्चतरं किम् अस्ति? **(2017AE)**

➨ अनुवादात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित श्लोकों का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) किंस्विद गुरुतरं..... बहुतरं तृणात्?

(ख) माता गुरुतरा .....बहुतरी तृणात्। **(2019AD)**

(ग) किंस्वित् प्रवसतो..... मरिष्यतः।

(घ) सार्थः प्रवसतो.....मित्रं मरिष्यतः। **(2017AA,19AG)**

(ङ) किंस्विदेकपदं..... सुखम्।

(च) दाक्ष्यमेकपदं.....सुखम्। **(2020MD)**

(छ) धान्यानामुत्तमं किंस्विद् ..... किमुत्तमम्? **(2018HF)**

(ज) धान्यानामुत्तमं दाक्ष्यं.....सुखानां तुष्टिरुत्तमा।

(झ) किं नु हित्वा.....सुखी भवेत्। **(2016CE)**

(ञ) मानं हित्वा.....सुखी भवेत्। **(2016CC,17AG,20MG,ME)**

2. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) मरनेवाले के साथ दान ही जाता है।

(ख) विद्या सब धनों में प्रधान है।

(ग) इच्छारहित व्यक्ति ही धनी होता है।

(घ) मनुष्य को निर्लोभी होना चाहिए।

(ङ) जन्मभूमि स्वर्ग से भी बड़ी है।

(च) विदेश में धन मित्र होता है।

(छ) घर में पत्नी ही मित्र होती है।

➨ व्याकरणात्मक प्रश्न

(1) खात्, प्रवसतः, गृहे, दाक्ष्यम्, यशः में विभक्ति व वचन बताइए।

(2) 'हित्वा' और 'हत्वा' का अर्थ बतायें तथा प्रयुक्त प्रत्यय का उल्लेख करें।

(3) सन्धि-विच्छेद कीजिये—किमुत्तमम्, धनानामुत्तमम्, हित्वार्थवान्।

पर्यायवाची शब्द

खः—आकाश, गगन। **वातः**—वायुः, अनिलः, पवनः। **शीलम्**—आचरणं। **कामं**—इच्छा, वासना।

➨ आन्तरिक मूल्यांकन

1. 'जीवन-सूत्राणि' पाठ को पढ़ने के बाद आपको क्या शिक्षा मिलती है, स्पष्ट कीजिए।
2. 'जीवन-सूत्राणि' पाठ के जो श्लोक आपके मन को छू गये हैं, उन्हें कण्ठस्थ करें।

शब्दार्थ

किंस्वित् = क्या, कौन-सी। **गुरुतरं** = अधिक भारी। **खात्** (ख की पञ्चमी विभक्ति का रूप) = आकाश से। **वात** = वायु। **आतुर** = बीमार। **भिषक्** = वैद्य। **मरिष्यतः** = मृतप्राय का। **प्रवसतः** = प्रवासी का, परदेश गये हुए का। **दाक्ष्यम्** = दक्षता, निपुणता। **हित्वा** = छोड़कर। **तृणात्** = तिनके से। **बहुतरम्** = अधिक (असंख्य)। **आतुरस्य** = रोगी का। **सार्थ** = कारवां, सहयात्रियों का समूह। **भिषक्** = वैद्य। **धर्म्यम्** = धर्म का। **एकपदम्** = मुख्य स्थान। **स्वर्गयम्** = स्वर्ग का। **धान्यानाम्** = अन्नों में। **श्रुतम्** = शास्त्र। **श्रेयः** = उत्तम। **आरोग्यम्** = स्वास्थ्य। **तुष्टिः** = सन्तोष। **न शोचन्ति** = शोक नहीं करता। **अर्थवान्** = धनवान्। **शीघ्रतरं** = शीघ्रगामी। **गृहे सतः** = घर में रहने वाले का। **सार्थः** = कारवाँ सहयात्री। **स्यात्** = हो सकता है। **मानम्** = अभिमान। **कामम्** = इच्छा को।

●●

परिशिष्ट

॥ संस्कृत व्याकरण ॥

सन्धि

जब दो शब्द अत्यन्त समीप होते हैं, तो प्रथम शब्द का अन्तिम अक्षर और द्वितीय शब्द का प्रथम अक्षर मिलकर नया रूप धारण कर लेते हैं। इस क्रिया को सन्धि करना कहते हैं। सन्धि किये हुए पद को पुनः उनके मूल रूप में लिखने की क्रिया को **सन्धि-विच्छेद** करना कहते हैं। ज्ञातव्य हो कि प्रथम और द्वितीय शब्दों के अन्य शेष वर्ण यथावत् रहते हैं।

वर्ण या अक्षर स्वर, व्यञ्जन या विसर्ग होते हैं। प्रथम शब्द का अन्तिम वर्ण इन तीनों (स्वर, व्यञ्जन या विसर्ग) में जो भी होगा उसी के अनुसार स्वर सन्धि, व्यञ्जन सन्धि या विसर्ग सन्धि होती है।

संस्कृत वर्णमाला में अ, इ, उ, ऋ, लृ **मूल स्वर** होते हैं और ए, ओ, ऐ, औ **संयुक्त स्वर** होते हैं तथा व्यञ्जनों में **स्पर्श** व्यञ्जन—क वर्ग (क्, ख्, ग्, घ्, ङ्), च वर्ग (च्, छ्, ज्, झ्, ञ्), ट वर्ग (ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्), त वर्ग (त्, थ्, द्, ध्, न्) और प वर्ग (प्, फ्, ब्, भ्, म्) ये 5 वर्ग अर्थात् 25 स्पर्श व्यञ्जन होते हैं। स्वर और व्यञ्जन के मध्य (ध्वनि के आधार पर) अन्तःस्थ (य्, व्, र्, ल्) चार वर्ण होते हैं और ऊष्म व्यञ्जन (श्, ष्, स्, ह्) होते हैं। विसर्ग का चिह्न (:) होता है और उच्चारण 'ह्' ध्वनि का होता है।

ध्यान रहे—जिन वर्णों में कोई मात्रा या हलन्त (्) का चिह्न नहीं होता है उन वर्णों में 'अ' स्वर जुड़ा होता है और हलन्तयुक्त वर्ण शुद्ध व्यञ्जन होता है। हलन्त वर्ण में कोई मात्रा या विसर्ग नहीं हो सकता है।

माहेश्वर के निम्नलिखित 14 सूत्रों में सम्पूर्ण संस्कृत वर्णमाला है। हलन्त वर्ण उच्चारण सुविधा हेतु हैं, वर्णमालान्तर्गत नहीं हैं।

अइउण्। ऋलृक्। एओङ्। ऐऔच्। (स्वर)

हयवरट्। लण्। (विसर्ग, अन्तःस्थ)

ञमङणनम्। झभञ्। घढधष्। जबगडदश्। खफछठथचटतव्। कपय्। (स्पर्श व्यंजन

शषसर्। हल्। (ऊष्म व्यञ्जन)

सूत्रों को समझने की विधि—सूत्र के प्रथम अक्षर से लेकर उस सूत्र के हलन्त अक्षर के मध्य आनेवाले सभी अक्षरों के समूह को जाना जाता है यथा—

अच् = अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ अर्थात् सभी स्वर

इक् = इ, उ, ऋ, लृ।

यण् = य्, व्, र्, ल्।

एच् = ए, ओ, ऐ, औ।

अक् = अ, इ, उ, ऋ, लृ (सभी मूल स्वर)

एङ् = ए, ओ।

एच् = ए, ओ, ऐ, औ (सभी संयुक्त स्वर), हल् (सभी व्यञ्जन अक्षर)।

स्वर सन्धि

दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण्, अयादि, पूर्व रूप, पररूप में मात्र **यण् और वृद्धि सन्धि** ही पाठ्यक्रम में हैं। अतः उनकी परिभाषा, उदाहरण एवं पहचान यहाँ दिये जा रहे हैं—

1. वृद्धि सन्धि (वृद्धिरेचि)—जब अ या आ के बाद ए या ऐ, ओ या औ में से कोई स्वर आता है तो दोनों स्वरों को मिलाकर क्रमशः ऐ, औ हो जाता है, **उदाहरण** :

एक + एकः	=	(अ + ए = ऐ)	=	एकैकः	**(2019AF,20MA)**
महा + ऐश्वर्यम्	=	(आ + ऐ = ऐ)	=	महैश्वर्यम्	
देव + ऐश्वर्यम्	=	(अ + ऐ = ऐ)	=	देवैश्वर्यम्	**(2016CD,17AA,AC,19AG)**
तथा + एव	=	(आ + ए = ऐ)	=	तथैव	**(2016CA,CB,17AA,AD,AE,AG,18HA, 19AB,AC,AE)**
तव + ओजः	=	(अ + ओ = औ)	=	तवौजः	
मम + औत्सुक्यम्	=	(अ + औ = औ)	=	ममौत्सुक्यम्	
महा + ओजः	=	(आ + ओ = औ)	=	महौजः	
महा + औत्सुक्यम्	=	(आ + औ = औ)	=	महौत्सुक्यम्	
तदा + एव	=	(आ + ए = ऐ)	=	तदैव	**(2019AA,20MF)**
यदा + एव	=	(आ + ए = ऐ)	=	यदैव	
अस्य + एव	=	(अ + ए = ऐ)	=	अस्यैव	**(2020MB)**
बालिकाः + एषाः	=	(आ + ए = ऐ)	=	बालिकैषाः	
जल + ओघः	=	(अ + ओ = औ)	=	जलौघः	**(2016CA,CC,CD,CF,17AA,AC,AD, AE,AF,19AA,AB,AG)**
तव + औदार्यम्	=	(अ + औ = औ)	=	तवौदार्यम्	
महा + ओषधिः	=	(आ + ओ = औ)	=	महौषधिः	**(2020MC,MF)**
सदा + एव	=	(आ + ए = ऐ)	=	सदैव	**(2019AD,20MG)**
गोप + ऐश्वर्यम्	=	(अ + ऐ = ऐ)	=	गोपैश्वर्यम्	
गुण + ऐश्वर्यम्	=	(अ + ऐ = ऐ)	=	गुणैश्वर्यम्	
अद्य + एव	=	(अ + ए = ऐ)	=	अद्यैव	**(2020MA)**
तत्र + एव	=	(अ + ए = ऐ)	=	तत्रैव	
वन + औषधम्	=	(अ + औ = औ)	=	वनौषधम्	
ग्राम + औषधालय	=	(अ + औ = औ)	=	ग्रामौषधालय	**(2017AG,19AC)**
मा + एवम्	=	(आ + ए = ऐ)	=	मैवम्	
वन + ओकसः	=	(अ + ओ = औ)	=	वनौकसः	**(2020MD,ME)**
राज + ऐश्वर्यम्	=	(अ + ऐ = ऐ)	=	राजैश्वर्यम्	**(2020MC)**
मम + एव	=	(अ + ए = ऐ)	=	ममैव	**(2017AF)**
मत + ऐक्यम्	=	(अ + ऐ = ऐ)	=	मतैक्यम्	**(2016CG,20ME)**
रत्न + ओघः	=	(अ + ओ = औ)	=	रत्नौघः	**(2020MB)**
परम + ऐश्वर्यम्	=	(अ + ऐ = ऐ)	=	परमैश्वर्यम्	
समय + औचित्यम्	=	(अ +औ = औ)	=	समयौचित्यम्	
काल + औचित्यम्	=	(अ +औ = औ)	=	कालौचित्यम्	**(2017AA,19AE)**
अत्र + एव	=	(अ +ए = ऐ)	=	अत्रैवं	**(2020MG)**
महा + ओघः	=	(आ +ओ = औ)	=	महौघः	
महा + औदार्य	=	(आ +औ = औ)	=	महौदार्य	**(2020MD)**
दन्त + ओष्ठः	=	(अ +ओ = ओ)	=	दन्तोष्ठः	**(2017AF)**

2. यण् सन्धि (इकोयणचि)—यदि इ, उ, ऋ, ऌ ह्रस्व या दीर्घ के बाद असमान स्वर आते हैं तो उनके स्थान पर क्रमशः य्, व्, र्, ल् हो जाता है। यदि मूल स्वरों के बाद कोई भी असमान स्वर आ जाय तो आगेवाले स्वर की मात्रा लग जाती है।

उदाहरण :

इत्यादि = इति + आदि (इ + आ = य् + आ = या) = इत्यादि **(2017AG,19AG,AD,20MF)**

स्वागतम् = सु + आगतम् = स् + उ + आगतम् = स्व + आ = स्वागतम् **(2016CB,CC,17AE,AF, 19AA,AG,20ME,AF)**

पित्रादेशः = पितृ + आदेशः (ऋ + आ = र् + आ = रा) = पित्रादेशः **(2016CF,17AC,18HF,20MB)**

लाकृतिः = लृ + आकृतिः = (ऌ + आ = ला) = लाकृतिः **(2016CA,CG)**

इत्यत्र = इति + अत्र = (इ + अ = य) = इत्यत्र

मन्वन्तर = मनु + अन्तर = (उ + अ = व) = मन्वन्तर **(2020MC,ME)**

मातृ + आज्ञा	=	(ऋ + आ = र् + आ = रा)	=	मात्राज्ञा	**(2016CE)**
मधु + अरिः	=	(उ + अ = व)	=	मध्वरिः	**(2020MB)**
दधि + आनय	=	(इ + आ = या)	=	दध्यानय	**(2018HF)**
इति + उक्त्वा	=	(इ + उ = यु)	=	इत्युक्त्वा	**(2016CE,19AF)**
पितृ + आकृतिः	=	(ऋ + आ = र् + आ = रा)	=	पित्राकृतिः	
प्रति + उत्तरम्	=	(इ + उ = यु)	=	प्रत्युत्तरम्	**(2017AA,AD,20MG,MA)**
अति + अत्याचार	=	(इ + आ = या)	=	अत्याचार	**(2018HA)**
अति + अन्त	=	(इ > य् + अ = य)	=	अत्यन्त	**(2020MG)**
प्रति + एकः	=	(इ > य् + ए = य)	=	प्रत्येकः	**(2016CB,17AC,AE,18HA,19AB,20MD)**
इति + अत्र	=	(इ > य् + अ = य)	=	इत्यत्र	
अति + अधिकम्	=	(इ > य् + अ = य)	=	अत्यधिकम्	
यदि + अपि	=	(इ > य् + अ = य)	=	यद्यपि	
इति + आदि	=	(इ > य् + आ = या)	=	इत्यादि	
देवी + आज्ञा	=	(इ > य् + आ = या)	=	देव्याग्या	**(2020MG)**
उपरि + उक्तम्	=	(इ > य् + उ = यु)	=	उपर्युक्तम्	
नारी + उपदेशः	=	(इ > य् + उ = यु)	=	नार्युपदेशः	
मनु + अन्तरः	=	(उ > व् + अ = व)	=	मन्वन्तरः	
गुरु + आदेशः	=	(उ > व् + आ = वा)	=	गुर्वादेशः	**(2016CA,CD,17AA,19AA,AB,AE,AF)**
वधू + आगमनम्	=	(ऊ > व् + आ = वा)	=	वध्वागमनम्	
अनु + एषणम्	=	(उ > व् + ए = वे)	=	अन्वेषणम्	
लघु + आकृतिः	=	(उ > व् + आ = वा)	=	लघ्वाकृतिः	
पितृ + आज्ञा	=	(ऋ > र् + आ = रा)	=	पित्राज्ञा	**(2016CB)**
भातृ + अंश	=	(ऋ > र् + अं = रं)	=	भात्रंश	
गुरु + आज्ञा	=	(उ > व् + आ = वा)	=	गुर्वाज्ञा	**(2017AA)**
अभि + उत्तरम्	=	(इ > उ = यु)	=	अभ्युत्तरम्	**(2020MA)**
धातृ + आज्ञां	=	(ऋ > र् + आ = रा)	=	धात्राज्ञा	**(2017AD,AF)**
मातृ + आकृति	=	(ऋ + आ = र् + आ = रा)	=	मात्राकृति	**(2017AG,19AC,20MD)**
लृ + आदेशः	=	(लृ > ल् + आ = ला)	=	लादेशः	
लघु + आदाय	=	(उ > व् + आ = वा)	=	लघ्वादाय	
इति + अलम्	=	(इ > य् + अ = य)	=	इत्यलम्	

प्रति + उपकार	=	(इ > य् + उ = यु)	=	प्रत्युपकार	
दधि + अत्र	=	(इ > य् + अ = य)	=	दध्यत्र	
सु + अच्छ	=	(उ > व् + अ = व)	=	स्वच्छ	
परि + उपासते	=	(इ > य् + उ = यु)	=	पर्युपासते	
इति + अत्र	=	(इ > य् + अ = य)	=	इत्यत्र	
भातृ + आदेशः	=	(ऋ > र + आ = रा)	=	भात्रादेशः	
अभि + उदयः	=	(इ > य् + उ = यु)	=	अभ्युदयः	**(2016CF,20MC,MA)**
सुधी + उपास्यः	=	(इ > य् + उ = यु)	=	सुध्युपास्यः	**(2016CG)**
प्रति + आगमनम्	=	(इ > य् + अ = य)	=	प्रत्यागमनम्	**(2017AA)**
अति + उक्ति	=	(इ > य् + उ = यु)	=	अत्युक्ति	**(2019AE)**
कवि + आदि	=	(इ > य् + अ = य)	=	काव्यादि	

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

(1) किन्हीं दो शब्दों की सन्धि कीजिए–
तथा + एव, सु + उक्ति, मातृ + आज्ञा, तथा + इति।

(2) निम्नलिखित में से किन्हीं दो का सन्धि-विच्छेद कीजिए–
विद्यालयः, स्वागतम्, गणेशः, देवैश्वर्यम्।

(3) किन्हीं दो शब्दों का सन्धि-विच्छेद कीजिए–
सूक्ति, स्वागतम्, तदैव, तथेति।

(4) किसी एक का सन्धि-विच्छेद कीजिए और सन्धि का नाम लिखिए–
धनादेशः, स्वागतम्, समयौचित्यम्।

(5) किसी एक का सन्धि-विच्छेद कीजिए और सन्धि का नाम लिखिए–
कारागारः, देवेन्द्रः, अभ्युदयः, रत्नौघः।

(6) निम्नलिखित में से किसी एक का सन्धि-विच्छेद कीजिए और सन्धि का नाम लिखिए–
सूक्ति, स्वागतम्, देवर्षिः, तदैव।

(7) निम्नलिखित में से किन्हीं दो शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए–
दशाश्वमेध, उभावपि, बालिकैषा, समयोचितः।

(8) किन्हीं दो शब्दों का सन्धि-विच्छेद कीजिए–
ममाधीनः, तथैव, प्रत्युत्तरम्।

(9) निम्नलिखित में से किसी एक का सन्धि-विच्छेद कीजिए–
महौषधम्, धनागमः, प्रत्येकः।

●●

शब्द-रूप

(संज्ञा-शब्द)

1. फल (अकारान्त नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि
तृतीया	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः **(2020MB,ME)**
चतुर्थी	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पञ्चमी	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
षष्ठी	फलस्य **(2020MG)**	फलयोः	फलानाम् **(2020MF)**
सप्तमी	फले	फलयोः	फलेषु
सम्बोधन	हे फल!	हे फले!	हे फलानि!

टिप्पणी—इसी प्रकार सभी अकारान्त नपुंसकलिङ्ग के शब्दों, यथा—पुष्प, पत्र, जल, मित्र (सखा के अर्थ में), वन, कमल, कुसुम, पुस्तक, ज्ञान आदि के रूप चलते हैं। (नोट—मित्र का अर्थ सूर्य भी होता है जो अकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द है, अतः उसके रूप राम के रूपों की भाँति चलेंगे।)

ध्यान दें—(1) द्विवचन में प्रथमा एवं द्वितीया विभक्ति के रूप; तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी के रूप तथा षष्ठी एवं सप्तमी के रूप समान होते हैं।

(2) नपुंसकलिङ्ग के शब्दों के प्रथमा एवं द्वितीया के रूप एकवचन, द्विवचन, बहुवचन में प्रायः समान होते हैं।

2. मति शब्द (इकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	मती	मतीः
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः **(2020MB,ME)**
चतुर्थी	मत्यै, मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पञ्चमी	मत्याः, मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
षष्ठी	मत्याः, मतेः **(2020MG)**	मत्योः	मतीनाम् **(2020MF)**
सप्तमी	मत्याम्, मतौ	मत्योः	मतिषु
सम्बोधन	हे मते!	हे मती!	हे मतयः!

टिप्पणी—इसी प्रकार जाति, रात्रि, भक्ति, स्तुति, नीति, शक्ति आदि इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप चलेंगे।

3. मधु (उकारान्त नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि

तृतीया	मधुना	मधुभ्याम् **(2020MD)**	मधुभिः **(2020MB,ME)**
चतुर्थी	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः **(2020MA)**
पञ्चमी	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
षष्ठी	मधुनः **(2020MC)**	मधुनोः	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सम्बोधन	हे मधो! हे मधु!	हे मधुनी!	हे मधूनि!

टिप्पणी—अश्रु, जानु, अम्बु, वसु, वस्तु, सानु, तालु आदि सभी उकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्दों के रूप इसी प्रकार बनते हैं।

4. नदी शब्द (ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम् **(2020MD)**	नदीभिः **(2020MB,ME)**
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः **(2020MA)**
पञ्चमी	नद्याः **(2020MC)**	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि!	हे नद्यौ!	हे नद्यः!

टिप्पणी—इसी प्रकार स्त्री, पृथ्वी, गौरी, सावित्री, लक्ष्मी, जानकी आदि ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप होते हैं।

(सर्वनाम-शब्द)

1. तद्-वह (पुँल्लिङ्ग)

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः **(2020MA)**
पंचमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः **(2020MF)**
षष्ठी	तस्य **(2020MC)**	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

2. तद् (स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम् **(2020MD)**	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः

पंचमी	तस्या:		ताभ्याम्	ताभ्य:
षष्ठी	तस्या:	**(2020MG)**	तयो:	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्		तयो:	तासु

3. तद्-वह (नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

4. युष्मद् (मध्यम पुरुष–'तुम' आदि)

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम् **(2020MD)**	युष्माभिः **(2020ME)**
चतुर्थी	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः **(2020MA)**
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते **(2020MC,MG)**	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः **(2020MF)**
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

टिप्पणी—'अस्मद्' और 'युष्मद्' शब्दों के द्वितीया, चतुर्थी और षष्ठी के एकवचन, द्विवचन और बहुवचन में दो-दो रूप होते हैं। प्रसंगानुसार उन शब्दों की विभक्ति निर्धारित होती है जिनके रूप समान होते हैं यथा—नमः **ते** (चतुर्थी विभक्ति), सः **वाम्** ताडयति (द्वितीया विभक्ति) वह तुम दोनों को मारता है। इसी प्रकार सः **मा** प्रहसति (द्वितीया) वह मुझ पर हँसता है आदि।

धातु क्रिया

वाक्य में क्रिया पद बहुत महत्त्वपूर्ण है, बिना उसके वाक्य का आशय अस्पष्ट रहता है। क्रियापद वह शब्द है जिससे किसी कार्य का होना मालूम पड़ता है। कर्त्ता के अनुसार मूलक्रिया के रूपों में अन्तर होता है।

पुरुष– पुरुष तीन होते हैं—

प्रथम या अन्य पुरुष– इसके कर्त्ता सभी संज्ञाएँ व सर्वनाम होते हैं।

मध्यम पुरुष– इसके कर्त्ता त्वम् (तुम), युवाम् (तुम दोनों), यूयं (तुम सब)।

उत्तम पुरुष– इसके कर्त्ता अहम् (मैं), आवाम् (हम दोनों), वयं (हम सब)।

वचन– कर्त्ता की संख्या के अनुसार एकवचन, द्विवचन व बहुवचन संस्कृत में होते हैं, अन्य भाषाओं में मात्र एकवचन व बहुवचन ही होते हैं।

काल– वर्तमान (लट् लकार), भविष्यत् (लृट् लकार), भूत (लङ् लकार) तीन कालों के अतिरिक्त भावों के अनुसार आज्ञा, आशीष, कामना के लिए (लोट् लकार) तथा उपदेश (चाहिए) के भाव में विधिलिङ्ग लकार होते हैं। चूँकि सभी काल

व भाव 'ल' वर्ण से होते हैं, अतः उन्हें 'लकार' कहते हैं।

हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए :

(1) कर्त्ता के पुरुष, वचन और काल (लकार) के अनुसार क्रिया के रूप का प्रयोग करें।

(2) वाक्य यदि कर्मवाच्य में हैं, तो कर्म को प्रथमा विभक्ति में और कर्त्ता को तृतीया विभक्ति में लिखा जाता है। यदि रूप न जान पायें तो 'क्त' (त) आदि प्रत्ययों की सहायता लें।

(3) क्रियाएँ (परस्मैपदी) पाठ्यक्रम में हैं, परन्तु 'लभ्' (प्राप्त करना) आदि आत्मनेपदी धातुओं के रूपों (लभते, लभेते, लभन्ते...) आदि को भी अनुवाद में सुविधा के लिए समझिए।

धातु रूप

पठ् (पढ़ना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथः **(2020MG)**	पठथ **(2020MC)**
उत्तम पुरुष	पठामि	पठावः	पठामः

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उत्तम पुरुष	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यम पुरुष	अपठः	अपठतम्	अपठत **(2020MA)**
उत्तम पुरुष	अपठम् **(2020MF)**	अपठाव	अपठाम

लोट् लकार (आज्ञा, आशीर्वाद, कामना के अर्थ में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठतु **(2020MB)**	पठताम्	पठन्तु
मध्यम पुरुष	पठ, पठतात् **(2020ME)**	पठतम्	पठत
उत्तम पुरुष	पठानि	पठाव	पठाम

विधिलिङ् लकार (चाहिए, उपदेश के अर्थ में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
मध्यम पुरुष	पठेः	पठेतम्	पठेत
उत्तम पुरुष	पठेयम्	पठेव	पठेम

नोट—मूल धातु हलन्त या स्वरान्त होती है, किन्तु उनके क्रिया रूप हलन्त नहीं होते हैं, भले ही क्रिया समान्तर हलन्त हो जो लङ्, लोट्, विधिलिङ् लकारों में दिखायी दे रहे हैं। कुछ प्रमुख मूल धातुएँ व उनके क्रिया रूप नीचे दिये गये हैं :

मूल धातु :

गम् (जाना)	= गच्छ्+ अ	= गच्छ क्रिया रूप
पृच्छ् (पूछना)	= पृच्छ्+ अ	= पृच्छ क्रिया रूप
पठ् (पढ़ना)	= पठ्+ अ	= पठ क्रिया रूप
भू (होना)	= भू+ अ	= भव
दृश् (देखना)	= पश्य्+ अ	= पश्य
'पा' (पालन करना)	= पा + अ	= पा
'पा' (पीना)	= पिब्+ अ	= पिब
दा (देना)	= दद्+ अ	= दद

हस् (हँसना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन		द्विवचन	बहुवचन	
प्रथम पुरुष	हसति		हसतः	हसन्ति	
मध्यम पुरुष	हससि		हसथः	हसथ	
उत्तम पुरुष	हसामि	**(2020MF)**	हसावः	हसामः	**(2020MA)**

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हसिष्यति	हसिष्यतः	हसिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	हसिष्यसि	हसिष्यथः	हसिष्यथ
उत्तम पुरुष	हसिष्यामि	हसिष्यावः	हसिष्यामः

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन		द्विवचन		बहुवचन
प्रथम पुरुष	अहसत्		अहसताम्	**(2020MC)**	अहसन्
मध्यम पुरुष	अहसः		अहसतम्	**(2020MB)**	अहसत
उत्तम पुरुष	अहसम्	**(2020ME)**	अहसाव		अहसाम

लोट् लकार (आज्ञा, आशीष, कामना अर्थ में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	
प्रथम पुरुष	हसतु	हसताम्	हसन्तु	
मध्यम पुरुष	हस, हसतात्	हसतम्	हसत	
उत्तम पुरुष	हसानि	हसाव	हसाम	**(2020MD)**

विधिलिङ् लकार (चाहिए, उपदेश के अर्थ में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन		बहुवचन
प्रथम पुरुष	हसेत्	हसेताम्		हसेयुः
मध्यम पुरुष	हसेः	हसेतम्	**(2020MF)**	हसेत
उत्तम पुरुष	हसेयम्	हसेव	**(2020MG)**	हसेम

दृश् (देखना) 'पश्य' क्रिया रूप
लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
मध्यम पुरुष	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उत्तम पुरुष	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

लृट् लकार (भविष्यत् काल) द्रक्ष्य

पुरुष	एकवचन		द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	द्रक्ष्यति	**(2020MB)**	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	द्रक्ष्यसि	**(2020MD,MG)**	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	द्रक्ष्यामि	**(2020ME)**	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
मध्यम पुरुष	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत
उत्तम पुरुष	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

लोट् लकार (आज्ञा, आशीष, कामना के अर्थ में)

पुरुष	एकवचन		द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्यतु	**(2020MC)**	पश्यताम्	पश्यन्तु
मध्यम पुरुष	पश्य, पश्यतात्		पश्यतम्	पश्यत
उत्तम पुरुष	पश्यानि		पश्याव	पश्याम

विधिलिङ् लकार (चाहिए, उपदेश के अर्थ में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्येत् **(2020MA)**	पश्येताम्	पश्येयुः
मध्यम पुरुष	पश्येः	पश्येतम्	पश्येत
उत्तम पुरुष	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम **(2020MD)**

पच् (पकाना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पचति	पचतः	पचन्ति
मध्यम पुरुष	पचसि	पचथः	पचथ **(2020ME)**
उत्तम पुरुष	पचामि **(2020MB)**	पचावः	पचामः **(2020MG)**

लृट् लकार (भविष्यत् काल) 'पक्ष्य' क्रिया रूप

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पक्ष्यति	पक्ष्यतः	पक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पक्ष्यसि	पक्ष्यथः **(2020MD)**	पक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	पक्ष्यामि	पक्ष्यावः	पक्ष्यामः

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपचत्	अपचताम्	अपचन्
मध्यम पुरुष	अपचः	अपचतम्	अपचत
उत्तम पुरुष	अपचम्	अपचाव	अपचाम

लोट् लकार (आज्ञा, आशीष, कामना अर्थ में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पचतु, पचतात्	पचताम्	पचन्तु **(2020MA)**
मध्यम पुरुष	पच, पचतात्	पचतम्	पचत
उत्तम पुरुष	पचानि **(2020MF)**	पचाव	पचाम

विधिलिङ् लकार (चाहिए, उपदेश के अर्थ में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पचेत्	पचेताम्	पचेयुः
मध्यम पुरुष	पचेः	पचेतम्	पचेत
उत्तम पुरुष	पचेयम्	पचेव **(2020MC)**	पचेम

नोट— लकार पहचानने के लिए प्रयुक्त धाराओं में आप देखते हैं कि विधिलिङ् लकार में क्रिया रूप में 'ए' की मात्रा (यथा—पठेत्, हसेत् आदि रूपों में) लगी है। लङ् (भूतकाल) के रूपों के प्रारम्भ में 'अ' वर्ण है यथा—अपठत् आदि। लोट् लकार के किसी भी रूप में विसर्ग (:) नहीं है।

लट् (वर्तमान काल) व भविष्यत् लृट् लकार के रूपों में क्रिया रूपों के अन्तिम अक्षर (प्रत्यय) समान हैं। ये प्रत्यय लट् में क्रियारूपों के साथ और लृट् भविष्यत् काल में मूल क्रिया + इ + ष्य या स्व के साथ है, यथा—

ति	तः	न्ति
सि	थः	थ
मि	वः	मः

हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद

संस्कृत हिन्दी की जननी है। इस नाते संस्कृत के अधिकांश शब्द हिन्दी में पाये जाते हैं। अतः हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद करने में संस्कृत शब्दों को लिंग, वचन तथा कारक के अनुसार रखा जाता है और क्रिया धातु की दी जाती है, लेकिन यह सरल कार्य नहीं है। संस्कृत में विभक्तियाँ शब्द के साथ लगी रहती हैं, लेकिन उन्हें वाक्य में किसी प्रकार कहीं भी रखा जा सकता है। यह भी एक कला है और उसके कुछ नियम हैं।

अनुवाद करने के साधारण नियम

(1) अनुवाद करते समय सबसे पहले हमें वाक्य का कर्त्ता ढूँढ़ना चाहिए। क्रिया से पहले कौन के उत्तर में आनेवाली वस्तु कर्त्ता होती है।

(2) कर्त्ता यदि एकवचन में हो तो प्रथमा एकवचन का रूप और द्विवचन में हो तो प्रथमा का द्विवचन का रूप रखना चाहिए।

(3) इसके पश्चात् कर्त्ता के पुरुष पर ध्यान देना चाहिए कि कर्त्ता प्रथम पुरुष में है, कि मध्यम पुरुष में है, कि उत्तम पुरुष में है।

(4) कर्त्ता के पुरुष और वचन जान लेने के पश्चात् क्रिया के काल का निश्चय करना चाहिए फिर क्रिया के उस काल के रूपों में से कर्त्ता के पुरुष तथा वचन वाला एक रूप छाँटकर लिख देना चाहिए।

(5) तत्पश्चात् वाक्य के अन्य शब्दों के कारक तथा वचनों के रूप भी यथास्थान लिख देना चाहिए।

(6) शब्दों के स्थान के लिए संस्कृत में स्वतन्त्रता रहती है। आप चाहे कर्त्ता पहले रखिये या कर्म अथवा क्रिया, कोई प्रतिबन्ध नहीं है।

(7) कर्त्ता और क्रिया के पुरुष के वचन में साम्य होता है अर्थात् जिस पुरुष और जिस वचन में कर्त्ता होगा, क्रिया भी उसी पुरुष और वचन की होगी।

(8) विशेषण या विशेष्य के अनुसार ही लिंग, वचन और विभक्तियाँ होती हैं; जैसे-

	ज्येष्ठः = बड़ा भाई
लिंग	ज्येष्ठ भगिनी = बड़ी बहिन
	ज्येष्ठ कलत्रं = बड़ी पत्नी।
	हरितं पत्रं = हरा पत्ता
वचन	हरिते लते = दो हरी बेलें
	पक्वानि फलानि = पके फल
विभक्ति	तं बालकम्, तस्मिन् ग्रामे = उस गाँव में।

(9) वर्तमान काल की वचन क्रिया में 'स्म' जोड़ देने से भूतकाल की क्रिया बन जाती है।

[1]

लट् लकार (वर्तमान काल) प्रथम पुरुष, कर्तृवाच्य

क्रिया शब्द	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पठ = पढ़ना	पठति	पठतः	पठन्ति
गम = जाना	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति

संक्षिप्त धातु प्रत्यय

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अति	अतः	अन्ति

(1) बालक पुस्तक पढ़ता है। (2) वे दोनों विद्यालय को जाते हैं। (3) आप वहाँ पढ़ते हैं। (4) वे सब कहाँ जाते हैं। (5) आदमी यहाँ आते हैं। (6) वे दोनों जाते हैं। (7) वह जोर से हँसता है। (8) आप सब यहाँ आते हैं। (9) राजा राज्य की रक्षा करता है। (10) घोड़ा वहाँ दौड़ता है।

अनुवाद–(1) बालकः पुस्तकं पठति। (2) तौ विद्यालयं गच्छतः। (3) भवान् तत्र पठति। (4) ते सर्वे कुत्र गच्छन्ति। (5) पुरुषाः अत्र गच्छन्ति। (6) ते गच्छतः। (7) सः उच्चै हँसति। (8) भवन्तः अत्र गच्छन्ति। (9) राजा राज्यं रक्षति। (10) घोटकः तत्र धावति।

रक्ष् = रक्षा करना (रक्षति), लिख् = लिखना (लिखति), गम् = जाना (गच्छति), धाव् (दौड़ना) धावति आदि के रूप भी पठ् के समान हैं।

[2]

लट् लकार (वर्तमान काल) मध्यम पुरुष, कर्तृवाच्य

क्रिया शब्द	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पठ् = पढ़ना	पठसि	पठथः	पठथ
दृश् = देखना	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
पृच्छ् = पूछना	पृच्छसि	पृच्छथः	पृच्छथ
याच् = माँगना	याचसि	याचथः	याचथ

संक्षिप्त धातु प्रत्यय

असि	अथः	अथ

(1) तुम जल पीते हो। (2) तुम सब पुस्तकें पढ़ते हो। (3) तुम दोनों माँगते हो। (4) तुम दोनों पूछते हो। (5) तुम यह पुस्तक पढ़ते हो। (6) बन्दर वहाँ कूदते हैं। (7) सूर्य सवेरे निकलता है। (8) पशु जल पीते हैं। (9) वे दोनों तेज दौड़ते हैं। (10) तुम दोनों नमस्कार करते हो।

अनुवाद–(1) त्वं जलं पिबसि। (2) यूयं सर्वे पुस्तकानि पठथ। (3) युवां याचथः। (4) युवां पृच्छथः। (5) त्वम् इदं पुस्तकम् पठसि। (6) वानराः तत्र कूदन्ति। (7) सूर्यः प्रातः उदेति। (8) पशवः जलं पिबन्ति। (9) तौ तीव्र धावतः। (10) युवां नमस्कारं कुरुथः।

पा = पीना (पिबसि, पिबथः, पिबथ), नी = ले जाना (नयसि, नयथः, नयथ), हृ = हरना, चुकाना (हरसि, हरथः, हरथ), पच् = पकाना (पचसि, पचथः, पचथ)।

[3]

लट् लकार (वर्तमान काल) उत्तम पुरुष, कर्तृवाच्य

क्रिया शब्द	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पठ् = पढ़ना	पठामि	पठावः	पठामः
पृच्छ् (पृच्छ) = पूछना	पृच्छामि	पृच्छावः	पृच्छामः
दृश् (पश्य) = देखना	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः
पा (पिब) = पीना	पिबामि	पिबावः	पिबामः

‖ पाठ्य-पुस्तक में दिये गये वाक्यों का अनुवाद ‖

(संस्कृत)

प्रथमः पाठः (वाराणसी)

निम्न वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) अगणित पर्यटक दूर देशों से वाराणसी आते हैं। - अगणिताः पर्यटकाः सुदूरेभ्यः देशेभ्यः वाराणसी नगरीम् आगच्छन्ति।
(ख) वे यहाँ निःशुल्क विद्या ग्रहण करते हैं। - ते अत्र निःशुल्कं विद्यां गृह्णन्ति।
(ग) यह नगरी विविध कलाओं के लिए प्रसिद्ध है। - इयं नगरी विविधानां कलानां कृते प्रसिद्धा अस्ति।
(घ) वाराणसी की पत्थर की मूर्तियाँ प्रसिद्ध हैं। - वाराणस्याः प्रस्तरमूर्त्तयः प्रसिद्धाः।
(ङ) वाराणसी में मरना मंगलमय होता है। - वाराणस्यां मरणं मंगलमयं भवति।

द्वितीयः पाठः (अन्योक्ति विलासः)

निम्न वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) कुआँ सोचता है कि मैं अत्यन्त नीच हूँ। - कूपः चिन्तयति नितरां नीचोऽस्मीति।
(ख) हंस नीर-क्षीर विवेक में प्रख्यात है। - हंसः नीर-क्षीर विवेके प्रसिद्ध अस्ति।
(ग) कोकिल! दुर्दिन सदैव नहीं रहते हैं। - कोकिला! दुर्दिनानि सदैव न सन्ति।
(घ) भिक्षुक! प्रत्येक व्यक्ति के सामने दीन वचन मत कहो। - भिक्षुक! प्रत्येकं प्रति दीन वचः न वदतु।
(ङ) सूर्य उदित होगा और कमल खिलेंगे। - सूर्यः उदेष्यति कमलानि च हसिष्यन्ति।
(च) ताड़ना से सोना दुःखी नहीं है। - ताड्नात् स्वर्णः न क्लिश्यति।
(छ) रात बीतेगी और सवेरा होगा। - रात्रिः गमिष्यति, भविष्यति सुप्रभातम्।

तृतीयः पाठः (वीरः वीरेण पूज्यते)

निम्न वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) यवन सेनापति बन्दी पुरुराज को लाता है। - यवन सेनापतिः वन्दिनं पुरुराजम् आनयति।

(ख) वीरभाव ही वीरता होती है। - वीरभावः एव वीरता भवति।
(ग) वीर के द्वारा वीर पूजा जाता है। - वीरः वीरेण पूज्यते।
(घ) तुम भारत को जीतना चाहते हो। - त्वम् भारतं जेतुम् इच्छसि।
(ङ) यह हमारा आन्तरिक विषय है। - एषः अस्माकं आन्तरिकः विषयः।
(च) सागर के उत्तर में भारतवर्ष है। - समुद्रस्य उत्तरे भारतवर्षः अस्ति।
(छ) भारत-विजय क्या मेरे लिए दुष्कर है? - किम् मे भारत-विजयः दुष्करः?

चतुर्थः पाठः (प्रबुद्धो ग्रामीणः)

निम्न वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) ग्रामीण आज भी अशिक्षित हैं। – ग्रामीणः अद्यापि अशिक्षिताः सन्ति।
(ख) ऐसा सुनकर वृद्ध बोला। – एतत् श्रुत्वा वृद्धः अवदत्।
(ग) आप दस रुपये देंगे। – भवान् दस रुप्यकाणि दास्यति।
(घ) मैं इस पहेली का उत्तर नहीं जानता हूँ। – अहम् अस्याः प्रहेलिकायाः उत्तरं न जानामि।
(ङ) क्या आप उत्तर दे सकते हैं? – किम् भवान् उत्तरं दातुं समर्थः।
(च) अब आप प्रश्न पूछिये? – सम्प्रति भवान् प्रश्नं प्रच्छतु?
(छ) ग्रामीण चतुर नहीं होते हैं। – ग्रामीणाः चतुराः न भवन्ति।

पंचमः पाठः (देशभक्तः चन्द्रशेखरः)

निम्न वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) हमें देशभक्त होना चाहिए। – वयम् देशभक्ताः भवेयुः।
(ख) देशभक्त निर्भीक होते हैं। – देशभक्ताः निर्भीकाः भवन्ति।
(ग) भगतसिंह भी चतुर व निर्भीक राष्ट्रभक्त थे। – भगतसिंह अपि चतुरः निर्भीकः राष्ट्रभक्तः च आसीत्।
(घ) देशभक्तों का बलिदान प्रेरणाप्रद होता है। – देशभक्तानां बलिदानः प्रेरणाप्रदः भवति।
(ङ) आजाद को बच्चों ने घेर लिया। – सर्वे बालकाः आजादं परितः वेष्ठयन्ति।
(च) हमें अपना कर्त्तव्य करना चाहिए। – वयं स्वकर्त्तव्यं कुर्याम।
(छ) सदा सत्य की जीत होती है। – सर्वदा सत्यमेव जयते।

षष्ठः पाठः (केन किं वर्धते?)

निम्न वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) अपवित्रता से दरिद्रता बढ़ती है। – अशौचेन दारिद्र्यं वर्धते।
(ख) अभ्यास से निपुणता बढ़ती है। – अभ्यासेन निपुणता वर्धते।
(ग) सत्य से आत्मशक्ति बढ़ती है। – सत्येन आत्मशक्तिः वर्धते।
(घ) उपेक्षा से शत्रुता बढ़ती है। – उपेक्षया शत्रुता वर्धते।
(ङ) उदारता से अधिकार बढ़ते हैं। – औदार्येण प्रभुत्वं वर्धते।

सप्तमः पाठः (आरुणि श्वेतकेतु संवाद)

निम्न वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) ऋग्वेद प्राचीन ग्रन्थ है। – ऋग्वेद प्राचीन ग्रन्थः अस्ति।
(ख) उपनिषद् ज्ञान के लिए महत्त्वपूर्ण है – उपनिषद् ज्ञानाय महत्त्वपूर्णं अस्ति।
(ग) आरुणि ने श्वेतकेतु को आत्मतत्त्व का उपदेश दिया। – आरुणि श्वेकेतुं आत्मतत्त्वस्य उपदेशं अददात्।
(घ) औपनिषद् दर्शन ही सम्यग्दर्शन है। – औपनिषद् दर्शनेव सम्यग्दर्शनं अस्ति।

अष्टमः पाठः (भारतीयाः संस्कृतिः)

निम्न वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) मानव जीवन को संस्कारित करना ही संस्कृति है। – मानव जीवनस्य संस्करणाम् एव संस्कृतिः अस्ति।
(ख) हमारे पूर्वज धन्य थे। – अस्माकं पूर्वजाः धन्याः आसन्।
(ग) भारतीय संस्कृति उदार एवं गतिशील है। – भारतीय संस्कृतिः उदार गतिशील च अस्ति।
(घ) हम सब एक ही संस्कृति के उपासक हैं। – वयम् सर्वेऽपि एकस्याः संस्कृतेः समुपासकाः सन्ति।
(ङ) भारतीय संस्कृति सर्वश्रेष्ठ है। – भारतीयाः संस्कृतिः सर्वश्रेष्ठः अस्ति।
(च) काम करके ही फल मिलता है। – कर्म कृत्वा एव फलं प्राप्यति।
(छ) सभी निरोग रहें और कल्याण प्राप्त करें। – सर्वे सन्तु निरामयाः सर्वे भद्राणि पश्यन्तु च।

नवमः पाठः (जीवन सूत्राणि)

निम्न वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) मरनेवाले के साथ दान ही जाता है। – मृतकेन सह दानम् एव गच्छति।
(ख) विद्या सब धनों में प्रधान है। – विद्या सर्व धनं प्रधानम्।
(ग) इच्छारहित व्यक्ति ही धनी होता है। – कामनारहितः जनः एव धनिकः भवति।
(घ) मनुष्य को निर्लोभी होना चाहिए। – मनुष्यः लोभहीनः भवेत्।
(ङ) वैद्यराज! तुमको नमस्कार है। – वैद्यराज! तुभ्यं नमः।
(च) तुम यमराज के सहोदर हो। – त्वम् यमराजस्य सहोदरः अस्ति।
(छ) जन्मभूमि स्वर्ग से भी बड़ी है। – जन्मभूमिः स्वर्गादपि गरीयसी।
(ज) विदेश में धन मित्र होता है। – विदेशेषु धनं मित्रं भवति।
(झ) घर में पत्नी ही मित्र होती है। – गृहे भार्या एव मित्रं भवति।

॥ हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद ॥

1. तुम घर जाओ। त्वं गृहं गच्छ।
2. सभी लोग सुखी रहें। सर्वे सुखिनः भवन्तु।
3. विवेक पुस्तक पढ़ता है। विवेकः पुस्तकं पठति।

4. वह कान से बहरा है। सः कर्णेन बधिरः।
5. बच्चे मैदान में खेलते हैं। बालकाः क्षेत्रे क्रीडन्ति।
6. गंगा के तट पर अनेक तीर्थ हैं। गंगायाः तटे अनेकानि तीर्थानि सन्ति।
7. छात्र पुस्तक पढ़ेंगे। छात्राः पुस्तकं पठिष्यन्ति।
8. सदाचार से यश प्राप्त होता है। सदाचारेण यशः प्राप्नोति।
9. तुम कहाँ जा रहे हो? त्वं कुत्र गच्छसि।
10. सीता वाराणसी जायेगी। सीता वाराणसी नगरीं गमिष्यति।
11. गुरुओं का सम्मान करो। गुरुणां सम्मानं कुरु।
12. सरोवर में कमल खिलते हैं। सरोवरे कमलानि विकसन्ति।
13. मैं राधाकृष्ण को प्रणाम करता हूँ। अहं राधाकृष्णाभ्यां नमामि।
14. मैं आज घर जाऊँगा। अहं अद्य गृहं गमिष्यामि।
15. तुम दोनों क्या करते हो? युवां किं कुरुथः।
16. दिव्या विद्यालय गयी। दिव्या विद्यालयं अगच्छत्।
17. मोहन अच्छा लड़का है। मोहनः सद् बालकः अस्ति।
18. तुम्हें प्रातःकाल नहाना चाहिए। त्वं प्रातः काले स्नानं कुर्याः।
19. उठो, जागो और पढ़ो। उतिष्ठ, जाग्रत पठ च।
20. छात्र विद्यालय जाते हैं। छात्राः विद्यालयं गच्छन्ति।
21. अभ्यास से विद्या बढ़ती है। अभ्यासेन विद्या वर्धते।
22. मैं आज वाराणसी नगरी जाऊँगा। अहम् अद्य वाराणसी नगरीं गमिष्यामि।
23. रामकृष्ण एक विलक्षण महापुरुष थे। रामकृष्ण एकः विलक्षणः महापुरुषः आसीत्।
24. सदाचार की सर्वथा रक्षा करनी चाहिए। सदाचारः सर्वथा रक्षणीयः।
25. तुम दोनों चलचित्र देखो और घर जाओ। युवां चलचित्रं पश्यतं गृहं च गच्छतम्।
26. मेरा मित्र आज घर गया। मम मित्रः अद्य गृहम् अगच्छत्।
27. तुम्हारा विद्यालय कहाँ है? तव विद्यालयः कुत्र अस्ति?
28. राम प्रतिदिन विद्यालय जाता है। रामः प्रतिदिनं विद्यालयं गच्छति।
29. आज मेरे विद्यालय में उत्सव होगा। अद्य मम विद्यालये उत्सवः भविष्यति।
30. बच्चे विद्यालय जाते हैं। बालकाः विद्यालयं गच्छन्ति।
31. बड़ों का आदर करो। गुरुजनानां आदरं कुरु।
32. गोपी भोजन बना रही है। गोपी भोजनं पचति।
33. मैंने तुम्हारे मित्र को नहीं देखा। अहं तव मित्रं न अपश्यम्।
34. सूर्य पश्चिम दिशा में डूबता है। सूर्यः पश्चिमदिशायाम् अस्तं भवति।
35. प्रयाग गंगा तट पर स्थित है। प्रयागः गंगातटे स्थितः अस्ति।
36. उन्होंने गृहकार्य किये। ते गृहकार्यं अकुर्वन।
37. हम दोनों बाजार जायेंगे। आवाम् आपणं गमिष्यावः।
38. हमें सदा सत्य बोलना चाहिए। वयम् सदा सत्यं वदेत।
39. क्या तुम आज विद्यालय नहीं जाओगे? किम् त्वम् अद्य विद्यालयं न गमिष्यसि?
40. आज भी अनेक ग्रामीण अशिक्षित हैं? अद्यापि अनेके ग्रामीणाः अशिक्षिताः सन्ति।
41. ताजमहल यमुना किनारे पर स्थित है। ताजमहलः यमुना तटे स्थितः अस्ति।
42. सीता घर जा रही है। सीता गृहं गच्छति।
43. छात्राएँ पत्र लिखेंगी। छात्राः पत्रं लेखिष्यन्ति।

44. हमें नित्य भ्रमण करना चाहिए। वयम् नित्यं भ्रमेम।
45. वे सभी विद्यालय गये। ते विद्यालयं अगच्छन्।
46. मैं प्रतिदिन विद्यालय को जाता हूँ। अहम् प्रतिदिनं विद्यालयं गच्छामि।
47. वे दोनों मिठाई खाते हैं। तौ मिष्ठान्नम् खादतः।
48. राम ने मुझे पत्र लिखा। रामः माम पत्रं अलिखत्।
49. संस्कृत संस्कार की भाषा है। संस्कृतः संस्कारस्य भाषा अस्ति।
50. विद्या विनय से बढ़ती है। विद्या विनयात् वर्धते।
51. तुम पुस्तक ले आओ। त्वम् पुस्तकं नय।
52. हम सब भारतीय नागरिक हैं। वयं भारतीय नागरिकाः सन्ति।
53. वाराणसी गंगा के किनारे स्थित है। वाराणसी गंगा तटे स्थितः अस्ति।
54. सूर्य पूरब में उदित होता है। सूर्यः पूर्वदिशायाम् उदयति।
55. वह कल विद्यालय गया था। सः ह्यः विद्यालयं अगच्छत्।
56. तुम दोनों घर जाओ। युवाम् गृहं गच्छतम्।
57. छात्रों को परिश्रम से पढ़ना चाहिए। छात्राः परिश्रमेण पठेयुः।
58. लड़कियाँ भोजन पकायेंगी। बालाः भोजनं पक्ष्यन्ति।
59. मोहन का गाँव कहाँ है? मोहनस्य ग्रामः कुत्रास्ति?
60. वे दोनों शीघ्र वाराणसी जायेंगे। तौ शीघ्रं वाराणसी गमिष्यतः।
61. मैं प्रतिदिन विद्यालय जाता हूँ। अहं प्रतिदिनं विद्यालयं गच्छामि।
62. तुम अपने घर जाओ। त्वं स्व गृहं गच्छ।
63. गाय का दूध गुणकारी होता है। धेनोः दुग्धं गुणकारी भवति।
64. क्या सब लड़कियाँ चली गयीं? किं सर्वाः बालिकाः अगच्छन्?
65. बच्चों को बड़ों का सम्मान करना चाहिए। बालकाः श्रेष्ठ जनानां सम्मानं कुर्युः।
66. जंगल में मोर नाच रहे हैं। वने मयूराः नृत्यन्ति।
67. वह विद्यालय गया। सः विद्यालयम् अगच्छत्।
68. क्या सभी लोग चले गये? किं सर्वे जनाः अगच्छत्?
69. हमें माता-पिता की सेवा करनी चाहिए। वयं पित्रोः सेवां कुर्याम।
70. लड़कियाँ सरोवर में स्नान कर रही हैं। बालिकाः सरोवरे स्नानं कुर्वन्ति।
71. मानव सेवा ही श्रेष्ठ धर्म है। मानव सेवामेव श्रेष्ठः धर्मः अस्ति।
72. स्वर्णिमा कल वाराणसी नगर जायेगी। स्वर्णिमा श्वः वाराणसी नगरं गमिष्यति।
73. वे दोनों कहाँ गये? तौ कुत्र अगच्छतम्।
74. गंगा भारत की पवित्र नदी है। गङ्गा भारतवर्षस्य पावना नदी अस्ति।
75. शिक्षा से कल्याण होता है। शिक्षया कल्याणं भवति।
76. राम ने पत्र लिखा। रामः पत्रम् अलिखत्।
77. तुम दोनों घर जाओ। युवां गृहं गच्छतम्।
78. सदा माता-पिता की सेवा करो। सर्वदा पित्रोः सेवां कुरु।
79. हमें बड़ों का सदैव आदर करना चाहिए। वयं गुरुणां सर्वदा आदरं कुर्याम।
80. वह पढ़ी। सा अपठत्।
81. जवाहरलाल का जन्म प्रयाग में हुआ था। जवाहरलालस्य जन्म प्रयागे अभवत्।
82. तुम कब पढ़ोगे? त्वम् कदा पठिष्यसि?
83. वह घर गया। सः गृहम् अगच्छत्।

॥ परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण वाक्यों का हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद ॥

1. राम शहर में रहता है।	रामः नगरेः निवसति।
2. राम विद्यालय जाता है।	रामः विद्यालयं गच्छति।
3. मेरे मित्र ने पुस्तक पढ़ी।	मम मित्रं पुस्तकम् अपठत्।
4. तुम दोनों घर जाओगे।	युवां गृहं गमिष्यथः।
5. मैं गाय का दूध पीता हूँ।	अहम् गोदुग्धं पिबामि।
6. वे खेत में खेल रहे हैं।	ते क्षेत्रे क्रीडन्ति।
7. हम लोग विद्यालय जाते हैं।	वयं विद्यालयं गच्छामः।
8. हरि ने कार्य किया।	हरिः कार्यम् अकरोत्।
9. उन्हें पुस्तक पढ़ना चाहिए।	ते पुस्तकं पठेयुः।
10. तुम लोग जाओ।	यूयं गच्छत।
11. छात्र हँसते हैं।	छात्राः हसन्ति।
12. गुरु को देखो।	गुरुं पश्यतु।
13. तुम नदी को देखो।	त्वम् नदीं पश्य।
14. मैं आज वाराणसी जाऊँगा।	अहम् अद्य वाराणसी गमिष्यामि।
15. दोनों बालकों ने क्या किया?	बालकौ किं अकुरुताम्?
16. हमें घर जाना चाहिए।	वयम् गृहम् गच्छेम।
17. उन सबको पढ़ना चाहिए।	ते सर्वे पठेयुः।
18. तुम दोनों गये।	युवाम् अगच्छतम्।
19. खेलने के बाद बालक मिठाई खाते हैं।	क्रीडित्वा बालकाः मिष्ठान्नं खादन्ति।
20. वह क्या करता है?	सः किं करोति?
21. हमें पढ़ना चाहिए।	वयं पठेम।
22. वे दोनों प्रयाग गये।	तौ प्रयागं अगच्छताम्।
23. तुम सब वहाँ क्या करोगे?	यूयं तत्र किम् करिष्यथ?
24. रामकृष्ण एक महापुरुष थे।	रामकृष्णः एकः महापुरुषः आसीत्?
25. सीता ने भोजन पकाया।	सीता भोजनम् अपचयत्।
26. मैं विद्यालय जाऊँगा।	अहं विद्यालयं गमिष्यामि।
27. बुरे वचनों से कलह होती है।	दुर्वचनेः कलहः भवति।
28. तुम अपना कार्य शीघ्र करो।	त्वम् स्वकार्यं शीघ्रं कुरु।
29. मेरा भाई प्रातः जायेगा।	मम भ्राता प्रातः गमिष्यति।
30. राम समुद्र के समान गंभीर थे।	रामः समुद्रेण समः गम्भीरः आसीत्।
31. छात्रों को परिश्रम से पढ़ना चाहिए।	छात्राः परिश्रमेण पठेयुः।
32. परिश्रम से सफलता अवश्य मिलती है।	परिश्रमेण सफलता अवश्यं लभते।
33. तुमने लिखा।	त्वम् अलिखत्।
34. उन्होंने कल चलचित्र देखा।	ते ह्यः चलचित्रं अपश्यन्।

35. वे आज पुस्तकालय में पढ़ेंगे। ते अद्य पुस्तकालये पठिष्यन्ति।
36. स्वराष्ट्र प्रेम प्रत्येक भारतीय का कर्त्तव्य है। स्वराष्ट्र प्रेमः प्रत्येक भारतीयस्य कर्त्तव्यः अस्ति।
37. तुम दोनों अपना कार्य शीघ्र करो। युवाम् स्वकार्यं शीघ्रं कुरुतम्।
38. विनय मनुष्य का भूषण है। विनय मनुष्याणाम् आभूषणमस्ति।
39. प्रयाग एक तीर्थस्थान है। प्रयागः एकं तीर्थ-स्थानम् अस्ति।
40. मीरा विद्यालय जाती है। मीरा विद्यालयम् गच्छति।
41. तुम कहाँ जाओगे? त्वम् कुत्र गमिष्यसि।
42. शिष्यों ने गुरु से प्रश्न पूछा है। शिष्याः गुरुन् प्रश्नं पृच्छेयुः।
43. वे कहाँ पढ़ते हैं? ते कुत्र पठन्ति।
44. हमें घर जाना चाहिए। वयं गृहं गच्छेम।
45. वाराणसी बड़ी नगरी है। वाराणसी एका विशालः नगरी अस्ति।
46. विद्या विनय प्रदान करती है। विद्या विनयं ददाति।
47. भ्रमर गुंजार करते हैं। भ्रमराः गुंजारं कुर्वन्ति।
48. वे दोनों विद्यालय जायेंगे। तौ विद्यालयं गमिष्यतः।
49. तुम्हें प्रतिदिन भ्रमण करना चाहिए। त्वम् प्रतिदिनं भ्रमणं कुर्याः।
50. सुन्दर प्रभात होगा। सुन्दरं प्रभातं भविष्यति।
51. राम प्रतिदिन विद्यालय जाता है। रामः प्रतिदिनं विद्यालयं गच्छति।
52. आज मेरे विद्यालय में उत्सव होगा। अद्य मम विद्यालये उत्सवः भविष्यति।
53. बड़ों का आदर करो। गुरुजनान् प्रति आदरं कुरु।
54. रमा क्यों हँस रही है? रमा किं विहसति।
55. गोपी भोजन बना रही है। गोपी भोजनं पचति।
56. मैंने तुम्हारे मित्र को नहीं देखा। अहं तव मित्रं न अपश्यम्।
57. वह प्रतिदिन दूध पकाता है। सः प्रतिदिनं दुग्धं पचति।
58. विद्या परिश्रम से आती है। विद्या परिश्रमेण लभते।
59. फूल वसन्त में खिलते हैं। वसन्ते कुसुमानि विकसन्ति।
60. वह गया। सः अगच्छत्।
61. मैं कल घर जाऊँगा। अहं श्वः गृहं गमिष्यामि।
62. हम दोनों रात में पढ़ते हैं। आवां रात्रौ पठावः।
63. घर जाओ और पढ़ो। गृहं गच्छ पठ च।
64. ये फल हैं। एतानि फलानि सन्ति।
65. रोजाना पढ़ना चाहिए। नित्यम् पठितव्यम्।
66. हम आज गेंद से खेलेंगे। वयम् अद्य कन्दुकेन क्रीडस्यामः।
67. तुम्हारा नाम क्या है? तव किम् नाम अस्ति।
68. वे दोनों पाठशाला गये। तौ पाठशालां अगच्छताम्।
69. मैं आज घर जाऊँगा। अहम् अद्य गृहं गमिष्यामि।
70. हम लोग विद्यालय में पढ़ेंगे। वयं विद्यालये पठिष्यामः।

71. वे घर गये। ते गृहम् अगच्छन्।
72. वे दोनों विद्यालय कब गये थे? तौ विद्यालयं कदा अगच्छताम्?
73. बालिकायें घर कब जायेंगी? बालिकाः गृहं कदा गमिष्यन्ति?
74. बालिकायें खेल रही हैं। बालिकाः क्रीडन्ति।
75. वह वाराणसी कब गया था? सः वाराणसी कदा अगच्छत्?
76. सन्तोष उत्तम धन है। सन्तोषः उत्तमः धनम् अस्ति।
77. मैंने पुस्तक पढ़ी। अहम् पुस्तकं अपठम्।
78. वह कल वाराणसी जायेगा। सः श्वः वाराणसी गमिष्यति।
79. अपने राष्ट्र की रक्षा करना हमारा धर्म है। स्वराष्ट्रस्यरक्षां अस्माकं धर्मः अस्ति।
80. दिलीप कुएँ से पानी लाता है। दिलीपः कूपात् जलम् आनयति।
81. हम दोनों को विद्यालय जाना चाहिए। आवां विद्यालयं गच्छेव।
82. सच और मीठा बोलो। सत्यं च मधुरं वद।
83. वे वहाँ नहीं पढ़ेंगे। ते तत्र न पठिष्यन्ति।
84. मैंने आज भोजन पकाया। अहम् अद्य भोजनम् अपचम्।
85. बालिकाएँ पुस्तक पढ़ती हैं। बालिकाः पुस्तकं पठन्ति।
86. परिश्रमपूर्वक विद्याध्ययन करो। परिश्रमेण विद्याध्ययनं कुरु।
87. निर्धन को दान देना चाहिए। निर्धनाय दानं दद्युः।
88. हम लोग मैदान में खेलेंगे। वयं क्षेत्रे क्रीडष्यामः।
89. हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है। हिन्दी अस्माकं राष्ट्रभाषा अस्ति।
90. वह कल घर जायेगा। सः श्वः गृहं गमिष्यति।
91. तुम दोनों पुस्तकालय जाओ। युवां पुस्तकालयं गच्छतम्।
92. गुरु ने शिष्य को देखा। गुरुः शिष्यं अपश्यत्।
93. उसे पढ़ना चाहिए। सः पठेत्।
94. सभी लोग सुखी हों। सर्वे भवन्तु सुखिनः।
95. हमारा राष्ट्र विशाल है। अस्माकं राष्ट्रः विशालः अस्ति।
96. विद्या सब धर्मों में प्रधान है। विद्या सर्वेषु धनेषु प्रधानम् अस्ति।
97. हमारी संस्कृति सदा गतिशील है। अस्माकं संस्कृतिः सदा गतिशीला अस्ति।
98. वृक्ष से पत्ते गिरते हैं। वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।
99. हिमालय से गंगा निकलती है। हिमालयात् गंगा निर्गच्छति।
100. मैं आज कानपुर जाऊँगा। अहम् अद्य कानपुरं गमिष्यामि।
101. तुम प्रतिदिन विद्यालय जाओ। त्वं प्रतिदिनं विद्यालयं गच्छ।
102. हमें प्रातःकाल भ्रमण करना चाहिए। वयं प्रातःकाले भ्रमेम।
103. तुम विद्यालय जाओ। त्वं विद्यालयं गच्छ।
104. तुम दोनों घर जाओ। युवां गृहं गच्छतम्।
105. श्यामा पुस्तक पढ़ती है। श्यामा पुस्तकं पठति।
106. वे विद्यालय गये। ते विद्यालयं अगच्छन्।

107. महेन्द्र मैदान में खेलेगा।	महेन्द्र क्षेत्रे क्रीडष्यति।
108. गंगा हिमालय से निकलती है।	गंगा हिमालयात् प्रभवति।
109. राम बालक को मिठाई देता है।	रामः बालकं मिष्ठानं ददाति।
110. सदा सच बोलो।	सदा सत्यं वद।
111. मैं विद्यालय पढ़ने जाऊँगा।	अहं विद्यालयं अध्ययनाय गमिष्यामि।
112. रमा भोजन पकायेगी।	रमा भोजनं पक्ष्यति।
113. मार्ग के दोनों ओर पेड़ हैं।	मार्गं उभयतः वृक्षाः सन्ति।
114. हमें अपनी पुस्तक पढ़नी चाहिए।	वयं स्व पुस्तकं पठेम।
115. तुम दोनों ने मानचित्र देखा।	युवां मानचित्रं अपश्यतम्।
116. काशी संस्कृत भाषा का केन्द्र है।	काशी संस्कृत भाषायाः केन्द्रः अस्ति।
117. मैं प्रतिदिन स्नान करता हूँ।	अहं नित्यं स्नानं करोमि।
118. सुभाषचन्द्र बोस देशभक्त थे।	सुभाषचन्द्र बोसः देशभक्तः आसीत्।
119. राम बालक को मिठाई देता है।	रामः बालकं मिष्ठानं ददाति।
120. मैं विद्यालय पढ़ने जाऊँगा।	अहं विद्यालयं अध्ययनाय गमिष्यामि।
121. वह घर गयी।	सा गृहम् अगच्छत्।
122. वह विद्यालय जाती है।	सा विद्यालयं गच्छति।
123. यह राम की किताब है।	इदम् रामस्य पुस्तकं अस्ति।
124. मैं विद्यालय जाऊँगा।	अहम् विद्यालयम् गमिष्यामि।
125. मार्ग के दोनों ओर भवन थे।	मार्गम् उभयतः भवनानि स्तः।
126. मुझे घर जाना चाहिए।	अहम् गृहं गच्छेयम्।
127. सन्तोष उत्तम सुख है।	सन्तोषः उत्तमः सुखः अस्ति।
128. मैं वाराणसी जाऊँगा।	अहं वाराणसी गमिष्यामि।
129. अपने राष्ट्र की रक्षा करना हमारा धर्म है।	स्वराष्ट्रस्य रक्षां कुरु अस्माकं धर्मः।
130. सभी छात्र पत्र लिखेंगे।	छात्राः पत्रं लिखस्यन्ति।
131. दान से कीर्ति बढ़ती है।	दानेन कीर्तिः वर्धयति।
132. सोहन के साथ मोहन घर गया।	सोहनेन सह मोहनः गृहम् अगच्छत्।
133. हम सब पढ़ते हैं।	वयं पठामः।
134. वह घर से निकल गया।	सः गृहात् निर्गच्छत्।
135. प्रयाग में गंगा-यमुना का संगम है।	प्रयागे गंगा-यमुनायाः संगमः अस्ति।
136. मैं कल दिल्ली जाऊँगा।	अहं श्वः दिल्ली गमिष्यामि।
137. वाराणसी गंगा के पावन तट पर स्थित है।	वाराणसी गंगायाः पावन तटे स्थिता।
138. मैं प्रतिदिन स्नान करता हूँ।	अहं प्रतिदिनं स्नानं करोमि।
139. देशभक्त निर्भीक होते हैं।	देशभक्ताः निर्भीकः भवन्ति।
140. हम सब भारत के नागरिक हैं।	वयम् भारतस्य नागरिकाः सन्ति।
141. तुम पुस्तक पढ़ो।	त्वम् पुस्तकं पठ।
142. राम स्वभाव से दयालु है।	रामः स्वभावेन दयालुः अस्ति।

143. वह किसका घोड़ा है? सः कस्य अश्वः अस्ति?
144. वह गया। सः अगच्छत्।
145. वृक्ष से फल गिरते हैं। वृक्षात् फलानि पतन्ति।
146. सिकन्दर कौन था? सिकन्तरः कः आसीत्।
147. शिष्य ने गुरु से प्रश्न किया। शिष्यः गुरुं प्रश्नं अपृच्छत्।
148. मेरा मित्र विद्यालय जाता है। मम मित्रः विद्यालयं गच्छति।
149. छात्रों को सत्य बोलना चाहिए। छात्राः सत्यं वदेयुः।
150. वह सदा परिश्रम करेगा। सः सदा परिश्रमं करिष्यति।
151. तुम आज्ञा का पालन करो। त्वं आज्ञापालनं कुरु।
152. मुझे घर जाना चाहिए। माम् गृहं गच्छेयम।
153. वह पैर से लंगड़ा है। सः पादेन खञ्जः।
154. काशी संस्कृत भाषा का केन्द्र है। काशी संस्कृत भाषायाः केन्द्रः अस्ति।
155. मैं कल लखनऊ जाऊँगा। अहं श्वः लखनऊ गमिष्यामि।
156. सदा सत्य बोलना चाहिए। सदा सत्यं वदेत्।
157. मैं बाजार जाता हूँ। अहं आपणं गच्छामि।
158. अभ्यास से विद्याधन बढ़ता है। अभ्यासेन विद्याधनं वर्धते।
159. वह घर जायेगी। सा गृहं गमिष्यति।
160. वह किताब पढ़ती है। सा पुस्तकं पठति।
161. अपना कर्त्तव्य शीघ्र करो। स्वकर्त्तव्यं शीघ्रं कुरु।
162. वे लड़के दिन में कहाँ पढ़ेंगे? ते बालकाः दिवसे कुत्र पठिष्यन्ति।
163. शिष्य ने गुरु से प्रश्न किया। शिष्यः गुरुन् प्रश्नं अपृच्छत्।
164. बच्चे मैदान में खेलते हैं। बालकाः क्षेत्रे क्रीडन्ति।
165. तुम्हें पढ़ना चाहिए। त्वां पठेः।
166. वाराणसी गंगा के किनारे पर स्थित है। वाराणसी गंगा तटे स्थितः अस्ति।
167. यमुना के तट पर एक गाँव था। यमुना तटे एकः ग्रामः आसीत्।
168. छात्र विद्यालय जाते हैं। छात्राः विद्यालयं गच्छन्ति।
169. आकाश में बादल गरजते हैं। आकाशे घनाः गर्जन्ति।
170. राम को पुस्तक दो। रामं पुस्तकं देहि।
171. वाराणसी एक प्रसिद्ध धार्मिक नगर है। वाराणसी एका प्रसिद्धः धार्मिक नगरी अस्ति।
172. तुम अपना पाठ पढ़ो। त्वम् स्वपाठं पठ।
173. क्या आज सोमवार है? किम् अद्य सोमवारः अस्ति।
174. मोहन फुटबाल खेलता है। मोहनः पादकन्दुकं क्रीडति।
175. हम दोनों जाते हैं। आवाम् गच्छावः।
176. छात्र ने लेख लिखा। छात्रः लेखं अलिखत्।
177. राम को पुस्तक दो। रामाय पुस्तकं ददतु।
178. कल मैं विद्यालय जाऊँगा। अहं श्वः विद्यालयं गमिष्यामि।

179. ये फल हैं।	इमानि फलानि सन्ति।	
180. वे दोनों क्या करते हैं?	तौ के कुरुतः।	
181. राम प्रतिदिन विद्यालय जाता है।	रामः प्रतिदिनं विद्यालयं गच्छति।	
182. वाराणसी धर्मों की संगम-स्थली है।	वाराणसी धर्माणां संगमस्थली अस्ति।	**(2016CD)**
183. वे पुस्तक पढ़ते हैं।	ते पुस्तकं पठन्ति।	**(2016CG)**
184. राधा ने एक चित्र देखा।	राधा एकं चित्रम् अपश्यत्।	**(2017AA)**
185. देवदत्त अपने घर जाएगा।	देवदत्तः स्वगृहं गमिष्यति।	**(2017AA)**
186. विद्या विनय देती है।	विद्या विनयं ददाति।	**(2017AA)**
187. सदा सत्य बोलना चाहिए।	सदा सत्यं वदेत्।	**(2018HA)**
188. वह दिल्ली गया।	सः देलहीनगरं अगच्छत्।	**(2018HA)**
189. छात्र मैदान में खेलते हैं।	छात्राः क्षेत्रे क्रीडन्ति।	**(2018HA)**
190. वाराणसी गंगा तट पर स्थित है।	वाराणसी गंगायाः तटे स्थितः अस्ति।	**(2018HA)**
191. बालिकाएँ घर जाती हैं।	बालिकाः गृहं गच्छन्ति।	**(2019AA)**
192. भारत हमारा देश है।	भारतः अस्माकं देशः अस्ति।	**(2019AA)**
193. छात्रों को ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए	छात्राः ध्यानेन पठेयुः।	**(2019AA)**
194. तुम अपना कर्त्तव्य करो।	त्वम् स्वकर्त्तव्यं कुरु।	**(2019AA)**
195. दान से कीर्ति बढ़ती है।	दानेन कीर्तिः वर्धयति।	**(2020MC)**
196. सदा सत्य बोलो।	सदा सत्यं वद।	**(2020MC)**
197. राम को अपनी पुस्तक पढ़नी चाहिए।	रामः स्वपुस्तकं पठेत्।	**(2020MC)**
198. प्रयाग गंगा के तट पर स्थित है।	प्रयागः गंगातटे स्थितः।	**(2020MD)**
199. मैं आज घर जाऊँगा।	अहं अद्य गृहं गमिष्यामि।	**(2020MB)**
200. वह उद्यान गया।	सः उद्यानं अगच्छत्।	**(2020MG)**
201. वृक्ष से पत्ते गिरते हैं।	वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।	**(2020ME)**
202. काशी संस्कृत भाषा का केन्द्र है।	काशी संस्कृत भाषायाः केन्द्रः अस्ति।	**(2020MF)**

●●

|| निबन्ध ||

1. विज्ञान के चमत्कार

अन्य शीर्षक– विज्ञान : वरदान या अभिशाप (2016CA) • विज्ञान से विकास और विनाश • विज्ञान की प्रगति • मानव जीवन में विज्ञान का योगदान • विज्ञान की देन • विज्ञान और मानव जीवन • विज्ञान का महत्त्व • विज्ञान के बढ़ते चरण • विज्ञान से लाभ व हानि, • विज्ञान ही विकास की आधारशिला है

रूपरेखा–1. प्रस्तावना। 2. व्यापकता। 3. विभिन्न आविष्कार तथा लाभ। 4. हानि। 5. उपसंहार।

1. प्रस्तावना–देश की दूरी नापनेवाली रेलगाड़ी, व्योम के वक्षस्थल पर विहार करनेवाला वायुयान, शब्द के समुद्र को विद्युत-सरिता के प्रवाह में सीमित करनेवाला रेडियो, टेलीविजन और कोलकाता में व्यवसाय में बँधे मारवाड़ी नवयुवक को जयपुर स्थित उसकी प्रियतमा से प्यार की दो बातें करानेवाला टेलीफोन आदि विज्ञान के ही आधुनिक आविष्कार हैं।

2. व्यापकता–आज जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं, विश्व का कोई ऐसा कोना नहीं और तो और विचार की कोई गति नहीं जहाँ विज्ञान न हो। यदि प्राचीन भक्त कवि भगवान् के लिए 'हरि व्यापक सर्वत्र समाना' कह सकते थे जो आज हम भी विज्ञान के लिए अधिकारपूर्वक कह सकते हैं-

'जिधर देखता हूँ उधर तू ही तू है, न तेरी सी खुशबू न तेरी सी बू है।'

3. विभिन्न आविष्कार तथा लाभ–विज्ञान के प्रताप से आज दूर से दूर का स्थान भी समीप से समीपतर है। रेल, मोटर, जलयान, वायुयान तथा हैलीकॉप्टर आदि साधनों द्वारा कोई भी स्थान दूर नहीं रह गया है। इस संसार की तो बात ही क्या है? आज का वैज्ञानिक चन्द्रलोक की भी यात्रा कर आया है तथा मंगललोक पर जाने की तैयारी कर रहा है। विज्ञान हमें केवल दूर से दूर स्थान तक अल्प समय और अल्प व्यय में पहुँचाता ही नहीं है, अपितु हजारों मील दूर के दृश्यों को टेलीविजन पर दिखा भी देता है।

विभिन्न क्षेत्रों में–विज्ञान ने समय को भी अपने चंगुल से नहीं छोड़ा है। ऐसी-ऐसी मशीनों का आविष्कार हो चुका है जो प्रकृति तथा मनुष्य के द्वारा एक लम्बे समय में किये जानेवाले कार्यों को थोड़े समय में कर देती है। रेडियो, टेलीविजन, तार, बेतार का तार और टेलीप्रिन्टर द्वारा पलक मारते ही संसार के एक छोर के समाचार दूसरे छोर तक पहुँच जाते हैं। चिकित्सा के क्षेत्र में 'एक्स-रे', सिटी स्कैन, अल्ट्रासाउण्ड, 'इंजेक्शन' आदि के द्वारा एक नवीन कायाकल्प हो गया है। शिक्षा कार्य में भी विज्ञान ने बहुत कुछ सहायता प्रदान की है। भौतिक विज्ञान, जन्तु विज्ञान, खगोल विज्ञान, वनस्पतिशास्त्र, रसायनशास्त्र आदि विषयों का अच्छा ज्ञान वैज्ञानिक आविष्कारों की सहायता से सरलता से हो जाता है। अणुवीक्षण यन्त्र तथा दूरदर्शन यन्त्रों की सहायता से मानव-ज्ञान की सूक्ष्मता बढ़ चुकी है। रेडियो, टेलीविजन तथा चलचित्रों की सहायता से विद्यार्थियों को मनोरंजक ढंग से प्रायः सभी विषयों की शिक्षा दी जाती है। 'प्रेस' के जीवन से पुस्तकों तथा समाचार-पत्रों की प्राप्ति सरल से सरलतम हो गयी है।

हमारे दैनिक जीवन में भी विज्ञान ने अपूर्व सहायता की है। कपड़ा, फर्नीचर, सुई, कागज, पेंसिल, फाउण्टेन पेन, समाचार-पत्र, प्रसाधन दृश्य आदि सभी जीवनोपयोगी वस्तुएँ विज्ञान की दी हुई हैं। प्रियजनों के रूप तथा स्वर को सुरक्षित रखने के लिए कैमरा, टेपरिकार्डर का आविष्कार हो चुका है। हमारे नित्य-प्रति के जीवन में विज्ञान की पैठ से सभी विस्मित हैं। विज्ञान के आविष्कारों से कोई क्षेत्र अछूता नहीं रह गया है।

4. हानि–उक्त विवरण से ज्ञात होता है कि विज्ञान के आविष्कार मानव के जीवन की गहराई से घुल-मिलकर उसके हाथ-पाँव के समान ही उसके अभिन्न अंग बन गये हैं। इसका तात्पर्य है कि विज्ञान ने मानव का कल्याण ही किया है पर नहीं, चित्र

का एक पार्श्व यदि रंगीन होता है और मानव मन को लुभानेवाला होता है तो दूसरा अनाकर्षक होता है। विज्ञान का भी आज यही हाल है।

आज विज्ञान ने असंख्य मशीनों को जन्म दिया है। प्रत्येक छोटे-छोटे कार्य (रुई धुनना, कपड़ा सीना, कपड़ा धोना आदि) के लिए भी मशीनें मौजूद हैं। एक-एक मशीन सैकड़ों और हजारों मनुष्यों के बराबर कार्य करती है, जिससे बेकारी की एक नयी भीषण समस्या उत्पन्न हो गयी है। इन मशीनों ने ग्रामीण उद्योग-धन्धों और कुटीर उद्योगों को समाप्त कर दिया है। मशीनों से बना माल देखने में अच्छा होता है और मूल्य में सस्ता पड़ता है। इसकी प्रतियोगिता में हाथ का बना माल भला कैसे टिक सकता है? इस मशीनीकरण ने कलात्मकता को भी पर्याप्त हानि पहुँचायी है।

जीवन में विलासिता और भौतिकता को प्रवेश कराने का सर्वाधिक उत्तरदायित्व विज्ञान पर ही है। उसने आज जीवन को आनन्द देने वाली तथा विलासिता की वस्तुएँ प्रदान की हैं कि मनुष्य चाहते हुए भी उनसे नहीं बच पाता है।

विज्ञान ने प्रत्यक्ष रूप से प्राणिजगत् को नष्ट करने के कुछ कम साधन उत्पन्न नहीं किये हैं। टैंक, डायनामाइट, रॉकेट, बम, परमाणु बम, हाइड्रोजन बम, न्यूट्रॉन बम आदि ऐसे शस्त्र हैं, जो पलक मारते ही लाखों मनुष्यों को भस्म कर डालते हैं। अस्त्र-शस्त्र वायुमण्डल को भी इतना दूषित कर देते हैं कि मानव-जगत् में नाना प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते हैं। इस प्रकार आज विज्ञान से मानव को ही नहीं मानवता को भी खतरा उत्पन्न हो गया है।

5. उपसंहार—अब विश्वास हुआ है कि ये वैज्ञानिक आविष्कार मानव जाति के लिए अभिशाप अधिक हैं वरदान कम। सत्य भी यह है कि जब से वैज्ञानिक आविष्कारों ने मानव को सुविधा दी है और उसकी भोग की भूख को तीव्र किया है, तब से विश्व में शान्ति की समस्याएँ पेचीदा होती जा रही हैं और उनका कोई समाधान नहीं दिखाई देता।

2. राष्ट्रप्रेम, स्वदेश-प्रेम या देशभक्ति (2016CG,17AA,20ME)

अन्य शीर्षक—• जननी-जन्मभूमि प्रिय अपनी • हमारा प्यारा भारतवर्ष • विद्यार्थी और देशप्रेम • देशभक्ति की महत्ता • स्वदेश प्रेम • देशप्रेम (2017AA,19AA,AD,AF,20MF)

रूपरेखा—(1) प्रस्तावना, (2) स्वदेश-प्रेम का तात्पर्य और उसकी उपयोगिता, (3) स्वदेश-प्रेम का वास्तविक स्वरूप, (4) स्वदेश-प्रेम के कुछ उदाहरण, (5) उपसंहार।

जो भरा नहीं है भावों से,
जिसमें बहती रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं॥ **—मैथिलीशरण गुप्त**

"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी, अर्थात् माता और जन्मभूमि की गरिमा स्वर्ग से भी बढ़कर है।" जिस धरती की गोद में हम जन्मे हैं, जहाँ की धूल-मिट्टी में खेलकर हम बड़े हुए हैं, जहाँ के अन्न-जल और हवा से हमारे शरीर का पालन-पोषण हुआ है उसके प्रति हमारा लगाव होना स्वाभाविक ही है। एक पशु भी जिस स्थान पर रहता है उसके प्रति वफादार हो जाता है, फिर हम तो मनुष्य हैं। अपने देश और जाति के प्रति हममें प्रेम क्यों न हो। सच्चा सुख तो उसी मनुष्य को प्राप्त होता है जिसके हृदय में स्वदेश-प्रेम का सागर लहराया करता है। अपने देश के कल्याण के लिए अपना सब कुछ न्योछावर करने में जो सुख मिलता है, देश की बलिवेदी पर हँस-हँस कर अपने प्राणों को न्योछावर करने में जो आनन्द मिलता है उसे सच्चे शहीद की आत्मा ही जानती है।

जिनमें देश-प्रेम नहीं होता और जो अपने क्षुद्र स्वार्थों की सिद्धि के लिए देश का बड़ा से बड़ा अहित करने की ताक में रहते हैं उन्हें 'देशद्रोही' कहते हैं। ये शत्रुओं से मिलकर अपने देश का भेद बतलाते हैं। तस्करी और चोरबाजारी द्वारा अपने देश की आर्थिक व्यवस्था को चरमरा देते हैं। जयचन्द और मानसिंह प्रत्येक युग में होते आये हैं और होते रहेंगे, किन्तु इससे निराश होने की कोई बात नहीं है। स्वदेश-प्रेम की लहरें बराबर अबाध गति से बहती चली आ रही है। जिसमें स्वाभिमान और स्वदेश-प्रेम नहीं होता वह बिल्कुल ही पशु के समान है, वह जीवित होकर भी मृतक के समान है—

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं, नर पशु निरा है, और मृतक समान है॥

–मैथिलीशरण गुप्त

स्वदेश-प्रेम से तात्पर्य देश के लिए केवल मर-मिटना ही नहीं है बल्कि अपनी सेवाओं द्वारा देश की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि विभिन्न पक्षों का भी विकास करना स्वदेश-प्रेम का ही द्योतक है। आज देश स्वतन्त्र है। हमें आज सबसे बड़ा संघर्ष गरीबी से करना है। यदि हम आत्मनिर्भर होने के लिए जी-जान से प्रयत्नशील हैं तो यह हमारा सबसे बड़ा स्वदेश-प्रेम होगा। यह कोई आवश्यक नहीं है कि देश पर अपने प्राणों की बलि देकर ही स्वदेश-प्रेम का प्रदर्शन किया जाय। ऐसा प्रत्येक काम जिससे प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से स्वदेश का हित होता है, स्वदेश प्रेम का द्योतक है। खेतों में काम करनेवाले किसान, मिलों में कठोर परिश्रम करनेवाले मजदूर, सीमा पर शत्रु से संघर्ष करनेवाले सैनिकों की अपेक्षा कम स्वदेश-प्रेम नहीं रखते। हाँ, दोनों के कार्य-क्षेत्र भिन्न-भिन्न अवश्य हैं किन्तु उद्देश्य सबका एक ही है। एक साहित्यकार अपनी साहित्य-सर्जना से स्वदेश-प्रेम की वही लहर पैदा करना है जिसे एक सैनिक सीमा पर अपने त्याग और बलिदान को मूर्त रूप देकर।

स्वदेश-प्रेम हमें अपने 'स्व' के सीमित क्षेत्र से ऊपर उठाता है तथा जनहित एवं लोकहित का एक व्यापक क्षेत्र प्रदान करता है। वह हमें त्याग और बलिदान का पाठ पढ़ाता है। मानवीय हितों की ओर सोचने को बाध्य करता है। देश की सुरक्षा के साथ-साथ वहाँ की सामाजिक एवं सांस्कृतिक सुरक्षा की ओर भी ध्यान देता है। परस्पर प्रेम, सद्भावना एवं सौहार्दपूर्ण जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है। धार्मिक एवं साम्प्रदायिक संकीर्णताओं से ऊपर उठाकर व्यक्ति में राष्ट्रीय चेतना भरता है।

आज हमारा देश स्वतन्त्र है। सदियों की गुलामी के पश्चात् हमें स्वतन्त्रता मिली है। इस स्वतन्त्रता से हमारा उत्तरदायित्व भी बढ़ जाता है। हमें इस स्वतन्त्रता को केवल अक्षुण्ण ही नहीं रखना है बल्कि आनेवाली पीढ़ियों के लिए इस स्वतन्त्रता को सुख और समृद्धि का स्रोत बनाना है। यह तभी सम्भव हो सकता है जबकि देश के प्रत्येक नागरिक में स्वदेश-प्रेम की भावना भरी जाय। जो जिस क्षेत्र में हों, जिस कार्य में लगा हो, अपने व्यक्तिगत स्वार्थ की सीमा से ऊपर उठकर देश-हित चिन्तन में लग जाय तो देश का सर्वतोमुखी विकास होते देर नहीं लगेगी। यह तभी सम्भव है जब हम देश-प्रेम के महत्त्व को स्वीकार करें।

3. समाचार-पत्र और उनसे लाभ

अन्य शीर्षक–• समाचार पत्रों का महत्त्व • मेरा प्रिय समाचार-पत्र । (2017AG,19AC)

रूपरेखा–(1) प्रस्तावना, (2) समाचार-पत्रों का प्राचीन स्वरूप, (3) समाचार-पत्रों की आवश्यकता और उनके प्रकार, (4) समाचार-पत्रों का विकास, (5) भारतीय समाचार-पत्रों के भेद, (6) समाचार-पत्रों की उपयोगिता, (7) समाचार-पत्रों के अनुचित प्रयोग से हानियाँ, (8) समाचार-पत्रों का उत्तरदायित्व और भविष्य, (9) उपसंहार।

1. प्रस्तावना–जिज्ञासा मानव की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। इसका मुख्य कारण यह है कि अन्य प्राणियों की अपेक्षा मानव में चिन्तनशक्ति अधिक है। उसकी ज्ञान की प्यास कभी नहीं बुझती। जितना ज्ञान बढ़ता जाता है, उससे ज्ञान की प्यास बढ़ती ही जाती है। साहित्य ही उसके मस्तिष्क की प्यास को बुझा सकता है। इस दृष्टि से देश-विदेश की सम्पूर्ण खबरों को जानने का एक ही साधन है–समाचार-पत्र।

2. समाचार-पत्रों का प्राचीन स्वरूप–प्राचीन समाज में भी समाचारों का आदान-प्रदान होता था। पहले यह कार्य संदेशवाहकों के माध्यम से किया जाता था। प्रथम समाचार-पत्र का जन्म इटली में हुआ था। इससे प्रभावित होकर इंग्लैण्ड में भी समाचार-पत्रों का प्रकाशन प्रारम्भ हो गया। भारत में इसका जन्म मुगलकाल में ही हुआ। इसी काल में 'अखबारात-ई-मुअतले' नामक समाचार-पत्र का उल्लेख मिलता है। हिन्दी में 'उदन्त मार्तण्ड' पहला समाचार-पत्र प्रकाशित हुआ।

3. समाचार-पत्रों की आवश्यकता और उनके प्रकार–मानव की जिज्ञासा वृत्ति को शान्त करने के लिए समाचार-पत्रों का आविष्कार हुआ। विज्ञान ने आज सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार में बदल दिया है। देश-विदेश की घटनाओं का प्रभाव उस पर पड़ता है। अतः समाचार-पत्र ही इन घटनाओं को जानने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। आज की परिस्थितियों में समाचार-पत्र को युग की अनिवार्य आवश्यकता कहा जा सकता है।

आधुनिक समाचार-पत्र अनेक रूपों में प्रकाशित हो रहे हैं। साहित्यिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं खेलकूद

सम्बन्धी विविध प्रकार के समाचार-पत्र प्रतिदिन प्रकाशित होते हैं।

4. समाचार-पत्रों का विकास—समाचार-पत्र सोलहवीं शताब्दी की देन हैं। मुद्रण-कला के विकास के साथ-साथ समाचार-पत्रों का प्रयोग और प्रचार बढ़ा। आज 'हिन्दुस्तान', 'नवभारत टाइम्स', 'नवजीवन', 'स्वतन्त्र भारत', 'आज', 'जनसत्ता', 'अमर उजाला', 'दैनिक जागरण' आदि उच्चकोटि के अनेक समाचार-पत्रों का प्रकाशन हिन्दी समाचार-पत्रों के विकास की चरम परिणति की सूचना दे रहा है।

5. भारतीय समाचार-पत्रों के भेद—प्रकाशन की समयावधि के आधार पर ही समाचार-पत्रों को विभिन्न नाम दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक तथा वार्षिक दिये गये हैं। ये समाचार-पत्र विषय के अनुसार अनेक उपखण्डों में बाँटे जा सकते हैं जैसे– राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक आदि। किन्तु आजकल एक ही समाचार-पत्र में पृथक्-पृथक् स्तम्भ देकर उपर्युक्त सभी सामग्री को एक साथ संकलित करने का प्रयास किया जा रहा है, जिससे समाचार-पत्रों की उपयोगिता में और अधिक वृद्धि हो रही है।

6. समाचार-पत्रों की उपयोगिता—प्रत्येक व्यक्ति समाचार-पत्रों के माध्यम से अपनी अभिरुचि के अनुसार सामग्री प्राप्त करता है। हमारे देश में राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करने का श्रेय समाचार-पत्रों को ही है। व्यापारिक क्षेत्र में भी समाचार-पत्रों में विज्ञापन दिये जाते हैं। बेरोजगारों को रोजगार दिलाने के लिए 'आवश्यकता' के कॉलम दिये जाते हैं। विभिन्न परीक्षाओं के परीक्षाफल भी इनके माध्यम से जनसाधारण तक पहुँचाये जाते हैं। कुछ समाचार-पत्रों में मनोरंजन के साथ-साथ खेल-कूद का विस्तृत विवरण भी दिया जाता है। समाचार-पत्र मनुष्यों के सर्वांगीण विकास का प्रमुख माध्यम है।

7. समाचार-पत्रों के अनुचित प्रयोग से हानियाँ—जब प्रकाशक एवं सम्पादक अपने पत्र के प्रचार व प्रसार के लिए दूषित साधन अपनाते हैं, पीत-पत्रकारिता पर आधारित भ्रामक एवं राष्ट्र-विरोधी खबरें छाप देते हैं, धार्मिक उन्माद भरते हैं तो इससे राष्ट्रीय एवं साम्प्रदायिक एकता को आघात पहुँचता है। वस्तुतः समाचार-पत्रों का मूल उद्देश्य मानव-कल्याण है किन्तु जब हम स्वार्थवश इस उद्देश्य को भूलकर इनके द्वारा अपने संकीर्ण उद्देश्यों को पूरा करना चाहते हैं तो उनसे लाभ के स्थान पर हानि ही होती है।

8. समाचार-पत्रों का उत्तरदायित्व और भविष्य—समाचार-पत्रों का उत्तरदायित्व है कि मानवता एवं समाज तथा राष्ट्रविरोधी किसी भी समाचार को कभी प्रकाशित न करें। कभी ऐसे समाचार प्रकाशित न करें जिससे जनता दिग्भ्रमित हो और उसका नैतिक और चारित्रिक पतन हो। यदि समाचार-पत्र अपने उत्तरदायित्व का ईमानदारी के साथ निर्वाह करें तो निश्चय ही इनका भविष्य उज्ज्वल है।

9. उपसंहार—हमारे देश में समाचार-पत्रों को महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी है। हमारा देश अभी विकास के बाल्यकाल से ही गुजर रहा है, अतः हमारे समाचार-पत्रों में जनहित की सामग्री का होना नितान्त आवश्यक है। स्वस्थ समाचार-पत्र सरकार की नीतियों को सही रूप में जनता के सामने रखेंगे तो इसमें सन्देह नहीं कि देश का चरमोत्कर्ष सम्भव हो सकेगा।

4. देशाटन और उससे लाभ

अन्य शीर्षक– • देशाटन से लाभ (2016CA,CE,19AB) • देशाटन का महत्त्व

रूपरेखा—(1) प्रस्तावना, (2) देशाटन की प्राचीनता, (3) आधुनिक काल में देशाटन की सुविधा, (4) देशाटन के लाभ– (अ) मनोरंजन की प्राप्ति, (ब) स्वास्थ्य-लाभ, (स) भौगोलिक ज्ञान की वृद्धि, (द) व्यापारिक लाभ, (य) व्यावहारिकता तथा अनुभवों में वृद्धि, (5) देशाटन का महत्त्व, (6) कठिनाइयाँ, (7) उपसंहार।

सैर कर दुनिया की गाफिल जिंदगानी फिर कहाँ।
जिन्दगानी गर रही तो नौजवानी फिर कहाँ।

(1) प्रस्तावना—देशाटन का अभिप्राय है–'देश-विदेश का भ्रमण'। मानव-मन परिवर्तन चाहता है, क्योंकि परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। मनुष्य प्रतिदिन कुछ-न-कुछ नया चाहता है। इसी कारण वह विभिन्न देशों एवं स्थानों का भ्रमण करता है। देशाटन से केवल मनोरंजन ही नहीं होता, वरन् यह हमारे लिए अन्य कई दृष्टियों से एक वरदान भी है।

(2) देशाटन की प्राचीनता—मनुष्य अति प्राचीनकाल से ही भ्रमणशील रहा है। प्रत्येक व्यक्ति के लिए इसकी महत्ता

स्वीकार की गयी है। पहले मनुष्य तीर्थों के बहाने देशाटन करता था। कभी व्यापार के कारण व कभी ज्ञानार्जन के लिए वे अन्य देशों की यात्रा करते हैं। कई विदेशी यात्रियों का भारत-भ्रमण इसी दृष्टि से प्रसिद्ध है।

(3) आधुनिक काल में देशाटन की सुविधा—प्राचीन काल में देशाटन करना असुविधाजनक था, क्योंकि उस समय यातायात व आवागमन के साधन इतने सुलभ न थे। आधुनिक काल में वैज्ञानिक आविष्कारों ने विश्व की दूरी कम कर दी है और पूरा विश्व एक ही परिवार बन गया है। पहले की तरह अब यात्रा में अधिक भय भी नहीं रहता, मनुष्य बड़े आनन्द व सुख के साथ सारे संसार की यात्रा कर सकता है।

(4) देशाटन के लाभ-बड़ी-बड़ी कठिनाइयों के पश्चात् भी साहसी यात्री देशाटन से विमुख नहीं हुए। भ्रमण के शौकीन कोलम्बस ने नये महाद्वीप का मार्ग खोज ही लिया था। आज जब मनुष्य के पास सभी साधन उपलब्ध हैं तो उसे देशाटन का अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहिए। देशाटन से प्राप्त लाभ इस प्रकार हैं–

(अ) मनोरंजन की प्राप्ति—मनोरंजन मानव-जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग है। एकरसता से ऊबकर मानव-मन परिवर्तन चाहता है। इसी परिवर्तन के लिए वह देशाटन करता है। देशाटन से उसे मनोरंजन की प्राप्ति होती है।

(ब) स्वास्थ्य-लाभ—देशाटन से मनोरंजन होता है और मनोरंजन से चित्त प्रसन्न रहता है। प्राकृतिक वातावरण, स्वच्छ व शुद्ध जलवायु से स्वास्थ्य में वृद्धि होती है। यही कारण है कि डॉक्टर रोगियों को देशाटन की सलाह देते हैं।

(स) भौगोलिक ज्ञान की वृद्धि—किसी भी स्थान की भौगोलिक जानकारी हेतु वहाँ का भ्रमण आवश्यक है। जो ज्ञान पुस्तकों से प्राप्त नहीं हो सकता, वह प्रत्यक्ष दर्शन से अधिक प्रभावशाली रूप में प्राप्त हो जाता है।

(द) व्यापारिक लाभ—देशाटन से व्यक्ति को वस्तु के उत्पादन, उसकी माँग एवं उसके मूल्य का पता लग जाता है। विभिन्न देशों में कम मूल्य पर सामान खरीदकर और अपने देश में अधिक मूल्य पर बेचकर व्यापारी लाभ प्राप्त करते हैं।

(य) व्यावहारिकता तथा अनुभवों में वृद्धि—देशाटन द्वारा पुस्तकीय ज्ञान व्यावहारिक ज्ञान में परिवर्तित हो जाता है। प्रत्येक देश के व्यवहार व संस्कृति में अन्तर होता है। देशाटन के माध्यम से हम उन देशों की संस्कृति व व्यवहार का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। देशाटन के द्वारा हमारे अनुभवों में वृद्धि होती है। हमें विभिन्न प्रकार के अनुभव प्राप्त होते हैं।

(5) देशाटन का महत्त्व—जीवन के यथार्थ को समझने एवं संसार की राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक स्थिति तथा कला-कौशल का ज्ञान प्राप्त करने में देशाटन महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके साथ ही सद्भाव तथा मैत्री की वृद्धि के लिए भी अनेक देशों के राजनयिक विदेशों की यात्रा करते हैं।

(6) कठिनाइयाँ—एक सफल देशाटन के मार्ग में अनेक कठिनाइयाँ भी आ सकती हैं। सभी व्यक्ति यात्रा के अत्यधिक व्यय को वहन नहीं कर सकते। किसी स्थान की जलवायु अनुकूल न हो पाने के कारण वहाँ जाकर लोग बीमार भी हो जाते हैं।

(7) उपसंहार—प्राचीन काल में यातायात की इतनी सुविधाएँ उपलब्ध नहीं थीं। ये यात्राएँ कष्टकारक होती थीं। आज जबकि आधुनिक साधनों ने देश में यात्रा को सुलभ तथा मार्गों को सुगम्य बना दिया है तब भी लोगों में देशाटन के प्रति बहुत अधिक दिलचस्पी नहीं है। इसका कारण आर्थिक भी हो सकता है। यदि देश की आर्थिक स्थिति में सुधार हो जाये तो देशवासियों में देशाटन के प्रति स्वाभाविक रुचि उत्पन्न हो सकती है।

5. अनुशासन की समस्या

अन्य शीर्षक—• छात्र जीवन में अनुशासन का महत्त्व (2020MB,MF)

रूपरेखा—(1) प्रस्तावना, (2) अनुशासन की परिभाषा एवं अर्थ, (3) अनुशासन का महत्त्व, (4) अनुशासनहीनता के कारण, (5) अनुशासनहीनता को दूर करने के उपाय, (6) उपसंहार।

(1) प्रस्तावना—राष्ट्र का निर्माण अनुशासन के ही माध्यम से सम्भव है। पूर्व समय में राजा-महाराजा अपने बच्चों को गुरुकुल शिक्षा दिलाने के लिए गुरुओं के आश्रम में इसलिए भेजते थे ताकि उनके बच्चे अनुशासन में रहकर अच्छे चरित्रवान बनें तथा कठोर परिश्रम कर सकें। विद्यार्थियों के शारीरिक एवं नैतिक विकास के लिए आश्रम के गुरुओं ने कठोर नियम बनाये थे ताकि उनके विद्यार्थी हमेशा अनुशासित रहें। विचारों के परिवर्तन एवं समाज के विकास के साथ-साथ इस पद्धति में भारी परिवर्तन हुआ

और अब डर-भय के स्थान पर प्रेम एवं सहानुभूतिपूर्वक अनुशासन की शिक्षा दी जाने लगी।

(2) अनुशासन की परिभाषा एवं अर्थ–अनुशासन का अर्थ है सामाजिक एवं व्यक्तिगत स्तर पर बड़ों के आदेश का अनुसरण करना। पूर्व समय में शक्ति और भय के द्वारा किये गये नियन्त्रण को अनुशासन समझा जाता था।

पाश्चात्य विद्वान् 'प्लेटो' का मानना था :

``Discipline Must be Based on Love and Controlled by Love"

(सच्चा अनुशासन वही है जिसे विद्यार्थी अपनी इच्छा से आदेशानुसार कार्य करे।)

(3) अनुशासन का महत्त्व–अनुशासन का हमारे जीवन में महत्त्व बहुत बड़ा है क्योंकि इसके अभाव में प्रकृति-प्रदत्त क्षमताओं का विकास रुक जाता है। सूर्य, चन्द्रमा एवं सम्पूर्ण नक्षत्र मण्डल एक अनुशासन में बंधे हैं। यदि ये अपने अनुशासन को तोड़ दें तो प्रलय हो जाये। जब-जब प्रकृति ने अनुशासन तोड़ा है तो भूकम्प, सूखा, महामारी जैसे प्रकोप मानव को झेलने पड़े हैं। इसीलिए हमारे समाज को चाहिए कि वह अनुशासित होकर प्रत्येक कार्य को समय पर करे जिससे हमारे देश के विकास चक्र में कोई रुकावट न आये।

(4) अनुशासनहीनता के कारण–अनुशासनहीनता के अनेक कारण हो सकते हैं– (1) वर्तमान दोषपूर्ण शिक्षा-प्रणाली, (2) शिक्षकों का पतन, (3) विद्यालयों में अनैतिक कार्य, (4) शिक्षा का व्यावसायिक न होना, (5) अशिक्षित तथा अज्ञानी अभिभावक, (6) धार्मिक व नैतिक शिक्षा का अभाव आदि।

(5) अनुशासनहीनता को दूर करने के उपाय–(1) शिक्षा का गुणात्मक विकास, (2) शिक्षा-व्यवस्था में सुधार, (3) परीक्षा-प्रणाली में सुधार, (4) शिक्षकों के आचरण में सुधार, (5) धार्मिक व नैतिक शिक्षा की व्यवस्था, (6) सृजनात्मक क्रियाएँ, (7) राजनीतिक प्रतिबन्ध आदि।

(6) उपसंहार–जिस देश के नागरिक अनुशासित होंगे वह देश और उसका समाज निश्चय ही उन्नतिशील होगा। हमारे लिए गर्व की बात है कि हमारे देश की केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकारें अनुशासनहीनता जैसे गम्भीर विषयों को लेकर काफी चिन्तित हैं तथा इस समस्या का निराकरण करने के लिए प्रयासरत हैं। जापान जैसा छोटा-सा देश 1944-45 ई० में एटम बम से पूर्णतः बरबाद हो गया था मगर कुछ ही वर्षों में अपने घोर अनुशासन के बल पर प्रगति कर संसार के सर्वशक्तिशाली राष्ट्र अमेरिका से हर क्षेत्र में टक्कर लेने की दम भर सकता है तो फिर समझ लीजिए अनुशासन का मानव-जीवन, राष्ट्र जीवन में कितना महत्त्व है।

6. पुस्तकालय का महत्त्व

अन्य शीर्षक–• पुस्तकालय से लाभ (2016CG) • आदर्श पुस्तकालय • पुस्तकालय • पुस्तकालय की उपयोगिता (2016AD,17AG)

रूपरेखा–(1) प्रस्तावना, (2) पुस्तकालय का अर्थ, (3) पुस्तकालयों के प्रकार, (4) पुस्तकालय का महत्त्व (लाभ), (5) कुछ प्रसिद्ध पुस्तकालय, (6) पुस्तकालयों के प्रति हमारा कर्त्तव्य, (7) सुझाव, (8) उपसंहार।

1. प्रस्तावना–ज्ञान-पिपासा मानव का स्वाभाविक गुण है। इसके लिए मनुष्य पुस्तकों का अध्ययन करता है। पुस्तकालय वह भवन है जहाँ अनेक पुस्तकों का विशाल भण्डार होता है। वहाँ बड़े-बड़े विचारकों, महापुरुषों एवं विद्वानों द्वारा लिखित अनेक पुस्तकें होती हैं। वहाँ जाकर मनुष्य अपनी रुचि के अनुसार पुस्तक लेकर अध्ययन करता है। पुस्तकालय से बढ़कर ज्ञान-पिपासा शान्त करने का कोई उत्तम साधन नहीं है। यही पुस्तकें हमें असत् से सत् की ओर तथा अन्धकार से प्रकाश की ओर बढ़ने की प्रेरणा देती हैं। हमारी अन्तःप्रकृति से गूँज उठती है–**''असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय।''**

2. पुस्तकालय का अर्थ–पुस्तकालय का अर्थ है–**पुस्तकों का घर**। इसमें विविध विषयों पर अनेक विद्वानों के द्वारा लिखित पुस्तकों का विशाल संग्रह होता है। निर्धन व्यक्ति भी पुस्तकालय में विविध विषयों की पुस्तकों का अध्ययन करके ज्ञान प्राप्त कर सकता है। पुस्तकालय में उच्चकोटि के ग्रन्थ आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं।

3. पुस्तकालयों के प्रकार–पुस्तकालय चार प्रकार के होते हैं–(i) व्यक्तिगत पुस्तकालय, (ii) विद्यालयों के पुस्तकालय, (iii) सार्वजनिक पुस्तकालय, (iv) सरकारी पुस्तकालय।

व्यक्तिगत पुस्तकालयों से अधिक व्यक्ति लाभ नहीं उठा सकते, उनसे वही व्यक्ति लाभान्वित होते हैं जिनकी वे सम्पत्ति होते हैं। **विद्यालयों के पुस्तकालयों का** उपयोग विद्यालय के छात्र और अध्यापक ही कर पाते हैं। इनमें अधिकांशतः विद्यार्थियों के उपयोग की ही पुस्तकें होती हैं। विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में शोध के लिए उपयोगी एवं अन्य अप्राप्य ग्रन्थ भी होते हैं। **सरकारी पुस्तकालयों** का उपयोग भी राजकीय कर्मचारी या विधान मण्डलों के सदस्य ही कर पाते हैं। केवल **सार्वजनिक पुस्तकालयों** का ही उपयोग सभी व्यक्तियों के लिए होता है। इनमें घर पर पुस्तकें लाने के लिए इनका सदस्य बनना पड़ता है। कुछ जमानत राशि भी जमा की जाती है, जो पुस्तकें जमा करने पर लौटा दी जाती है। पुस्तकालय का एक महत्त्वपूर्ण अंग 'वाचनालय' होता है। वहाँ दैनिक समाचार-पत्र एवं पत्रिकाएँ प्राप्त होती हैं।

अधिकांश पुस्तकालय अचल (निश्चित भवन) में होते हैं, लेकिन बड़े नगरों में ऐसे पुस्तकालय भी खुल गये हैं जो मोटर या अन्य वाहन में नगर में घूम-घूमकर पुस्तकें बाँटते हैं। कोलकाता, दिल्ली, मुम्बई आदि कुछ बड़े नगरों में इस प्रकार के चल पुस्तकालय हैं।

4. पुस्तकालय का महत्त्व (लाभ)–पुस्तकालय मानव-जीवन की महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है। ये ज्ञान, विज्ञान, कला और संस्कृति के प्रसार-केन्द्र होते हैं। पुस्तकालयों से अनेक लाभ हैं, उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं—

(क) ज्ञान वृद्धि, (ख) सद्गुणों का विकास, (ग) समाज का कल्याण, (घ) श्रेष्ठ मनोरंजन एवं समय का सदुपयोग, (ङ) सत्संगति का लाभ आदि।

5. कुछ प्रसिद्ध पुस्तकालय–देश में पुस्तकालयों की परम्परा प्राचीनकाल से चली आ रही है। नालन्दा और तक्षशिला में भारत के अति प्रसिद्ध पुस्तकालय थे। इस समय भारत में कोलकाता, दिल्ली, मुम्बई, पटना, वाराणसी आदि स्थानों पर भव्य पुस्तकालय हैं। इंग्लैण्ड में 'ब्रिटिश म्यूजियम' में पचास लाख पुस्तकें तथा अमेरिका के पुस्तकालय में लगभग एक अरब पुस्तकें हैं।

6. पुस्तकालयों के प्रति हमारा कर्त्तव्य–जो पुस्तकें पुस्तकालय से ली जायँ, उन्हें निश्चित समय पर लौटाना चाहिए। उन पर नाम लिखना, स्याही के धब्बे डालना, पन्ने या कतरन फाड़ना, पुस्तकों की साज-सज्जा को नष्ट करना आदि पुस्तकालय की क्षति है। पुस्तकालयों के नियमों का विधिवत् पालन करना एवं आर्थिक सहायता देकर उन्हें विकसित करना हमारा परम कर्त्तव्य है।

7. सुझाव–प्रत्येक गाँव में जनसंख्या के आधार पर पुस्तकालय का निर्माण होना चाहिए। रुग्ण पुस्तकालयों की दशा सुधारने के लिए अपना सहयोग प्रदान करना चाहिए। पुस्तकालयों में अश्लील पुस्तकों पर प्रतिबन्ध लगाकर उच्चकोटि की ज्ञानवर्द्धक पुस्तकों का संग्रह करना चाहिए।

8. उपसंहार–पुस्तकालय ज्ञान-पिपासा की शान्ति का सर्वोत्तम साधन है। सुयोग्य नागरिकों के चरित्र-निर्माण एवं समाज के उत्थान हेतु पुस्तकालयों के विकास के लिए सतत प्रयत्न किया जाना चाहिए। पुस्तकालयों में संगृहीत पुस्तकों के माध्यम से ही हम अपने पूर्वजों की गौरवपूर्ण सांस्कृतिक धरोहर से प्रेरणा प्राप्त करते हैं इसलिए नियमित रूप से पुस्तकालयों में बैठकर अध्ययन करना हमारे आचरण का आवश्यक अंग होना चाहिए।

7. दूरदर्शन और उसका प्रभाव

अन्य शीर्षक–• दूरदर्शन का जीवन पर प्रभाव • दूरदर्शन का शैक्षिक महत्त्व • दूरदर्शन से लाभ और हानि

रूपरेखा–(1) प्रस्तावना, (2) दूरदर्शन का आविष्कार, (3) दूरदर्शन की तकनीक, (4) दूरदर्शन का उपयोग, (5) दूरदर्शन का प्रभाव, (6) दूरदर्शन से लाभ तथा हानियाँ, (7) उपसंहार।

(1) प्रस्तावना–आधुनिक युग में दूरदर्शन ने हमारे जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान बना लिया है। यह न केवल मनोरंजन का साधन है बल्कि ज्ञानवर्द्धक वैज्ञानिक उपकरण है। दूरदर्शन का विस्तार आज बड़े-बड़े शहरों में ही नहीं ग्रामीण क्षेत्रों में भी देखने को मिलता है। आज के आपा-धापी भरे जीवन में दिन भर का थका व्यक्ति कुछ मनोरंजन चाहता है जिसके लिए वह दूरदर्शन के मनोरंजक कार्यक्रम देखकर अपनी थकान दूर करता है।

(2) दूरदर्शन का आविष्कार—इंग्लैण्ड के एक इन्जीनियर **जान वेयर्ड** ने रायल इन्स्टीट्यूट के सदस्यों के सामने इसका आविष्कार 25 जनवरी, 1926 ई० को किया था। उसने कठपुतली के चेहरे का चित्र रेडियो-तरंगों की सहायता से दूसरे कमरे में ज्यों का त्यों प्रस्तुत कर दिया था। भारत में दूरदर्शन का प्रथम केन्द्र 15 सितम्बर, 1959 ई० को नयी दिल्ली में प्रारम्भ हुआ था।

(3) दूरदर्शन की तकनीक—दूरदर्शन बहुत कुछ रेडियो सिद्धान्त पर आधारित है। अन्तर केवल इतना है कि रेडियो किसी ध्वनि को विद्युत् तरंगों में बदलकर उन्हें दूर-दूर तक प्रसारित कर देता है और इस प्रकार प्रसारित की जा रही विद्युत्-तरंगों को फिर से ध्वनि में बदल देता है। दूरदर्शन प्रकाश को विद्युत्-तरंगों में बदल कर प्रसारित करता है जिससे ध्वनि के साथ-साथ इसके दृश्यों को हम लोग देख भी सकते हैं। दूरदर्शन का प्रसारण-स्तम्भ जितना ऊँचा होगा उतनी ही दूर तक उससे प्रसारित चित्र दूरदर्शन पर दिखाई पड़ सकेगा। प्रारम्भ में दूरदर्शन के प्रसारण की अवधि मात्र साठ मिनट की थी तथा इसके प्रसारण को सप्ताह में दो बार ही देखा जा सकता था। 1982 ई० का वर्ष भारतीय दूरदर्शन का स्वर्णिम वर्ष था। अभी तक दूरदर्शन के कार्यक्रम श्वेत-श्याम रंग के थे। 15 अगस्त, 1982 ई० से रंगीन टी०वी० आरम्भ हुआ और इसके राष्ट्रीय कार्यक्रमों की नींव डाली गयी।

(4) दूरदर्शन का उपयोग—आधुनिक समाज में दूरदर्शन का उपयोग शिक्षा, साहित्य, सूचना, मनोरंजन, आदि विभिन्न क्षेत्रों में किया जा रहा है। इससे देश-विदेश के समाचार घर बैठे सुन लेना कोई कम उपलब्धि नहीं है, साथ ही समय और धन दोनों की भी बचत है।

(5) दूरदर्शन का प्रभाव—दूरदर्शन के द्वारा बच्चे, स्त्री और पुरुष सभी अपनी-अपनी रुचि के कार्यक्रम देख सकते हैं। आज दूरदर्शन ने अपने मनोरंजक तथा ज्ञानवर्द्धक कार्यक्रमों के जरिए निश्चित तौर पर हमारे समाज पर गहरी छाप छोड़ी है। दूरदर्शन के कुछ चैनल जैसे-स्टार प्लस, जी० टी०वी०, सोनी, डिस्कवरी आदि आज भी मुख्य आकर्षण का केन्द्र बने हैं।

(6) दूरदर्शन से लाभ तथा हानियाँ

लाभ—(1) विश्व समाचारों की जानकारी, (2) सस्ता और सुलभ मनोरंजन, (3) विश्व-संस्कृतियों के आचार-विचार की जानकारी, (4) व्यावसायिक और शिक्षण सम्बन्धी सूचनाओं की प्राप्ति, (5) पर्यटन का आनन्द, (6) सभी की ज्ञानवृद्धि का साधन, (7) बच्चों के विकास में सहायक, (8) खेलकूद प्रतियोगिताओं का सजीव प्रसारण आदि।

हानियाँ—(1) समय की हानि, (2) स्वास्थ्य की हानि, (3) चरित्र की हानि, (4) बच्चों पर कुप्रभाव आदि।

(7) उपसंहार—केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकारों को चाहिए कि वे दूरदर्शन के प्रसारणों में किसी तरह का अश्लील प्रसारण न होने दें। अश्लील प्रसारण बच्चों के लिए हानिकारक है।

8. कम्प्यूटर और उसकी उपयोगिता

अन्य शीर्षक—• कम्प्यूटर शिक्षा (2017AG,19AC) • कम्प्यूटर : आज की आवश्यकता • आधुनिक शिक्षा में कम्प्यूटर की उपयोगिता

रूपरेखा—(1) प्रस्तावना, (2) कम्प्यूटर क्या है?, (3) कम्प्यूटर और उसके उपयोग-(अ) बैंकिंग के क्षेत्र में, (ब) प्रकाशन के क्षेत्र में, (स) सूचना और समाचार प्रेषण के क्षेत्र में, (द) डिजाइनिंग के क्षेत्र में, (य) कला के क्षेत्र में, (र) वैज्ञानिक अनुसन्धान के क्षेत्र में, (ल) औद्योगिक क्षेत्र में, (व) युद्ध के क्षेत्र में, (4) कम्प्यूटर और मानव-मस्तिष्क, (5) उपसंहार।

(1) प्रस्तावना—पिछले कई वर्षों से देश में कम्प्यूटरों की चर्चा जोर-शोर से हो रही है। देश को कम्प्यूटरीकृत करने के प्रयास किये जा रहे हैं। हमारे देश के अधिकतर उद्योग-धन्धों व संस्थानों में कम्प्यूटर का प्रयोग होने लगा है। कितने ही सरकारी प्रतिष्ठानों में कम्प्यूटर लगाने की भारी होड़ लगी है।

(2) कम्प्यूटर क्या है?—कम्प्यूटर क्या है? इस विषय में जिज्ञासा स्वाभाविक है। वस्तुतः कम्प्यूटर ऐसा यान्त्रिक मस्तिष्क है, जिसमें विभिन्न गणित सम्बन्धी सूत्रों एवं तथ्यों के संचालन का कार्यक्रम पहले ही समायोजित कर दिया जाता है। इसके आधार पर कम्प्यूटर न्यूनतम समय में गणना कर तथ्यों को प्रस्तुत कर देता है। सर्वाधिक तीव्र, शुद्ध एवं सबसे उपयोगी गणना करनेवाला यन्त्र कम्प्यूटर है। चार्ल्स बेवेज पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने 19वीं शताब्दी के आरम्भ में पहला कम्प्यूटर बनाया था। यह कम्प्यूटर लम्बी गणनाएँ कर सकता था और उनके परिणामों को मुद्रित कर देता था।

(3) कम्प्यूटर और उसके उपयोग—कम्प्यूटर का व्यापक प्रयोग निम्नलिखित क्षेत्रों में हो रहा है :

(अ) बैंकिंग के क्षेत्र में–भारतीय बैंकों में खातों के संचालन और हिसाब-किताब रखने के लिए कम्प्यूटरों का प्रयोग किया जाने लगा है। अनेक राष्ट्रीयकृत बैंकों ने चुम्बकीय संख्याओंवाली नयी चेक बुक जारी की है। यूरोप के कई देशों में तो ऐसी व्यवस्थाएँ की गयी हैं कि घर के निजी कम्प्यूटर को बैंकों के कम्प्यूटरों के साथ जोड़कर लेन-देन का व्यवहार किया जा सकता है।

(ब) प्रकाशन के क्षेत्र में–समाचार-पत्र और पुस्तकों के प्रकाशन में कम्प्यूटर विशेष योगदान कर रहा है। सबसे पहले एक लेख सम्पादित होकर कुंजी-पटल के माध्यम से कम्प्यूटर में संचित होता है। टंकित मैटर को कम्प्यूटर के पर्दे पर देखा जा सकता है। यदि कहीं त्रुटि है तो उसे संशोधित किया जाता है। अतः प्रकाशन के क्षेत्र में कम्प्यूटर ने एक क्रान्तिकारी कदम रखा है।

(स) सूचना और समाचार प्रेषण के क्षेत्र में–दूरसंचार के क्षेत्र में भी कम्प्यूटरों की भूमिका सराहनीय है। आज 'कम्प्यूटर नेटवर्क' के माध्यम से देश के प्रमुख नगरों को एक-दूसरे से जोड़ने की व्यवस्था भी की जा रही है।

(द) डिजाइनिंग के क्षेत्र में–आजकल कम्प्यूटर ग्राफिक का व्यापक प्रयोग हो रहा है। कम्प्यूटर के माध्यम से भवनों, मोटर गाड़ियों, हवाई जहाज आदि के डिजाइन तैयार किये जाते हैं। वास्तुशिल्पी अपना डिजाइन कम्प्यूटर के स्क्रीन पर तैयार करते हैं तथा साथ में लगे प्रिण्टर के द्वारा प्रिण्ट भी प्राप्त कर लेते हैं।

(य) कला के क्षेत्र में–कलाकार को अब न तो कैनवास की आवश्यकता है, न रंग की और ब्रुशों की। कम्प्यूटर के सामने बैठा कलाकार अपने नियोजित प्रोग्राम के अनुसार स्क्रीन पर चित्र बनाता है। स्क्रीन पर निर्मित यह चित्र प्रिण्ट की 'कुंजी' दबाते ही प्रिण्टर द्वारा कागज पर अपने उन्हीं वास्तविक रंगों के साथ प्रिण्ट हो जाता है।

(र) वैज्ञानिक अनुसन्धान के क्षेत्र में–अब कम्प्यूटर ने वैज्ञानिक अनुसन्धान के स्वरूप को भी बदल दिया है। अन्तरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में कम्प्यूटर ने क्रान्ति उत्पन्न कर दी है।

(ल) औद्योगिक क्षेत्र में–बड़े-बड़े उद्योग-धन्धों में मशीनों के संचालन का कार्य अब कम्प्यूटर सम्भाल रहे हैं। कम्प्यूटर की सहायता से रोबोट ऐसी मशीनों का संचालन कर रहे हैं जिनका संचालन मानव के लिए बहुत कठिन है।

(व) युद्ध के क्षेत्र में–कम्प्यूटर का आविष्कार एक युद्ध-उपकरण के रूप में ही हुआ था। अमेरिका में पहले इलेक्ट्रॉनिक कम्प्यूटर का उपयोग एटम बम से सम्बन्धित गणनाओं के लिए हुआ था। अतः युद्ध के क्षेत्र में भी कम्प्यूटर बहुत उपयोगी है।

(4) कम्प्यूटर और मानव-मस्तिष्क–यह प्रश्न भी स्वाभाविक है कि क्या कम्प्यूटर और मानव-मस्तिष्क की तुलना की जा सकती है? इन दोनों में कौन श्रेष्ठ है? कम्प्यूटर का निर्माण भी मानव-बुद्धि ने ही किया है। कम्प्यूटर कोई भी निर्णय स्वयं नहीं ले सकता और न ही कोई नवीन बात सोच सकता है।

(5) उपसंहार–भारत जिस गति से कम्प्यूटर युग की ओर बढ़ रहा है उसे देखकर ऐसा लगता है कि हम अपने आप को कम्प्यूटर के हवाले करने के लिए विवश किये जा रहे हैं। यह सही है कि कम्प्यूटर ने जो कुछ भी एकत्र किया है, वह आज के असाधारण बुद्धिजीवियों की देन है लेकिन हम यह प्रश्न पूछने के लिए भी विवश हैं कि जो स्मरण-शक्ति कम्प्यूटरों को दी गयी है उससे बाहर क्या हमारा कोई अस्तित्व नहीं। हमें कम्प्यूटर पर पूरी तरह आश्रित न होकर अपने अस्तित्व को भी बचाना चाहिए।

9. बेरोजगारी की समस्या (2016CB,20MB)

अन्य शीर्षक–• बढ़ती बेरोजगारी : कारण और निवारण • बेरोजगारी एक अभिशाप (2016CB,20MB) • बेरोजगारी की समस्या और उसका समाधान (2016CC,19AD)

रूपरेखा–(1) प्रस्तावना, (2) बेरोजगारी का अर्थ, (3) बेरोजगारी : एक प्रमुख समस्या, (4) बेरोजगारी : एक अभिशाप, (5) बेरोजगारी के कारण– (अ) जनसंख्या में वृद्धि, (ब) दोषपूर्ण शिक्षा-प्रणाली, (स) कुटीर उद्योगों की उपेक्षा, (द) औद्योगीकरण की मन्द प्रक्रिया, (य) कृषि का पिछड़ापन, (र) कुशल एवं प्रशिक्षित व्यक्तियों की कमी, (ल) अविकसित सामाजिक दशा, (6) बेरोजगारी की समस्या का समाधान, (7) उपसंहार।

(1) प्रस्तावना–बेरोजगारी की समस्या हमारे देश की एक प्रमुख समस्या है। आजकल पढ़े-लिखे युवक भी बेरोजगारी के कारण परेशान हैं। लोगों ने अपने परम्परागत जातीय व्यवसाय छोड़ दिये हैं। सभी नौकरी की तलाश में दौड़ रहे हैं, ऐसी स्थिति में कितने को नौकरियाँ प्राप्त हो सकती हैं जबकि इनके स्थान जनसंख्या की दृष्टि से सीमित हैं।

(2) बेरोजगारी का अर्थ—बेरोजगारी ऐसी स्थिति को कहते हैं जबकि कोई योग्य तथा काम करने के लिए इच्छुक व्यक्ति जीविका चलाने हेतु न्यूनतम मजूदरी की दरों पर कार्य माँगता हो फिर भी न मिल रहा हो। बालक, वृद्ध, रोगी, अक्षम एवं अपंग व्यक्तियों को बेरोजगारों की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता।

(3) बेरोजगारी : एक प्रमुख समस्या—भारत की आर्थिक समस्याओं में बेरोजगारी एक मुख्य समस्या है। यह एक ऐसी घातक समस्या है जिसके कारण मानव-शक्ति का ही ह्रास नहीं होता वरन् देश का आर्थिक ढाँचा भी चरमरा जाता है। बेरोजगारी के कारण अनेक अन्य समस्याओं का भी जन्म होता है।

(4) बेरोजगारी : एक अभिशाप—बेरोजगारी देश व मानव-समाज के लिए एक अभिशाप है। यह अनेक ऐसी समस्याओं को जन्म देती है जो समाज के लिए कलंक बन जाती हैं। इससे एक ओर निर्धनता, भुखमरी तथा मानसिक अशान्ति फैलती है तो दूसरी ओर युवकों में आक्रोश व अनुशासनहीनता बढ़ जाती है। बेरोजगारी एक ऐसा विष है जो देश के आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन को विषाक्त कर देता है। अतः बेरोजगारी के कारणों की खोज करके उनका निराकरण नितान्त आवश्यक है।

(5) बेरोजगारी के कारण—बेरोजगारी के कुछ प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं :

(अ) जनसंख्या में वृद्धि—देश में जनसंख्या विस्फोट तीव्र गति से हुआ है। देश में प्रतिवर्ष 2.5% की जनसंख्या वृद्धि हो जाती है जबकि इस दर से बेरोजगार व्यक्तियों के लिए रोजगार उपलब्ध कराने की व्यवस्था नहीं है।

(ब) दोषपूर्ण शिक्षा-प्रणाली—हमारे देश की शिक्षा-प्रणाली दोषपूर्ण है। यह रोजगार प्रदान करनेवाली नहीं है। इसमें पुस्तकीय ज्ञान तो भरपूर है किन्तु व्यावहारिक ज्ञान शून्य है।

(स) कुटीर उद्योगों की उपेक्षा—हमारे देश में कुटीर उद्योगों के विकास की ओर ध्यान नहीं दिया जा रहा, जिसके फलस्वरूप अनेक कारीगर बेकार हो गये और बेरोजगारी में निरन्तर वृद्धि होती गयी।

(द) औद्योगीकरण की मन्द प्रक्रिया—विगत पंचवर्षीय योजनाओं में देश के औद्योगीकरण के लिए प्रशंसनीय कदम उठाये गये हैं, फिर भी समुचित रूप से इसका विकास नहीं हो सका है। अतः बेरोजगार व्यक्तियों के लिए वांछित मात्रा में रोजगार नहीं जुटाये जा सके हैं।

(य) कृषि का पिछड़ापन—हमारे देश की लगभग 59% जनता कृषि पर निर्भर है। यहाँ की कृषि अत्यन्त पिछड़ी हुई दशा में है।

(र) कुशल एवं प्रशिक्षित व्यक्तियों की कमी—हमारे देश में कुशल व प्रशिक्षित व्यक्तियों का अभाव है। अतः उद्योगों के संचालन के लिए विदेश से प्रशिक्षित कर्मचारी बुलाने पड़ते हैं। यही कारण है कि देश में कुशल एवं कम प्रशिक्षित व्यक्ति बेकार हो जाते हैं।

(ल) अविकसित सामाजिक दशा—जाति-प्रथा, बाल-विवाह, विधवा-विवाह निषेध एवं सामाजिक असमानताएँ भी बेरोजगारी को बढ़ावा दे रही हैं। विभिन्न अविकसित सामाजिक दशाओं के कारण भी बेरोजगारी में वृद्धि हो रही है।

(6) बेरोजगारी की समस्या का समाधान—(1) जनसंख्या वृद्धि पर नियन्त्रण, (2) शिक्षा-प्रणाली में व्यापक परिवर्तन, (3) कुटीर उद्योगों का विकास, (4) औद्योगिक विकास, (5) सहकारी खेती, (6) सहायक उद्योगों का विकास, (7) राष्ट्र-निर्माण के विविध कार्य, (8) सामाजिक ढाँचे में परिवर्तन, (9) रोजगार कार्यक्रमों का विस्तार, (10) प्राकृतिक संसाधनों का समुचित उपयोग करके किया जा सकता है।

(7) उपसंहार—हमारे देश की सरकार बेरोजगारी की समस्या के समाधान के लिए प्रयत्नशील है और उसने इस दिशा में अनेक महत्त्वपूर्ण कदम भी उठाये हैं। हमारे देश में जो कुछ संसाधन उपलब्ध हैं उनका उपयोग करके भी इसका समाधान खोजा जा सकता है और बेरोजगारी की समस्या को दूर करके देश का आर्थिक विकास किया जा सकता है।

10. आदर्श विद्यार्थी

अन्य शीर्षक— • विद्यार्थी-जीवन • विद्यार्थी और अनुशासन (2016CD)

रूपरेखा—(1) प्रस्तावना, (2) जीवन का स्वर्ण काल। (3) विद्यार्थी जीवन के उद्देश्य- (क) विद्या-प्राप्ति, (ख) चरित्र-निर्माण, (ग) शारीरिक तथा मानसिक उन्नति। (4) उपसंहार।

(1) प्रस्तावना–प्राचीन भारतीय इतिहास को देखने से ज्ञात होता है कि हमारे पूर्वजों ने जीवन को सुव्यवस्थित ढंग से बिताने के लिए इसे चार भागों में बाँटा था– ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास। इनकी महत्ता का प्रतिपादन करने के लिए उन्होंने इसकी आवश्यकता को सर्वोपरि समझते हुए इन्हें 'आश्रम' का नाम दिया था। मानव-जीवन का प्रथम सोपान ब्रह्मचर्य आश्रम अर्थात् विद्यार्थी-जीवन ही है।

(2) जीवन का स्वर्ण काल–'विद्यार्थी-जीवन' मनुष्य का सर्वाधिक श्रेष्ठकाल है। इस समय का सदुपयोग कर मनुष्य अपने जीवन को सुखमय बनाने का सफल प्रयत्न कर सकता है। इस समय विद्यार्थी पर भोजन-वस्त्रादि की चिन्ता का कोई भार नहीं होता। उसका मन और मस्तिष्क निर्विकार होता है। उसके शरीर और मस्तिष्क की सभी शक्तियाँ विकासोन्मुख होती हैं। इस स्वर्ण काल में उसके लिए केवल एक ही कार्य होता है और वह है– अपनी सम्पूर्ण प्रवृत्तियों को विद्या के अर्जन की ओर लगाना।

(3) विद्यार्थी-जीवन के उद्देश्य–विद्यार्थी शब्द का अर्थ है– विद्या का अर्थी अर्थात् विद्या को चाहनेवाला, किन्तु उसका एकमात्र उद्देश्य विद्या प्राप्त करना ही नहीं, अपितु विद्यार्थियों को चरित्र-निर्माण, शारीरिक तथा मानसिक उन्नति और सद्गुणों की प्राप्ति की ओर भी विशेष ध्यान देना चाहिए। इस प्रकार विद्यार्थी-जीवन के प्रधानतः तीन उद्देश्य हो जाते हैं– (क) विद्याप्राप्ति, (ख) चरित्र-निर्माण, (ग) शारीरिक तथा मानसिक विकास।

(क) विद्याप्राप्ति–विद्या से तात्पर्य केवल पुस्तकीय ज्ञान से नहीं है। विद्यार्थी को अपने चारों ओर की प्रकृति की सुरम्य छटा को आँख खोलकर देखना चाहिए। ऐसा करने से उसके ज्ञान में विविधता और उनके अवलोकन में सूक्ष्मदर्शिता आ जाती है। पुस्तकों में वह जिन वर्णनों को पढ़ता है, उन्हें प्रकृति में साकार देखकर उसका मन आनन्द-विभोर हो जाता है और उसके हृदय में स्वभाव से ही दिव्य गुणों का विकास होने लगता है।

विद्या मानव के लिए सर्वोत्तम धन है। अतः विद्या की प्राप्ति में विद्यार्थी को कभी आलस्य नहीं करना चाहिए। उसे ज्ञान की प्राप्ति के लिए बड़े-से-बड़ा त्याग और कठिन परिश्रम करने के लिए तैयार होना चाहिए।

(ख) चरित्र-निर्माण–यों तो मानव मात्र के लिए चरित्र-निर्माण की आवश्यकता होती है, किन्तु विद्यार्थी के लिए तो इसकी प्रधान आवश्यकता है। श्रेष्ठ चरित्र के अभाव में विद्या-विभूषित मनुष्य को भी कोई आदर की दृष्टि से नहीं देखता। चरित्र के निर्माण के लिए विद्यार्थी को 'आत्म-संयमी' होना चाहिए। संयम के बिना विद्या को प्राप्त करना एक कठिन कार्य है। जिसका मन चंचल है, जो पढ़ते-पढ़ते आकाश में वायुयान की आवाज को सुनकर उसे देखने दौड़ पड़ता है, सिनेमा जानेवालों के आह्वान पर किताबों को फेंककर उनके साथ हो लेता है, चाटवाले की घण्टी की आवाज सुन उसे खाने के लिए दौड़ पड़ता है, वह क्या कभी लिख-पढ़ सकता है, कदापि नहीं।

चरित्र की श्रेष्ठता के लिए ब्रह्मचर्य व्रत का पालन तथा मादक द्रव्यों के सेवन से दूर रहने की अति आवश्यकता है। सत्संगति के बिना चरित्र-निर्माण का होना असम्भव है। दुष्टों की संगति, अच्छे पुरुषों को भी अवनति के गर्त में गिरा देती है। शील, विनय, सदाचार, अनुशासनहीनता, बड़ों का आदर आदि ऐसे गुण हैं, जिनका होना एक विद्यार्थी के लिए आवश्यक है। विद्यार्थी-जीवन ही इन गुणों के विकास का सर्वोत्तम अवसर है।

(ग) शारीरिक तथा मानसिक उन्नति-मस्तिष्क का विकास शरीर के विकास के बिना असम्भव है। व्यायाम तथा आसनों के प्रयोग शरीर को स्वस्थ रखने में बहुत योग देते हैं। स्वच्छ वायु में प्रातः तथा सायंकाल का भ्रमण जीवन-शक्ति को बढ़ाता है और चित्त को प्रफुल्लित रखता है।

हमारे प्राचीन शास्त्रों में चरित्र गठन के लिए विद्यार्थी में निम्न पाँच लक्षणों का होना अनिवार्य बताया गया है—

काक चेष्टा वकोध्यानं श्वाननिद्रा तथैव च।
अल्पाहारी, गृहत्यागी, विद्यार्थी पञ्चलक्षणः॥

(4) उपसंहार–उक्त विवरण से स्पष्ट है कि विद्यार्थी का जीवन बड़ा ही उत्तरदायित्वपूर्ण है। इस काल में बालक को सदा ही सावधान तथा सचेष्ट रहना पड़ता है। वह चैन की वंशी नहीं बजा पाता। सुख तथा विद्या का बैर है। एक को चाहनेवाले को दूसरे की प्राप्ति नहीं होती। संस्कृत के किसी कवि ने कहा है-

सुखार्थिनः कुतो विद्या, कुतो विद्यार्थिनः सुखम्।
सुखार्थी वा त्यजेत् विद्यां, विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम्॥

यदि भारतीय विद्यार्थी, विद्यार्थी-जीवन की श्रेष्ठता को समझकर उसे आदर्श बनाने की ओर उन्मुख हो जायेंगे तो वह दिन दूर नहीं है, जब वे अपने को सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम् का लक्ष्य प्राप्त कर देश की चहुमुखी प्रगति कर सकेंगे।

11. राष्ट्रीय एकता (2020MD)

अन्य शीर्षक–• भारत की एकता • राष्ट्रीय एकता एवं राष्ट्र प्रेम • राष्ट्रीय एकता का महत्त्व (2018HF)

रूपरेखा–(1) प्रस्तावना–राष्ट्रीय एकता का परिचय, (2) राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता, (3) राष्ट्रीय एकता के अवरोधक तत्त्व, (4) राष्ट्रीय एकता के पोषक तत्त्व, (5) उपसंहार।

(1) प्रस्तावना–राष्ट्रीय एकता एक नैतिक और मनोवैज्ञानिक अवधारणा है। यह एक भावना है और राष्ट्र का एकीकरण करनेवाली मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है, जो राष्ट्र के निवासियों में भाईचारा तथा राष्ट्र के प्रति अपनेपन का भाव भरती है और राष्ट्र को संगठित तथा सशक्त बनाती है। राष्ट्रीय एकता के लिए भाषा, धर्म, जाति और संस्कृति की एकता आवश्यक नहीं होती और न विविधता बाधक होती है, वरन् राष्ट्रीय एकता विविधता के बीच ही जन्म लेती है, फूलती और फलती है। हमारा देश भारत एक ऐसा ही देश है, जहाँ विविधता में एकता पायी जाती है। अतः राष्ट्रीय एकता को परिभाषित करते हुए कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय एकता राष्ट्र के निवासियों के हृदय की वह पवित्र भावना है जो भूगोल, भाषा, धर्म, जाति, सम्प्रदाय, सभ्यता और संस्कृति में भिन्नता होते हुए भी उन्हें एकता के सूत्र में बाँधकर देश को संगठित और सुदृढ़ बनाती है।

(2) राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता–प्रायः हम देखते हैं कि नव स्वतन्त्र देशों को जिस समस्या का सामना करना पड़ता है, वह राष्ट्रीय एकता ही है। राष्ट्रीय एकता राष्ट्र का प्राण है। जब राष्ट्रीय एकता टूटती है तो राष्ट्र समाप्त हो जाता है। इतिहास इसका प्रमाण है कि जब-जब हमारे यहाँ राष्ट्रीय एकता का अभाव हुआ, तब-तब हमें अपमानित होना पड़ा और हमारे देश को गुलामी का जीवन जीना पड़ा। पुनः जब हममें राष्ट्रीय चेतना जागी तो हम एक हुए, जिसके फलस्वरूप हमें आजादी मिली, सम्मान मिला और आज दुनिया में हमारा गौरवपूर्ण स्थान है। इस प्रकार राष्ट्रीय एकता राष्ट्र की प्राणदायिनी शक्ति है और भारत जैसे विकासशील राष्ट्र के लिए इसकी आवश्यकता तो स्वयंसिद्ध है।

(3) राष्ट्रीय एकता के अवरोधक तत्त्व–हमें स्वतन्त्र हुए लगभग 65 वर्ष बीत गये, किन्तु आज भी हम पूर्ण रूप से राष्ट्रीय एकता के सूत्र में नहीं बँध पाये हैं। हमारे देश में साम्प्रदायिकता, भाषावाद, क्षेत्रीयता की भावना, जातिवाद आदि ऐसे तत्त्व हैं, जिनके द्वारा राष्ट्रीय एकता की भावना में अवरोध पैदा हो रहा है। देश में अनेक सम्प्रदायों के लोग रहते हैं, जो अपने को एक-दूसरे से भिन्न और श्रेष्ठ समझते हैं। वे छोटी-छोटी बातों पर एक-दूसरे से लड़ते हैं। कभी-कभी उनकी लड़ाई बहुत उग्र रूप धारण कर जनजीवन को अस्त-व्यस्त कर देती है। इस प्रकार की साम्प्रदायिक भावना राष्ट्रीय एकता को विघटित करती है। भाषावाद भी राष्ट्रीय एकता को विकसित होने में बाधक होता है, क्योंकि लोग भाषा के आधार पर राज्यों की सीमा बनाने की माँग करते हैं।

भारत में भौगोलिक भिन्नता के आधार पर अनेक क्षेत्र हैं। अपने-अपने क्षेत्र के प्रति निष्ठा और दूसरे के क्षेत्र के प्रति घृणा की भावना, क्षेत्रीयता की भावना कहलाती है। अतः विभिन्न क्षेत्रों के लोगों में एक-दूसरे के प्रति ईर्ष्या, क्षेत्रीयता की भावना को जन्म देती है। क्षेत्रीयता की भावना के साथ जातिवाद भी हमारी राष्ट्रीय एकता में बाधक है। उच्च जाति के लोगों और हरिजनों के बीच होनेवाले संघर्ष जातिवाद के ही परिणाम हैं। इस प्रकार साम्प्रदायिकता, भाषावाद, क्षेत्रीयता की भावना और जातिवाद हमारी राष्ट्रीय एकता के महान् शत्रु हैं।

(4) राष्ट्रीय एकता के पोषक तत्त्व–देश की सुरक्षा और विकास के लिए राष्ट्रीय एकता बहुत जरूरी है। अतः हमें राष्ट्रीय एकता के पोषक तत्त्वों की ओर ध्यान देना चाहिए। राष्ट्रीय एकता के पोषक तत्त्वों में नागरिकता, एक राष्ट्रभाषा, संविधान, राष्ट्रीय प्रतीक, राष्ट्रीय पर्व, सामाजिक समानता आदि मुख्य हैं। इन तत्त्वों से लोगों में विद्वेष की भावना समाप्त होती है और राष्ट्रीय एकता को बल मिलता है। महापुरुषों के सन्देशों का पालन भी राष्ट्रीय एकता को पोषित और पुष्ट करता है।

(5) उपसंहार–भारत एक स्वतन्त्र राष्ट्र है। अतः इसके विकास व उन्नति के लिए आवश्यक है कि हम छोटी-छोटी बातों को लेकर संघर्ष न करें। इसके लिए हमारी सरकार को राष्ट्रीय एकता के बाधक तत्त्वों को समूल नष्ट करने का प्रयत्न करना चाहिए। देश के हर नागरिक को अपने हृदय में यह भावना जाग्रत करनी चाहिए कि हम सब पहले भारतीय हैं, इसके बाद पंजाबी, बंगाली, गुजराती, मद्रासी आदि हैं। इस भावना से ही हम विश्व के अन्य राष्ट्रों में अपना गौरवपूर्ण स्थान बना सकते हैं।

12. दहेज-प्रथा

अन्य शीर्षक– • दहेज-प्रथा समाज के लिए अभिशाप • दहेज-प्रथा की समस्या

रूपरेखा–(1) प्रस्तावना– दहेज-प्रथा का अर्थ व स्वरूप, (2) दहेज-प्रथा के जन्म के कारण, (3) दहेज-प्रथा की बुराइयाँ, (4) दहेज-प्रथा को रोकने के उपाय, (5) उपसंहार।

(1) प्रस्तावना–आज हमारा समाज अनेक समस्याओं से ग्रसित है। उसमें दहेज की समस्या इतनी दूषित हो गयी है कि इसे सामाजिक कोढ़ या कलंक कहा जाता है। अन्य शब्दों में वर्तमान समय में दहेज-प्रथा सामाजिक प्रथा के स्थान पर कुप्रथा के रूप में पल्लवित हो गयी है।

सामान्य रूप से दहेज वह सम्पत्ति है जो वर-पक्ष को विवाह के समय कन्या पक्ष द्वारा स्वेच्छा से प्रदान की जाती है, किन्तु अब यह प्रवृत्ति भारतीय समाज में विवशता के रूप में परिवर्तित हो गयी है। आज इसका रूप उल्टा हो गया है। दहेज की माँग वर पक्ष की ओर से होने लगी है। वर पक्ष दहेज के रूप में अत्यधिक धन, टी0वी0, फ्रिज, स्कूटर, कार आदि की माँग करता है। यदि किसी कन्या का पिता इन वस्तुओं को जुटाने में असमर्थ होता है, तो उसकी कन्या को सुयोग्य वर नहीं मिल पाता और वह किसी अयोग्य वर के साथ बाँध दी जाती है। आज इस कुप्रथा ने सम्पूर्ण भारतीय समाज को अपनी अजगरी भुजाओं में जकड़ लिया है।

(2) दहेज-प्रथा के जन्म के कारण–प्राचीन काल में धनिक और सामन्त लोग अपनी पुत्री की शादी में सोना, चाँदी, हीरे, जवाहरात आदि प्रचुर मात्रा में दिया करते थे। धीरे-धीरे यह प्रथा सम्पूर्ण समाज में फैल गयी। समस्त समाज जिसे ग्रहण कर ले वह दोष भी गुण बन जाता है। फलतः कालान्तर में दहेज सामाजिक विशेषता बन गयी, किन्तु आगे चलकर यह प्रथा भारतीय समाज में व्याप्त धर्मान्धता और रूढ़िवादिता के कारण कुप्रथा में बदल गयी। हमारा नैतिक पतन भी इस कुप्रथा के प्रचार और प्रसार में बहुत सहायक रहा है। सही शिक्षा के अभाव में भी यह कुप्रथा काफी विकसित हुई है। इसका एक मुख्य कारण भारतीय समाज में नारी को पुरुष की अपेक्षा निम्न स्तर का समझना भी है।

(3) दहेज-प्रथा की बुराइयाँ–इस प्रथा का सबसे बड़ा दोष यह है कि इस प्रथा ने नारी के सम्मान को ठेस पहुँचायी है और उसके विकास को भी अवरुद्ध कर दिया है। इस प्रथा की एक बुराई यह भी है कि यह कुप्रथा बेमेल विवाह को प्रोत्साहन दे रही है। दहेज-प्रथा के कारण लोगों में धनलोलुपता भी पर्याप्त बढ़ रही है। इसी कारण प्रेम और सद्भाव के स्थान पर धन की प्रतिष्ठा होने लगी है। दहेज के लिए अपनी सामर्थ्य से अधिक धन जुटाने के प्रयास में बहुत से लोग ऋण-भार से दबे हुए हैं। इस कारण आर्थिक भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिल रहा है। अतः दहेज-प्रथा विभिन्न रूपों में हमारे समाज को आर्थिक, नैतिक, मानसिक और सामाजिक पतन की ओर ले जा रही है।

(4) दहेज-प्रथा को रोकने के उपाय–दहेज-प्रथा को दूर करने के लिए सरकार और समाज दोनों को प्रयास करना होगा। सरकार को इस प्रथा को रोकने के लिए कड़े कानून का सहारा लेना होगा। यद्यपि सरकार ने दहेज-निरोधक कानून बनाया है, लेकिन उससे कोई सफलता नहीं मिली है। यदि सरकार इस कानून का सच्चाई और कड़ाई के साथ पालन करे, तो कुछ सफलता मिल सकती है। कानून के अतिरिक्त दहेज-प्रथा को दूर करने के लिए जन-सहयोग अत्यन्त आवश्यक है। सामाजिक संस्थाएँ भी इस दशा में सहायक सिद्ध हो सकती हैं। इस प्रथा को समाप्त करने के लिए सामाजिक चेतना की अत्यन्त आवश्यकता है। इसके लिए युवा वर्ग को आगे आना चाहिए, उन्हें स्वेच्छा से बिना दहेज के विवाह करके आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए। इसके अतिरिक्त सहशिक्षा भी इस कुप्रथा को दूर करने में सहायक सिद्ध हो सकती है।

(5) उपसंहार-दहेज-प्रथा हमारे समाज का कोढ़ बन गयी है। यह प्रथा सिद्ध करती है कि हमें स्वयं को सभ्य कहलाने का कोई अधिकार नहीं है। जिस समाज में दुल्हनों को प्यार के स्थान पर यातना दी जाती है, अकारण ही उनको अग्नि की भेंट चढ़ा दिया जाता है, वह समाज निश्चित रूप से सभ्यों का समाज नहीं, अपितु नितान्त असभ्यों का समाज है। अतः इस प्रथा के उन्मूलन के लिए एक अभियान चलाना होगा, अन्यथा दहेज का अजगर हमारे समूचे समाज को पूरी तरह निगल जायेगा। इस अभियान का नारा होगा– ''दुल्हन ही दहेज है'', तभी हम इस सामाजिक कोढ़ से मुक्ति पा सकते हैं।

13. पर्यावरण-सुरक्षा (2017CG)

अन्य शीर्षक–• पर्यावरण एवं स्वास्थ्य • जल प्रदूषण और मानव जीवन पर प्रभाव • पर्यावरण संरक्षण, • प्रदूषण : पर्यावरण और मानव जीवन • पर्यावरण प्रदूषण (2017AG)

संसार में अन्य प्राणियों की तरह मनुष्य ने भी प्रकृति की गोद में जन्म लिया है और प्रकृति से उत्पन्न सभी वस्तुएँ उसके चारों ओर घिरी हुई हैं इसीलिए उन्हें 'पर्यावरण' कहा जाता है। मिट्टी, जल, वायु, वनस्पति, पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े, जीवाणु आदि पर्यावरण के कारण हैं। इनसे समस्त मानव जाति सर्वदा घिरी हुई है। इनके द्वारा हमारी जीवन-रक्षा भी होती है।

आज का बुद्धिवादी मानव अपने विकास के लिए पर्यावरण या प्राकृतिक सम्पदाओं का विनाश कर रहा है, जिसके कारण सर्वत्र प्रदूषण उत्पन्न हो गया है और प्राकृतिक पर्यावरण का सन्तुलन बिगड़ गया है, जिससे नाना प्रकार की बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं और मनुष्य अनचाहे मृत्यु के मुँह में धंसता चला जा रहा है। फिर भी लोभी मनुष्य प्रकृति का साहचर्य त्याग कर वनों का विनाश करने में संलग्न है जबकि वनों से उसे लकड़ियाँ, औषधि, फल आदि अनेक उपयोगी वस्तुएँ प्राप्त होती हैं और प्राकृतिक आपदाओं जैसे– बाढ़, भूस्खलन आदि से उसकी रक्षा होती है।

पृथ्वी पर दिन-प्रतिदिन वायु-प्रदूषण बढ़ता ही जा रहा है, क्योंकि वनस्पतियों की नस से ऑक्सीजन (प्राणवायु) की कमी होती जा रही है और वायु की मलिनता दूर नहीं हो पा रही है। वृक्ष सूर्य की गर्मी कम करते हैं, वायु की गन्दगी दूर करते हैं, भाप से वातावरण में नमी पैदा करते हैं। प्रतिवर्ष पत्तियों को गिराकर उर्वरक उत्पन्न करते हैं, पृथ्वी के कटाव को रोकते हैं तथा पानी बरसाने में सहायक होते हैं। इनके बिना हमारी कितनी हानि हो रही है, यह भौतिकवादी मानव कल्पना भी नहीं कर पा रहा है।

एक ओर मनुष्य वायु-प्रदूषण को रोकनेवाले वृक्षों का विनाश कर रहा है तो दूसरी ओर प्रदूषण बढ़ानेवाले साधनों की वृद्धि करता जा रहा है। आज बड़ी-बड़ी उद्योगशालाओं और वाहनों से निकले विषाक्त धुएँ, नाना प्रकार के खनिज, रासायनिक द्रव वातावरण को दूषित कर ऑक्सीजन विनष्ट कर रहे हैं। इन सब के प्रभाव से उनके ऐतिहासिक भवन विद्रूप होते जा रहे हैं तथा नाना प्रकार की बीमारियाँ बढ़ रही हैं। जलवायु और वनस्पतियाँ भी अपनी स्वाभाविक गति से दूर हो रही हैं।

पर्यावरण की हानि से जल प्रदूषण भी बढ़ता जा रहा है जिससे जनसंख्या की वृद्धि एवं औद्योगीकरण इसके मुख्य कारण हैं। घरों के वाहित मल, कीटनाशी पदार्थ एवं रासायनिक तेलों से नदी, सागर आदि के जल प्रदूषित होते जा रहे हैं जिससे विश्व में महामारियाँ फैल रही हैं और लाखों लोग प्रतिवर्ष मृत्यु के शिकार हो रहे हैं।

शोरगुल से भी पर्यावरण में अनेक दोष पैदा हो रहे हैं। रेलगाड़ी, मोटर, बड़ी-बड़ी मशीनों, रेडियो, लाउडस्पीकरों के भीषण आवाज में विशेष रूप से ध्वनि प्रदूषण की समस्या बढ़ती जा रही है। अति कोलाहल से बहरापन, मस्तिष्क विकार, रक्तचाप (ब्लडप्रेशर) और हृदय रोग आदि बढ़ते जा रहे हैं।

इन सबसे सुरक्षा पाने के लिए पर्यावरण की सुरक्षा आवश्यक है। पशु-पक्षी, जीव-जन्तु भी पर्यावरण के सन्तुलन में सहायक होते हैं। सिंह, बाघ आदि मांसभक्षी जानवर हिरनों आदि की वृद्धि को रोकते हैं। अजगर आदि चूहे-खरगोश आदि को खाकर खेती को लाभ पहुँचाते हैं। पक्षी बीजों को बिखेरते हैं। कीड़े-पतिंगे आदि फूलों की प्रजनन-क्रिया में सहायक होते हैं जिससे फल, फूल और बीज पैदा होता है। पशु-पक्षियों के मल से भूमि उपजाऊ हो जाती है जिससे वनस्पतियों का विकास होता है। इस प्रकार पशु-पक्षी भी पर्यावरण को सन्तुलित करते हैं। मनुष्य को इनकी रक्षा करनी चाहिए।

सारांश यह कि आज विश्व भर में पर्यावरण प्रदूषण उत्पन्न हो गया है और मानव-जीवन के लिए खतरा बढ़ता जा रहा है। हर्ष की बात है कि विश्व के अनेक राष्ट्र पर्यावरण सन्तुलन के लिए सचेष्ट हो रहे हैं। भारत में भी राष्ट्रीय स्तर पर प्रयास किये जा रहे हैं। 1972 ई० में भारत सरकार ने 'राष्ट्रीय पर्यावरण आयोजन एवं समन्वय समिति' की स्थापना की है जिसके अन्तर्गत गंगा-यमुना जैसी पवित्र नदियों को प्रदूषण से मुक्त करने की योजना है एवं अन्य बहुत-सी योजनाएँ हैं। प्रदूषण को रोकने के लिए यदि वैदिक रीति से अग्नि हवन किया जाय तो आज के दूषित मानव-मस्तिष्क पर स्वास्थ्यदायी प्रभाव होगा ऐसा अमेरिकी मनोवैज्ञानिक **वेरी राधनेर** का कहना है। इससे फसल में भी वृद्धि होती है।

इसी तरह जल-स्रोतों को भी स्वच्छ करने से प्रदूषण से मुक्ति मिल सकती है। वनों के संरक्षण और परिवर्द्धन द्वारा भी पर्यावरण की सुरक्षा हो सकती है। इसके लिए नये वृक्षों का लगाना और हरे पेड़ों को काटने का पूर्ण निषेध होना चाहिए। साथ ही भयानक

विषाक्त परमाणु अस्त्रों पर पूर्ण प्रतिबन्ध होना चाहिए जिससे वे वातावरण को स्वच्छ बनायें एवं नरसंहार को रोकने में सहायक हो सकें।

पर्यावरण के प्रदूषण की समस्या केवल वैज्ञानिकों तक सीमित न होकर नागरिक के लिए भी भयानक है। अतः इसके निवारण के लिए प्रत्येक प्रबुद्ध एवं विवेकी नागरिक को तत्पर एवं सचेष्ट रहना चाहिए, तभी इस विश्वव्यापी समस्या से जूझना सम्भव होगा।

14. जनसंख्या विस्फोट (2019AB)

अन्य शीर्षक– • बढ़ती जनसंख्या • घटते संसाधन • जनसंख्या वृद्धि की समस्या • जनसंख्या नियोजन • बढ़ती आबादी : एक समस्या • जनसंख्या वृद्धि एवं पर्यावरण (2017AF) • बढ़ती जनसंख्या–घटती सुविधाएँ • भारत में बढ़ती जनसंख्या : एक विकराल समस्या (2016CF) • जनसंख्या वृद्धि की समस्या और उसके निराकरण के उपाय (2020ME) • जनसंख्या वृद्धि एक अभिशाप (2020MA)

रूपरेखा–(1) प्रस्तावना, (2) भारत में जनसंख्या वृद्धि के कारण, (3) जनसंख्या वृद्धि को नियन्त्रित करने के उपाय, (4) उपसंहार।

(1) प्रस्तावना–विद्वानों का ऐसा अनुमान है कि आज से लगभग 20-30 लाख वर्ष पूर्व मानव का इस धरा पर प्रादुर्भाव हुआ था। प्रारम्भ से 1830 ई० तक विश्व की कुल जनसंख्या केवल एक अरब थी, किन्तु अगले 100 वर्षों में ही अर्थात् 1930 ई० तक जनसंख्या दुगुनी हो गयी। तात्पर्य यह है कि जितनी जनसंख्या वृद्धि लाखों वर्षों में हुई उतनी वृद्धि इधर मात्र 100 वर्षों में ही हो गयी। जनसंख्या वृद्धि की यह गति और द्रुत हुई और अगली एक अरब की वृद्धि केवल 30 वर्षों में ही हो गयी। इस प्रकार 1960 ई० तक तीन अरब नर-नारी इस धरती पर हो गये और फिर अगले 15 वर्षों में ही अर्थात् 1975 ई० तक जनसंख्या बढ़कर 4 अरब हो गयी। विश्व जनसंख्या में पुनः 1 अरब की वृद्धि होने में केवल 12 वर्ष ही लगे। 2011 ई० के मध्य में सम्पूर्ण विश्व की जनसंख्या बढ़कर 121.04 करोड़ हो गयी थी।

भारत जनसंख्या वृद्धि की इस प्रतियोगिता में काफी तेज है। भारत का भौगोलिक क्षेत्रफल विश्व का लगभग 2.4 प्रतिशत है, किन्तु यहाँ विश्व की 17.7 प्रतिशत जनसंख्या पायी जाती है। जनसंख्या वृद्धि की दृष्टि से भारत का स्थान विश्व में चीन के बाद दूसरा है। भारत में 1872 ई० में पहली बार जनगणना की गयी थी, किन्तु जनसंख्या का क्रमवार आकलन 1881 ई० से किया जा रहा है। 1881 ई० में भारत की कुल जनसंख्या मात्र 23.7 करोड़ थी, जो 1 मार्च, सन् 1991 ई० को 84.63 करोड़ हो गयी और वर्ष 2011 ई० में 121 करोड़ से अधिक हो गयी। जनसंख्या के आकार के साथ देश की अर्थव्यवस्था प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित होती है। भारत जैसे विशाल जनसंख्यावाले देश में जहाँ जनसंख्या के आकार में निरन्तर एवं तीव्र गति से वृद्धि हो रही है, यह समस्या जटिलतर होती जा रही है। सामान्यतया जनसंख्या में वृद्धि की दर से काफी अधिक दर से यदि अर्थव्यवस्था में उन्नति नहीं होती है तो देश आर्थिक दृष्टि से काफी कमजोर हो जाता है (भारत के सन्दर्भ में यह अक्षरशः सही है) और अर्थव्यवस्था को सशक्त करने के सभी प्रयास, योजनाएँ एवं विनियोग अर्थहीन हो जाते हैं। ऐसी परिस्थिति में जनसंख्या के 'गुणात्मक पहलू' का भी अधःपतन हो जाता है।

(2) भारत में जनसंख्या-वृद्धि के कारण–भारत में जनसंख्या वृद्धि के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं–

(क) ऊँची जन्मदर–भारत में जन्मदर ऊँची है। इसका मुख्य कारण भारतीय जलवायु का गर्म होना है जिसके कारण यहाँ के लड़के-लड़कियाँ शीघ्र ही वयस्क हो जाते हैं।

(ख) मृत्यु दर में गिरावट–चिकित्सा सुविधाओं में वृद्धि होने तथा महामारीवाले संक्रामक रोगों पर नियन्त्रण हो जाने के कारण मृत्यु दर में तीव्रता से गिरावट आयी है।

(ग) प्रजनन क्षमता का अधिक होना–भारतीय स्त्रियों की प्रजनन क्षमता अधिक है अतः परिवार वृद्धि तीव्र गति से होती है।

(घ) विवाह एक सार्वभौमिक आवश्यकता–भारत में विवाह एक सार्वभौमिक आवश्यकता है। यहाँ सन्तान उत्पन्न करना एक धार्मिक कर्त्तव्य माना जाता है।

(ङ) निर्धनता–देश की अवनति दशा एवं निर्धनता के कारण भी भारत में जनसंख्या-वृद्धि को प्रोत्साहन मिला है। **एडम स्मिथ** ने कहा है, "दीनता और निर्धनता सन्तानोत्पत्ति के वायुमण्डल के अनुकूल होती है।"

(च) शिक्षा का अभाव–अधिकांश भारतीय अशिक्षित, रूढ़िवादी एवं अन्धविश्वासी हैं। वे सन्तान को 'प्रभु की देन' मानते हैं।

(छ) प्रचलित अन्धविश्वास–वंश चलाने एवं पितृ-विसर्जन हेतु पुत्र की कामना करना तथा अन्य धार्मिक अन्धविश्वास आदि के कारण परिवार में बच्चों की संख्या अधिक हो जाती है जो जनसंख्या वृद्धि में सहायक है।

(ज) शरणार्थियों का आगमन–देश की स्वतन्त्रता के बाद पाकिस्तान तथा बांग्लादेश से आनेवाले लाखों-करोड़ों शरणार्थियों के कारण भी देश की जनसंख्या में वृद्धि हुई है। पिछले कुछ वर्षों में विदेशों में बसे भारतीयों को वहाँ से निकाला जा रहा है और वे लोग भारत में आकर बस रहे हैं। इन देशों में लंका, मलाया, ब्रिटेन, म्याँमार, कीनिया व कनाडा प्रमुख हैं।

(3) जनसंख्या वृद्धि को नियन्त्रित करने के उपाय–देश में जनसंख्या वृद्धि को नियन्त्रित करने के लिए हमें तात्कालिक एवं दीर्घकालिक दोनों प्रकार के उपाय करने की आवश्यकता है। जनसंख्या को कम करने के लिए निम्नलिखित उपाय किये जाने चाहिए–

(क) शिक्षा का विस्तार–समाज में अशिक्षित व्यक्तियों की संख्या अधिक होने से जनसंख्या में वृद्धि होती है। अशिक्षित लोग न तो अपने भविष्य के बारे में सोच पाते हैं और न ही देश और संसार की समस्याओं तक पहुँच पाते हैं। शिक्षा के विस्तार से जनसंख्या नियन्त्रण में सहायता मिलती है। शिक्षा राष्ट्रीय समृद्धि और कल्याण की कुंजी है। शिक्षा के माध्यम से लोगों में जनसंख्या के प्रति नया दृष्टिकोण विकसित होता है। 1981-91 ई० में भारत में साक्षरता का प्रतिशत 52.1 तथा जनसंख्या वृद्धि 2.11 थी जबकि ब्रिटेन, जर्मनी, अमेरिका तथा सोवियत संघ में शिक्षित का प्रतिशत 99 है तथा जनसंख्या वृद्धि दर 0.1, 0.1, 0.8, 0.9 है। इससे सिद्ध होता है शिक्षा के विस्तार से जनसंख्या वृद्धि के प्रतिशत में कमी आती है।

(ख) जनसंख्या-शिक्षा को अनिवार्य विषय बनाना–विद्यालयों में जनसंख्या-शिक्षा अनिवार्य विषय के रूप में होनी चाहिए। जनसंख्या-शिक्षा का उद्देश्य परिवार नियोजन का ज्ञान देना ही नहीं है, अपितु यह एक ऐसा शैक्षिक कार्यक्रम है जिसका उद्देश्य परिवार, समुदाय, राज्य, देश और विश्व में जनसंख्या के विषय में शिक्षा प्रदान करना है।

(ग) परिवार कल्याण कार्यक्रम का प्रचार व प्रसार–जनसंख्या वृद्धि को नियन्त्रित करने के लिए परिवार कल्याण कार्यक्रम का प्रचार व प्रसार होना आवश्यक है। परिवार कल्याण कार्यक्रम का उद्देश्य दम्पत्ति द्वारा अपने बच्चों की संख्या सीमित रखने तथा दो बच्चों के जन्म के मध्य पर्याप्त समयान्तर रखने से है। अतः सरकार का उत्तरदायित्व है कि परिवार नियोजन का प्रचार करे तथा परिवार नियोजन की सभी सुविधाएँ ग्रामीण व पिछड़े क्षेत्रों में उपलब्ध कराये।

(घ) जनसंख्या को नियन्त्रित करने हेतु विज्ञापन व सन्देशवाहन के साधनों का उपयोग–जनसंख्या वृद्धि के कारणों, परिणामों एवं जनसंख्या को नियन्त्रित करने के उपायों का विज्ञापन एवं प्रचार रेडियो, दूरदर्शन व चलचित्रों के माध्यम से ग्रामीण व पिछड़े क्षेत्रों में करने की आवश्यकता है। इसके माध्यम से भी जनसंख्या को सीमित करने में सहायता मिलेगी।

(ङ) सीमित दाम्पत्य परिवारों को पुरस्कृत करना–जिन दाम्पत्य परिवारों के परिवार में एक या दो ही बच्चे हैं, ऐसे परिवारों को पुरस्कृत किया जाना चाहिए। इससे अन्य व्यक्तियों को भी सीमित परिवार की प्रेरणा मिलेगी।

(च) जनमानस में जनसंख्या के प्रति अनुकूल चेतना का विकास करना–जनसंख्या को नियन्त्रित करने के लिए हमें जनमानस में अनुकूल चेतना का विकास करना होगा। जन-जन में जनसंख्या के प्रति अनुकूल चेतना का विकास होने पर ही हम जनसंख्या वृद्धि पर नियन्त्रण पाने में सफल हो सकते हैं।

(4) उपसंहार-इस प्रकार पूर्णरूप से इस विषय पर विवेचन करने के पश्चात् स्पष्टतया यह ज्ञात होता है कि जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ और भी समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। इस समस्या के समाधान के लिए जनसंख्या नियोजन आयोग की स्थापना होनी चाहिए। लोगों में शिक्षा का प्रसार हो खासकर महिला-शिक्षा पर विशेष बल दिया जाय, परिवार कल्याण कार्यक्रमों को प्रभावशाली बनाया जाय और बाल-विवाहों की कठोरता से रोकथाम सुनिश्चित की जाय। इन कार्यों के अतिरिक्त देश के उत्पादन में वृद्धि के लिए भी नये कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करनी होगी।

15. क्रिकेट

अन्य शीर्षक–• क्रिकेट का आँखों देखा हाल (2019AA) • मेरा प्रिय खेल (2017AE) • किसी मैच का आँखों देखा वर्णन (2016CB, 19AE)

आज के युग में खेल और खिलाड़ियों की कमी नहीं है। लोग इसके पीछे इतने मतवाले हो गये हैं कि उन्हें समय और पैसे का अन्धाधुन्ध अपव्यय नजर नहीं आता। किन्तु क्रिकेट के लिए तो लोग दिवाने होकर घूमते रहते हैं। बच्चे भी हर गली, सड़क पर क्रिकेट खेलते देखे जा सकते हैं।

वैसे विदेशी खेलों में क्रिकेट का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह खेल अब इतना लोकप्रिय हो गया है कि विश्व के चारों ओर इसकी चर्चा है। पहले तो यह केवल मनोरंजन का साधन मात्र था किन्तु डॉ0 ग्रेस ने इसमें संशोधन करके इसको वर्तमान रूप दिया।

सर्वप्रथम यह खेल अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता के रूप में इंग्लैण्ड और आस्ट्रेलिया के बीच शुरू हुआ था। इसके पश्चात् यह सारे विश्व में फैल गया। वर्तमान में इंग्लैण्ड, आस्ट्रेलिया, वेस्टइण्डीज, न्यूजीलैण्ड, भारत, पाकिस्तान, साउथ अफ्रीका, बाँग्लादेश और श्रीलंका क्रिकेट खेलनेवाले प्रमुख देशों में हैं। आज हमारे देश में तो यह बड़ी उत्सुकता, उत्साह तथा जोश से खेला जाता है। क्रिकेट खेलने के लिए समतल मैदान की आवश्यकता होती है जिसके बीचोबीच 22 गज के अन्तर में 28 इंच ऊँचे डण्डे लगाकर विकेट बनाये जाते हैं। विकेटों के चार फीट की दूरी पर एक विकेट मैन की सीमा होती है, जहाँ खड़ा होकर खिलाड़ी खेलता है, ग्यारह खिलाड़ियों के दो दलों में खिलाने वाली टीम का एक सदस्य पूरी शक्ति से गेंद को फेंकता है और विकेटों का रक्षक बैट्समैन पूर्ण शक्ति से गेंद को बैट से मारता है। गेंद दूर जाने पर वह भागकर दूसरी ओर सीमा पर पहुँच जाय तो एक 'रन' गिना जाता है। इसके विपरीत यदि गेंद विकेटों को छू जाय तो दूसरा खिलाड़ी आता है; इस प्रकार खेल जारी रहता है। यदि गेंद निर्धारित सीमा से बाहर हो जाय तो खेलनेवाले खिलाड़ी को दौड़ना नहीं पड़ता और उसे 'छः रन' मिल जाते हैं। इस प्रकार जिस पक्ष के 'रन' अधिक हो जाते हैं वही पक्ष विजयी हो जाता है।

खेल प्रारम्भ होने पर सफेद कमीज और पैंट पहने हुए दोनों दल के खिलाड़ी हाथों में बल्ला थामे पैरों में विशेष प्रकार का पैड बाँधे हुए मैदान में आते हैं। दल का नायक (कप्तान) प्रत्येक खिलाड़ी को उसकी योग्यता के अनुसार मैदान पर खड़ा करता है। खिलाड़ियों को पूर्ण चतुरता तथा सावधानी से खेलते हुए अधिक संख्या में 'रन' बनाना होता है।

बल्लेबाज और विकेटकीपर दस्ताने इस्तेमाल करते हैं। पेट की रक्षा के लिए वे प्रोटेक्टर पहन लेते हैं। उनके जूतों के तल्ले रबर या स्पाइक के बने होते हैं। बल्ला 24 इंच लम्बा और सवा चार इंच चौड़ा होता है तथा गेंद लाल चमड़े की बनी साढ़े पाँच औंस वजन की होती है। खेल को नियन्त्रित करने के लिए दो अम्पायर (निर्णायक) होते हैं। खेल के लिए निश्चित समय तथा ओवर किये जाते हैं। टेस्ट मैचों में खेल पाँच दिन तक तथा एक दिवसीय मैच प्रायः पाँच घंटे होता है।

भारत का राष्ट्रीय खेल हॉकी है किन्तु आज क्रिकेट को ही सर्वाधिक महत्त्व दिया जा रहा है। 1932 ई0 से भारत ने टेस्ट खेलना शुरू किया है और क्रिकेट-जगत् में अपना स्थान बना लिया है। भारत में कुछ महान् खिलाड़ी उत्पन्न हुए, जिनका नाम क्रिकेट के इतिहास में सदा चमकता रहेगा। कपिलदेव, किरमानी, गावस्कर, अजहरुद्दीन, सचिन तेंदुलकर आदि वर्तमान समय के कीर्तिमान स्थापित करनेवाले खिलाड़ी हैं।

अब महिलाएँ भी क्रिकेट खेल में उत्साहपूर्वक भाग ले रही हैं। उनके लिए 1973 ई0 में भारतीय महिला क्रिकेट संस्था की स्थापना की गयी है। ये अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भी भाग ले रही हैं। इतना ही नहीं, सारे विश्व के क्रिकेट खेलनेवाले देशों में पुरुष और महिलाएँ इसमें समान रूप से भाग ले रहे हैं।

इस खेल को खेलने के लिए काफी अभ्यास की आवश्यकता होती है। यह खेल बड़ा ही खर्चीला है। इसके साज-सामान पर भी काफी व्यय होता है, अतः यह साधारण जन के खेलने योग्य नहीं है। वास्तव में इसे अमीरों का खेल कहा जा सकता है। किन्तु अब तो यह विद्यालयों में भी बड़े शौक से खेला जा सकता है।

इतना ही नहीं, आज हर घर, मुहल्ले, नगर आदि में क्रिकेट की धूम मची है। टी०वी०, रेडियो आदि के माध्यम से यह कार्यालयों, रेस्ट्रॉ, होटलों, पान की दुकानों तक में प्रवेश कर गया है और मैच के समय लोग आँख-कान लगाये दिखाई देते हैं। इसकी बढ़ती हुई लोकप्रियता क्रिकेट के उज्ज्वल भविष्य का स्पष्ट प्रमाण है। इस खेल से मनोरंजन के साथ-साथ हमारी नैतिक, शारीरिक और मानसिक शक्तियों का विकास होता है।

16. प्रदूषण और उसका प्रभाव (2017AC)

अन्य शीर्षक– • पर्यावरण प्रदूषण की समस्या : निदान (2018AA,AF) • पर्यावरण प्रदूषण (2019AC) • प्रदूषण : कारण एवं निवारण • प्रदूषण : एक अभिशाप • प्रदूषण की समस्या और समाधान

(2016CD,19AA,AC) • प्रदूषण तथा मानव समाज (2017AD) • पर्यावरण प्रदूषण और उसकी सुरक्षा के उपाय (2017AD) • पर्यावरण प्रदूषण : समस्या एवं रोकथाम (2018HA)

रूपरेखा–(1) प्रस्तावना, (2) प्रदूषण से तात्पर्य, (3) प्रदूषण के प्रकार– जल, वायु, ध्वनि, रासायनिक, रेडियोधर्मी प्रदूषण, (4) प्रदूषण रोकने के उपाय, (5) उपसंहार।

(1) प्रस्तावना–दैवीय गुणों के विकास के लिए आसुरी वृत्तियों के प्रतिरूप खर और दूषण को त्रेता में भगवान् राम ने मारा था, सप्तर्षियों ने डाकू रत्नाकर की हिंसा वृत्ति को मारकर महर्षि वाल्मीकि बनने का मार्ग प्रशस्त किया था। ये सब घटनाएँ मनुष्य के चित्रवृत्ति का प्रदूषण दूर करने की थी, तब भौतिक प्रदूषण नहीं के बराबर था। भगीरथ जो एक अच्छे अभियन्ता भी थे अपने पुरुषार्थ से गंगा को लोक-कल्याण के लिए भारत भूमि पर लाये थे। गंगा का जल रासायनिक दृष्टि से अमृत तुल्य है। उसमें कभी विकार नहीं होता। न वह सड़ता है बल्कि अपने औषधीय गुणों के कारण कई असाध्य रोगों के लिए रामबाण है। तभी तो कहा गया है 'औषधं जाह्नवी तोयं वैद्यो नारायणो हरिः' अर्थात् जब सब दवाएँ असफल हो जायँ तो गंगा जल एकमात्र औषधि है और नारायण एकमात्र वैद्य हैं। जल ही जीवन है।

(2) प्रदूषण का अर्थ–जीवन के लिए सन्तुलित वातावरण अत्यन्त आवश्यक है– वातावरण के इन घटकों में हानिकारक बाह्य घटकों के प्रवेश से वातावरण प्रदूषित हो जाता है जो सभी जीवधारियों के लिए हानिकारक हो जाता है। वातावरण के दूषित हो जाने को प्रदूषण कहा जाता है जो मुख्यतः जल, वायु, ध्वनि आदि में आज सर्वत्र व्याप्त है।

(3) प्रदूषण के प्रकार–

जल प्रदूषण–जल जीवन का पर्याय है (जल ही जीवन है)। बिना जल के जीवन असम्भव है। जल भी स्वच्छ और विकार रहित होना चाहिए। उद्योग-धन्धों का कचड़ा, रासायनिक तत्त्व आदि नदियों में मिलते रहते हैं। ये जमीन के अन्दर जाकर भूमिगत जल को प्रदूषित करते हैं।

वायु प्रदूषण–वायुमण्डल में विभिन्न प्रकार की गैसें अपनी आपसी क्रिया द्वारा सन्तुलित अवस्था में रहकर जीव-जगत् के लिए प्राण वायु ऑक्सीजन की निश्चित मात्रा सुनिश्चित करती हैं। वृक्षों के कटान, उद्योग-धन्धों के धुएँ और कचड़े से यह सन्तुलन बिगड़ जाता है। वायुमण्डल में ऑक्सीजन कम हो जाती है तथा कार्बन डाई-ऑक्साइड की मात्रा बढ़ जाती है जो हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। यही वायु प्रदूषण होता है।

ध्वनि प्रदूषण–अनेक प्रकार के वाहनों जैसे– मोटर, कार, बस, जेट विमान, ट्रैक्टर, आदि लाउडस्पीकर, बाजे, कारखानों के साइरन और मशीनों से होनेवाली आवाजों से ध्वनि प्रदूषण होता है। ध्वनि की ये लहरें जीव-धारियों की क्रियाओं को प्रभावित करती हैं। अत्यधिक तेज ध्वनि से लोगों में सुनने की क्षमता कम हो जाती है तथा नींद भी ठीक प्रकार से नहीं आती है, यहाँ तक कि कभी-कभी पागलपन का रोग भी उत्पन्न हो जाता है।

रासायनिक प्रदूषण–प्रायः कृषक अधिक फसलोत्पादन के लिए कीटनाशक और रोगनाशक दवाइयों व रसायनों का प्रयोग करते हैं, जो स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव डालते हैं। आधुनिक पेस्टीसाइड्स का अन्धा-धुन्ध प्रयोग भी लाभ के स्थान पर हानि पहुँचाता है।

रेडियोधर्मी प्रदूषण–परमाणु शक्ति उत्पादन केन्द्रों और परमाणविक परीक्षण से भी जलवायु तथा पृथ्वी का प्रदूषण होता है। परमाणु विस्फोट के स्थान पर तापक्रम इतना अधिक हो जाता है कि धातु तक पिघल जाती है। जो आज की पीढ़ी के लिए ही नहीं अपितु आनेवाली पीढ़ियों के लिए भी हानिकारक है।

(4) प्रदूषण रोकने के उपाय–प्रदूषण को रोकने के लिए व्यक्तिगत और सरकारी दोनों ही स्तरों पर प्रयास किये जाने आवश्यक हैं। प्रदूषण के निवारण एवं नियन्त्रण के लिए भारत सरकार ने कई महत्त्वपूर्ण कदम उठाये हैं, जैसे– वाहनों से निकलनेवाले धुएँ की जाँच की व्यवस्था करना, नये उद्योगों को लाइसेन्स दिये जाने से पूर्व उन्हें औद्योगिक कचरे के निस्तारण की समुचित व्यवस्था करना और इसकी पर्यावरण विशेषज्ञों से स्वीकृति प्राप्त करना अनिवार्य होगा। वनों की अनियन्त्रित कटाई को रोकने के लिए कठोर नियम बनाया जाना भारत सरकार की महत्त्वपूर्ण कार्यशैली है।

(5) उपसंहार–सरकार प्रदूषण की रोकथाम के लिए पर्याप्त सजग है। पर्यावरण के प्रति जागरूकता से ही हम और अधिक अच्छा एवं स्वस्थ जीवन जी सकेंगे और आनेवाली पीढ़ी को प्रदूषण के अभिशाप से मुक्ति दिला सकेंगे।

17. भ्रष्टाचार और उसे रोकने के उपाय

अन्य शीर्षक–• भ्रष्टाचार : एक राष्ट्रीय समस्या • भ्रष्टाचार समस्या और समाधान • भ्रष्टाचार उन्मूलन • भ्रष्टाचार : कारण और निवारण (2020MC) • भ्रष्टाचार दूर करने के उपाय • भ्रष्टाचार की समस्या • सामाजिक बुराई : भ्रष्टाचार • भ्रष्टाचार देश के विकास में बाधक है (2017AF)

रूपरेखा—(1) प्रस्तावना, (2) भ्रष्टाचार का अर्थ, (3) भारत में बढ़ता भ्रष्टाचार, (4) भ्रष्टाचार के कारण, (5) भ्रष्टाचार को दूर करने के उपाय, (6) उपसंहार।

(1) प्रस्तावना—भ्रष्टाचार किसी काल या स्थान से सम्बन्धित नहीं है। इसकी जड़ें समाज में गहराई तक गयी हुई हैं। आजकल भ्रष्टाचार के लिए दो बातें होना आवश्यक है–कोई कर्मचारी गैर-कानूनी रूप से कोई उपहार स्वीकार करता हो तथा द्वितीय यह कि वह कोई विशेष पद पर आसीन हो। भ्रष्टाचार रूपी यह नासूर आज बड़ी तेजी से पनप रहा है।

(2) भ्रष्टाचार का अर्थ-भ्रष्टाचारी व्यक्ति सदैव सेवा और सहयोग की भावना को बहुत ही नाटकीय ढंग से पेश करता है। देखने में वह भ्रष्ट कार्य से बहुत दूर होता है। 'सम्भ्रान्त' कहे जानेवाले व्यक्ति जो सामाजिक हितों को त्यागकर व्यक्तिगत स्वार्थों को प्रधानता देते हैं, अनुचित लाभों के उपयोग की आशा से समाज में कानून-विरोधी साधनों को अपनाते हैं तो यही सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार कहलाता है।

भ्रष्टाचार का अर्थ है–भ्रष्ट आचरण अर्थात् स्तर से गिरा हुआ आचरण। प्रत्येक देश, जाति, धर्म अथवा समाज के कुछ पूर्व निश्चित सामाजिक, धार्मिक, नैतिक, आदर्श व मूल्य होते हैं। इन्हें तोड़ना ही भ्रष्टाचार है। भ्रष्टाचार के उदाहरण हैं-रिश्वत, मुनाफाखोरी, मिलावट करना, भाई-भतीजावाद, आदि।

(3) भारत में बढ़ता भ्रष्टाचार—भारत में भ्रष्टाचार की समस्या देशव्यापी बन गयी है। जीवन का कोई क्षेत्र इससे अछूता नहीं रह गया है। स्वर्गीय विनोबा भावे के शब्दों में तो आज भ्रष्टाचार ही शिष्टाचार बन गया है। विभिन्न कार्यालयों में अपना काम करवाने के लिए, परमिट लेने के लिए, विदेश जाने के लिए, व्यापार में अधिक धन कमाने के लिए, यहाँ तक कि परीक्षा में पास होने के लिए या हत्या करके छूटने के लिए भी आज भ्रष्ट तरीकों का सहारा लिया जाता है। लोगों का नैतिक चरित्र गिर चुका है। राष्ट्रीय हितों को ताक पर रखकर केवल स्वार्थ पूर्ति की जा रही है।

(4) भ्रष्टाचार के कारण—भ्रष्टाचार के कुछ प्रमुख कारण निम्नवत् हैं :

(1) चुनाव प्रणाली का दोषयुक्त होना, (2) शिक्षा का गिरता स्तर, (3) निम्न कोटि का साहित्य, (4) चलचित्र, (5) दूरदर्शन, (6) पाश्चात्य प्रभाव, (7) भ्रष्ट मंत्री एवं शासक, (8) उच्च जीवन-स्तर की लालसा, (9) राष्ट्रीय चरित्र का अभाव।

(5) भ्रष्टाचार को दूर करने के उपाय—भ्रष्टाचार को दूर करने के उपाय निम्नलिखित हैं-

(क) उच्च शिक्षा का प्रसार—भारत में भ्रष्टाचार सबसे अधिक शिक्षित वर्ग में है। अतः सबसे पहले शिक्षित वर्ग के नैतिक स्तर को ऊँचा उठाया जाना चाहिए। बालकों को नैतिक व आध्यात्मिक शिक्षा के साथ-साथ धार्मिक शिक्षा भी अवश्य दी जानी चाहिए।

(ख) समाज-कल्याण संस्थाओं की स्थापना—भ्रष्टाचार को रोकने के लिए समाज-कल्याण संस्थाएँ सहयोगी सिद्ध हो सकती हैं। अतः आवश्यकता इस बात की है कि प्रत्येक नगर व गाँव में ये संस्थाएँ स्थापित की जायँ।

(ग) राजनीतिक नेताओं के नैतिक स्तर को ऊँचा उठाना—भ्रष्ट राजनेताओं के द्वारा भी कई प्रकार के भ्रष्टाचार होते हैं। मतदान में तो अनेक भ्रष्ट तरीके अपनाये जाते हैं। जो व्यक्ति चुनाव जीतकर सत्ता में आ जाते हैं वे चुनाव प्रचार में व्यय की गयी राशि को अनुचित साधनों से वसूलने का प्रयास करते हैं। इसी प्रकार अपने लाभों को देखते हुए लोग दल भी बदल लेते हैं। अतः सरकार द्वारा इस प्रकार के कानून बनाये जायँ कि नेता दल न बदल सकें। प्रत्येक नेता सच्चा, ईमानदार, कर्त्तव्यनिष्ठ और जनता का हित चाहनेवाला हो।

(घ) प्रशासकीय सुधार—प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार को समाप्त करना आवश्यक है। जो व्यक्ति रिश्वत लेते हैं उन्हें तुरन्त नौकरी से हटाया जाना चाहिए। प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए कर्मचारियों को पर्याप्त वेतन दिया जाना चाहिए।

(ङ) पुलिस विभाग में सुधार—पुलिस विभाग में व्याप्त भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए आवश्यक है कि शिक्षित व्यक्तियों को पुलिस सेवाओं में जाने के लिए प्रेरित किया जाय। उन्हें इस प्रकार की शिक्षा देनी चाहिए कि उनका कर्त्तव्य जनता की भलाई के लिए कार्य करना है।

(च) दण्ड व्यवस्था में सुधार—भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए आवश्यक है कि दण्ड व्यवस्था में सुधार किया जाय। जो सरकारी कर्मचारी भ्रष्टाचार में लिप्त पाये जायँ उनका स्थानान्तरण करने के स्थान पर उन्हें नौकरी से निकाल दिया जाना चाहिए अथवा उनके विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की जानी चाहिए। ऐसा करने से ही व्यक्तियों के मन में भ्रष्टाचार के प्रति भय उत्पन्न होगा और वे गलत कार्यों से दूर रहेंगे।

(6) उपसंहार—भ्रष्टाचार देश की सबसे गम्भीर समस्या है। देश के अस्तित्व के लिए यह सबसे बड़ी चुनौती है। अपने देश की रक्षा, प्रगति व राष्ट्रीय मूल्यों को बचाये रखने के लिए इस समस्या का युद्ध स्तर पर समाधान आवश्यक है।

18. भारत में आतंकवाद

अन्य शीर्षक–• आतंकवाद एवं देश सुरक्षा • आतंकवाद निवारण

रूपरेखा—(1) प्रस्तावना, (2) आतंकवाद का अर्थ, (3) आतंकवाद के कारण, (4) आतंकवाद के परिणाम, (5) आतंकवाद को रोकने के उपाय, (6) उपसंहार।

(1) प्रस्तावना—परिवर्तन मानव स्वभाव की चिर-परिचित प्रक्रिया है। इसी परिवर्तन के फलस्वरूप आज हमारे देश में चारों तरफ आतंकवाद व अलगाववाद की आँधी आयी हुई है। जब भी किसी राष्ट्र में निजी स्वार्थ अधिक पनपता है तो इसी प्रकार की घटनाएँ जन्म लेती हैं। आतंकवाद में अपने हिंसात्मक कारनामों से जनता के अन्दर इतना भय उत्पन्न कर दिया जाता है कि वह बौखला उठती है। भारत में कुछ इस्लामिक संगठनों एवं विदेशी आतंकवादियों द्वारा विस्फोटों, हत्याओं का सिलसिला आज भी जारी है। इन कारनामों को अंजाम देने के लिए आई० सी० सी०, जे० के० एल० एफ०, लश्कर-ए-तोएबा जैसी संस्थाएँ भारत की सुख-शान्ति को खत्म करना चाहती हैं।

(2) आतंकवाद का अर्थ—अपने निजी राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए विभिन्न बाह्य शक्तियाँ जब किसी राष्ट्र में व्यापक स्तर पर जनता में अपने भयानक कारनामों के द्वारा भय, असन्तोष तथा असुरक्षा की भावना को फैला देती हैं, तब उस स्थिति को हम आतंकवाद कहते हैं।

(3) आतंकवाद के कारण—(अ) बाह्य शक्तियों के प्रभाव, (ब) शिक्षा का अभाव, (स) उचित पथ प्रदर्शन का अभाव, (द) आजीविका की समस्या, (य) प्रशासनिक अकुशलता, (र) राजनीतिक कुचक्रों का परिणाम आदि।

(4) आतंकवाद के परिणाम—(अ) दंगे-फसाद को बढ़ावा, (ब) सरकार के प्रति अविश्वास की भावना का उदय, (स) असुरक्षा की भावना का उदय, (द) राष्ट्रीय एकता में बाधक, (य) राष्ट्र की आर्थिक स्थिति असन्तोषजनक।

(5) आतंकवाद को रोकने के उपाय—आतंकवाद से लड़ने का कोई भी नायाब तरीका हमारा देश अभी तक ईजाद नहीं कर पाया है। पिछले कई सालों से देश आतंकवाद की चपेट में है लेकिन इस पर अभी तक किसी भी तरीके से काबू नहीं पाया जा सका है। आतंकवाद को दूर करने के लिए सरकार, पुलिस, अर्द्ध-सैनिक बल, सेना की मदद ले रही है किन्तु आतंकवाद को रोकने में पूर्णतः सफलता नहीं मिल सकी है। फिर भी हम कुछ उपायों को निम्न रूप से समझा सकते हैं, जैसे-(अ) उचित नैतिक शिक्षा, (ब) बाह्य एवं विध्वंसक शक्तियों का कठोरता से दमन, (स) जनता में जागरूकता की भावना पैदा करना, (द) सीमाओं पर कठोर नियन्त्रण, (य) राजनीतिक एकता आदि।

(6) उपसंहार—भारत सरकार द्वारा अपनायी गयी सकारात्मक नीति का अन्तर्राष्ट्रीय देशों ने स्वागत किया है। भारत ने कहा है कि आतंकवादी गतिविधियों को पाकिस्तान पहले बन्द करता है तो भारत शान्तिवार्त्ता के लिए हमेशा तैयार है। उसने कहा है कि किसी भी समस्या का हल परमाणु बम का प्रयोग अथवा युद्ध करने से नहीं होता है।

19. नारी का महत्त्व

अन्य शीर्षक– • नारी का सशक्तीकरण • नारी शिक्षा का महत्त्व

रूपरेखा-(1) प्रस्तावना, (2) समाज में नारी का स्थान–प्राचीन काल में, मध्य काल में, आधुनिक काल में, (3) नारी का महत्त्व–पाश्चात्य देशों में, भारत में, (4) नारी जागरण व नारी शिक्षा हेतु प्रयास–संविधान प्रदत्त अधिकार, विभिन्न सरकारी संगठन, गैर सरकारी संस्थाएँ आदि के द्वारा, (5) उपसंहार।

(1) प्रस्तावना—यह सृष्टि निरन्तर चलती रहे इसके लिए स्रष्टा ने सभी जीवधारियों में नर और मादा बनाये और तद्नुरूप शरीर का गठन किया। दोनों के परस्पर सहयोग से ही जीवन की गाड़ी सरलता और सुगमता से चलती रहती है। दोनों ही गाड़ी के दो समान ऊँचाई के पहिए हैं–कोई कम-ज्यादा नहीं। दोनों के ही कर्त्तव्य, अधिकार, कार्यक्षेत्र सुनिश्चित हैं और वैसे ही स्वभाव प्रदत्त किये हैं स्रष्टा ने। नारी कोमल, दयालु, संकोची, सेवाव्रती है तो पुरुष कठोर, अधिक परिश्रमी है।

(2) समाज में नारी का स्थान—भारतीय दर्शन, संस्कृति, परम्पराओं में नारी को पुरुषों से भी ऊँचा स्थान दिया गया है 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता', नारी देवी है, वह माँ भी है, बहन भी है और पुत्री भी। पर स्त्री को माता कहा गया है। 'मातृवत् परदारेषु' इतने उच्च स्थान पर भारतीय वाङ्मय में नारी का बखान किया गया है जबकि पाश्चात्य देशों में मात्र उसे उपभोग की वस्तु अथवा सुविधा की साझीदार माना गया है।

प्राचीन काल में नारी शिक्षित, विदुषी, कर्त्तव्यपरायणा होती थी। ज्ञान-विज्ञान, अध्यात्म, लोकाचार किसी भी क्षेत्र में पुरुष से कम नहीं थी। गार्गी, अपाला, अरुन्धती आदि तो प्रवीणा थी हीं, सावित्री जैसी स्त्री भी थीं जो साक्षात् यमराज से अपने पति सत्यवान के प्राण वापस लायी थी। ऋषि आश्रम हो या राजमहल, कंगाल हो या धनवान की कोठी, नारी सर्वत्र ही पूज्य थी।

(3) नारी का महत्त्व—मध्य काल आते-आते नारी का स्थान पुरुषों की स्वार्थपरता, काम-लोलुपता आदि के कारण न केवल गिर गया बल्कि उसके अधिकारों पर कुठाराघात होने लगा, कार्यक्षेत्र सीमित हो गया, नारी को गन्दे कपड़े की तरह बरता जाने लगा। साहित्यकार भी नारी को दोषों की खान के रूप में देखने लगे थे। अंग्रेजी नाटककार कवि तो यहाँ तक कह गया कि Frailty! Thy name is woman'. ('व्यभिचार, दुर्बलता! तेरा नाम ही औरत है) विदेशियों की काम-लोलुप निगाहों से बचने के लिए पर्दा-प्रथा प्रारम्भ हुई। नारी घर की चारदीवारी में कैद हो गयी। शिक्षा के प्रति भी नारी को निरुत्साहित किया गया।

(4) नारी जागरण व नारी शिक्षा हेतु प्रयास—आधुनिक काल आते-आते जहाँ नारी को पैरों की जूती समझा जाता था, अनेक अत्याचार उन पर होते थे वहाँ अब नारी जागरण, नारी स्वातन्त्र्य का बिगुल बज उठा। स्वामी दयानन्द के आर्य समाज ने नारी शिक्षा का मन्त्र फूँका, राजा राममोहन राय ने सती-प्रथा रुकवाई, महात्मा गांधी ने नारी-उत्थान का नारा दिया, अनेक समाजसेवी व्यक्तियों ने पतित अबलाओं, अपहृताओं और वेश्याओं का उद्धार किया। सरकार ने भी संविधान द्वारा नारी को शिक्षा प्राप्त करने, नौकरी करने आदि के समान अधिकार और अवसर प्रदान किये हैं। महिला सुधार हेतु नारी निकेतन खोल दिये हैं। आज की नारी डॉक्टरी, इन्जीनियरी, अध्यापकी, लिपिकी आदि क्षेत्रों में तो लगी ही हैं, पुलिस, रक्षा विभागों आदि में भी उच्च पदस्थ रही हैं। किरण बेदी, बछेन्द्री पाल (पर्वतारोहण में) तथा प्रेमलता अग्रवाल अपना उच्च स्थान प्राप्त कर चुकी हैं। दहेज-प्रथा को भी समाप्त करने के लिए कानून बन चुका है किन्तु समाज ने उसे अभी पूर्णरूपेण नहीं अपनाया है। अतः आये दिन वधुओं को जलाने, घर से निकाल बाहर करने की घटनाएँ देखने-सुनने को मिलती रहती हैं।

(5) उपसंहार—यद्यपि सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं, व्यक्तियों द्वारा महिला उत्थान के लिए अनेक प्रयास किये जा रहे हैं और किये जाते रहेंगे तथापि जब तक समाज अधिक जागरूक नहीं होगा और नारियों के प्रति असहिष्णुता का दृष्टिकोण नहीं त्यागेगा तब तक पर्याप्त सफलता नहीं मिलेगी। पुरुषों द्वारा महिलाओं में फूट कराने की कोशिश अब भी सवर्ण, असवर्ण, अगड़े-पिछड़े वर्ग आदि के माध्यम से हो रही है। आज आवश्यकता है कि पुरुष समाज अपने दृष्टिकोण को बदले, नारी को सच्चे हृदय से ऊपर उठाकर समकक्ष लाने का प्रयास करे और उसकी प्रगति में अड़ंगे डालने से बाज आये।

20. वनों का महत्त्व

अन्य शीर्षक–• वृक्ष हमारे जीवन साथी • वृक्ष धरा के आभूषण हैं (2017AF) • वृक्षों का महत्त्व • हमारी वन सम्पदा • वृक्षारोपण • वृक्षों की रक्षा : पर्यावरण सुरक्षा (2020MG) • वृक्ष : मानव के सच्चे हितैषी (2016CD) • वृक्षारोपण का महत्त्व (2017AB,20MC,MA)

रूपरेखा-(1) प्रस्तावना, (2) वनों का आर्थिक महत्त्व–(क) प्रत्यक्ष लाभ–(अ) लकड़ी की प्राप्ति, (ब) कच्चे माल की प्राप्ति, (स) लघु उद्योगों की स्थापना, (द) व्यक्तियों के लिए रोजगार, (य) पशुओं का चारा, (र) राजस्व की प्राप्ति, (ल) विदेशी मुद्रा की प्राप्ति, (व) आयुर्वेदिक एवं अन्य जड़ी-बूटियों की प्राप्ति। (ख) अप्रत्यक्ष लाभ-(अ) जलवायु पर नियन्त्रण, (ब) पर्यावरण सन्तुलन, (स) वर्षा में सहायक, (द) रेगिस्तान के प्रसार पर रोक, (य) बाढ़ नियन्त्रण में सहायता, (र) भूमि कटाव पर रोक, (ल) पानी के स्तर में वृद्धि, (3) वनों के विकास के लिए सरकारी प्रयास, (4) उपसंहार।

(1) प्रस्तावना- **''जीव-जगत् के रक्षक हैं वन, करते दूर प्रदूषण।**
धन-सम्पत्ति स्वास्थ्य दायक है, ये जगती के भूषण।''

हमारा देश प्राचीन काल से वन प्रधान रहा है। वन एक ऐसा गोदाम है जहाँ से हमें भोजन बनाने के लिए ईंधन, फर्नीचर के लिए लकड़ी व कागज के लिए लुग्दी की प्राप्ति होती है। वन प्राकृतिक ऊर्जा के मुख्य स्रोत है। किसी भी देश की आर्थिक विकास एवं उसकी समृद्धि के लिए वन का महत्त्वपूर्ण स्थान है। वन बाढ़ पर नियन्त्रण करके भूमि के कटाव को भी रोकती है।

(2) वनों का आर्थिक महत्त्व-पं0 जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में ''एक उगता हुआ वृक्ष राष्ट्र की प्रगति का जीवित प्रतीक है।'' भारतीय अर्थव्यवस्था में वनों का विशेष महत्त्व है। वनों के महत्त्व को प्रदर्शित करते हुए **जे0 एस0 कॉलिन्स** ने लिखा है-**''वृक्ष पर्वतों को थामे रखते हैं। वे तूफानी वर्षा को दबाते हैं तथा नदियों को अनुशासन में रखते हैं। वे झरनों को बनाये रखते हैं तथा पक्षियों का पोषण करते हैं।''** इस प्रकार वनों से हमें अनेक प्रकार के लाभ प्राप्त होते हैं। इनमें से कुछ लाभों का विवरण इस प्रकार है :

(क) प्रत्यक्ष लाभ—वनों से होनेवाले कुछ प्रत्यक्ष लाभों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

(अ) लकड़ी की प्राप्ति-वनों से हमें अनेक प्रकार की लकड़ियाँ प्राप्त होती हैं। भारतीय वनों से लगभग 550 प्रकार की ऐसी लकड़ियाँ प्राप्त होती हैं जो व्यापारिक दृष्टि से बहुत उपयोगी हैं। इनमें से साल, सागौन, चीड़, देवदार, शीशम, आबनूस तथा चन्दन आदि की लकड़ियाँ मुख्य हैं।

(ब) कच्चे माल की प्राप्ति-वनों से हमें उद्योगों के लिए कच्चे माल की प्राप्ति होती है। वनों से हमें लाख, चपड़ा, गोंद, शहद, कत्था, छालें, बांस एवं बेंत, जड़ी-बूटियाँ, जानवरों के सींग, खाल इत्यादि प्राप्त होते हैं।

(स) लघु उद्योगों की प्राप्ति-वनों से प्राप्त वस्तुओं का उपयोग करके भारत में अनेक लघु उद्योग जैसे-टोकरियाँ एवं बेंत बनाना, रस्सी बंटना, बीड़ी बांधना, गोंद तथा शहद एकत्र करना इत्यादि हैं।

(द) व्यक्तियों के लिए रोजगार-ऐसा अनुमान है कि भारत में लगभग 7.5 करोड़ व्यक्तियों की जीविका वनों पर आश्रित है।

(य) पशुओं को चारा-पशुओं के लिए बड़ी मात्रा में चारा हमें वनों से ही प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त वन पशु-पक्षियों के पोषण भी करते हैं।

(र) राजस्व की प्राप्ति-सरकार को वनों का उपयोग करने से राजस्व तथा नीलामी-रायल्टी के रूप में करोड़ों रुपये की प्राप्ति होती है।

(ल) विदेशी मुद्रा की प्राप्ति—विभिन्न वन्य पदार्थों जैसे लाख, तारपीन का तेल, चन्दन का तेल एवं चन्दन की लकड़ी और उनसे बनी वस्तुओं का निर्यात करके प्रतिवर्ष लगभग 50 करोड़ की विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है।

(व) आयुर्वेदिक एवं अन्य जड़ी-बूटियों की प्राप्ति—भारतीय वनों से अनेक प्रकार की जड़ी-बूटियों की प्राप्ति होती हैं, जिनसे कई प्रकार के रोगों का उपचार किया जाता है।

(ख) अप्रत्यक्ष लाभ—वनों से हमें अनेक प्रकार के अप्रत्यक्ष लाभ होते हैं, जो इस प्रकार हैं :

(अ) जलवायु पर नियन्त्रण-वातावरण के तापक्रम, नमी तथा वायु-प्रवाह को नियन्त्रित करके वन जलवायु को सन्तुलित

बनाये रखते हैं। वन तूफानी हवाओं को रोककर उनका वेग कम करते हैं जिससे उनसे होने वाले विनाश से रक्षा होती है।

(ब) पर्यावरण सन्तुलन—वन कार्बन डाई-ऑक्साइड का शोषण कर अपना भोजन बनाते हैं, जबकि अन्य जीवधारी कार्बन डाई-ऑक्साइड छोड़ते हैं। इस प्रकार वातावरण में कार्बन डाई-ऑक्साइड की मात्रा बढ़ नहीं पाती और पर्यावरण सन्तुलन बना रहता है।

(स) वर्षा में सहायक—वन वर्षा करने में मदद करते हैं अतः वनों को वर्षा का संचालक कहा जाता है। वनों से वर्षा होती है और वर्षा से वन बढ़ते हैं।

(द) रेगिस्तान के प्रसार पर रोक—वन रेगिस्तान के प्रसार को रोकते हैं। वे तेज आन्धियों को रोककर, वर्षा को आकर्षित करके तथा मिट्टी के कणों को अपनी जड़ों में बांधकर रेगिस्तानों के प्रसार पर रोक लगाते हैं।

(य) बाढ़ नियन्त्रण में सहायता—वनों से बाढ़ नियन्त्रण में सहायता मिलती है। भूमि का कटाव कम होने से नदियों और तालाबों में मिट्टी का भराव नहीं होता और बाढ़ की सम्भावना कम हो जाती है।

(र) भूमि कटाव पर रोक—वनों की जड़ें भूमि कणों को बांधे रखती हैं जिससे वर्षा का पानी भूमि को नहीं काट पाता है। इससे भूमि कटाव रुकता है।

(ल) पानी के स्तर में वृद्धि—वृक्षों की जड़ों द्वारा रोका गया पानी भूमि में अन्दर चला जाता है, जिससे भूगर्भीय पानी के स्तर में वृद्धि होती है।

(3) वनों के विकास के लिए सरकारी प्रयास—देश की वन-सम्पदा को देखते हुए भारत सरकार ने इसके विकास के लिए अनेक महत्त्वपूर्ण कदम उठाये हैं। 1956 ई० में 'अधिक वृक्ष लगाओ आन्दोलन' आरम्भ किया गया जिसे 'वन महोत्सव' का नाम दिया गया। 1965 ई० में सरकार ने 'केन्द्रीय वन आयोग' की स्थापना की। वनों के विकास के लिए देहरादून में 'वन अनुसन्धान संस्थान' स्थापित किया गया है।

वनों की अनियन्त्रित कटाई को रोकने के लिए विभिन्न राज्यों में 'वन निगम' बनाये गये हैं।

(4) उपसंहार—प्राचीन काल से ही वन मनुष्य के संगी एवं साथी बने रहे हैं। जब मनुष्य जंगलों में रहता था तब वह पूरी तरह से वनों पर ही आश्रित रहता था। उसके द्वारा प्रदत्त फल, फूल, कन्दमूल आदि से ही अपना पेट भरता था। इस प्रकार वन तथा मनुष्य का नाता बहुत पुराना है।

21. मेरा प्रिय कवि : तुलसीदास (2017AB)

अन्य शीर्षक–• मेरा प्रिय कवि (2020MB) • प्रिय कवि का वर्णन • गोस्वामी तुलसीदास (2016CP)

रूपरेखा—(1) प्रस्तावना, (2) जन्म की परिस्थितियाँ, (3) तुलसीदास : एक लोकनायक, (4) तुलसी के राम, (5) तुलसीदास की निष्काम भक्ति-भावना, (6) धर्म-समन्वय की भावना पर बल, (7) उपसंहार।

(1) प्रस्तावना—मैं यह नहीं कहता कि मैंने बहुत अधिक अध्ययन किया है, तथापि भक्तिकालीन कवियों में कबीर, सूर और तुलसी तथा आधुनिक कवियों में प्रसाद, पन्त और महादेवी के काव्य का अध्ययन अवश्य किया है। इन कवियों का अध्ययन करते समय तुलसी-काव्य की अलौकिकता के कारण मेरा मस्तक उनके सामने सदैव नत होता रहा है।

(2) जन्म की परिस्थितियाँ—तुलसीदास का जन्म 1535 ई० में बाँदा जिले के राजापुर गाँव में हुआ था। कुछ लोग एटा जिले के सोरो नामक कस्बे को उनका जन्म स्थान मानते हैं। तुलसीदास जी का जन्म बहुत ही विषम परिस्थितियों में हुआ था। हिन्दू समाज अशक्त होकर विदेशी चंगुल में फंस गया था। हिन्दू समाज की संस्कृति और सभ्यता पर निरन्तर आघात हो रहे थे। इस युग में मन्दिरों का विध्वंस और ग्रामों व नगरों का विनाश हो रहा था। अच्छे संस्कार समाप्त हो रहे थे। तलवार के बल पर हिन्दुओं को मुसलमान बनाया जा रहा था। इस समय दिग्भ्रमित जनता को ऐसे नाविक की जरूरत थी, जो उनकी जीवन-नौका को संभाले।

गोस्वामी तुलसीदास ने निराशा के अन्धकार में डूबी हुई जनता को सामने भगवान् राम का लोकमंगलकारी स्वरूप प्रस्तुत किया।

(3) तुलसीदास : एक लोकनायक—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का कथन है-"लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय कर सके, क्योंकि भारतीय समाज में नाना प्रकार की परस्पर विरोधी संस्कृतियाँ, जातियाँ, आचारनिष्ठा और विचार-पद्धतियाँ प्रचलित हैं। बुद्धदेव समन्वयकारी थे। 'गीता' ने समन्वय की चेष्टा की और तुलसीदास भी समन्वयकारी थे।"

(4) तुलसी के राम—तुलसी उन राम के उपासक थे जो सच्चिदानन्द परमब्रह्म थे तथा जिन्होंने भूमि का भार हरण करने के लिए पृथ्वी पर अवतार लिया था-

जब-जब होई धरम कै हानी। बाढ़हि असुर अधम अभिमानी॥
तब-तब प्रभु धरि विविध सरीरा। हरहिं कृपा-निधि सज्जन पीरा॥

तुलसीदास ने अपने काव्य में सभी देवी-देवताओं की स्तुति की है, लेकिन अन्त में वे यही कहते हैं-

मांगत तुलसीदास कर जोरे। बसहिं रामसिय मानस मोरे॥

निम्न पंक्तियों में भगवान् राम के प्रति उनकी अनन्यता और भी अधिक पुष्ट हुई है-

एक भरोसो एक बल एक आस विस्वास।
एक राम घनस्याम हित चातक तुलसीदास॥

(5) तुलसीदास की निष्काम भक्ति-भावना—सच्ची भक्ति वही है, जिसमें आदान-प्रदान का भाव नहीं होता है। भक्त के लिए भक्ति का आनन्द ही उसका फल है। इस सन्दर्भ में तुलसी का तो यही कथन है-

मो सम दीन न दीन हित तुम्ह समान रघुवीर।
अस विचारि रघुवंस मनि, हरहु विषम भव पीर॥

(6) धर्म-समन्वय की भावना पर बल—तुलसीदास के काव्य में सबसे बड़ी विशेषता धर्म-समन्वय है। उनके काव्य में धर्म-समन्वय के निम्नलिखित रूप दृष्टिगोचर होते हैं : (1) सगुण-निर्गुण का समन्वय, (2) कर्म, ज्ञान एवं भक्ति का समन्वय, (3) युगधर्म समन्वय, (4) सामाजिक समन्वय, (5) साहित्यिक समन्वय, (6) सम्प्रदायगत समन्वय।

(7) उपसंहार—तुलसी का काव्य उनके व्यक्तित्व के समान ही उच्च आदर्शों को समेटे हुए है। यही कारण है कि तुलसी जितने प्रासंगिक अपने समय में थे उससे भी कहीं अधिक प्रासंगिक आज हैं। इसका स्पष्ट उदाहरण यह है कि विश्व की जितनी भाषाओं में 'रामचरितमानस' का अनुवाद हुआ उतना अन्य किसी भी काव्य ग्रन्थ का नहीं।

22. मेरी प्रिय पुस्तक : 'श्रीरामचरितमानस' (2017AA,20MC,ME)

रूपरेखा—(1) प्रस्तावना, (2) ग्रन्थ-परिचय, (3) श्रीरामचरितमानस का वर्ण्य विषय, (4) श्रीरामचरितमानस की विशेषताएँ, (5) श्रीरामचरितमानस का महत्त्व, (6) उपसंहार।

(1) प्रस्तावना—जिस प्रकार आकाश में चाहे कितने ही तारे क्यों न चमकते हों परन्तु व्यक्ति की आँखें ध्रुव तारे को ही खोजती हैं। इसी प्रकार हिन्दी साहित्य की सैकड़ों पुस्तकों में मुझे गोस्वामी तुलसीदास कृत 'श्रीरामचरितमानस' सबसे अधिक प्रिय है। यह वह ग्रन्थ है जो जीवन के हमें प्रायः प्रत्येक क्षेत्र में दिशा प्रदान करता है। आज से लगभग चार सौ वर्ष पूर्व गोस्वामी तुलसीदास ने जिस 'श्रीरामचरितमानस' की रचना की, वह आज भी जन-जन में एक लोकप्रिय ग्रन्थ के रूप में अपना अस्तित्व बनाये हुए है।

(2) ग्रन्थ-परिचय—'श्रीरामचरितमानस' में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के पावन चरित्र की झाँकी प्रस्तुत की गयी है। 1631 ई० में इसकी रचना आरम्भ की गयी और 1633 ई० में इसे पूर्णता प्रदान की। इसमें सात काण्ड हैं, जिनका क्रम इस प्रकार है-बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड और उत्तरकाण्ड। यह एक ऐसा ग्रन्थ है जिसमें पाठक को सर्वांगीण विकास के लिए सुसंस्कारित सामग्री मिलती है।

(3) श्रीरामचरितमानस का वर्ण्य विषय—'श्रीरामचरितमानस' की कथा श्री रामचन्द्र जी के जीवन पर आधारित है। इसकी कथा का मूल-स्रोत महर्षि वाल्मीकि की 'संस्कृत रामायण' है। अपने गुरुजी से भी श्री रामचन्द्र जी के चरित्र की कथा तुलसी ने सुनी थी किन्तु तब वे बालक थे-

''मैं पुनिनिज गुरुसन सुनी कथा सु सूकर खेत।
जानि परी नहिं बालपन तब अति रहेउ अचेत।''

तुलसीदास जी ने इसे अपनी कला व प्रतिभा द्वारा मौलिकता प्रदान की है। इसमें रावण पर राम की विजय दिखाते हुए सत्य, न्याय और धर्म की स्थापना का प्रयास तुलसी ने किया है। इस महाकाव्य में राम के शील, सौन्दर्य, शक्ति और मर्यादा का

चित्रण है।

(4) श्रीरामचरितमानस की विशेषताएँ—'श्रीरामचरितमानस' की प्रमुख विशेषताएँ निम्नवत् हैं :

(अ) सदाचार के सूत्र, (ब) वेद और पुराणों का संगम, (स) श्रीरामचरितमानस में विश्वप्रेम के सूत्र, (द) जीवन के आदर्श, (य) नीति, (र) रामराज्य की कल्पना, (ल) समन्वय की भावना, (व) भक्ति भावना, (श) उच्चकोटि का महाकाव्य आदि।

(5) श्रीरामचरितमानस का महत्त्व—रामचरितमानस हिन्दी साहित्याकाश का उज्ज्वलतम नक्षत्र है। शायद ही कोई ग्रन्थ ऐसा हो (गीता को छोड़कर) जिसको मानस जैसा पवित्र मानकर हर हिन्दू घर में न पूजा जाता हो। जहाँ इसका सामाजिक व साहित्यिक महत्त्व है, वहीं धार्मिक महत्त्व भी कम नहीं है। इसकी एक-एक चौपाई सिद्धमन्त्र है। विद्वान् लोग अपने भाषणों में इसकी सूक्तियों का प्रयोग कर उसे प्रभावशाली बनाते हैं। इसकी अनेक सूक्तियाँ सामाजिक, पारिवारिक और राजनीतिक जीवन में वेद वाक्यों का कार्य करती हैं।

इसकी महत्ता का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि विश्व की सबसे अधिक भाषाओं में इसका अनुवाद हुआ है। हिन्दुओं में इसका वही महत्त्व है जो ईसाइयों में 'बाईबिल' तथा मुसलमानों में 'कुरान' का है।

(6) उपसंहार—'श्रीरामचरितमानस' विश्व-साहित्य की अनुपम कृति है। 'श्रीरामचरितमानस' का स्थान हिन्दी-साहित्य में ही नहीं अपितु विश्व-साहित्य में भी स्मरणीय है। यह आदर्श गृहस्थ जीवन, आदर्श राजधर्म, आदर्श पारिवारिक जीवन, आदर्श पातिव्रत धर्म, आदर्श मातृ धर्म के साथ-साथ सर्वोच्च भक्ति, ज्ञान, त्याग, वैराग्य तथा सदाचार की शिक्षा देनेवाला ग्रन्थ है। आज भी विश्व के मानव जीवन-निर्माण की सर्वाधिक प्रेरणा इसी ग्रन्थ से प्राप्त करते हैं।

23. 'परहित सरिस धर्म नहिं भाई' (परोपकार) (2017AA,AF)

अन्य शीर्षक–• परोपकार ही जीवन है • परोपकार का महत्त्व

रूपरेखा-(1) प्रस्तावना (परिभाषा), (2) महत्तम धर्म, (3) परोपकार का क्षेत्र, (4) भारतीयता के अनुकूल तथा उदाहरण, (5) परोपकार से लाभ-(क) आत्मिक शान्ति की प्राप्ति, (ख) आशीर्वाद की प्राप्ति, (ग) यश तथा सम्मान की प्राप्ति, (घ) समाज की उन्नति। (6) उपसंहार।

(1) प्रस्तावना (परिभाषा)-संसार में विभिन्न प्रकार के मनुष्य पाये जाते हैं। इनमें से कुछ ऐसे होते हैं, जो अपने हित की चिन्ता न करके सदा दूसरों के कार्यों में संलग्न रहते हैं। ऐसे पुरुष ही परोपकारी कहे जाते हैं और उनके द्वारा दूसरों के लिए किये जानेवाले कार्यों को परोपकार कहा जाता है।

परोपकार दो शब्दों से मिलकर बना है, पर + उपकार अर्थात् दूसरे के हित का साधन। जो कार्य अपने हित, यश, सम्मान आदि की भावना को छोड़कर सर्वथा दूसरों के हित की इच्छा से किये जाते हैं, वे ही परोपकार की श्रेणी में आते हैं। वास्तव में परोपकार मनुष्य के हृदय में निवास करनेवाला एक ऐसा दैवी गुण है, जो इसे मनुष्य की कोटि से उठाकर देवताओं की कोटि में रख देता है। इसका जन्म प्रेम तथा दया के संयोग से होता है। यह एक ऐसी भावना है जो विशाल हृदय तथा व्यापक दृष्टिकोण रखनेवाले मनुष्यों के अन्दर रहती है। वे पुरुष जो सदा केवल अपने हित के बारे में सोचते हैं और जिनकी आँखों पर स्वार्थ का चश्मा लगा हुआ है, वे इसका अनुभव नहीं कर सकते।

(2) महत्तम धर्म-परोपकार मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म है। जिस मनुष्य में परोपकार की भावना नहीं है, गुप्त जी के शब्दों में वह मनुष्य भी कहलाने योग्य नहीं है—

''वही मनुष्य है जो मनुष्य के लिए मरे''

अपने पेट तो पशु-पक्षी भी भर लेते हैं, पर जो दूसरों का हित करता है, वही मनुष्य कहे जाने का अधिकारी है। परोपकार ही एक ऐसा गुण है जो मनुष्यों से अलग करता है। अतएव परोपकार की प्रशंसा में कहा गया है-

''परहित सरिस धर्म नहिं भाई।''

(3) परोपकार का क्षेत्र-परोपकार का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है और इसे करने के लिए विभिन्न साधन हैं। विद्वान् पुरुष अपनी विद्या द्वारा अशिक्षित मनुष्यों को शिक्षित करके देश, जाति तथा समाज का परोपकार कर सकते हैं। जो पुरुष शरीर से हृष्ट-पुष्ट हैं, वे अपनी शारीरिक शक्ति से परोपकार कर सकते हैं। वे अपने श्रम से सार्वजनिक (कुओं, धर्मशाला, सड़क, अस्पताल

आदि) के निर्माण कार्य में सहयोग देकर सरलता से परोपकार कर सकते हैं। दलितों, गरीबों और शोषितों पर अत्याचार करनेवाले व्यक्तियों के विरुद्ध खड़े होकर उनकी रक्षा करके अपनी परोपकार की भावना का परिचय दे सकते हैं। धनी पुरुष अपने धन के द्वारा गरीबों को भोजन, वस्त्र आदि से सहायता करके अथवा विद्यार्थियों को वजीफे, पुस्तकें देकर तथा रोगियों के लिए ओषधि आदि का प्रबन्ध कराकर एवं विद्यालय, अस्पताल आदि का निर्माण कराकर परोपकार कर सकते हैं। जिन व्यक्तियों के पास उक्त साधनों में से कोई साधन नहीं है, वे भी अपने तन और मन से परोपकार कर सकते हैं।

(4) भारतीयता के अनुकूल तथा उदाहरण—परोपकार की भावना भारतीय संस्कृति तथा भारतीय विचारधारा के सर्वथा अनुकूल है। त्याग तथा दान को सदा ही भारत में प्रधानता दी गयी है। इस त्याग और दान का मूर्त रूप परोपकार है। त्याग और दान जब कभी कार्य रूप में लाये जाते हैं तो वे परोपकार को जन्म देते हैं। भारत का इतिहास इस प्रकार के अनेक महापुरुषों के उदाहरणों से भरा पड़ा है, जिन्होंने परोपकार के लिए अपना सर्वस्व तक दे डाला था। महर्षि दधीचि ने देवताओं की रक्षा के लिए अपनी हड्डियों को देकर अपने प्राणों का उत्सर्ग किया था। राजा शिवि ने बाज से कबूतर की रक्षा के लिए अपने शरीर का माँस काट-काटकर दिया था। भगवान् महावीर तथा गांधी जी ने भी परोपकार के लिए अनेक कष्ट सहे थे।

(5) परोपकार से लाभ—(क) आत्मिक शान्ति की प्राप्ति—यद्यपि परोपकारी अपने हित तथा लाभ की दृष्टि से परोपकार नहीं करता, किन्तु इससे भी उसे अनेक लाभ होते हैं। आत्मिक शान्ति इनमें सबसे प्रधान है। परोपकार करनेवाले के मन में यह भावना रहती है कि वह अपने कर्त्तव्यों को पूरा कर रहा है। इस भावना से उसके मन तथा आत्मा दोनों को शान्ति और सन्तोष मिलते हैं जो लाखों रुपयों को खर्च करके बड़े-बड़े पद तथा सम्मान से भी प्राप्त नहीं होते।

(ख) आशीर्वाद की प्राप्ति—परोपकार करने से दीनों तथा दुःखियों को आनन्द तथा सुख की प्राप्ति होती है। उनकी आत्मा प्रसन्न होकर परोपकार करनेवाले को आशीर्वाद देती है। सच्ची आत्मा से निकला हुआ आशीर्वाद कभी व्यर्थ नहीं जाता और परोपकार करनेवाले पुरुष का जीवन सुखी तथा समृद्ध बन जाता है।

(ग) यश तथा सम्मान की प्राप्ति—परोपकार करनेवाले पुरुष का यश राजमहलों से लेकर झोंपड़ियों तक फैल जाता है। उसका सर्वत्र आदर होता है। जनमानस में उसकी गाथा गायी जाती है और कवि तथा लेखक भी उसकी कथा लिखते हैं।

(घ) समाज की उन्नति—परोपकार करने से अनेक व्यक्तियों को लाभ होता है। वे अपनी आपत्तियों को दूर करके सुखी तथा समृद्ध होकर उन्नति की ओर अग्रसर होते हैं। व्यक्तियों की उन्नति तथा समृद्धि से समाज की उन्नति तथा समृद्धि होती है।

परोपकारी व्यक्ति का जीवन आदर्श रूप होता है। समाज के अन्य व्यक्ति भी उसे आदर्श मानकर उसकी पूजा करते हैं। उससे प्रेरणा पाकर अपने जीवन को भी आदर्श तथा श्रेष्ठ बनाने का प्रयत्न करते हैं। भगवान् राम तथा महात्मा बुद्ध के जीवन से असंख्य मानवों ने प्रेरणा प्राप्त कर उन्नति की है। इस प्रकार की वैयक्तिक उन्नति परिवर्तित होकर सामाजिक उन्नति बन जाती है।

(6) उपसंहार—आज सारा संसार दुःखी है। मानव समाज की अवनति होती जा रही है। आज एक देश दूसरे देश को, एक समाज दूसरे समाज को, एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिए तुला बैठा है। इन सबका मूल कारण परोपकार की भावना का अभाव है, जिसको हम समझें, ग्रहण करें और तुलसीदास के साथ कहें–

'परहित सरिस धर्म नहिं भाई, पर पीड़ा सम नहीं अधमाई।'

24. कुसंग का ज्वर भयानक होता है

अन्य शीर्षक–• जीवन में सदाचार का महत्त्व • संगत ही गुण उपजै • संगत ही गुण जाय • सत्संग महिमा • 'शठ सुधरहिं सत्संगति पाई' (सत्संगति) • सत्संगति • सत्संगति का महत्त्व (2016CF)

रूपरेखा-(1) प्रस्तावना, (2) लाभ-(क) आत्मसंस्कार, (ख) ज्ञान तथा अनुभव की वृद्धि, (ग) सुख की प्राप्ति, (घ) यश तथा सम्मान की प्राप्ति, (ङ) धैर्य प्राप्ति, (च) चरित्र-निर्माण, (3) कुसंगति से हानि, (4) उपसंहार।

(1) प्रस्तावना-महाकवि तुलसीदास ने सत्संगति का प्रभाव बतलाते हुए कहा है-

'शठ सुधरहिं सत्संगति पाई, पारस परस कुधातु सुहाई।'

चौपाई का अर्थ-मूर्ख (धूर्त या दुष्ट) सज्जनों की संगति पाकर सुधर जाता है जिस प्रकार पारस पत्थर छूकर लोहा भी सोना हो जाता है। जब दुष्ट भी सत्संगति के प्रभाव से सर्वश्रेष्ठ महान् बन जाता है, तब साधारण पुरुषों का तो कहना ही क्या है?

सत्संगति दो शब्दों से मिलकर बना है-सत् और संगति। इसमें समास होने के कारण इसका अर्थ है सत् अर्थात् सत्पुरुषों की संगति। जो पुरुष हानि लाभ की चिन्ता न करके दूसरों के हित में लगे रहते हैं वे सत्पुरुष कहे जाते हैं। इन सत्पुरुषों के साथ रहना या इनके चरित्र से प्रेरणा प्राप्त करना ही सत्संगति कहा जाता है।

(2) लाभ– (क) आत्म-संस्कार-सत्संगति का प्रभाव महान् है। इसके प्रभाव से दुष्ट भी श्रेष्ठ बन जाते हैं, पापी भी पुण्यात्मा हो जाते हैं, दुराचारी भी सदाचारी हो जाते हैं। कहने का भाव यह है कि सत्संगति के प्रभाव से मनुष्य की आत्मा शुद्ध हो जाती है, उसके अवगुण दूर हो जाते हैं और वह आनन्द विभोर होकर आदर्शोन्मुख हो जाता है। संत-ऋषियों की संगति से वाल्मीकि आदि कवि बन गये। गांधीजी के प्रभाव से अनेक पुरुष सुधर गये थे। गोस्वामी तुलसीदास जी ने सत्संगति की प्रशंसा में कहा-

''तात स्वर्ग अपवर्ग सुख धरिय तुला इक संग।
तूलि न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सत्संग।''

(ख) ज्ञान तथा अनुभव की वृद्धि-सज्जन ज्ञान के भण्डार होते हैं। उनकी आत्मा, मन और बुद्धि विशाल होती है। उनके साथ रहनेवाले भी उनके ज्ञान तथा अनुभव से अपने ज्ञान और अनुभव की वृद्धि कर लेते हैं। ज्ञान और अनुभव की प्राप्ति से जीवनयापन में सुविधा रहती है।

(ग) सुख की प्राप्ति-सत्संगति से मनुष्य दुर्गुणों से दूर रहकर सद्गुणी बन जाता है। सद्गुणों के प्रभाव से जीविका उपार्जन में सुविधा रहती है और उसे सुख की प्राप्ति होती है।

सत्पुरुष सदा ही अपने साथियों के दुःखों को दूर कर सुख देते हैं। अतः सत्संगति करनेवाले को सुख की प्राप्ति होती है।

(घ) यश तथा सम्मान की प्राप्ति-सत्संगति के प्रभाव से मनुष्य श्रेष्ठ तथा सद्गुणी बन जाता है। श्रेष्ठ तथा सद्गुणी पुरुष का यश सर्वत्र फैल जाता है और सब उसका सम्मान करते हैं।

(ङ) धैर्य की प्राप्ति-आपत्ति के समय सत्पुरुष अपने साथी को धैर्य बँधाते हैं, उसकी सहायता करते हैं और स्वयं साथ रहकर उसकी आपत्ति को दूर करते हैं। इस प्रकार सत्संगति करनेवाले पुरुष के हृदय में आशा और धैर्य का संचार होता है।

(च) चरित्र-निर्माण-सत्संगति के प्रभाव से मनुष्य का चरित्र आदर्श बन जाता है। किशोरावस्था तक तो चरित्र-निर्माण के लिए सत्संगति की सर्वाधिक आवश्यकता है।

वास्तव में सत्संगति से जितने लाभ हैं, उनका वर्णन करना असम्भव है। संस्कृत के किसी कवि ने कहा है-

''जाड्यं धियो हरित सिञ्चति वाचि सत्यं, मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिं, सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम्॥''

सत्संगति बुद्धि की मूर्खता को हरती है, वाणी में सत्यता को सींचती है, मान की उन्नति करती है, पाप को दूर करती है, चित्त को प्रसन्न करती है और दिशाओं में कीर्ति फैलाती है।

(3) कुसंगति से हानि-सत्संगति से जितने लाभ हैं कुसंगति से उतनी ही हानियाँ हैं। अच्छे-से-अच्छे पुरुष भी दुष्टों की संगति में रहने से नीच तथा पापी बन जाते हैं। कहा भी है-

''कबिरा संगति साधु की, हरै और की व्याधि।
ओछी संगति क्रूर की, आठों पहर उपाधि॥''

दुष्टों की संगति में रहने से सदा कष्ट मिलते हैं। जुआरियों और चोरों के साथ रहनेवाले साधारण पुरुष भी उनके साथ जेल चले जाते हैं। रावण ने सीता को चुराया था किन्तु उसके पास रहनेवाला समुद्र बाँधा गया।

उपसंहार-उक्त कथनों से स्पष्ट है कि मानव-जीवन की सर्वांगीण उन्नति के लिए सत्संगति अति आवश्यक है और कुसंगति त्याज्य है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने ठीक ही कहा है-

''कुसंगति का ज्वर सबसे भयानक होता है। किसी युवा पुरुष की संगति यदि बुरी होगी तो वह उसके पैर में बँधी चक्की के समान होगी जो उसे दिन-प्रतिदिन अवनति के गड्ढे में गिराती जायेगी और यदि अच्छी होगी तो सहारा देनेवाली बाहु के समान होगी, जो उसे निरन्तर उन्नति की ओर उठाती जायेगी।'' अतः हमें कुसंग से दूर रहना चाहिए।

25. बाढ़ का आँखों देखा वर्णन (2017AB)

अन्य शीर्षक–• प्राकृतिक आपदा और हमारे कर्त्तव्य • बाढ़ की समस्या, • विनाशकारी बाढ़ की समस्या • बाढ़ का विनाशकारी दृश्य (2018HA)

रूपरेखा–1. प्रस्तावना, 2. वर्षा की प्रतीक्षा, 3. अभूतपूर्व बाढ़, 4. सहायता शिविर, 5. बाढ़ और हमारे कर्त्तव्य, 6. बाढ़

का रोमांचक दृश्य, 7. सरकार द्वारा सहायता कार्य, 8. बाढ़ का प्रकोप कम हुआ, 9. उपसंहार।

1. प्रस्तावना–प्रकृति भी अद्‌भुत खेल दिखाती है। एक ही समय में कहीं अनावृष्टि करके पानी की एक-एक बूंद के लिए लोगों को तरसा देती है तो कहीं अतिवृष्टि करके चारों तरफ पानी ही पानी भरकर अपनी विनाश लीला दिखाने लगती है। नदियाँ किनारों को तोड़कर खेतों और गाँवों की ओर दौड़ पड़ती हैं। हरी-भरी खेती और बसे हुए ग्रामों को बाढ़ का पानी निगल जाता है। ऐसी ही एक बाढ़ का दृश्य अभी तक मेरी आँखों के सामने नाच रहा है। उस दृश्य को याद करने पर 'कामायनी' की निम्नलिखित पंक्तियों में प्रकृति की उस विकरालता के दर्शन होने लगते हैं–

दिग्दाहों से घूम उठे या जलधर उठे क्षितिज तट के,
सघन गगन में भीम प्रकम्पन, झंझा के चलते झटके।

2. वर्षा की प्रतीक्षा–हमारे क्षेत्र में प्रायः जुलाई में खूब वर्षा हो जाती है; किन्तु पता नहीं इस बार क्या हुआ कि जुलाई और अगस्त दोनों महीने बीत गये, परन्तु वर्षा न हुई। बादल आते, लोगों को ललचाते और आकाश में ही कहीं खो जाते। खेत एक-एक बूँद पानी को तरस रहे थे। एक दिन देखते-ही-देखते काले-काले बादल चारों ओर छा गये। उन्होंने बरसना शुरू किया तो बस बरसते ही रहे।

3. अभूतपूर्व बाढ़–कई दिन की तेज वर्षा और झड़ी के कारण सड़कें पानी में डूब गयी थीं और यातायात ठप्प हो गया था। गाँवों में और भी अधिक भयंकर वर्षा हुई, जिसके कारण गंगा का पानी उफान मारने लगा। निकट के गाँवों को पानी का खतरा बढ़ गया। कुछ अदूरदर्शी किसानों ने जब यह देखा कि पानी किनारा लाँघकर उनके खेतों में भरने लगा है, तो उन्होंने अपने खेतों को बचाने के लिए बाँध काट दिये, जिससे बढ़ा हुआ पानी दूसरी तरफ निकल जाय और उनके खेत बच जायँ। उन्हें क्या पता था कि इस प्रकार उफनती गंगा की धारा को काटकर वे भयंकर बाढ़ को निमन्त्रण दे रहे हैं।

आकाशवाणी से निरन्तर समाचार आ रहे थे। मकानों में, दुकानों में, खेतों में–सब जगह पानी भर गया था। कहीं-कहीं मकानों की पहली मंजिल भी पानी में डूब गयी थी। कितने ही मकान खण्डहर हो गये थे। बिजली के खम्भे गिर गये थे, तार टूट गये थे पानी में करेण्ट न फैल जाय, इसलिए अधिकांश स्थानों पर विद्युत सप्लाई भी बन्द कर दी गयी थी।

संचार व्यवस्था पूर्णतः ठप हो गयी थी। सैकड़ों पशु पानी में बह गये थे। अनाज और वस्तुओं के सड़ने के कारण दुर्गन्ध फैलनी आरम्भ हो गयी थी। बड़ा भयंकर दृश्य था। जिन घरों में अभी पानी नहीं पहुँच पाया था, उनके निवासी भी किंकर्त्तव्यविमूढ़ से थे। न उन्हें घर में चैन था और न उनमें घर छोड़ने का साहस ही था।

4. सहायता-शिविर–बाढ़-पीड़ितों की सहायता के लिए सरकारी और गैरसरकारी संस्थाओं द्वारा अनेक सहायता-शिविर बनाये गये थे। आर्य समाज, जैन समाज आदि संस्थाओं की ओर से बाढ़-पीड़ितों की सहायता के लिए अपील की गयी थी। लोग बाढ़-पीड़ितों को भोजन, वस्त्र आदि पहुँचाने में उत्साह के साथ लगे थे।

5. बाढ़ और हमारे कर्त्तव्य – बाढ़ की विभीषिका को देखते हुए मैंने भी बाढ़-पीड़ितों की सहायता करना अपना कर्त्तव्य समझा और एक स्वयंसेवी संस्था के साथ मिलकर बाढ़ पीड़ितों के लिए एक ट्रक में भोजन, वस्त्र, बिस्तर आदि लेकर चला। हमारा ट्रक बाढ़ग्रस्त क्षेत्र की ओर बढ़ रहा था। अनेक जगहों से सड़क कट गयी थीं। कई जगह खतरा उत्पन्न होने के बाद भी हम आगे बढ़ते रहे और बाढ़ग्रस्त क्षेत्र में उपयुक्त स्थान देखकर हमने अपना सहायता शिविर स्थापित किया। आस-पास कई अन्य सहायता शिविर लगे हुए थे। सैकड़ों व्यक्ति अपने बाल-बच्चों और थोड़े बहुत सामान के साथ इधर-उधर बिखरे हुए से दिखाई दे रहे थे।

6. बाढ़ का रोमांचक दृश्य–आगे चलकर हमने जो भयंकर दृश्य देखा, उससे हमारे रोंगटे खड़े हो गये। जहाँ तक दृष्टि जाती थी, पानी-ही-पानी भरा दिखाई देता था। जहाँ कुछ दिन पहले हरी-भरी खेती लहरा रही थी, वहाँ अब मटमैले पानी का सागर लहरा रहा था। कितने ही शव पानी में बह रहे थे और उखड़े हुए पेड़ों पर बैठे हुए लोग सहायता के लिए पुकार रहे थे। यह अनुमान लगाना बहुत कठिन था कि सड़क कहाँ है, मकान कहाँ हैं, खेत कहाँ हैं? कई जगह तो हमें यह डर हो गया कि हमारी नाव किसी पेड़ की शाखा में न फँस जाय; क्योंकि पानी पेड़ों के ऊपर बह रहा था। लोगों की चीख-पुकार सुनकर हमारा दिल दहल उठता था। कुछ ऊँचे मकानों की छतों पर खड़े हुए व्यक्ति हाथ हिला-हिलाकर हमें अपनी ओर बुला रहे थे। किसी भी क्षण उनका मकान पानी की गोद में समा सकता था।

7. सरकार द्वारा सहायता-कार्य–बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में वायु सेना के परिवाहक विमान भी आवश्यक वस्तुएँ गिरा रहे थे। फायर ब्रिगेड का एक दस्ता निचले क्षेत्रों में फँसे हुए लोगों को बचाने के काम में लगा हुआ था। अनेक पम्पिंग सेट लगा दिये गये थे, जिनसे पानी कम किया जा सके। सबसे बड़े खतरे का काम वे सैनिक कर रहे थे जो पानी के बहाव को रोकने के लिए बाँध की दरार में बोरे भरने का कार्य कर रहे थे।

8. बाढ़ का प्रकोप कम हुआ–कई दिन और कई रातों के अथक प्रयास के बाद बाढ़ का प्रकोप कम हुआ। गिरे हुए मकान, उखड़े हुए पेड़, उजड़े हुए खेत, सड़े हुए शव, गड्ढों से भरी सड़कें व्यापक विनाश की सूचना दे रहे थे। बाढ़ के कम होते ही उत्सुक दर्शकों की टोलियाँ आनी आरम्भ हो गयीं। धीरे-धीरे जीवन फिर से लौटा और लोगों ने अपने-अपने मकानों को खोजना आरम्भ किया।

9. उपसंहार–बाढ़ का वह प्रलयकारी दृश्य आज भी मेरी आँखों के सामने प्रतीत हो रहा है। जब कभी उस भयंकर क्षण की याद हो आती है तो मेरा हृदय काँप उठता है। मैं बार-बार सोचता हूँ कि जल तो जीवन है, फिर भी वह लोगों के जीवन को क्यों लेता है? लेकिन इस प्रश्न का कोई उत्तर मैं नहीं खोज पाया।

26. समय का सदुपयोग

अन्य शीर्षक–• **श्रम ही सफलता की कुंजी है (2016CE)** • **सफलता का रहस्य (2016CB)**

रूपरेखा—(1) प्रस्तावना, (2) सफलता का रहस्य, (3) समय का सदुपयोग, (4) समय से लाभ, (5) समय का शत्रु, (6) उपसंहार।

1. प्रस्तावना–नष्ट हुई सम्पत्ति और खोये हुए वैभव को पुनः प्राप्त करने के लिए मनुष्य अनवरत श्रम करता है। एक दिन वह आता है, जबकि वह उसे फिर से प्राप्त करके फूला नहीं समाता। मानव खोये हुए स्वास्थ्य को भी बुद्धिमान वैद्यों की सम्मति पर चलकर, पुष्टिकारक औषधियों का सेवन करके तथा संयत जीवन व्यतीत करके एक बार फिर प्राप्त कर लेता है। भूली हुई और खोई हुई प्रतिष्ठा को मनुष्य थोड़े से श्रम से पुनः प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है। युगों के भूले-बिछुड़े मिल जाते हैं, परन्तु जीवन के जो क्षण एक बार चले गये फिर इस जीवन में कभी नहीं मिलते। कितने अमूल्य हैं ये क्षण, कितनी तीव्रता है इनकी गति में, जो न आते मालूम पड़ते हैं और न जाते, परन्तु चले जाते हैं।

2. सफलता का रहस्य–समय मनुष्य की न तो प्रतीक्षा करता है और न परवाह। रेलगाड़ी यात्रियों की प्रतीक्षा नहीं करती, उसमें कोई बैठे या न बैठे, उसे अपने समय पर आना है और चले जाना है। जो लोग भीड़ को चीरते हुए, आलस्य को छोड़कर छलाँग मारते हुए उसमें बैठ जाते हैं, वे अपने गंतव्य स्थान पर समय से पहुँच जाते हैं। ठीक यही बात समय की रेलगाड़ी के साथ है। जीवन में सफलता भी उन्हीं पुरुष-सिंहों को प्राप्त होती है, जो अपने एक क्षण का भी अपव्यय नहीं करते, अपितु अधिक-से-अधिक उसका उपयोग करते हैं। यही कारण है कि संसार का महान् से महान् और कठिन से कठिन कार्य भी उनके लिए सुलभ हो जाता है।

3. समय का सदुपयोग—जीवन की सफलता का रहस्य समय के सदुपयोग में ही निहित है। समय की उपयोगिता साधारण से साधारण व्यक्ति को भी महान् बना देती है। आज तक जितने भी महान् पुरुष हुए हैं उनके जीवन की सफलत का रहस्य एकमात्र समय के अमूल्य क्षणों का सदुपयोग ही रहा है। बड़े से बड़े संकटों, भयानक से भयानक संघर्षों में भी वे सदैव विजयी रहे हैं।

4. समय से लाभ—समय का सदुपयोग करने से मनुष्य की व्यक्तिगत उन्नति होती है। जिस काम के लिए जो समय निश्चित हो, उस समय वह काम अवश्य कर लेना चाहिए, तभी मनुष्य जीवन में उन्नति कर पाता है। विदेशों में समय का मूल्य बहुत समझा जाता है।

देश और समाज के प्रति हमारे कुछ कर्त्तव्य हैं। हमें अपना कुछ समय उनकी सेवा में भी लगाना चाहिए, जिससे देश और समाज की उन्नति हो।

4. समय का शत्रु—आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। आलसी मनुष्य जीवन में उन्नति नहीं कर पाता है। उसके जीवन के अधिकांश क्षण सुस्ती, सोने और वाद-विवाद में ही व्यतीत हो जाते हैं। ऐसा मनुष्य न तो छात्रावस्था में विद्योपार्जन ही कर सकता है और न युवावस्था में गृहस्थी का भार ही वहन कर सकता है।

6. उपसंहार—हमें अपने दैनिक कार्यक्रमों में राष्ट्रसेवा, जाति सेवा और समाज सेवा का अवसर भी निकालना चाहिए। स्वार्थ-सिद्धि ही मानव जीवन का प्रमुख लक्ष्य नहीं है। इस जीवन में जितने शुभ कार्य हो सकें उतना ही यह जीवन सफल है। मानव-जीवन देश की सम्पत्ति है। अतः देशहित में जो अपना समय व्यतीत करता है, वह धन्य है। मनुष्य का परम कर्त्तव्य है कि वह अपने समय का सदुपयोग करता हुआ अपने समाज, अपने देश और मानव-जाति का कल्याण करे।

27. भारतीय कृषक (2016CE)

अन्य शीर्षक–• भारतीय किसान और उसकी समस्याएँ (2017AE)

रूपरेखा—(1) भारतीय किसान : देश की जान, (2) सरल-सहज जीवन, (3) घोर परिश्रमी, (4) संस्कृति और परम्परा का रक्षक, (5) अभावों की दुनिया, (6) दुरवस्था का कारण, (7) उपसंहार।

(1) भारतीय किसान : देश की जान—किसान देश की आत्मा हैं। वे ही देश की आबादी के अन्नदाता हैं। देश की जनता के रक्त में वे ही प्राण बनकर प्रवाहित हो रहे हैं। **गाँधीजी** ने कहा था—"भारत का हृदय गाँवों में बसता है। गाँवों में ही सेवा और परिश्रम के अवतार किसान बसते हैं। ये किसान ही नगरवासियों के अन्नदाता हैं, सृष्टि-पालक हैं।"

(2) सरल-सहज जीवन—भारतीय किसान बनावटीपन से दूर सहज-सरल जीवन जीता है। जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने में वह धीरज का धनी होता है। उसकी आवश्यकताएँ भी सीमित रहती हैं। वह रूखी-सूखी रोटी खाकर भी कार्य से जी नहीं चुराता, बल्कि सन्तुष्ट और सुखी रहता है। वह गाँवों के प्राकृतिक वातावरण में रहकर सहज स्वभाव से आनन्दित रहता है। स्वास्थ्यप्रद पर्यावरण के चलते वह स्वस्थ जीवन बिताता है। उसके स्वभाव में कृत्रिमता के स्थान पर सादगी में उत्पन्न सात्त्विकता होती है। वह स्नेही, दयालु और सेवाभावी होता है।

(3) घोर परिश्रमी—भारत का किसान घोर परिश्रमी होता है। वह भीषण गर्मी-सर्दी और मूसलधार वर्षा की परवाह किए बिना कृषिकार्य में जुटा रहता है। खेती ही उसका कर्म-धर्म और ईमान है।

(4) संस्कृति और परम्परा का रक्षक—भारत के किसान पर अभी बाह्य वैज्ञानिक सभ्यता का प्रभाव नहीं पड़ा है। वह अब भी अपनी जातीय परम्पराओं का निर्वाह बड़ी प्रसन्नता के साथ करता है। भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण यदि कहीं किया जा रहा है तो केवल ग्रामवासियों के द्वारा। 'अतिथि देवो भव' आज भी वहीं जीवित है। दया, सहानुभूति, सहायता, करुणा, कर्मण्यता आदि गुण उनमें आज भी जीवित हैं। विभिन्न अवसरों पर अनेक रीति-रिवाज ये अत्यन्त हार्दिकता के साथ निभाते हैं।

(5) अभावों की दुनिया—भारतीय कृषक अभावमय जीवन जीता है। उसका जन्म ही अभावों के बीच होता है। जीवन-भर वह गरमी, सर्दी, वर्षा की कठोर ऋतुओं में भी मरता-खपता रहता है फिर भी दो वक्त की पेट-भर रोटी वह नहीं जुटा पाता। प्रायः वह ऋण में जन्म लेता है और ऋण चुकाते-चुकाते ही संसार से विदा होता है। भारतीय किसान की इसी दारुण दशा का चित्रण महान् कथाकार प्रेमचन्द ने अपनी कहानी 'पूस की रात' में किया है।

(6) दुरवस्था का कारण—भारतीय किसान की दुरवस्था के कई कारण हैं जिनमें निरक्षरता सर्वप्रथम है। शिक्षा के अभाव में वे सत्साहित्य एवं जीवनोपयोगी बातों से दूर रह जाते हैं। कुरीतियाँ और रूढ़ियाँ उन्हें घेरे रहती हैं। अन्धविश्वास के पार वह नहीं निकल पाता। उसका भोलापन भी उसके शोषण के लिए उत्तरदायी है। धरती चीरकर, हल जोतकर, शरीर पर मौसम की मार खाकर भी अन्न उपजाकर सबका पेट भरनेवाला किसान शोषण और अन्याय के कारण भूखों मरता है। उसकी मेहनत की सारी कमाई चतुर और धूर्त व्यापारी लूट ले जाते हैं। भाग्यवादिता भी उनकी इस पतनावस्था का एक कारण है।

(7) उपसंहार—देश की सीमाओं की सुरक्षा के लिए जैसे हमारे जवान जान की परवाह किए बिना डटे रहते हैं वैसे ही देश की भौगोलिक सीमा में रहनेवालों के पेट पालने के लिए किसान अपने खेत पर डटा रहता है। सेना के जवानों को उनकी वीरता के लिए पुरस्कृत किया जाता है पर किसी किसान को अत्यधिक अन्न उपजाने के लिए पुरस्कृत किया गया हो ऐसा मैंने आज तक नहीं सुना है। सेना का जवान 'शहीद' होता है और किसान 'मरता' है। किसानों के महत्त्व को प्रधानमन्त्री **लालबहादुर शास्त्री** ने पहचाना था जिन्होंने **'जय जवान जय किसान'** का नारा दिया। हमारे विचार से किसानों के कार्य की महत्ता देखते हुए उन्हें भी समय-समय पर प्रशंसित-पुरस्कृत किया जाना चाहिए। यदि उन्हें प्रोत्साहन और मार्गदर्शन मिले तो वे जीवन की कई कमियों को दूर कर लेंगे। किसानों के उत्थान के लिए प्रत्येक भारतीय को अपने स्तर से प्रयास करना चाहिए और सरकार को भी।

जिस प्रकार स्वस्थ तन में स्वस्थ मन का निवास होता है उसी प्रकार देश को स्वस्थ और खुशहाल बनाना है तो देश के प्राण किसानों को भी स्वस्थ और खुशहाल बनाना होगा। किसान सुखी तो देश सुखी।

●●

॥ खण्डकाव्य ॥

1 मुक्ति-दूत

(डॉ० राजेन्द्र मिश्र)

आगरा, बस्ती, गाजीपुर, फतेहपुर, बाराबंकी, उन्नाव जनपदों के लिए निर्धारित।

सारांश

प्रथम सर्ग

प्रथम-सर्ग में कवि ने महात्मा गांधी को युगपुरुष के रूप में स्वीकार किया है तथा उनके चरित्र की महानता का वर्णन किया है। महात्मा गांधी भारत के ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व के संकटों का निवारण करने के लिए उसी प्रकार अवतरित हुए जिस प्रकार राम, कृष्ण, गौतम बुद्ध, ईशा, मुहम्मद साहब तथा गुरु गोविन्द सिंह आदि भगवान् के रूप में अवतरित हुए। जिस प्रकार लिंकन ने अमेरिका का तथा नेपोलियन ने फ्रांस का उद्धार किया था उसी प्रकार गांधी जी ने भारतवर्ष को अंग्रेजी दासता से मुक्ति दिलायी।

महात्मा गांधी का जन्म गुजरात के पोरबन्दर नामक स्थान पर हुआ था। इनके पिता श्री करमचन्द गांधी थे। महात्मा गांधी के जीवन पर अपनी माता के चरित्र की गहरी छाप थी। बचपन में ही सत्य हरिश्चन्द्र और श्रवण कुमार के आदर्श चरित्र से महात्मा गांधी बहुत प्रभावित हुए थे। गांधी जी को हरिजन तथा हिन्दुस्तानी दोनों से ही अगाध स्नेह था। वे आजीवन विभिन्न समस्याओं से जूझते रहे, उनके अथक् प्रयासों के फलस्वरूप भारत को आजादी प्राप्त हो सकी।

द्वितीय सर्ग

खण्डकाव्य की मूल कथा का प्रारम्भ द्वितीय सर्ग से ही होता है। एक बार गांधी जी ने स्वप्न में अपनी माता को देखा। उन्हें स्वप्न में देखकर गांधीजी को अपनी माता की समस्त शिक्षाएँ याद हो आयीं। उनकी माता ने उन्हें समझाया था कि गिरते हुए को सहारा दो तथा देश के भूखे व्यक्तियों को भोजन दो। माताजी की वाणी गांधीजी के हृदय को स्पर्श कर गयी। उन्होंने मन-ही-मन संकल्प किया कि वे दीन-हीन व्यक्तियों को सहारा देंगे तथा अपनी जन्मभूमि के बन्धन काट डालेंगे। उनके मन में कुछ आदर्श विचार इस प्रकार उत्पन्न हुए– सभी भारतवासी सगे भाई हैं। यदि देश का एक भी बालक नंगा-भूखा है तो मुझे सुख किस प्रकार मिल सकता है? अछूतों को भी उसी ईश्वर ने पैदा किया है। इन अछूतों ने उच्च वर्णों के प्रति सहानुभूति प्रकट की है फिर इनके प्रति भेद-भाव कैसे रखा जा सकता है। निम्न जाति में पैदा हुए सत्यकाम को जब गौतम ऋषि शिक्षा दे सकते हैं और शबरी को भगवान् राम स्वयं अपना प्रेम अर्पित कर सकते हैं तो फिर इन हरिजनों को हृदय से अलग करना कैसे सम्भव है।

गांधीजी विचार करते हैं कि देश में व्याप्त भेद-भाव की भावना को मिटाना ही होगा। गरीब और अमीर का भेद ईश्वर का नहीं बल्कि हमारा बनाया हुआ है। हरिजन के मन्दिर में प्रवेश करने से यदि मन्दिर अपवित्र हो जाता है तो उस मन्दिर में भगवान् का वास बिल्कुल नहीं है। यही सोचकर गांधीजी ने अपने आश्रम में रहने के लिए हरिजनों को आमन्त्रित किया था। गांधीजी के इस कार्य की प्रतिक्रिया हुई। जनता ने आश्रम को चन्दा देने से मना कर दिया। आश्रम के प्रबन्धक मगनलाल के निराशाजनक शब्दों को सुनकर गांधीजी क्रोधित हो उठे। उनके मन में अभी अफ्रीका में हुए अपमान की स्मृति शेष थी। जहाँ काले-गोरे, ऊँच-नीच का भेदभाव व्याप्त था। गांधीजी ने कहा कि, यदि जनता आश्रम के लिए चन्दा नहीं देती है तो मैं हरिजनों की बस्ती में ही रह लूँगा, पेड़ के नीचे सो लूँगा, किन्तु मैं आदमी-आदमी में भेद नहीं कर सकता। मेरे जीते जी घृणा और द्वेष नहीं चल सकता। पहले देश आजाद हो जाय फिर मैं हरिजन समस्या का भी निवारण करूँगा। गाँधीजी के इस कथन से आश्रमवासियों में नवीन चेतना उत्पन्न हुई। वे गांधीजी के असाधारण गुणों से भी परिचित थे। एक बार गांधीजी ने स्वप्न में गोपालकृष्ण गोखले को देखा। गोपालकृष्ण गोखले ने गांधीजी को स्वतन्त्रता के मार्ग पर अनवरत चलने की प्रेरणा दी। गोखले ने आशा प्रकट की कि गांधीजी ही भारतवर्ष के मुक्तिदूत बनेंगे।

तृतीय सर्ग

इस सर्ग में भारत की विपन्नता और अंग्रेजों के अत्याचारों का वर्णन किया गया है। भारतवासी अपमान का जीवन जी रहे थे। केवल वही लोग सुखी थे जो अंग्रेजों के चाटुकार थे। गांधीजी ने भारत की दुर्दशा को ठीक प्रकार से समझा। उन्होंने अंग्रेजों के प्रति पहले तो नम्रता की नीति अपनायी, किन्तु अंग्रेजों का हृदय बदलता हुआ न देखकर उन्होंने उनके विरुद्ध 'सविनय सत्याग्रह' आन्दोलन चलाया। इसी समय विश्वयुद्ध छिड़ गया। गांधीजी को यह आशा थी कि विश्वयुद्ध में अंग्रेजों की सहायता करने से उनके मन में भारतीयों के प्रति अधिक सहानुभूति पैदा हो जायेगी। अतः उन्होंने देशवासियों को अंग्रेजों की सहायता करने का आह्वान किया, परन्तु युद्ध में जीतने के बाद अंग्रेजों ने भारतीयों पर और अधिक अत्याचार किये। अंग्रेजों द्वारा बनाये गये काले कानून का गांधीजी ने विरोध किया। देश के महान् नेता– जवाहरलाल नेहरू, बालगंगाधर तिलक, महामना मदनमोहन मालवीय, जिन्ना, सरदार पटेल आदि उनके साथ संघर्ष में कूद पड़े। इन्हीं दिनों जलियाँवाला बाग की अमानवीय घटना घटित हुई। अंग्रेजों ने निरपराध भारतीयों को बन्दूक की गोली से भून डाला।

इस दर्दनाक घटना से गांधीजी का हृदय रोष एवं दुःख से भर गया। अब उन्होंने यह अच्छी तरह से समझ लिया कि भारत में अंग्रेज जाति अधिक दिनों तक नहीं रह सकती है।

चतुर्थ सर्ग (आन्दोलन सर्ग)

इस सर्ग में गांधीजी द्वारा चलाये गये विभिन्न आन्दोलनों का वर्णन किया गया है। अगस्त, 1920 ई० में गांधीजी ने असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ किया। जनता ने विदेशी सामान का बहिष्कार किया। अंग्रेजों द्वारा दी गयी उपाधियों को लौटा दिया तथा नौकरियों से त्याग-पत्र दे दिया। इस असहयोग आन्दोलन को देखकर अंग्रेजों को बड़ी निराशा हुई। गांधीजी ने 'साइमन कमीशन' का भी विरोध किया। भारतीयों के द्वारा किये गये इस तिरस्कार के परिणामस्वरूप अंग्रेज हिंसा पर उतर आये। इसी आन्दोलन में पंजाब केसरी लाला लाजपतराय भी सम्मिलित हो गये। सम्पूर्ण देश में हिंसक क्रान्ति प्रारम्भ हो गयी। गांधीजी ने भारतीय जनता को समझाया और उसे अहिंसा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। उन्होंने नमक कानून तोड़ने के लिए डाण्डी यात्री की। उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। इसके बाद सम्पूर्ण देश में आन्दोलन छिड़ गया। कुछ दिनों बाद गांधीजी ने 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' आन्दोलन प्रारम्भ किया। उनका यह नारा सम्पूर्ण देश में गूँजने लगा। इस आन्दोलन में विदेशी वस्तुओं की होली जलायी गयी, थानों में आग लगा दी गयी, रेलवे लाइनों को उखाड़ फेंका गया और सड़कों तथा पुलों को तोड़ दिया गया। आन्दोलनकारियों द्वारा सम्पूर्ण शासन व्यवस्था को अस्त-व्यस्त कर दिया गया। इस समय अंग्रेजों का दमन चक्र भी सीमा को पार कर गया था। गांधीजी ने अनशन प्रारम्भ कर दिया। इसी समय कारावास में बन्द उनकी धर्मपत्नी की मृत्यु हो गयी। गांधीजी इस आघात से क्षण भर के लिए व्याकुल अवश्य हुए, किन्तु पत्नी के स्वर्गवास ने अंग्रेजों के विरुद्ध उनके आन्दोलन को और अधिक दृढ़ता प्रदान की।

पंचम सर्ग

खण्डकाव्य के पंचम सर्ग में अंग्रेजों की निराशा का वर्णन किया गया है। 1945 ई० में द्वितीय विश्वयुद्ध के समाप्त हो जाने के बाद विश्व की राजनीति में भी परिवर्तन हुआ। इंग्लैण्ड में चुनाव हुए और वहाँ पर मजदूर दल की सरकार बनी। इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री एटली ने यह घोषणा की कि जून, 1947 ई० से पूर्व ही अंग्रेज भारत छोड़ देंगे। इस सूचना से सम्पूर्ण देश में प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी। किन्तु इसी समय अंग्रेजों के षड्यन्त्र और मुस्लिम लीग की हठधर्मिता से पाकिस्तान बनाने की बात भी सामने आयी। मोहम्मद अली जिन्ना पाकिस्तान बनाने की बात पर अड़े रहे। परिणाम यह हुआ कि 15 अगस्त, 1947 ई० को भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त होने के साथ-साथ देश दो टुकड़ों में विभाजित हो गया। नोआखाली में साम्प्रदायिक दंगे भड़क उठे। इससे गांधीजी को बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने साम्प्रदायिक दंगों को शान्त करने का भरसक प्रयत्न किया।

इस प्रकार भारत के स्वतन्त्रता संग्राम का अन्त हो गया, परन्तु देश के विभाजन से गांधीजी को अपार दुःख हुआ। उन्होंने देश की बागडोर जवाहरलाल नेहरू को सौंपकर सन्तोष की सांस ली।

खण्डकाव्य के अन्त में गांधीजी साबरमती के आश्रम में बैठकर देश के प्रति किये गये अपने महान् कार्यों का विश्लेषण करते हुए दिखाये गये हैं। वे भारत के उज्ज्वल एवं मंगलमय भविष्य की कामना करते हैं और इसी के साथ खण्डकाव्य की कथा समाप्त हो जाती है।

|| अभ्यास प्रश्न ||

1. 'मुक्ति-दूत' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग की कथा संक्षेप में प्रस्तुत कीजिए। **(2016CA,CF,17AF,20MB,MF)**
2. 'मुक्ति-दूत' खण्डकाव्य के मुख्य पात्र की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। **(2016CE,17AB,18HA,HF, 19AD,AG,20MB,ME)**

3. 'मुक्ति-दूत' खण्डकाव्य की कथावस्तु को संक्षेप में लिखिए। **(2016CB,17AA,AB,AC,18HA,19AE,AG,20MA)**
4. 'मुक्ति-दूत' खण्डकाव्य के आधार पर महात्मा गाँधी का चरित्र–चित्रण कीजिए। **(2016CE,17AB,18HA,HF, 19AD,AG,20MD,ME,MA,MF)**
5. 'मुक्ति-दूत' खण्डकाव्य के द्वितीय सर्ग की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए। **(2017AE,20MC,MD,MF)**
6. 'मुक्ति-दूत' खण्डकाव्य के पंचम सर्ग की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए। **(2020MC)**
7. 'मुक्ति-दूत' के चतुर्थ सर्ग की घटनाओं का सार अपने शब्दों में लिखिए।
8. 'मुक्ति-दूत' खण्डकाव्य के प्रथम सर्ग की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए।

●●

2 ज्योति जवाहर

(श्री देवीप्रसाद शुक्ल 'राही')

कानपुर, प्रतापगढ़, मिर्जापुर, ललितपुर, रामपुर, गोण्डा जनपदों के लिए निर्धारित।

सारांश

खण्डकाव्य के आरम्भ में कवि विषय-प्रवेश के अन्तर्गत सर्वप्रथम पं० जवाहरलाल नेहरू के निधन पर उन्हें सह-अस्तित्व के सरगम, अहिंसा के अनूठे छन्द, मानवता के संगम, जागरण के काव्य, युग की प्रेरणा, विधाता के अछूते ग्रन्थ, मनु के मन्त्र आदि अनेक विशेषणों से सम्बोधित करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

कथा का प्रारम्भ पं० नेहरू के अलौकिक दिव्य पुरुष के रूप में अवतार से होता है जिसमें सूर्य की ज्योति है, चाँद की सुन्दरता है, हिमालय का स्वाभिमान है, सागर की गम्भीरता है, हवा की अबाध गति है, धरती-सा धैर्य है। भारत की मिट्टी में उनका पालन-पोषण हुआ। जन्मभूमि गंगा-जमुना का संगम इलाहाबाद है। पूज्य बापू के कर्म योग की प्रेरणा मिलती है। नेहरू और बापू का मिलन राम-वशिष्ठ अथवा मोहन और युधिष्ठिर के समान है; यथा–

उसका आशीष और तेरा, नत मस्तक ही करता प्रणाम।
यों लगा कि जैसे गुरु वशिष्ठ, के चरणों पर हों झुके राम॥
अथवा मोहन के चरणों पर हो झुका युधिष्ठिर का माथा।
या खोज रहा हो फिर भारत अपनी खोयी गौरव गाथा॥

पं० नेहरू के अखण्ड ज्योति के रूप में इस धरा-धाम पर अवतीर्ण होने पर कवि कल्पना के अनुसार भारत का खण्ड-खण्ड अपने अखण्ड दिव्य रत्नों को नायक पर न्योछावर करने को आतुर को उठता है। अहिंसा के अग्रदूत को शिवाजी की तलवार सौंपने की योजना महाराष्ट्र बनाता है तो उसे शान्ति और अहिंसा के युग के लिए अनुपयुक्त बतलाया जाता है। इस पर महाराष्ट्र हिंसा और अहिंसा को परिभाषित करता है–

अत्याचारी के चरणों पर, झुक जाना भारी हिंसा है।
पापी का शीश कुचल देना, जो हिंसा नहीं अहिंसा है॥

तदनन्तर अतीत से प्रेरणा लेकर वर्तमान परिवेश में नया मोड़ देने और स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए प्रेरित करने हेतु गुरु रामदास की राष्ट्रीय चेतना, सन्त ज्ञानेश्वर का कर्मवाद, लोकमान्य तिलक का 'करो या मरो' का उपदेश, आदि सबकुछ लोकनायक पर न्योछावर किये जाते हैं। फिर पराधीनता के युग में संघर्षों से टकराने की क्षमता प्रदान करके उसके लिए राजस्थान लोकनायक को मन्त्र देता है–

ले लो मेरे जीवन की निधि, जीवन का रंग-ढंग ले लो।
यदि पड़े जरूरत ऐसे में, तो मेरा अंग-अंग ले लो॥
आखिर यह सबकुछ भारत की, माटी की ही तो माया है।
भीतर से सबकुछ एक मगर, बाहर से बदली काया है॥

इस प्रकार राणा सांगा, कुँभा, महाराणा प्रताप के गौरवशाली अतीत की कथाएँ लोकनायक के जीवन में आकर उन्हें त्याग, शौर्य और स्वतन्त्रता संग्राम के लिए प्रेरणा प्रदान करती हैं। भारत की अखण्डता का उद्‌बोध करता हुआ सतपुड़ा कहता है–

बूढ़ा सतपुड़ा लगा कहने, हूँ दूर मगर अलगाव नहीं।
कम हुआ आज तक उत्तर से, दक्षिण का कभी लगाव नहीं।।

लोकनायक पं० जवाहरलाल के सार्वभौमिक व्यक्तित्व के निर्माण में दक्षिण भारत के जगद् गुरु शंकराचार्य, रामानुज आदि का व्यापक प्रभाव रहा। भवभूति, कालिदास की सर्जनात्मक भावुकता ने नायक के व्यक्तित्व में साहित्य, कला और संस्कृति की त्रिवेणी प्रवाहित की। 'अप्पर' द्वारा 'सत्याग्रह' का मन्त्र मिला।

फिर बंगाल के कृतिदास कृत 'रामायण', कवि कंकड़, चण्डीदास, दौलत काजी, विवेकानन्द, दीनबन्धु के साथ ही बंकिम बाबू के 'वन्देमातरम्' की छाप भारत के मानस पटल पर अंकित हुई। टैगोर और शरत बाबू की अमर कला, शाहजफर की गजलें हृदय में स्पन्दन करनेवाली हैं। नेताजी के घायल सपने विकल हैं। इन सबको संजोकर वह कथानक को समर्पित करने के लिए प्रस्तुत होती है। असम पूरी क्षमता के साथ नायक पर न्योछावर होता है। वह कहता है–

मेरी हर धड़कन प्यासी है, तेरे चरणों के चुम्बन को।
खेती तैयार खड़ी है, रे जन-मन के स्नेह समर्पण को।।

तदनन्तर विहार भगवान बुद्ध के उपदेश, गोपा के आँसू, राहुल की तुतली बोली, तीर्थंकर महावीर के उपदेश, पाटलिपुत्र का गौरवमय इतिहास, मगध की ममता, बिम्बसार की आत्मकथा, समुद्रगुप्त का यश, चन्द्रगुप्त का शौर्य, कौटिल्य के सपने, अशोक की सत्य और अहिंसा, पुष्यमित्र की वैदिक संस्कृतियों का गिरजा, पतंजलि का चिन्तन, नालन्दा का विज्ञान और कला के तत्त्व, विद्यापति की भावुकता लेकर आनन्द भवन में कथानक संगम के राजा पं० नेहरू पर न्योछावर करता है।

उत्तर प्रदेश नायक को अपनी गोद में पाकर अपने को धन्य मानने लगा है। तीर्थराज प्रयाग के संगम पर करोड़ों की भीड़ इकट्‌ठा हो गयी। मथुरा, वृन्दावन और अवधपुरी की गलियों में चर्चा होने लगी कि द्वापर और त्रेता के शक्तिशाली कृष्ण और राम अब नये रूप में अवतरित हो गये हैं। तुलसी के रामचरितमानस का सपना साकार हो गया है। सूर के गीतों के फूल बरसने लगे हैं। सारनाथ के सपने जाग उठे हैं। मगहर से कबीर ने उपदेश दिया–

हिन्दू मुस्लिम, मन्दिर-मस्जिद, काबा-काशी का क्या झगड़ा?
भूल से मोल न तू लेना, मजहब का यह रगड़ा-झगड़ा।

गंगा तट पर बैठे बिठूर के नाना से हाँ भरता हुआ बोला कि अब भारत की आजादी का शीघ्र ही हल निकलने वाला है और 1857 ई० के बलिदान का शीघ्र ही फल मिलेगा। बूढ़ी झाँसी की रानी की आँखों के सपने टपक पड़े। रोती कलपती, झाँसी की रानी सत्तावन की कुर्बानी के रूप में 'राखी' लेकर प्रस्तुत हुई। विद्रोह की आग फैलानेवाले तात्याँ टोपे 'मेरठ की चिंगारी' लेकर स्वागत में पहुँच गया।

संकोची पंजाब 'आजाद की दुल्हन' के डोले को कन्धे पर लेने के लिए उत्साह में पहुँच गया और कहने लगा कि जहाँ लाला लाजपतराय, सरदार भगतसिंह जैसे बहादुर हैं वहाँ लज्जा लुटने का कोई प्रश्न नहीं है। जिस पंजाब पर पोरस की बिजली टूटी थी, सिकन्दर की तलवार जहाँ घबराकर लौट गयी थी, जहाँ पर सेल्यूकस की किस्मत फूटी थी, जहाँ पर कौटिल्य शास्त्र का महामन्त्र सर्वप्रथम उद्‌घोषित हुआ था, जहाँ पर हड़प्पा और मोहड़जोदड़ो के खण्डहर विश्व की प्रथम सभ्यता का नेतृत्व करते हैं। वह गुरुनानक और अर्जुनदेव के आशीर्वादों तथा अपने विभाजन की करुण कहानी को लेकर कथानक के समक्ष श्रद्धावनत होता है।

अपने अतीत की भूलों का बोझ लादे हुए कश्मीर प्रायश्चित करने के लिए प्रस्तुत होता है। अपने निश्चय का उद्‌घोष करता हुआ बोल उठता है–

गैरों की मरजी से बदले, ऐसी मेरी तकदीर नहीं।
भारत से विलग कभी होगा कश्मीर नहीं, कश्मीर नहीं।।

'कुरुक्षेत्र' करवट लेकर अत्याचारी दुर्योधन के पैशाचिक उत्पातों का अन्त करने के लिए कथानक को अर्जुन रूप से सम्बोधित करते हुए बोला कि तुम पर चर्खा रूपी चक्र सुदर्शनधारी मोहन (गांधीजी) की कृपा है, तुम गीता के कर्मयोगी मानवता की दिव्य ज्योति और जीवन दर्शन के लिए आओ तुम्हारा स्वागत है।

घायल दिल्ली बर्बादी से दबी है, लाल किला अपराधी की भाँति खामोश खड़ा है, अपने-अपने अतीत की दर्दभरी कहानी को याद करता हुआ वह अपनी ऐश्वर्य-हीनता की विवशता का दिग्दर्शन करते हुए बोल उठता है–

कैसे दे दूँ मेरे मालिक! हिंसा की घृणित कहानी को।
लूटा है जाने कितनों ने, भोली दिल्ली की रानी को॥

लाल किला यमुना को अपनी क्रान्तिकारी चिनगारियों को देखते हुए तुरन्त आनन्द भवन पहुँचने का अनुरोध करता है और यमुना कथानायक का अभिनन्दन करने के लिए संगम पर पहुँच जाती है। इस प्रकार सभी ने भेंट के रूप में अपनी संचित निधि को कथानायक के लिए न्योछावर कर दिया और सारा भारत पं० नेहरू में आत्मसात् होकर सम्पूर्ण भारत का प्रतीक बन गया।

जब लगा देखने मानचित्र, भारत न मिला तुझको पाया।
जब देखा तुझको नयनों में, भारत का चित्र उतर आया॥

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

1. 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य का कथानक संक्षेप में लिखिए। **(2017AA,AD,19AD,AF,AG,20MC,MG,ME,MF)**
2. 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य के आधार पर जवाहरलाल नेहरू का चरित्र-चित्रण कीजिए। **(2017AA,19AA,AB,AC)**
3. 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य के आधार पर तृतीय सर्ग का कथानक संक्षेप में लिखिए। **(2017AB,AD,AE,20MC)**
4. 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य के नायक का चरित्रांकन कीजिए। **(2020ME,MA,MF,20MD)**
5. 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य के द्वितीय सर्ग की कथावस्तु का उल्लेख कीजिए। **(2016CE,20MB,MA)**
6. 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य के आधार पर सम्राट अशोक का चरित्रांकन कीजिए। **(2020MB)**
7. 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य में व्यक्त राष्ट्रीय भावना पर प्रकाश डालिए। **(2020MG)**

●●

3 अग्रपूजा

(पं. रामबहोरी शुक्ल)

प्रयागराज, आजमगढ़, मथुरा जनपदों के लिए

सारांश

प्रथम सर्ग (पूर्वाभास)

दुर्योधन के द्वारा षड्यन्त्र करके लाक्षागृह में आग लगवा देने के बाद वह पूर्ण रूप से आश्वस्त हो गया कि अब पाण्डव समाप्त हो गये हैं तो उसने और अधिक अत्याचार बढ़ा दिये, किन्तु श्रीकृष्ण की बुद्धिमता एवं सावधानी से पाण्डव लाक्षागृह से जीवित निकलकर छद्मवेश में द्रौपदी के स्वयंवर में राजा द्रुपद के यहाँ उपस्थित हुए। राजा द्रुपद की शर्त के अनुसार अर्जुन ने मछली की आँख का लक्ष्यवेध किया। निराश हुए अन्य राजाओं ने अर्जुन पर घातक प्रहार किया, किन्तु भीम और अर्जुन ने उन्हें परास्त कर दिया। स्वयंवर में आये हुए श्रीकृष्ण और बलराम ने उन्हें पहचान लिया तथा उनके विश्राम-गृह में रात्रि के समय मुलाकात की। राजा द्रुपद ने द्रौपदी को अर्जुन को सौंप दिया। पाण्डव द्रौपदी के साथ माता कुन्ती के पास पहुँचे। कुन्ती की इच्छा के अनुसार द्रौपदी का विवाह पाँचों पाण्डवों के साथ कर दिया गया। इस अवसर पर उन्हें श्रीकृष्ण द्वारा उपहार तथा राजा द्रुपद द्वारा बहुत दहेज दिया गया। पाण्डवों को जीवित देखकर तथा द्रौपदी द्वारा उनका विवाह करने की घटना से दुर्योधन अधिक चिन्तित हो उठा। हस्तिनापुर से कर्ण को साथ लेकर उसने धृतराष्ट्र से पाण्डवों का सर्वनाश करने का परामर्श भी किया। धृतराष्ट्र ने भीष्म पितामह, द्रोण तथा विदुर के परामर्श पर पाण्डवों को आधा राज्य देने का निश्चय किया। पाण्डवों को बुलाने के लिए विदुर को भेजा गया। पाण्डवों के साथ कुन्ती, द्रौपदी तथा श्रीकृष्ण भी हस्तिनापुर आये। हस्तिनापुर की जनता ने उन सभी का बड़ा आदर एवं स्वागत किया। दूसरे दिन धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर का राज्याभिषेक कर दिया। उसके बाद में गुरुजनों से विदा लेकर पाण्डव द्रौपदी सहित खाण्डव वन को चले गये।

द्वितीय सर्ग (समारम्भ)

पाण्डव श्रीकृष्ण को साथ लेकर खाण्डव वन पहुँचे, यह एक विशाल वन था। यहाँ पर श्रीकृष्ण ने स्वर्ग लोक जैसा इन्द्रप्रस्थ तैयार करा दिया। जो व्यक्ति पाण्डवों के साथ हस्तिनापुर से आये थे वे सभी वहाँ सुखपूर्वक रहने लगे। कुछ दिनों के पश्चात् श्रीकृष्ण पाण्डवों से आज्ञा लेकर द्वारिकापुरी वापस चले आये। श्रीकृष्ण के वापस आते समय पाण्डव व्याकुल होने लगे। धर्मराज युधिष्ठिर के राज्य में प्रजा बहुत सुखी थी। वहाँ गुरुकुल में निवास करते हुए शिष्य लोग बड़ा शिष्ट व्यवहार करते थे। सब व्यक्ति अपने से बड़ों का बड़ा आदर करते थे तथा अपने से छोटों को परम स्नेह करते थे। वहाँ पर किसी भी प्रकार की उद्दण्डता के दर्शन नहीं होते थे। युधिष्ठिर के राज्य की कीर्ति सर्वत्र फैली हुई थी।

तृतीय सर्ग (आयोजन)

पाण्डवों का द्रौपदी से विवाह होने के उपरान्त पाण्डवों के आपसी मतभेद को दूर करने के लिए नारद जी ने यह प्रस्ताव रखा कि द्रौपदी एक-एक वर्ष प्रत्येक पति के साथ रहें। शर्त यह भी थी कि एक वर्ष तक एक पति के साथ रहते हुए यदि दूसरा पति द्रौपदी को देख ले तो उस पति को बारह वर्ष तक वन में रहना पड़ेगा। एक दिन एक चोर ब्राह्मणों की गायों को लेकर चल दिया। ब्राह्मणों ने राजा के द्वार पर जाकर सहायता की प्रार्थना की। अर्जुन शस्त्रागार से शस्त्र लेने के लिए गये। शस्त्रागार में द्रौपदी और युधिष्ठिर को बैठा हुआ देखकर अर्जुन नारद-नियम के अनुसार वनवास के लिए चल दिये। वनवास की अवधि में अनेक स्थानों पर घूमते हुए अर्जुन द्वारिकापुरी पहुँचे। वहाँ पर श्रीकृष्ण की बहन सुभद्रा से विवाह करके इन्द्रप्रस्थ वापस आ गये। श्रीकृष्ण सुभद्रा के लिए बहुत-सा दहेज लेकर इन्द्रप्रस्थ आ गये और बहुत समय तक वहाँ रहे। वहाँ पर अर्जुन और श्रीकृष्ण ने अग्नि-देव की तृप्ति के लिए खाण्डवदाह किया। अग्निदेव ने प्रसन्न होकर अर्जुन को चार श्वेत घोड़े तथा द्रुतगामी कपिध्वज नाम का रथ प्रदान किया। वरुणदेव ने अर्जुन को गाण्डीव धनुष और दो अक्षय तूणीर दिये। अग्नि ने श्रीकृष्ण को कौमुद्री गदा और सुदर्शन चक्र उपहार में दिया। मयदानव ने अग्नि की लपटों से व्याकुल होकर जीवन रक्षा की माँग की। अर्जुन ने उसे अभयदान देकर बचा लिया। मयदानव ने प्रसन्न होकर धर्मराज युधिष्ठिर के लिए अलौकिक सभा भवन तैयार किया। उसने अर्जुन को शंख तथा भीम को भारी गदा प्रदान की।

एक दिन प्रातःकाल पाण्डवों के पास नारद जी आये तथा युधिष्ठिर से पाण्डु का यह सन्देश कहा कि वह राजसूय यज्ञ करें जिससे कि मैं (पाण्डु) इन्द्रलोक में निवास कर सकूँ। युधिष्ठिर ने नारद जी द्वारा सन्देश भेजकर श्रीकृष्ण को बुला लिया तथा राजसूय यज्ञ करने के लिए परामर्श लिया। श्रीकृष्ण ने कहा कि आप सम्राट् हुए बिना राजसूय यज्ञ नहीं कर सकते। सम्राट् बनने के लिए आपको जरासन्ध का वध करना होगा। अतः सर्वप्रथम जरासन्ध का वध किया जाना चाहिए। जरासन्ध ने रुद्रयज्ञ में बलि देने के लिए दो हजार राजाओं को कैद कर रखा है। मैं उन राजाओं को छुड़ाने का आश्वासन देकर आया हूँ। युधिष्ठिर से आज्ञा लेकर भीम-अर्जुन को साथ लेकर श्रीकृष्ण जरासन्ध के पास पहुँचे। जरासन्ध ने भीम से मल्लयुद्ध करने का निश्चय किया। लगातार तेरह दिनों तक युद्ध होता रहा। भीम ने जरासन्ध को थका हुआ जानकर उसकी टांगें पकड़कर उठा लिया और जमीन पर पटक दिया। श्रीकृष्ण से संकेत प्राप्त करके भीम ने जरासन्ध की टांगें चीर कर विपरीत दिशा में फेंक दीं। जरासन्ध का क्रिया कर्म करके उसके पुत्र सहदेव का राज्याभिषेक किया। कैद से मुक्त हुए राजाओं तथा सहदेव ने युधिष्ठिर की अधीनता स्वीकार की। कुछ दिन तक वहाँ रहकर श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से विदा ली। इसके उपरान्त युधिष्ठिर ने अपने चारों भाई अर्जुन, भीम, नकुल तथा सहदेव को दिग्विजय के लिए भेजा। सम्पूर्ण भारत युधिष्ठिर की छत्रछाया में एक हो गया। युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ के लिए सभी राजाओं को आमन्त्रित किया। अर्जुन श्रीकृष्ण को इस यज्ञ में लाने के लिए द्वारिकापुरी गये।

चतुर्थ सर्ग (प्रस्थान)

बोले पार्थ अकेले में जा केशव हाथ तुम्हारे लाज।
भव सागर से पार उतारो पाण्डव कुल के तुम्हीं जहाज॥

द्वारिकापुरी में अर्जुन निमन्त्रण लेकर पहुँचे तो उन्होंने श्रीकृष्ण से एकान्त में कहा कि 'अब पाण्डव कुल की लाज आपके ही हाथ में है।' श्रीकृष्ण ने अर्जुन को विदाकर बलराम और उद्धव से कहा कि राजसूय यज्ञ में सभी राजा आमन्त्रित हैं, अतः कोई भी असाधारण घटना हो सकती है। अतः उन्हें सेना सहित चलना चाहिए। श्रीकृष्ण सेना साथ लेकर इन्द्रप्रस्थ जा पहुँचे। युधिष्ठिर ने सूचना पाकर उनका स्वागत किया। श्रीकृष्ण का सत्कार देखकर शिशुपाल और रुक्मी को ईर्ष्या होने लगी। वे दोनों ही स्वयं को पाण्डवों से श्रेष्ठ मानने लगे। श्रीकृष्ण ने रुक्मी की बहन रुक्मणी को अपनी पटरानी बना लिया था। रुक्मणी का विवाह शिशुपाल से होनेवाला था। अतः दोनों ही श्रीकृष्ण से ईर्ष्या रखते थे।

पंचम सर्ग (राजसूय यज्ञ)

राजसूय यज्ञ की सुव्यवस्था के लिए विभिन्न व्यक्तियों में कार्य विभाजन कर दिया गया। सब राजा आसनों पर बैठने लगे। श्रीकृष्ण

ने ब्राह्मणों के चरण धोये। सबसे पहले पूजन के लिए जब सहदेव ने श्रीकृष्ण का नाम पुकारा तथा श्रीकृष्ण सभासदों के बीच आये तो सभी राजा आसनों से उठकर खड़े हो गये केवल शिशुपाल ही बैठा रहा। अग्रपूजा के लिए श्रीकृष्ण को ही सबसे श्रेष्ठ बताया गया था। भीम ने सहदेव को आज्ञा दी कि सबसे पहले श्रीकृष्ण को और फिर अन्य पूज्य राजाओं को अर्घ्य दो। सभी राजाओं ने इसका समर्थन किया, किन्तु शिशुपाल ने इसका विरोध किया। शिशुपाल ने इस प्रकार जब श्रीकृष्ण की निन्दा की तो भीम उठकर खड़े हो गये। श्रीकृष्ण की प्रशंसा और अग्रपूजा के लिए नाम प्रस्तावित किये जाने की बात शिशुपाल सहन नहीं कर सका और श्रीकृष्ण पर प्रहार करने के लिए दौड़ पड़ा, किन्तु श्रीकृष्ण प्रसन्न मुद्रा में बैठे रहे। वह जिधर भी प्रहार करने के लिए दौड़ता उसी दिशा में श्रीकृष्ण का हँसता हुआ मुख दिखाई देता। अन्ततः शिशुपाल हाँफ गया। श्रीकृष्ण ने शान्त भाव से कहा कि–तू मेरा फुफेरा भाई है, अतः अब तक के सारे दुर्व्यवहार को मैंने माफ कर दिया। अब ऐसा न हो कि तुझे दण्ड देना पड़ जाये। शिशुपाल फिर भी श्रीकृष्ण की निन्दा करता रहा। तब श्रीकृष्ण ने अपने सुदर्शन चक्र से शिशुपाल के सिर को काट दिया। धर्मराज युधिष्ठिर ने आदरपूर्वक उसका अन्तिम संस्कार किया तथा उसके पुत्र का राज्याभिषेक किया।

षष्ठ सर्ग (उपसंहार)

शिशुपाल की मृत्यु के बाद भी राजसूय-यज्ञ विधिवत् रूप से चलता रहा। व्यास तथा धौम्य आदि सोलह ऋषियों ने बड़े ही विधि विधान से यज्ञ सम्पन्न कराया। युधिष्ठिर ने दान-दक्षिणा देकर सभी ऋषियों का सत्कार किया और सभी राजाओं को आदर-सत्कार के साथ सन्तुष्ट किया। उन्होंने बलराम तथा श्रीकृष्ण को धन्यवाद दिया। व्यास आदि ऋषियों ने युधिष्ठिर को अपना आशीर्वाद प्रदान किया। इस प्रकार से अग्रपूजा खण्डकाव्य की कथा पूर्ण होती है।

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

1. 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य के 'आयोजन' सर्ग की कथावस्तु प्रस्तुत कीजिए। **(2020MB,MG,ME,MF)**
2. 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य के नायक का चरित्रांकन कीजिए। **(2020MF)**
3. 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य के आधार पर श्रीकृष्ण का चरित्रांकन कीजिए। **(2017AA,AB,19AA,AB,AG,20MA)**
4. 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य के राजसूय यज्ञ सर्ग का सारांश संक्षेप में प्रस्तुत कीजिए। **(2020MA)**
5. 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य के 'सभारम्भ' सर्ग की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए। **(2020MC)**
6. 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य के नायक की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए। **(2020MC,MG,MB)**
7. 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य का कथानक संक्षेप में लिखिए। **(2016CC,CE,17AA,19AB,20MD)**
8. 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य के आधार पर युधिष्ठिर के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए। **(2019AC,20MD,ME)**

●●

4 मेवाड़-मुकुट

(गंगारत्न पाण्डेय)

बुलन्दशहर, देवरिया, बरेली, सुल्तानपुर, सीतापुर, बहराइच जनपदों के लिए निर्धारित।

सारांश

प्रथम सर्ग (अरावली)

राजस्थान के दक्षिण-पूर्वी भाग में अरावली पर्वत शृंखला फैली हुई है। वह मेवाड़ की रक्षा का पूर्ण दायित्व स्वीकार करके बड़े ही गर्व से अपना मस्तक ऊँचा किये हुए खड़ा है। इस अरावली पर्वत की शृंखलाओं में कभी ऋषि-मुनि तपस्या करते थे और वहाँ पर उनके वेद-मन्त्रों के स्वर गूँजते थे। युद्ध में पराजित होने के बाद राणाप्रताप इसी सुरक्षित स्थान में पहुँचे जिसमें वे अपनी पत्नी–लक्ष्मी और पुत्र तथा पुत्री को लेकर निवास करते हैं। वन में अनेक कष्टों को सहन करते हुए भी उन्होंने अपने स्वाभिमान की रक्षा की तथा शत्रु पक्ष की

कन्या को पुत्री के समान पाला। यह उनकी उदारता तथा शरणागत वत्सलता का प्रमाण है। सर्ग के अन्त में महाराणा प्रताप की पत्नी अपने पुत्र को गोद में लिए भविष्य की चिन्ता में डूबी हुई बैठी है।

द्वितीय सर्ग (लक्ष्मी)

अरावली पर्वत शृंखला पर महाराणा प्रताप की कुटिया, चाँदनी रात का प्रथम पहर है। सर्वत्र नीरवता छायी हुई है। पक्षीगण दिन भर की थकान के बाद अपने-अपने घोंसले में सोये हुए हैं। इस एकान्त तथा निर्जन स्थान पर अपनी कुटिया के समक्ष लक्ष्मी चिन्तामग्न मुद्रा में बैठी हुई है। अपने भूख से पीड़ित पुत्र को देखकर व्याकुल हो उठी है। राणा की सन्तान होते हुए भी भरपेट दूध भी नहीं नसीब है। रानी लक्ष्मी कहती हैं कि, ''कर्मयोग तो आदर्शमात्र है, कर्म भोग ही सच्चा दर्शन है। सज्जन सर्वदा मार्मिक वेदना को प्राप्त करते हैं, परन्तु कुमार्गी व्यक्ति जीवन में सफलता प्राप्त करते हैं।'' महाराणा प्रताप शत्रु के सामने अपना मस्तक नहीं झुका सकते। इसी स्वाभिमान की रक्षा के लिए सभी प्रकार के दुःखों को सहन कर रहे हैं। लक्ष्मी सम्मान रक्षा हेतु स्वयं को तो कष्टों में डाल सकती है किन्तु अपने पुत्र तथा पुत्री का दुःख उससे देखा नहीं जाता। उसके मुख से अचानक इन शब्दों को सुनकर महाराणा प्रताप रानी के रोने का कारण पूछते हैं। रानी लक्ष्मी 'कुछ नहीं', 'कुछ भी तो नहीं' कहकर आँसू पोंछती हुई कुटिया के अन्दर चली जाती है। महाराणा प्रताप के अश्रु भी सहसा निकल आते हैं।

तृतीय सर्ग (प्रताप)

महाराणा प्रताप कुछ समय तक अपनी कुटिया के समक्ष खड़े हुए कुछ विचार करते रहते हैं। फिर वृक्षों की घनी छाया में आँखें बन्द किये हुए रानी लक्ष्मी के कष्टों के विषय में सोचते हैं। वे कहते हैं कि, कर्त्तव्य का पालन करने से ही यश की प्राप्ति होती है। मेवाड़ को मुक्त कराना ही उनका प्रमुख कर्त्तव्य है। इसके लिए वे अपने प्राणों की आहुति तक देने के लिए तैयार हैं। वे सोचते हैं मैं ही अपने कर्त्तव्य-पथ से विचलित क्यों होऊँ। मानसिंह जैसा वीर उसके इशारे पर नाच रहा है। अकबर की साम, दाम, दण्ड, भेद की नीति से मैं ही शेष बचा हूँ। पर आज मैं किस दशा को पहुँच गया हूँ?.....रे अकबर! आज राणा को तूने सारे राजपूतों से अलग करके भटका दिया है। मेरा बन्धु शक्तिसिंह भी विद्रोही अकबर से जाकर मिल गया है, किन्तु जब उसकी आत्मा उसे धिक्कारेगी तो अवश्य ही वह लौटकर वापस आयेगा।

महाराणा प्रताप चेतक की स्वामिभक्ति तथा शत्रु पक्ष की कन्या 'दौलत' के विषय में भी विचार करते हैं। वे सिसोदिया वंश की आन रखने का संकल्प लेते हैं, किन्तु साधनहीन हुए वह विचार करते हैं कि वह शत्रु पक्ष का सामना कैसे करें।

चतुर्थ सर्ग (दौलत)

दौलत चिन्तामग्न मुद्रा में लताओं से आच्छादित घनी छाया में बैठी हुई अपने विगत जीवन के विषय में विचार कर रही है और कहती है–''उस भोग-विलास भरे जीवन में कटुता ही थी प्रीति नहीं।'' उसे विगत जीवन अच्छा नहीं लगता। महाराणा प्रताप की सज्जनता के विषय में विचार करती हुई वह कहती है–''अकबर यह क्यों नहीं समझते कि ईश्वर ने सबको समान बनाया है।'' वह शक्तिसिंह और प्रताप में तुलना करती हुई कहती है–''ये सूर्य हैं, वह दीपक है'' दौलत महाराणा प्रताप के लिए कुछ करना चाहती है। विचारों में निमग्न दौलत को उसी समय किसी के पैरों की ध्वनि सुनायी पड़ती है। यहीं पर इस सर्ग का अन्त हो जाता है।

पंचम सर्ग (चिन्ता)

एकान्त स्थान में बैठी हुई दौलत राणा प्रताप के पदचाप सुनकर उठ खड़ी होती है। राणा प्रताप उसके एकान्त में बैठने और उदासी का कारण पूछते हैं। वह कहती है, ''मैं तो बहुत सुखी हूँ, बस एक ही डर है, मेरे कारण कहीं आपकी स्वाधीनता का प्रण न टूट जाय। मैं आपकी कुछ सेवा तो नहीं कर सकी, उल्टे आपके दुःख ही मैंने बढ़ा दिये हैं।''

राणा कहते हैं, ''पगली! भला कौन-सा दुःख यहाँ मेरे लिए ले आयी है। तेरे आने से मुझे एक बेटी मिल गयी है।'' दौलत उत्तर देती है, ''रानी (लक्ष्मी) तो भीतर ही भीतर पीड़ा का विष पी रही हैं मैं उनसे कुछ पूछने में भी सहमती हूँ। आज आप मेरे साथ चलें, मैं उनका दुःख दूर करने का प्रयास करूँगी।''

दौलत तथा राणा प्रताप लक्ष्मी के पास जाते हैं। दौलत अपनी माता से उदासी का कारण पूछती है। लक्ष्मी पूरे परिवार को अभागा बताती है। राणा प्रताप बताते हैं आज उन्होंने मेवाड़ को मुक्त कराने का दृढ़ निश्चय किया है। इसके लिए वे सिन्धु देश से साधन प्राप्त करने की बात करते हैं और अकबर से युद्ध करने की बात बताते हैं। क्षत्राणी होने के कारण लक्ष्मी स्वाधीनता के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए तैयार हो जाती है। अगले दिन प्रताप प्रस्थान करने का निश्चय सुनाते हैं।

षष्ठ सर्ग (पृथ्वीराज)

राणा प्रताप प्रातःकाल प्रस्थान का प्रबन्ध करते हैं तभी एक अनुचर आकर उन्हें पत्र देता है। यह पत्र पृथ्वीराज द्वारा भेजा गया है।

पृथ्वीराज अकबर के मित्र हैं और कवि हैं, किन्तु राणा प्रताप से भेंट करते हैं और अकबर से युद्ध करने के लिए प्रेरित करते हैं। राणा प्रताप उन्हें अपनी साधनहीनता के विषय में बतलाते हैं, तो पृथ्वीराज भामाशाह का परिचय देते हैं और कहते हैं कि भामाशाह आपकी प्रत्येक प्रकार की सहायता करने को तैयार हैं। पृथ्वीराज उन्हें बुलाने के लिए राणा प्रताप की आज्ञा भी लेते हैं।

सप्तम सर्ग (भामाशाह)

राणा प्रताप भविष्य के जीवन के विषय में चिन्तन करते हैं। तभी हिरणों का समूह उनके सामने से होकर गुजरता है। इसके बाद मातृभूमि की जय-जयकार करते हुए भामाशाह वहाँ उपस्थित होते हैं। भामाशाह अपने पूर्वजों की संचित सम्पत्ति राणा प्रताप को सौंपने की इच्छा करते हैं, किन्तु राणा प्रताप उसे पराया धन मानकर अस्वीकार कर देते हैं। भामाशाह उन्हें यह समझाते हैं कि यह उनका अपना धन है। राणा प्रताप उन्हें अपने गले से लगा लेते हैं। फिर तो राणा प्रताप में नया उत्साह उत्पन्न हो जाता है। वह देश के हित में मर मिटने के लिए तैयार हो जाते हैं। यहीं पर खण्डकाव्य की कथा समाप्त हो जाती है।

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

1. 'मेवाड़-मुकुट' खण्डकाव्य के 'पृथ्वीराज' सर्ग का कथानक संक्षेप में लिखिए। **(2020MC,MB)**
2. 'मेवाड़-मुकुट' खण्डकाव्य के प्रमुख पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए। **(2020MF)**
3. 'मेवाड़-मुकुट' खण्डकाव्य के नायक महाराणा प्रताप का चरित्र-चित्रण कीजिए। **(2016CF,17AA,AB,19AB,20MC,MB,MF)**
4. 'मेवाड़-मुकुट' खण्डकाव्य के आधार पर भामाशाह का चरित्र–चित्रण कीजिए। **(2020MD)**
5. 'मेवाड़-मुकुट' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग की कथा का सारांश लिखिए। **(2016CD,17AF,AG,20MA,MF)**
6. 'मेवाड़-मुकुट' खण्डकाव्य की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए। **(2016CC,CE,CF,17AA)**

●●

5 जय सुभाष

(विनोदचन्द्र पाण्डेय 'विनोद')

लखनऊ, सहारनपुर, फैजाबाद, बाँदा, झाँसी, हरदोई जनपदों के लिए।

सारांश

प्रथम सर्ग

सुभाषचन्द्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 की पवित्र तिथि को कटक में हुआ था। इनके पिता श्री जानकी नाथ बोस वहाँ के एक प्रतिष्ठित नागरिक थे। उनकी माता प्रभावती अत्यन्त सदाचारी और उदार हृदय की स्त्री थीं। बचपन से ही सुभाष के जीवन पर माता-पिता तथा विद्यालय के एक शिक्षक बेनीमाधव का अत्यधिक प्रभाव पड़ा। साहस, निर्भीकता, बुद्धिमत्ता तथा तेजस्विता बालक सुभाष ने अपने माता-पिता और गुरुजी से सहज ही प्राप्त कर ली थी। उन्हें कहीं भी दीन-दुःखी लोग मिल जाते तो उनकी सेवा करने में उन्हें बड़ा सन्तोष होता। एक बार जाजपुर गाँव में भयंकर बीमारी फैलने पर सुभाष ने वहाँ जाकर गाँववालों की सेवा सुश्रूषा की तथा उनका कष्ट दूर करने के बाद ही वापस लौटे। मैट्रिक परीक्षा उन्होंने प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। स्वामी विवेकानन्द का सारगर्भित भाषण सुनकर मृत्यु ज्ञान की खोज में वह घर से निकल पड़े। काशी, मथुरा, वृन्दावन तथा हरिद्वार आदि स्थानों पर सच्चा साधुत्व प्राप्त न करके वह वापस लौट आये और फिर अध्ययन में जुट गये। प्रथम श्रेणी में इण्टर की परीक्षा पास करके वह प्रेसीडेंसी कॉलेज में प्रविष्ट हुए। वहाँ के एक प्रोफेसर जो अंग्रेज थे, भारतीयों से बहुत घृणा करते थे। एक बार भारतीयों के प्रति किये गये अपमान से आहत होकर सुभाष ने उनके गाल पर एक तमाचा जड़ दिया। परिणामस्वरूप वे स्कूल से निकाल दिये गये। एक अन्य विद्यालय से बी0ए0 करने के बाद वे इंग्लैण्ड गये और वहाँ कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से आई0सी0एस0 की परीक्षा उत्तीर्ण की, किन्तु उन्होंने भारत आकर अंग्रेजों की अधीनता में आई0सी0एस0 का पद स्वीकार नहीं किया। वे पूरी निष्ठा के साथ देश सेवा के कार्य में लग गये।

द्वितीय सर्ग

सुभाषचन्द्र बोस ने पूरी तरह स्वयं को देशसेवा के लिए समर्पित कर दिया। सन् 1921 के असहयोग आन्दोलन के माध्यम से वे महात्मा गांधी के सम्पर्क में आये और काँग्रेस में सम्मिलित हो गये। उसी समय बंगाल में देशबन्धु चितरंजनदास के नेतृत्व में स्वतन्त्रता संग्राम की ज्योति जलायी गयी। परिणामस्वरूप उन्हें अनेक बार जेल जाना पड़ा। वे कलकत्ता नगरमहापालिका के अधिशासी अधिकारी भी रहे और निर्धारित वेतन में से आधा वेतन लेकर पूरी निष्ठा और सेवा-भाव से उन्होंने अपना कार्य किया। जेल यात्राओं के दौरान अंग्रेजों ने उन्हें अलीपुर, बहरपुर तथा माण्डले की जेलों में रखा किन्तु सुभाष के हृदय में स्वतन्त्रता की जलती हुई चिनगारी बुझने के बजाय और अधिक वेग से जलने लगी। परिणामस्वरूप सरकार को झुकना पड़ा और अस्वस्थ सुभाष को अंग्रेजों ने जेल से रिहा कर दिया।

तृतीय सर्ग

1928 ई० में काँग्रेस के छियालीसवें अधिवेशन के अवसर पर स्वयंसेवक दल का नेतृत्व सुभाषचन्द्र बोस सम्भाल रहे थे। उनकी संगठन शक्ति को देखकर सब पर जादू-सा प्रभाव पड़ा। मंच से अध्यक्षीय भाषण देते समय पं० मोतीलाल नेहरू ने सुभाष की भूरि-भूरि प्रशंसा की और उन्हें देश के नवयुवकों का आदर्श कहकर पुकारा। स्वतन्त्रता सेनानियों के एक जुलूस का नेतृत्व करते हुए उन्हें पुलिस ने घायल कर दिया तथा जेल में डाल दिया। अलीपुर जेल से रिहा होने के बाद उन्होंने भारतीय जनमानस में पुनः स्वतन्त्रता की अलख जगायी। परिणामतः उन्हें पुनः सिवनी जेल में डाल दिया गया। अस्वस्थ हो जाने पर उन्हें जेल से छोड़ा गया। वे चिकित्सा हेतु यूरोप गये तो वहाँ भी उन्होंने भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन का प्रसार किया। उन्होंने 'द स्ट्रगल' नामक पुस्तक लिखी। भारत लौटने के बाद उन्हें फिर बन्दी बना लिया गया। फिर अस्वस्थता के कारण उन्हें रिहा किया गया तथा पुनः वह विदेश गये। लौटने पर उन्हें हरिपुरा काँग्रेस अधिवेशन का अध्यक्ष बनाया गया।

चतुर्थ सर्ग

ताप्ती नदी के किनारे पर स्थित विट्ठल नगर में काँग्रेस का 51वां अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन में 51 द्वार बनाये गये और 51 राष्ट्रीय ध्वज फहराये गये तथा 51 बैलों के सजे हुए रथ में सुभाषचन्द्र बोस बैठकर आये। सभा में सुभाष के ओजस्वी भाषण को सुनकर जनता में देशप्रेम की ज्वाला धधक उठी, नवयुवकों में नयी चेतना जाग्रत हो गयी। इसके बाद त्रिपुरा काँग्रेस अधिवेशन में अध्यक्ष पद के लिए चुनाव हुआ जिसमें सुभाषचन्द्र जीत गये तथा पट्टाभि सीतारमैया हार गये। गांधीजी पट्टाभि सीतारमैया को अध्यक्ष पद पर देखना चाहते थे। गांधीजी के द्वारा रोष प्रकट किये जाने पर सुभाष ने तुरन्त पद-त्याग कर दिया तथा 'फारवर्ड ब्लाक' नामक दल गठित किया। अपने ओजस्वी भाषणों से उन्होंने जनता को उत्साहित किया। कलकत्ता में ब्लैक होल नामक स्मारक, जिसमें अनेक अंग्रेजों को जिन्दा दफन कर दिया गया था उसको हटवाने के लिए नेताजी ने बहुत प्रयास किया। किन्तु सरकार द्वारा उन्हें फिर जेल भेज दिया गया। जेल से छूटने के बाद उन्हें अपने घर में ही नजरबन्द रखा गया। इस प्रकार सुभाषचन्द्र बोस मातृभूमि की मुक्ति हेतु निरन्तर अंग्रेज सरकार की यातनाओं को सहन करते रहे।

पंचम सर्ग

नजरबन्दी के बाद सुभाष के घर पर शासन का कड़ा पहरा रहने लगा। वह देश के लिए विशेष रूप से चिन्तित रहने लगे। अतः उन्होंने वहाँ से भागने की योजना बनायी और वह जाड़ों की आधी रात को मुल्ला का

वेश बनाकर विदेश चले गये। काबुल जाकर उत्तमचन्द्र से मित्रता हुई, जिसने उन्हें बाहर निकलने में सहायता की थी। इसके बाद उन्होंने जापान जाकर 'आजाद हिन्द फौज' का नेतृत्व किया जिसमें अनेक भारतीय युवकों ने भाग लिया। फिर वह सिंगापुर गये जहाँ रासबिहारी बोस ने उनका बहुत सम्मान किया। यहाँ पर सुभाष ने नेहरू, गाँधी, आजाद और बोस नामक चार ब्रिगेड बनाये, जिसमें सभी जातियों के सेनानी परस्पर प्रेमपूर्वक कार्य करते थे। वे सभी सैनिक ब्रिटिश राज्य को पराजित करने के लिए अति उत्साहित थे।

षष्ठ सर्ग

सिंगापुर में सैनिकों को सम्बोधित करते हुए सुभाष ने भारतीयों का आह्वान किया और नारा दिया, ''तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा''।

सुभाष द्वारा प्रेरित किये जाने पर उनकी सेना अंग्रेजों की सेना से भिड़ी और उसे पराजित करने लगी। 'भारत माता की जय', 'नेताजी की जय' का उद्घोष करते हुए आजाद हिन्द फौज निरन्तर आगे बढ़ती जा रही थी। 18 मार्च, 1944 ई० को यह सेना अंग्रेजों को पराजित करती हुई कोहिमा पहुँची। आजाद हिन्द फौज ने 'मोराई टिड्डिम' पर अधिकार कर लिया। अराकान पर भी तिरंगा झंडा फहरा दिया गया। इस प्रकार से विजय प्राप्त करते हुए उन्होंने 1945 ई० में नव वर्ष को पूर्ण उत्साह के साथ मनाया।

सप्तम सर्ग

बर्मा पर पुनः दुश्मन ने अधिकार कर लिया। आजाद हिन्द फौज को भी पराजय का मुख देखना पड़ा। अगस्त 1945 ई० में अमेरिका ने हिरोशिमा तथा नागासाकी पर परमाणु बम गिराये, जिस कारण बहुत से नर-नारी मृत्यु को प्राप्त हुए तथा कुछ विकलांग हो गये। जापान ने जनहित को देखते हुए हथियार डाल दिये। आजाद हिन्द फौज के सैनिक व्याकुल होने लगे। यह देखकर सुभाष भी परेशान हो गये। जनहित में उन्होंने भी आत्म-समर्पण का निश्चय कर लिया तथा सैनिकों को पुनः उचित समय पर लड़ाई प्रारम्भ करने का आश्वासन दिया। सुभाष ने सैनिकों से विदा ली तथा जहाज द्वारा टोकियो के लिए प्रस्थान किया। उन्हें जापान के प्रधानमंत्री 'हिरोहितो' से भी मिलना था। रास्ते में ही दुर्भाग्यवश 18 अगस्त को उनका जहाज **ताइहोक** में दुर्घटनाग्रस्त हो गया। जापानी रेडियो द्वारा यह दुःखद समाचार प्रसारित किया गया कि नेताजी सुभाषचन्द्र बोस अब नहीं रहे। अचानक प्रसारित इस समाचार पर भारतीय स्तब्ध रह गये। यद्यपि आज हमारे बीच नेता जी नहीं हैं किन्तु उनकी अमरवाणी भारतवासियों को अनन्त काल तक प्रेरणा प्रदान करती रहेगी। भारतवासी युगों-युगों तक उनके शौर्य, पराक्रम और देशभक्ति के गीत गाते रहेंगे।

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

1. 'जय सुभाष' खण्डकाव्य की किसी प्रमुख घटना की कथा संक्षेप में लिखिए। **(2020MA)**
2. 'जय सुभाष' खण्डकाव्य के आधार पर उसके नायक का चरित्र-चित्रण कीजिए। **(2016CB,CC,17AA,AC,AD,AG, 19AA,AD,AE,AG)**
3. 'जय सुभाष' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग की कथा संक्षेप में लिखिए। **(2016CE,19AA,20MD,MA,MF,MB)**
4. 'जय सुभाष' खण्डकाव्य के आधार पर सुभाष का चरित्रांकन कीजिए। **(20ME)**
5. 'जय सुभाष' खण्डकाव्य के प्रथम सर्ग की कथा संक्षेप में लिखिए। **(2018HF,20MC,MG,ME)**
6. 'जय सुभाष' खण्डकाव्य के आधार पर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का चरित्र-चित्रण कीजिए। **(2020MC,MG,MF,MB)**
7. 'जय सुभाष' खण्डकाव्य की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए। **(2016CA,17AA,19AB,AG)**
8. 'जय सुभाष' खण्डकाव्य के चतुर्थ सर्ग की कथा अपने शब्दों में लिखिए। **(2020MD)**

●●

6 मातृभूमि के लिए

(डॉ० जयशंकर त्रिपाठी)

गोरखपुर, मुरादाबाद, शाहजहाँपुर, लखीमपुर खीरी, मैनपुरी, मुजफ्फरनगर जनपदों के लिए।

सारांश

डॉ० जयशंकर त्रिपाठी द्वारा लिखित प्रस्तुत खण्डकाव्य तीन सर्गों 1. संकल्प, 2. संघर्ष और 3. बलिदान में विभक्त है। इसकी कथा निम्न प्रकार है–

प्रथम सर्ग (संकल्प)

भारत की स्वतन्त्रता से पूर्व यहाँ ब्रिटिश हुकूमत थी। अंग्रेजों का साम्राज्य था। भारतीय लोगों पर अंग्रेज तरह-तरह के अत्याचार कर रहे थे। परिणाम यह हुआ कि अनेक भारतीय उत्साही वीरों ने स्वाधीनता का संघर्ष छेड़ दिया। गांधी जी ने सत्य, अहिंसा तथा स्वदेशी का सन्देश दिया। अंग्रेज सरकार देशभक्तों पर विभिन्न प्रकार के जुल्म कर रही थी। एक तरफ अंग्रेजों के द्वारा किये गये अत्याचार बढ़ रहे थे तो दूसरी तरफ वीर देशभक्तों के हृदय में स्वतन्त्रता की चिनगारी सुलग रही थी। उसी वातावरण में चन्द्रशेखर आजाद ने आकर बलिदान का मार्ग प्रशस्त कर दिया।

चन्द्रशेखर आजाद का जन्म मध्य प्रदेश के भावरा नामक गाँव में हुआ था। बड़ा होकर वह ब्राह्मण बालक अध्ययन करने के लिए

काशी आया। वहाँ समाचार-पत्रों में अंग्रेजों के जुल्मों की कहानी पढ़कर उसका खून खौलने लगा, उसका चेहरा क्रोध से तमतमा उठा। रौलट एक्ट और उसके विरोध में जलियाँवाला बाग में सभा हुई। अंग्रेजों ने चारों ओर से घेरकर उस निहत्थी भीड़ पर गोली चलवा दी। जनरल डायर के आदेश पर इस हत्याकाण्ड का समाचार सुनकर चन्द्रशेखर की आँखें सजल हो उठीं, मुख क्रोध से लाल हो गया। उन्होंने अपने साथियों को देश-भक्ति की प्रेरणा दी और कहा–

सूत्रों का रटना छोड़ो तो अब स्वतन्त्रता का पाठ पढ़ो॥

इस घटना के बाद चन्द्रशेखर ने भारत माता की पराधीनता की बेड़ियों को तोड़ने का प्रण कर लिया।

1921 ई० में जब ब्रिटिश युवराज भारत आये तो महात्मा गांधी ने असहयोग का नारा दिया। देश के कोने-कोने से कर्मचारी अपने कार्यालय, विद्यार्थी अपने विद्यालय तथा मजदूर अपने कारखाने छोड़कर निकल पड़े। अंग्रेजों का दमन चक्र बढ़ गया। 15 वर्ष का बालक चन्द्रशेखर भी बन्दी बना लिया गया। जब उन्हें मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया और मजिस्ट्रेट ने नाम पूछा तो उत्तर मिला – आजाद। पिता का नाम पूछा तो चन्द्रशेखर ने कहा – स्वाधीन। निवास-स्थान पूछा गया तो उसने कहा – जेलखाना। चन्द्रशेखर को सोलह बेंतों का दण्ड दे दिया गया। बालक बेंतों की मार खाकर भी 'भारत माता की जय' बोलता रहा। एक छोटे-से बालक ने अंग्रेजों को चुनौती दे दी। काशी के लोगों ने उनकी देशभक्ति और वीरता से प्रभावित होकर चन्द्रशेखर का बड़ा मान-सम्मान किया तथा अपार स्नेह दिया। इस प्रकार चन्द्रशेखर का नाम बिजली की चिनगारी की तरह सम्पूर्ण भारत में फैल गया।

द्वितीय सर्ग (संघर्ष)

चन्द्रशेखर सभी प्रकार के बन्धनों से मुक्त होकर एक ही बन्धन में बँध गये थे और वह था राष्ट्रभक्ति का बन्धन। आजाद के अद्‌भुत शौर्य को देखकर देशवासी तो क्या प्रकृति भी उन पर मोहित हो गयी थी। देश को आजाद कराने के लिए उन्होंने अपने साथियों और नवयुवकों के हृदय में राष्ट्रीय चेतना की अग्नि भड़का दी। जब असहयोग आन्दोलन का प्रभाव कम पड़ने लगा, तो उन्होंने सशस्त्र क्रान्ति का प्रश्रय लिया तथा इसके लिए उन्होंने बम तथा पिस्तौल का निर्माण करवाया। जब इन चीजों के लिए उन्हें धन की आवश्यकता पड़ी तो उन्होंने सरकारी खजाने को लुटवाया तथा एक मठाधीश का शिष्यत्व भी स्वीकार किया। आजादी के लिए उन्हें ड्राइवरों की आवश्यकता हुई तो उन्होंने मोटर ड्राइवरी भी सीखी। चन्द्रशेखर ने काकोरी में सरकारी खजाना लूटा। इस काण्ड में पकड़े जाने पर बिस्मिल तथा अशफाक उल्ला खाँ को फाँसी दे दी गयी तथा बख्शी को आजीवन कारावास का दण्ड दिया गया। कोशिश करने पर भी चन्द्रशेखर और भगतसिंह को सरकार गिरफ्तार न कर सकी।

1928 ई० में 'साइमन कमीशन' भारत के झगड़ों की जाँच के लिए आया। राष्ट्रीय स्वयंसेवकों ने इसका बड़ी सख्ती से विरोध किया। परिणामतः उन्हें सरकार की लाठियों का प्रहार झेलना पड़ा जिससे क्रोधित होकर सारे भारत में जनता ने साइमन कमीशन का विरोध किया। लखनऊ में अंग्रेजों ने जवाहरलाल नेहरू पर लाठियाँ बरसायीं और वह घायल हो गये। लाहौर में भी साइमन कमीशन का पूरी सख्ती से विरोध हुआ और वहाँ के आकाश में 'साइमन कमीशन वापस जाओ' के नारे गूँजने लगे। पंजाब केसरी लाला लाजपतराय काले झण्डों के साथ नारे लगा रहे थे, उन पर पुलिस अफसर स्काट ने निर्ममतापूर्वक प्रहार किया जिससे घायल अवस्था में ही उनका कुछ दिनों के बाद देहावसान हो गया। उनकी मृत्यु का समाचार सुनकर सारे देश में शोक व्याप्त हो गया। इस समय पूर्वी भारत में चन्द्रशेखर आजाद क्रान्ति की ज्वाला धधका रहे थे उधर पश्चिमी भारत में सरदार भगतसिंह।

चन्द्रशेखर आजाद ने दिल्ली के फिरोजशाह मेले में क्रान्तिकारियों का सम्मेलन किया जिसमें सुखदेव, बटुकेश्वर दत्त, यतीन्द्रनाथ दत्त, सरदार भगतसिंह आदि सभी देशभक्त उपस्थित हुए। सबके सहयोग से चन्द्रशेखर आजाद ने 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी' का गठन किया। आजाद इस सेना के कमाण्डर-इन-चीफ थे। लाहौर में चन्द्रशेखर ने भगतसिंह और राजगुरु से मिलकर लाला लाजपतराय के हत्यारे पुलिस अफसर स्काट की हत्या करने की योजना बनायी। स्काट के स्थान पर सैण्डर्स मारा गया। इससे अंग्रेज भयभीत हो गये और उन्होंने असेम्बली में 'जनता रक्षा बिल' प्रस्तुत किया, जिसे अध्यक्ष विट्ठल भाई पटेल ने पास नहीं होने दिया। 8 अप्रैल को सरदार भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने असेम्बली में बम फेंका जिससे अंग्रेज भयभीत हो गये। दोनों राष्ट्रभक्त अंग्रेज सरकार द्वारा बन्दी बना लिए गये। उन्हें पहले आजीवन कारावास फिर बाद में प्राणदण्ड दिया गया। आजादी का सारा भार अब प्रखर चन्द्रशेखर के सिर पर आ गया।

तृतीय सर्ग (बलिदान)

चन्द्रशेखर आजाद उन दिनों मध्य प्रदेश की सातार नदी के किनारे हनुमान मन्दिर की कोठरी में विश्राम किया करते थे। वहाँ की प्रकृति बड़ी ही सुहावनी थी। चारों ओर पलाश के लाल-लाल फूल फैले हुए थे। एक रात को मास्टर रुद्रप्रयाग और चन्द्रशेखर भारत माता को पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त कराने के लिए भविष्य की योजना बना रहे थे। रुद्रप्रयाग से आजाद ने कहा कि– तुम कुछ दिनों तक चुपचाप रहकर संगठन शक्ति को मजबूत करो, मैं नहीं चाहता कि कहीं हड़बड़ी और जल्दबाजी में तुम्हारे प्राण संकट में पड़ जायँ।

चन्द्रशेखर ने पलाश के फूलों पर एक दृष्टि डाली और भावुक होकर कहा– यह धरती जो पलाश के लाल-लाल फूलों की चूनर ओढ़े हैं उसमें मुझे बिस्मिल, अशफाक, रोशन, खुदीराम बोस और यतीन्द्रनाथ का रक्त बहता हुआ दिखाई दे रहा है। भगतसिंह और राजगुरु को मृत्यु-दण्ड मिला है। अंग्रेजों ने भारत माता के पुत्रों के खून से ही उसका आँचल रंग दिया है। इस कृत्य के लिए मैं अंग्रेजों को छोड़ नहीं सकता। इसके लिए मैं प्रतीक्षा नहीं कर सकता। आर्मी के संगठन को मजबूत करके क्रान्ति का बिगुल बजाते हुए मुझे अपना दायित्व पूरा करना ही होगा।

एक दिन आजाद फूलबाग की सभा में सशस्त्र क्रान्ति के विरुद्ध भाषण सुन रहे थे, वहीं पर खड़े गणेशशंकर विद्यार्थी ने उनके उत्तेजित मन को शान्त किया और कहा– "देख आजाद! नेता की अनजानी बातों को मत-सुनना।" उन्हें इस बात का डर था कि कहीं आजाद सभा को भंग न कर दें। उनका यह विचार भ्रम ही था। आजाद ने कहा कि मैं प्रयाग में जवाहरलाल नेहरू से मिलना चाहता हूँ, कानपुर में पार्टी के संगठन की क्या स्थिति है देखना चाहता हूँ तथा प्रयाग में संकट को दूर करने का उपाय सोचूँगा।

प्रयाग के उत्तरी भाग में वृक्षों के नीचे आजाद अपने मित्रों से बात कर ही रहे थे कि अल्फ्रेड पार्क के पास आकर पुलिस की गाड़ी रुकी। आजाद ने तुरन्त अपने मित्रों को विदा किया तथा पिस्तौल में गोलियाँ भरीं तथा पुलिस से मोर्चा लिया। उन्होंने पिस्तौल की पहली गोली से एक देशी अफसर का जबड़ा तोड़ दिया। एस०पी० नॉटवाबर यह देखकर हैरान था। उसने वृक्ष की ओट ली। इस समय आजाद अकेले ही पुलिस का सामना कर रहे थे। लगातार एक घण्टे तक युद्ध चलता रहा। सारा वातावरण गोलियों की आवाज से गूँज गया। अन्त में जब पिस्तौल में एक गोली शेष रह गयी तो आजाद असमंजस में पड़ गये और उन्होंने सोचा कहीं पुलिस के हाथों पकड़ा न जाऊँ, किन्तु कुछ क्षणों के बाद देश के उस लाडले सपूत ने अपनी ही पिस्तौल की गोली अपनी ही कनपटी पर मार ली और सदैव के लिए भारत माता की गोद में सो गया। सम्पूर्ण भारत की जनता उनकी मृत्यु को सुनकर रुदन करने लगी। चारों ओर वीर बलिदानी आजाद की जय-जय के नारे लगने लगे। आजाद के शौर्य और साहस का स्मरण कर आज भी जनता के मन में राष्ट्र-प्रेम की भावना जागृत होने लगती है।

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

1. 'मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य के 'संकल्प' सर्ग की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए। **(2020MC,ME,MF)**
2. 'मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य के नायक (चन्द्रशेखर) का चरित्रांकन कीजिए। **(2017AF,19AA,20MC,MG,MF,ME)**
3. 'मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य की कथावस्तु सारांश संक्षेप में लिखिए। **(2016CF,17AA,AB,AD,19,AB,AG,20MA)**
4. 'मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य के प्रमुख पात्र का चरित्र–चित्रण कीजिए। **(2020MB)**
5. 'मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य के प्रमुख पात्र का चरित्रांकन कीजिए। **(2020MA)**
6. 'मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य के 'संघर्ष' सर्ग की कथावस्तु पर प्रकाश डालिए। **(2020MB)**
7. 'मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य की प्रमुख घटनाओं का उल्लेख कीजिए। **(2020MD)**
8. 'मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग (बलिदान सर्ग) की कथा अपने शब्दों में लिखिए। **(2020MD)**

●●

7 कर्ण

(केदारनाथ मिश्र 'प्रभात')

अलीगढ़, जौनपुर, बलिया, हमीरपुर, एटा जनपदों के लिए ।

सारांश

प्रथम सर्ग (रंगशाला में कर्ण)

कुन्ती को सूर्य के वरदान से कौमार्यावस्था में ही एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। लोकलाज के भय तथा कुल की मर्यादा के कारण कुन्ती ने उस पुत्र को नदी में बहा दिया। अधिरथ नाम के एक सूत ने उस पुत्र को नदी से निकाला और घर ले गया। अधिरथ की पत्नी

राधा ने बड़े प्रेमपूर्वक उसका पालन-पोषण किया। राधा द्वारा पालन-पोषण किये जाने के कारण उसका नाम राधेय पड़ा। कुछ बड़ा होने पर एक दिन वह बालक राजभवन की रंगशाला में आ गया, परन्तु पाण्डवों ने उसकी वीरता पर व्यंग्य किया। दुर्योधन ने इसके विपरीत उसे बड़ा सम्मान दिया और कहा कि जो तुम्हें सूत-पुत्र कहेगा मैं उसको नीचा अवश्य दिखाऊँगा। दुर्योधन के द्वारा इस प्रकार कहने से उसे बड़ी सान्त्वना मिली और दुर्योधन का परम मित्र बन गया। पाण्डवों के सामने कर्ण को और भी कई स्थानों पर नीचा देखना पड़ा। द्रौपदी के स्वयंवर में जब वह लक्ष्यभेद करने को उठा तो द्रौपदी ने भी उसे अपमानित करते हुए इस प्रकार कहा–

सूत पुत्र के साथ न मेरा गठबन्धन हो सकता।
क्षत्राणी का प्रेम न अपने गौरव को खो सकता॥

द्वितीय सर्ग (द्यूत सभा में द्रौपदी)

महाराज द्रुपद ने अपनी पुत्री द्रौपदी का स्वयंवर करने के लिए देश भर के राजाओं को आमन्त्रित किया। उस स्वयंवर में ब्राह्मण वेशधारी अर्जुन ने लक्ष्य को वेध किया और द्रौपदी का वरण किया। द्रौपदी पाँचों पाण्डवों की वधू बन कर आ गयी। विदुर के समझाने पर युधिष्ठिर को हस्तिनापुर में आधा राज्य भी प्राप्त हो गया। कुछ समय के बाद पाण्डवों ने राजसूय-यज्ञ किया। पाण्डवों का वैभव देखने के लिए दुर्योधन भी वहाँ आया। राजभवन में भ्रमवश जहाँ जल भरा हुआ था, दुर्योधन ने उसे स्थलभाग समझा और वह जल में गिर गया। द्रौपदी उसे देखकर हँस पड़ी और कहा कि– अन्धों की सन्तान अन्धी ही होती है। दुर्योधन इस अपमान से इतना आहत हुआ कि उसने मन-ही-मन द्रौपदी से इस अपमान का बदला लेने का प्रण कर लिया। अपने मामा शकुनि से मिलकर दुर्योधन ने पाण्डवों के साथ कपट द्यूत क्रीड़ा की योजना बनायी। इस कपट क्रीड़ा में मामा शकुनि की चाल से दुर्योधन ने युधिष्ठिर को हरा दिया। अन्त में युधिष्ठिर ने द्रौपदी को भी दांव पर लगा दिया। दुर्भाग्य से वे द्रौपदी को भी हार बैठे। दुर्योधन की आज्ञा से दुःशासन द्रौपदी को बाल पकड़कर घसीटता हुआ राजसभा में ले आया। द्रौपदी ने बहुत प्रार्थना की किन्तु दुःशासन नहीं माना। कर्ण ने इस अवसर का लाभ उठाते हुए दुःशासन को और अधिक प्रेरित किया–

दुःशासन मत ठहर, वस्त्र हर ले कृष्णा के सारे।
वह पुकार ले रो रोकर, चाहे वह जिसे पुकारे॥

कर्ण ने दुःशासन को इस कार्य के लिए उत्साहित तो किया किन्तु वह जीवनपर्यन्त अपने इस कृत्य पर पश्चाताप करता रहा। जब उसे यह मालूम हुआ कि कुन्ती उसकी माँ है और पाण्डव उसके भाई हैं तो उसे और अधिक पछतावा हुआ।

तृतीय सर्ग (कर्ण द्वारा कवच कुण्डल दान)

द्यूत क्रीड़ा में हारकर युधिष्ठिर अपने भाइयों के साथ वन-वन भटकने लगे। उधर दुर्योधन ने यज्ञ किया और वह चक्रवर्ती सम्राट् बन गया। कर्ण ने प्रतिज्ञा की कि जब तक मैं अर्जुन को मार नहीं दूँगा, तब तक किसी से पैर नहीं धुलवाऊँगा और जो मुझसे कुछ माँगेगा मैं उसे वही दूँगा। कर्ण के इस प्रण से युधिष्ठिर अतिचिन्तित रहने लगे क्योंकि कर्ण के कुण्डल और कवच लिए बिना उसे परास्त नहीं किया जा सकता था। इन्द्र अर्जुन की सहायता करना चाहते थे क्योंकि अर्जुन इन्द्र का ही पुत्र था। इन्द्र ब्राह्मण का वेश धारण करके कर्ण के पास कुण्डल और कवच माँगने गये। कर्ण ने सूर्य के बताने पर इन्द्र को पहचान तो लिया किन्तु फिर भी प्रतिज्ञा के अनुसार कुण्डल और कवच इन्द्र को दे दिये।

चतुर्थ सर्ग (श्रीकृष्ण और कर्ण)

पाण्डवों को दुर्योधन ने राज्य में हिस्सा देने से मनाकर दिया। पाण्डवों के प्रति न्याय को दृष्टि में रखते हुए श्रीकृष्ण दुर्योधन की सभा में आये, किन्तु सभा में निराश होकर श्रीकृष्ण सभा से बाहर आये तथा कर्ण को अपने पास बुलाकर समझाया कि वह तो पाण्डवों का बड़ा भाई है। यह बात सुनकर कर्ण आश्चर्यचकित रह गया। श्रीकृष्ण के सामने कर्ण ने अपना दुःख प्रकट करते हुए कहा कि– न जाने कितने अवसरों पर लोगों ने मुझे सूत-पुत्र कहकर अपमानित किया किन्तु इसके बाद भी मेरी माता ने कभी भी मुझे अपना पुत्र स्वीकार नहीं किया। कवि ने कर्ण की मनोवेदना का वर्णन करते हुए कहा है–

यों न उपेक्षित होता मैं, यों भाग्य न मेरा सोता।
स्नेहमयी जननी ने यदि, रंचक भी चाहा होता॥
घृणा, अनादर तिरस्क्रिया, यह मेरी करुण कहानी।
देखो, सुनो कृष्ण! क्या कहता इन आँखों का पानी।

कर्ण ने श्रीकृष्ण से कहा कि मैं जानता हूँ कि जीत उसी तरफ होगी जिस तरफ तुम हो। फिर भी मैं दुर्योधन के द्वारा किये गये उपकार को नहीं भूल सकता। मैं उसी के पक्ष में लड़ूँगा। मैंने अपने कुण्डल-कवच भी दान में दे दिये हैं, पाण्डवों को इन्हीं का भय था।

इसके साथ ही द्रौपदी के प्रति कराये गये अत्याचार का स्मरण करके कर्ण बहुत दुःखी हुआ। श्रीकृष्ण ने उसे दुराग्रही बताया। किन्तु कर्ण दुर्योधन का साथ छोड़ने को तैयार न हुआ।

पंचम सर्ग (माँ-बेटा)

महाभारत का युद्ध होने तक अब केवल पाँच दिन शेष रह गये थे। कुन्ती इससे अत्यन्त व्याकुल होने लगीं उन्हें तो सबसे बड़ा दुःख यही था भाई-भाई ही एक-दूसरे के खून के प्यासे हो गये हैं और एक भाई ही दूसरे भाई की मृत्यु का कारण बनेगा। कुन्ती ने अच्छी तरह विचार किया और कर्ण के पास गयीं। कर्ण ने कुन्ती को प्रणाम किया और अपना परिचय राधेय के रूप में दिया। कुन्ती ने कहा कि तुम राधा के पुत्र नहीं हो बल्कि मेरे पुत्र हो। कुन्ती की यह बात सुनकर कर्ण की आँखें क्रोध से लाल हो गयीं। कर्ण ने कहा– 'जब मैं अपमानित किया जा रहा था और पाण्डव मुझे सूत-पुत्र कहकर व्यंग्य-बाण छोड़ते थे तब तुम्हारा पुत्र-प्रेम कहाँ चला गया था? आज तुम पाण्डवों के सिर पर मौत का साया देखकर मेरे सामने इस रहस्य को प्रकट करने आयी हो? कर्ण ने कुन्ती से कहा–

क्यों तुमने उस दिन न कहा, सबके सम्मुख ललकार।
कर्ण नहीं है सूत-पुत्र, वह भी है राजकुमार॥

कुन्ती की आँखों से अश्रुधारा बहने लगी। कर्ण ने कहा मेरे भाग्य के साथ बहुत खिलवाड़ हुई है, किन्तु यह भी बड़ी विडम्बना होगी कि – एक माँ अपने पुत्र के पास से खाली हाथ लौटे। मैंने केवल अर्जुन को ही मारने की प्रतिज्ञा की है। मैं तुम्हें वचन देता हूँ कि मैं अन्य किसी पाण्डव को नहीं मारूँगा। कुन्ती वापस लौट आयी। इधर कर्ण के हृदय में भी विचारों का सागर लहराने लगा।

षष्ठ सर्ग (कर्ण-वध)

महाभारत का युद्ध अब प्रारम्भ हो गया। कौरवों की ओर से पितामह भीष्म सेनापति हुए। कर्ण को नीच और अभिमानी कहकर भीष्म ने उसका सहयोग लेने से इनकार कर दिया। दसवें दिन भीष्म युद्ध में घायल होकर शरशैय्या पर लेट गये, तो कर्ण उनके पास गये। पितामह ने कर्ण से पाण्डवों की रक्षा करने के लिए कहा। कर्ण ने कहा– मैंने अर्जुन को मारने की प्रतिज्ञा की है और मैं अपनी प्रतिज्ञा नहीं त्याग सकता। युद्ध के सोलहवें दिन कर्ण कौरवों का सेनापति बना। उसकी भयंकर बाण वर्षा से पाण्डव व्याकुल होने लगे तभी भीम का पुत्र घटोत्कच भयानक मायावी आकाश युद्ध करता हुआ कौरवों की सेना पर टूट पड़ा। कौरव सेना रक्षा के लिए कर्ण के पास गयी तो कर्ण ने अमोघ अस्त्र से घटोत्कच का वध कर दिया जिसे वह अर्जुन पर चलाना चाहते थे। वह सोचने लगे कि यह भी कृष्ण की ही माया है। अब अर्जुन की विजय निश्चित थी। दिन थोड़ा ही शेष था। कर्ण के रथ का पहिया जमीन में धँस गया। वह पहिये को निकालने लगा तभी कृष्ण का संकेत पाकर अर्जुन ने कर्ण का वध कर दिया।

सप्तम सर्ग (जलाञ्जलि)

कर्ण का वध होने के बाद कौरवों की सेना कमजोर हो गयी। वे युद्ध में मारे गये। युधिष्ठिर ने अपने ही कुल के भाइयों को जल-दान दिया। तभी कुन्ती ने कर्ण को भी जल-दान देने को कहा। युधिष्ठिर द्वारा पूछे जाने पर कुन्ती ने कर्ण के जन्म की सारी कहानी प्रकट कर दी। यह जानकर कि कर्ण उनके ही बड़े भाई थे युधिष्ठिर को बड़ा ही दुःख हुआ। उन्होंने बड़ी श्रद्धापूर्वक कर्ण को जल-दान दिया। उनके मन की वेदना कवि ने इस प्रकार व्यक्त की है–

मानव को मानव न मिल सका, धरती को धृति धीर।
भूलेगा इतिहास भला कैसे, यह गहरी पीर॥

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

1. 'कर्ण' खण्डकाव्य के द्वितीय सर्ग की कथावस्तु लिखिए। **(2019AD,AF,20MB,MG)**
2. 'कर्ण' खण्डकाव्य के आधार पर कर्ण का चरित्र-चित्रण कीजिए। **(2016CB,19AA,AC,AF,20MB,ME,MA)**
3. 'कर्ण' खण्डकाव्य के प्रथम सर्ग का कथासार लिखिए। **(2017AA,20MC,MD)**
4. 'कर्ण' खण्डकाव्य के आधार पर कुन्ती का चरित्र-चित्रण कीजिए। **(2016CC,CE,20MC)**
5. 'कर्ण' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग की कथा अपने शब्दों में लिखिए। **(2017AD,18HF,19AA,AE,20MA)**
6. 'कर्ण' खण्डकाव्य के आधार पर कर्ण द्वारा 'कवच–कुण्डल दान' का वर्णन कीजिए। **(2020MD)**

7. 'कर्ण' खण्डकाव्य की किसी प्रमुख घटना का वर्णन कीजिए। **(2020MG)**
8. 'कर्ण' खण्डकाव्य की कथावस्तु लिखिए। **(2020ME,MF)**
9. 'कर्ण' खण्डकाव्य के आधार पर उसके नायक का चरित्र–चित्रण कीजिए। **(2020MF)**

●●

8 कर्मवीर भरत

(लक्ष्मीशंकर मिश्र 'निशंक')

मेरठ, फर्रुखाबाद, पीलीभीत, रायबरेली जनपदों के लिए निर्धारित।

सारांश

चित्रकूट में भरत का मिलन तथा भरत की चरण-पादुका प्राप्त करना यही कथावस्तु का मूल उद्देश्य है। छः सर्गों में विभक्त कथा का सारांश इस प्रकार है–

प्रथम सर्ग (आगमन)

दशरथ के मरणोपरान्त गुरु के आदेश से दूत भरत और शत्रुघ्न को ननिहाल से 'राजगृहपुर' में बुलाने के लिए पहुँचता है। अचानक दूत के पहुँचने से भरत के मन में अनेक प्रकार की शंकाएँ होती हैं। वे बारी-बारी से सबका कुशल पूछते हैं, दूत के कथन से उन्हें सन्तोष नहीं होता। वे शत्रुघ्न के साथ अयोध्या के लिए प्रस्थान कर देते हैं। रास्ते में तथा अयोध्या पहुँचने पर शोक संतप्त अयोध्या नगर की दशा देखकर जो उनके मन में अन्तर्द्वन्द्व उठते हैं उन सबका प्रस्तुत खण्ड-काव्य के प्रथम सर्ग में चित्रण किया गया है। अन्त में भरत राजभवन में प्रवेश करते हैं किन्तु वहाँ भी आधी रात का सन्नाटा छाया है। पाले गये पक्षियों की चहचहाहट नहीं है। पिता भी नहीं दीख पड़ते, फिर वे उलटे पाँवों कैकेयी के भवन की ओर चल देते हैं–

अनुभव होता अर्धरात्रि का-सा सूनापन।
पालित पक्षी थक बैठे थे शान्त क्षुब्ध मन॥
देखा नहीं पिता को, चिन्ता मग्न हो गये।
उलटे पैरों लौट कैकेयी भवन को गये॥

द्वितीय सर्ग (राजभवन)

राजभवन में पहुँचने पर भरत सर्वप्रथम कैकेयी से मिलते हैं। कैकेयी राम वनगमन, पिता की मृत्यु और अपना पवित्र उद्देश्य भरत के समक्ष रखती हैं। भरत विषाद से भर जाते हैं। वे कैकेयी के तर्क से सर्वथा सन्तुष्ट नहीं होते और अपने को अपराधी तथा अभागा मानते हैं। इस सर्ग में कवि ने कैकेयी के चरित्र को विशेष महत्त्व दिया है तथा कैकेयी पर युग-युग से आरोपित कलंक को निर्मूल सिद्ध करने का प्रयास किया है। कैकेयी द्वारा राम को वन भेजने में लोकहित की भावना है। वह भरत को समझाती हैं–

एक ईश ने प्राणि मात्र को जन्म दिया है।
भेद भाव तो हमने अपने आप किया है॥
उन्हें उठाना क्या राजा का धर्म नहीं है।
गले लगाना क्या मानव का धर्म नहीं है॥
सबके सब बन जायँ राज पद भोगी।
तो विपन्न मानवता की रक्षा क्या होगी?

कैकेयी के तर्क को सुनकर और अपनी प्रतिक्रिया जता कर मन में धैर्य धारण कर साहस और शक्ति को समेट दोनों भाई बड़ी माँ के दर्शन के लिए वहाँ से चले जाते हैं। यही दूसरे सर्ग की कथा है।

तृतीय सर्ग (कौशल्या-सुमित्रा-मिलन)

तीसरे सर्ग में भरत का दोनों माताओं कौशल्या और सुमित्रा के स्नेह और वात्सल्य भरे मिलन का वर्णन है। इस सर्ग में भरत के अतिरिक्त कौशल्या, सुमित्रा, माण्डवी आदि की चारित्रिक विशेषताओं पर समुचित प्रकाश डाला गया है। कौशल्या और सुमित्रा ने भरत के चरित्र को और भी उदार, निष्कपट और त्यागी सिद्ध कर दिया है। कौशल्या भरत का उद्‌बोधन देते हुए कहती हैं–

वत्स! हृदय में दीन भाव अपने मत लाओ।
गत को भूलो वर्तमान को सफल बनाओ॥

और यही बात भरत द्वारा कैकेयी को दोषी ठहराने पर सुमित्रा भी दुहराती हैं–

कहा सुमित्रा ने 'बेटा क्यों' भूल रहे हो।
माँ के वरदानों को कह क्यों शूल रहे हो॥

फिर सुमित्रा के मुख से ही उर्मिला और माण्डवी की दशाओं का वर्णन है। अन्त में दोनों पुत्रों को गले लगाकर गुरु वशिष्ठ के पास भावी कार्यक्रम निर्धारित करने के लिए भेज देती हैं।

चतुर्थ सर्ग (आदर्श वरण)

चौथे सर्ग में भरत गुरु वशिष्ठ के यहाँ पहुँचते हैं। इसी सर्ग में सच्चे अर्थ में भरत की कर्मवीरता का निखार हुआ है। जब गुरु वशिष्ठ और मन्त्री सुमन्त उन्हें राजसिंहासन पर बैठने का आदेश देते हैं तो भरत राम को वन से लाने के अपने संकल्प और आत्मविश्वास को व्यक्त करते हैं। वे राज्यश्री से अपने को सर्वदा मुक्त रखना चाहते हैं–

रघुकुल में चल रही युगों से प्रथा हमारी।
ज्येष्ठ पुत्र ही होता शासन का अधिकारी॥
उसके रहते छोटा क्यों पाये सिंहासन।
राज्यश्री से रहा भरत को नहीं प्रोत्साहन॥

भरत का विचार सभी को पसन्द आता है। सभी लोग भरत के साथ राम को मनाने के लिए वन को प्रस्थान करते हैं। पहले तो भरत पैदल ही चलने को आगे-आगे तैयार होते हैं। बाद में जब माताएँ भी उतरकर पैदल चलने को तैयार होती हैं तो उनके कष्ट और आग्रह का विचार कर वे भी रथ पर बैठ जाते हैं।

पंचम सर्ग (वनगमन)

इस सर्ग में भरत के अयोध्या से प्रस्थान पर चित्रकूट तक पहुँचने की कथा का वर्णन है। इसके अन्तर्गत निषादराज की भक्ति और उनकी सेवा-भावना का सुन्दर चित्रण किया गया है। भरत की भ्रातृभक्ति और भाव-विह्वलता का विशद् वर्णन ही इस सर्ग की मुख्य कथावस्तु है। शृंगवेरपुर पहुँचने पर पहले तो निषादराज भरत को राम का विपक्षी मानकर उनका विरोध करने को सोचता है फिर भरत के स्वभाव तथा गुरु वशिष्ठ आदि गुरुजनों को साथ देखकर उसके विचार बदल जाते हैं और वह उनका स्वागत करता है। वहाँ से भरत सभी को साथ ले प्रयाग में भरद्वाज ऋषि के आश्रम में पहुँचते हैं और उनका दर्शन करते हैं। भरद्वाज ऋषि से आज्ञा लेकर पुनः राम के दर्शन के लिए तुरन्त वहाँ से चित्रकूट के लिए प्रस्थान करते हैं। चित्रकूट निकट आने पर जब तक वह वन जिसमें राम रह रहे हैं दिखलाई पड़ता है वे गुरु की आज्ञा लेकर रथ से उतर जाते हैं और दोनों भाई पैदल ही आश्रम की ओर चलने लगते हैं।

षष्ठ सर्ग (राम-भरत मिलन)

सेना सहित भरत को सहसा वन में आते देखकर एक भील ने रामचन्द्र जी को भरत-आगमन का समाचार सुनाया। लक्ष्मण का मन शंकित हुआ, परन्तु भरत का नाम सुनकर राम पुलकित होकर चरण-पादुका के बिना ही कुटी के बाहर आ गये। उन्होंने धूल-धूसरित भरत को अपने चरणों में नत देखा और फिर भरत को स्नेह सहित खींचकर गले लगा लिया। शत्रुघ्न ने राम और लक्ष्मण के चरणस्पर्श किये। इसके बाद दोनों भाइयों ने सीता के चरणों में शीश झुकाकर 'सदा सुखी जीवन' का आशीर्वाद प्राप्त किया।

गुरु का आगमन सुनकर राम उनके रथ के पास गये और आदर सहित आश्रम में ले आये। माताओं के चरण छूकर और सुमन्त से भेंट करके राम अति हर्षित हुए। तब वशिष्ठ जी से पिता-मरण की बात सुनकर 'हाय पिता' कहकर पृथ्वी पर गिर पड़े। गुरु के समझाने पर तर्पणादि कार्य करके निवृत्त हो गये।

चित्रकूट में राम के प्रेम में विभोर हुए उनके कई दिन बीत गये। चित्रकूट के वन उपवनों की प्राकृतिक सुषमा ने उनका मन मोह लिया था। भरत लज्जावश कुछ नहीं कह पा रहे थे। तब वशिष्ठ ने राम से कहा कि इनको यहाँ आये बहुत दिन बीत गये हैं, अब इन्हें समझाकर लौटा दो। तब अवसर पाकर भरत ने कहा कि मैं राम को छोड़कर अयोध्या नहीं जाऊँगा। मैं उनका प्रतिनिधि बनकर वन में निवास करूँगा। राम अयोध्या जायँ, सिंहासन सूना पड़ा है। तब कैकेयी ने राम से कहा– पुत्र! मैं इस दुःखमय नाटक की सूत्रधारिणी हूँ।

आप भरत के कहे अनुसार राज्य प्राप्त करके मेरे कलंक को मिटाओ। गुरु ने भी कैकेयी का समर्थन किया। कैकेयी के वचन सुनकर राम ने कहा कि माता! इसमें तुम्हारा दोष नहीं है, फिर भी मैं अयोध्या जाकर राज्य नहीं कर सकता। भरत धर्मनिष्ठ होकर भी प्रेम-सिन्धु में डूब रहा है। यदि वह कहे तो मैं अयश के सागर में डूब सकता हूँ, परन्तु कुल के आदर्शों को निबाहना ही चाहिए।

भरत ने कहा – हे प्रभु! मुझे आज्ञा दीजिये कि मैं नन्दीग्राम में कुटी बनाकर सिंहासन पर आपकी चरण-पादुकाएँ रखकर 14 वर्ष तक वनवासी की तरह निवास करूँ। मैं राम का प्रतिनिधि बनकर जनसेवा करता रहूँ। मैं आपकी पादुकाएँ लिये बिना नहीं जा सकता। आप मुझे 14 वर्ष की अवधि बीतने पर लौट आने का आश्वासन दीजिये। यह कहकर भरत राम के चरणों पर गिर पड़े।

राम ने अपनी चरण-पादुकाएँ दे दीं और सबको प्रेम सहित विदा किया।

भरत ने अयोध्या जाकर नन्दीग्राम में कुटी बनायी और सिंहासन पर राम की चरण-पादुकाएँ रख दीं। शत्रुघ्न भरत की आज्ञा से राज्य का कार्य चलाने लगे।

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

1. 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के किसी स्त्री-पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।
2. 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए। **(2017AA,AC,AG,19AB,AE,20MD)**
3. 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग की कथावस्तु संक्षेप में प्रस्तुत कीजिए। **(2020MB,MG)**
4. 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के प्रधान पात्र का चरित्रांकन कीजिए। **(2019AD,20MD,MB)**
5. 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के आधार पर कैकेयी का चरित्र-चित्रण संक्षेप में कीजिए। **(2016CE,17AG,20MC,ME,MA)**
6. 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के आधार पर राम-भरत मिलन का संक्षिप्त वर्णन कीजिए। **(2016CE,CF,20MC,MA,MF)**
7. 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के आगमन सर्ग की कथावस्तु लिखिए। **(2020ME)**
8. 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के आधार पर भरत की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए। **(2020MF)**

●●

9 तुमुल

(श्यामनारायण पाण्डेय)

वाराणसी, इटावा, बिजनौर, जालौन, बदायूँ जनपदों के लिए ।

सारांश

प्रथम सर्ग (ईश स्तवन)

प्रस्तुत खण्डकाव्य में कवि श्यामनारायण पाण्डेय ने प्रथम सर्ग मंगलाचरण के रूप में प्रस्तुत किया है तथा ईश्वर का स्तवन किया है तथा ईश्वर की सर्वव्यापकता का वर्णन किया है।

द्वितीय सर्ग
(दशरथ-पुत्रों का जन्म एवं बाल्यकाल)

इस सर्ग में कवि ने राजा दशरथ के चारों पुत्रों के जन्म का वर्णन किया है। ये चार पुत्र हैं– राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न। चारों बालकों का बचपन राजमहल में ही व्यतीत हुआ। उनकी बचपन की लीलाएँ इक्ष्वाकु वंश की मर्यादा को बढ़ाती हैं तथा राजमहल की शोभा को दुगुना कर देती हैं। महाराज दशरथ का यश संसार के कोने-कोने में फैला है, वे कर्त्तव्यपरायण, दानवीर तथा युद्ध विद्या में पारंगत हैं। युद्ध विद्या में उनकी समानता कोई नहीं कर सकता है। युद्ध में वे सदैव विजयी होते थे। राजा दशरथ नीतिज्ञ, सुख-शान्ति में विश्वास करनेवाले तथा सच्चरित्र थे।

तृतीय सर्ग (मेघनाद)

कवि ने इस सर्ग में मेघनाद के पराक्रम का वर्णन किया है। मेघनाद का तेज सूर्य के समान है। अपनी युवावस्था में उसने इन्द्र के पुत्र जयन्त को भी पराजित कर दिया था। पृथ्वी पर रहनेवाले सभी राजा मेघनाद के नाम से काँपते थे।

चतुर्थ सर्ग (मकराक्ष वध)

चतुर्थ सर्ग में मकराक्ष का वध तथा राजा रावण की चिन्ता का वर्णन कवि ने किया है। रामचन्द्र जी के तीखे बाणों के प्रहार से सभी राक्षस भागने लगे तथा मकराक्ष की मृत्यु हो गयी। मकराक्ष की मृत्यु का समाचार सुनकर रावण का मुख पीला पड़ गया तथा वह अति चिन्ता मग्न हो गया। मकराक्ष के वध के पश्चात् रावण ने मेघनाद को युद्ध में भेजने की योजना बनायी क्योंकि वह मेघनाद को भी अपने समान ही पराक्रमी तथा वीर समझता था।

पंचम सर्ग (रावण का आदेश)

पंचम सर्ग में रावण द्वारा मेघनाद की वीरता का वर्णन किया गया है। रावण मेघनाद की शक्ति को अजेय शक्ति समझता है, किन्तु युद्ध से अति चिन्तित है। रावण को चिन्तामग्न देखकर मेघनाद ने उसके चरणों का स्पर्श किया। रावण ने अपने मन की पीड़ा को मेघनाद के समक्ष इस प्रकार व्यक्त किया– ''हे पुत्र! तुम्हारे होते हुए सम्पूर्ण राज्य में युद्ध के भय से हलचल मच गयी है। हमें युद्ध में किसी भी प्रकार भयभीत नहीं होना है। राम से बदला न लेने में हमारी कायरता है, इसलिए हमारा आदेश है कि तुम युद्ध में लक्ष्मण को मृत्यु की गोद में सुला दो।''

इस प्रकार रावण ने मेघनाद के शौर्य की प्रशंसा करते हुए उसे युद्ध में भेजा। रावण को पूर्ण विश्वास है कि मेघनाद मकराक्ष वध का बदला लेकर शत्रुओं को परास्त अवश्य ही कर देगा।

षष्ठ सर्ग (मेघनाद प्रतिज्ञा)

मेघनाद सिंह की तरह गरजता हुआ युद्ध में विजय प्राप्ति की प्रतिज्ञा करता है। उसकी गर्जना से रावण का स्वर्ण महल भी हिल जाता है। मेघनाद ने कहा कि मैं राम और लक्ष्मण की शक्ति को चुनौती दूँगा और लंका को कष्ट में पड़ने से पहले ही बचा लूँगा। हे पिता! मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं अवश्य ही विजय को प्राप्त करूँगा। यदि युद्ध में विजयी न हुआ तो फिर कभी जीवन में युद्ध का नाम ही न लूँगा।

सप्तम सर्ग (मेघनाद का अभियान)

प्रस्तुत सर्ग में मेघनाद द्वारा युद्ध की तैयारी और युद्ध के लिए अभियान का वर्णन किया गया है। मेघनाद ने अपनी सेना को तैयार होने का आदेश दिया है और स्वयं भी वीर वेश धारण कर शस्त्रों से सुसज्जित हुआ है। मेघनाद के इस अभियान को देखकर देवता लोग भयभीत होने लगे हैं और उन्हें राम की चिन्ता होने लगी है। देवता ऐसा सोच रहे थे कि मेघनाद के सामने तो काल की भी नहीं चलेगी। देवता इस प्रकार परस्पर वार्ता कर ही रहे थे, तभी मेघनाद ने युद्धभूमि में भयंकर गर्जना की।

अष्टम सर्ग (युद्धासन्न सौमित्र)

इस सर्ग में युद्ध में लगे हुए लक्ष्मण का चित्रण किया गया है। लक्ष्मण ने जब मेघनाद का रण गर्जन सुना तो वे भी युद्ध के लिए तैयार हो गये तथा उनकी कपि सेना भी भयंकर गर्जना करने लगी। जब लक्ष्मण मेघनाद के सामने आये तो उसे वीर वेश में देखकर उसकी वीरता की प्रशंसा की। शत्रु के मुख से अपनी प्रशंसा सुनकर मेघनाद ने सोचा कि जरूर इसके पीछे कोई कपटभाव छिपा हुआ है।

नवम सर्ग (लक्ष्मण-मेघनाद युद्ध तथा लक्ष्मण की मूर्च्छा) मार्मिक स्थल

नवें सर्ग में लक्ष्मण का मेघनाद के साथ युद्ध का वर्णन है तथा लक्ष्मण के मूर्च्छित होने का प्रसंग है। मेघनाद ने लक्ष्मण के प्रश्नों के उत्तर दिये और उनकी वीरता की प्रशंसा की, साथ ही युद्ध के लिए तैयार होने के लिए कहा। यह सुनकर लक्ष्मण क्रोधित हो उठे और उन्होंने वीरतापूर्ण वचनों को कहा। उनकी वीरतापूर्ण वचनों को सुनकर मेघनाद हँस पड़ा। बाण वर्षा प्रारम्भ हो गयी, दोनों ओर से भयंकर युद्ध होने लगा। लक्ष्मण के शौर्य को देखकर राक्षस भागने लगे। मेघनाद ने वीर वाणी में उनको ललकार कर रोका। मेघनाद और लक्ष्मण में 'तुमुल' युद्ध हुआ। चारों ओर हाहाकार मच गया। लक्ष्मण को कुछ शिथिल देखकर मेघनाद ने लक्ष्मण के ऊपर शक्ति चला दी। लक्ष्मण मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़े। तब मेघनाद जय जयकार करता हुआ लंका की ओर चल पड़ा। इस प्रकार उसने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की।

दशम सर्ग (हनुमान द्वारा उपदेश)

दसवें-सर्ग में दुःखी वानर सेना को हनुमान जी द्वारा उपदेश दिया गया है। लक्ष्मण के शक्ति बाण लगने और उनके मूर्च्छित होने से देवताओं में खलबली मच गयी। वानर सेना रोने लगी। तब हनुमान जी ने उन्हें समझाया कि वीरों का इस प्रकार विलाप करना

शोभनीय नहीं है। लक्ष्मण केवल अचेत हुए हैं, अतः व्याकुलता त्याग कर युद्ध में बदला लेने के लिए तैयार हो जाओ। तब हनुमान जी के वचनों को सुनकर उनका दुःख दूर हुआ। उधर कुटी में बैठे हुए श्रीराम जी को अपशकुन होने लगे।

एकादश सर्ग (उन्मत्त राम)

कुटिया में बैठे हुए श्रीराम ने विचार किया कि आज व्यर्थ ही मन में व्यथा उत्पन्न क्यों हो रही है। मेरा मन सशंकित हो रहा है और मेरे पैर काँप रहे हैं। उसी समय सुग्रीव, अंगद, हनुमान आदि मूर्च्छित लक्ष्मण को लेकर राम के पास आये। लक्ष्मण की ऐसी दशा को देखकर राम की आँखों से अश्रुधारा बहने लगी।

द्वादश सर्ग (राम-विलाप और सौमित्र का उपचार) *(2019 AC, AD, AF)*

लक्ष्मण की ऐसी दशा देखकर राम विलाप करने लगे और कहने लगे कि "हे लक्ष्मण! तुम्हारी ऐसी दशा से मैं अत्यन्त दुःखी हूँ। हे धनुर्धर, तुम धनुष हाथ में लेकर फिर उठो, मैं तुम्हारे बिना जीवित नहीं रह सकता।" राम की ऐसी करुण अवस्था को देखकर हनुमान जी को सुषेण वैद्य को लाने का आदेश दिया। हनुमान जी क्षण भर में ही सुषेण वैद्य को ले आये। सुषेण वैद्य ने कहा कि "संजीवनी बूटी के बिना लक्ष्मण की चिकित्सा नहीं हो सकती।" संजीवनी बूटी लाने का कार्य भी हनुमान जी ने ही किया। संजीवनी बूटी के उपयोग से लक्ष्मण की मूर्च्छा समाप्त हो गयी तथा पुनः वानर सेना में प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी।

त्रयोदश सर्ग (विभीषण की मंत्रणा)

राम-लक्ष्मण वानर सेना सहित बैठे हुए थे कि तभी रामभक्त विभीषण ने आकर यह सूचना दी कि मेघनाद यज्ञ कर रहा है। यदि उसका यज्ञ पूरा हो गया तो राम की जीत किसी भी प्रकार नहीं हो सकती। अतः यज्ञ करते हुए मेघनाद पर आक्रमण करो। राम ने सेना को आक्रमण करने का आदेश दिया। राम के चरण-स्पर्श करके लक्ष्मण ने मेघनाद-वध करने की प्रतिज्ञा ली।

चतुर्दश सर्ग (यज्ञ विध्वंस और मेघनाद-वध)

चौदहवें सर्ग में मेघनाद के यज्ञ विध्वंस और मेघनाद वध का वर्णन है। उत्साह में भरे हुए लक्ष्मण वानर सेना को लेकर यज्ञस्थल पर पहुँचे। लक्ष्मण के तीव्र बाण प्रहार से मेघनाद का रुधिर पवित्र यज्ञ भूमि में बहने लगा। उधर वानर सेना ने अन्य यज्ञकर्त्ताओं का संहार किया वे सभी मेघनाद पर टूट पड़े। मेघनाद ने लक्ष्मण को यज्ञ-स्थल पर प्रहार करने के लिए धिक्कारा। एक बार तो लक्ष्मण के हाथ रुक गये, किन्तु विभीषण के द्वारा उत्साहित किये जाने पर लक्ष्मण ने भयंकर बाणों की वर्षा की। तीक्ष्ण बाणों के प्रहार से मेघनाद वहीं यज्ञभूमि में ही मारा गया। लक्ष्मण का सुयश चारों ओर फैल गया। देवता यह देखकर अति प्रसन्न हुए और जय-जयकार करने लगे।

इस प्रकार 'तुमुल' खण्डकाव्य की कथा चौदह सर्गों में विभक्त होकर समाप्त हुई।

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

1. 'तुमुल' खण्डकाव्य के आधार पर 'विभीषण की मंत्रणा' खण्ड का संक्षिप्त वर्णन कीजिए। **(2020MC)**
2. 'तुमुल' खण्डकाव्य के आधार पर उसके प्रधान पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए। **(2020MC)**
3. 'तुमुल' खण्डकाव्य के षष्ठ सर्ग मेघनाथ-प्रतिज्ञा की कथा अपने शब्दों में लिखिए। **(2018HF,19AA,20MD,MA)**
4. 'तुमुल' खण्डकाव्य के आधार पर लक्ष्मण का चरित्रांकन कीजिए। **(2016CE,CF,18HA,19AA,AC,AG,20MG,ME,MA,MF)**
5. 'तुमुल' खण्डकाव्य की कथावस्तु पर संक्षेप में प्रकाश डालिए। **(2016CE,17AA,AB,AD,20MB)**
6. 'तुमुल' खण्डकाव्य के नायक की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। **(2020MB)**
7. 'तुमुल' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग का कथानक लिखिए। **(2020MD)**
8. 'तुमुल' खण्डकाव्य का कथानक संक्षेप में लिखिए। **(2020MG,ME,MF)**

●●